अनिल सलूजा महा विशेषांक

उस्ताद

बलराज गोगिया,
रीमा राठौर और
सतीश रावण की
आपस में खूनी भिडंत

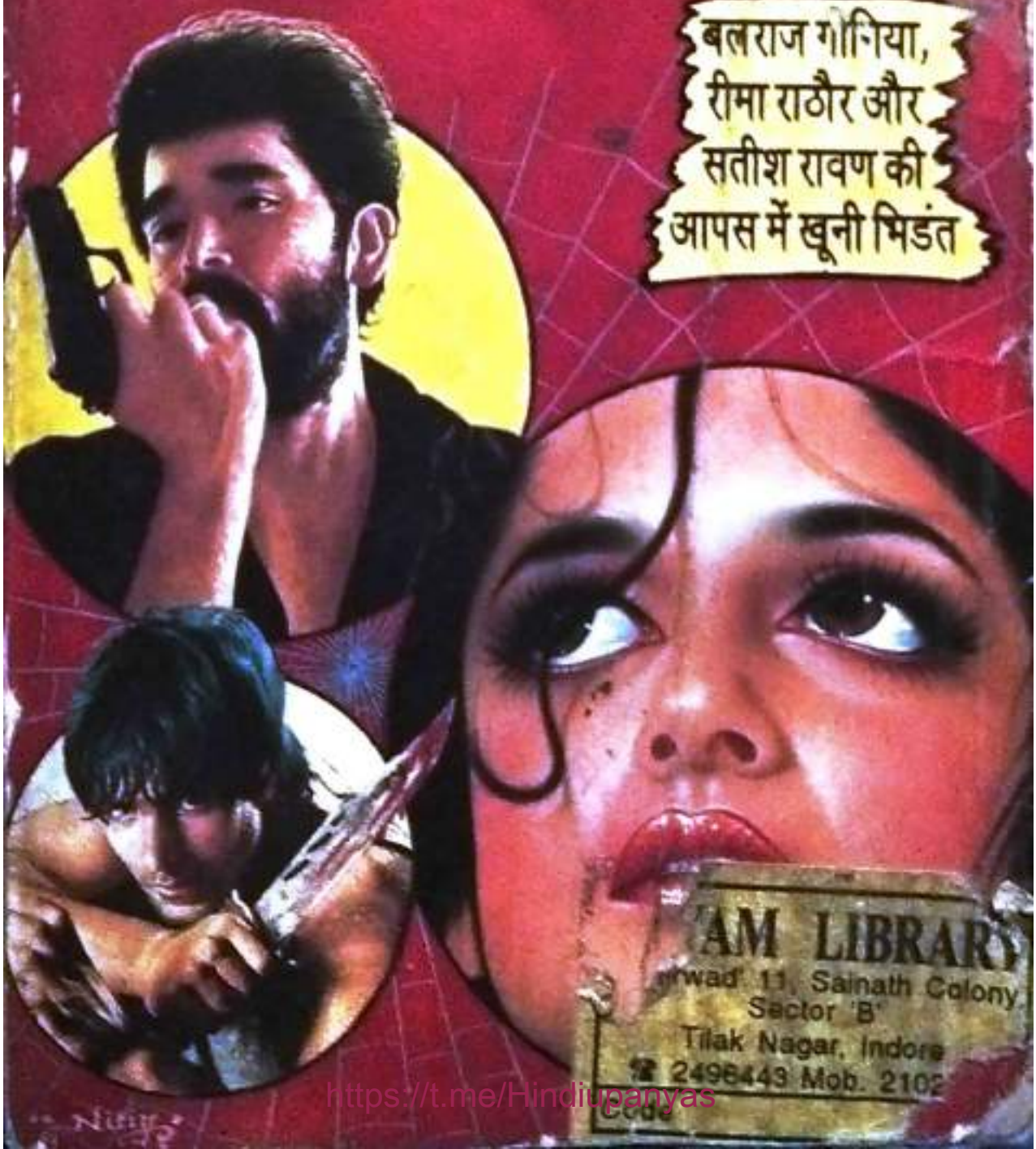

AM LIBRARY
nrwad' 11, Sainath Colony
Sector 'B'
Tilak Nagar, Indore
☎ 2498443 Mob. 2102

https://t.me/Hindiupanyas

शिवा पॉकेट बुक्स
में
अनिल सलूजा
के उपलब्ध उपन्यास

- शिकारी (रीमा राठौर सीरीज)
- शैतान (रीमा राठौर सीरीज)
- मोर्चा (बलराज गोगिया सीरीज)
- मुखबिर (बलराज गोगिया सीरीज)
- कमीना (सतीश रावण सीरीज)
- जवाब देगी गोली (रीमा राठौर सीरीज)
- सारे खून माफ (बलराज गोगिया सीरीज)
- उस्ताद (महा विशेषांक) (रीमा राठौर, बलराज गोगिया तथा सतीश रावण की भिड़ंत)

और इसके बाद
एक बार फिर बलराज गोगिया...रीमा राठौर
और सतीश रावण की खौफनाक टक्कर

जजमेंट

शिवा पॉकेट बुक्स
13-14, मुद्रा पैलेस, देहली गेट, मेरठ

https://t.me/Hindiupanyas

कौन बना उस्ताद?

बलराज गोगिया

रीमा राठौर

सतीश रावण

महा विशेषांक

उस्ताद

अनिल सलूजा

पाकिस्तान की धरती पर खून से रंगा
एक जलजला जो दिमाग की
चूलें हिला देगा।

https://t.me/Hindiupanyas

वी.एम.कुमार देवास
9-8-20

उस्ताद

"अटैन्शन प्लीज—बैंगलोर से दिल्ली आने वाली इण्डियन एयरलाइंस की फ्लाइट नम्बर दो सौ तीस ठीक पांच मिनट बाद लैण्ड करेगी।"

दिल्ली एयरपोर्ट के लाउड स्पीकरों से निकली आवाज ने वहां एक हचलच सी मचा दी।

अपने रिश्तेदारों को लेने आये लोगों के चेहरों पर हल्की-सी उत्तेजना फैल गई तथा उनकी आंखें आकाश की तरफ उठ गईं।

तीन मिनट बाद इण्डियन एयरलाइंस का जम्बो जहाज आकाश में उड़ता नजर आने लगा।

कन्ट्रोल रूम से बात करता पायलट जहाज को नीचे उतारने की अनुमति मांग ही रहा था कि तभी आपरेटर के कानों में पायलेट की घबराई आवाज़ पड़ी—

"प्लेन हाईजैक कर लिया गया है।"

□□□

प्लेन के काकपिट में पायलट की कनपटी से रिवॉल्वर लगी हुई थी और रिवॉल्वर एक ऐसे आदमी के हाथ में थीं, जिसका मुंह कपड़े से ढका हुआ था। सिर्फ आंखें ही नजर आ रही थी उसकी।

"प्लेन को लाहौर की तरफ ले चलो।" वह व्यक्ति गुर्राया।

मजबूर था पायलेट। उसे अपनी जान की परवाह नहीं थी। उसे चिंता थी तो उन एक सौ साठ यात्रियों की जो कि उसके प्लेन में यात्रा कर रहे थे।

प्लेन लाहौर की तरफ बढ़ने लगा।

तभी प्लेन की अलग-अलग सीटों पर से चार व्यक्ति उठे और पूरे प्लेन में फैल गए।

एक जो कि सबसे आगे वाली सीट के करीब खड़ा था, अपने हाथ में थमा थैला ऊपर करते हुए चीखा—

https://t.me/Hindiupanyas

"इस प्लेन को हाइजैक कर लिया गया है। कोई भी ऐसी कोई गलती करने की कोशिश न करे जिससे कि उसे अपनी जान से हाथ धोना पड़े। मेरे थैले में हैंडग्रेनेड हैं—हम जब चाहे प्लेन को उड़ा सकते हैं।"

सुनकर जहां आदमियों के चेहरे फक्क पड़ गए—वहीं औरतों और बच्चों की चीखने की आवाजें प्लेन में गूंजने लगीं।

"खबरदार!" तभी नीचे खड़े दो व्यक्ति दहाड़े—"कोई चीखेगा नहीं।"

औरतों के होंठ ऐसे बंद हुए जैसे वे पैदा ही ऐसे हुई थीं। हां, कुछ छोटे बच्चों के रोने की आवाज अभी भी आ रही थी।

तभी काकपिट में से मुंह ढंके रिवॉल्वरधारी निकला और सीटों के बीच से चलता हुआ दाईं सीट पर बैठे एक अधेड़ व्यक्ति के करीब आ खड़ा हुआ।

उस व्यक्ति के सिर के बाल सन की तरह सफेद थे और बेतरतीब हुए थे। सफेद रंग का पायजामा-कुर्ता पहने वह व्यक्ति ऐसे नजर आ रहा था मानों महीनों से उसने नहाना तो दूर पानी की शक्ल भी न देखी हो।

मुंह ढांपे व्यक्ति को अपने सामने खड़ा होते देख वह मैला-कुचैला व्यक्ति हड़बड़ा उठा—साथ ही उसकी आंखों में खौफ नाच उठा।

"सामान कहां है तेरा?" मुंह ढांपे व्यक्ति गुर्राया।

जवाब देने के स्थान पर मैले-कुचैले व्यक्ति ने जोरों से थूक सटकी। उसकी आंखों में छाया खौफ और भी गहरा हो गया था।

डरने के कारण उसकी टांगें आपस में इस तरह मिल गईं मानो वह टांगों के नीचे रखी किसी चीज को छुपाने की कोशिश कर रहा हो।

मुंह ढांपे व्यक्ति ने अपने बायें हाथ से उसे बालों से पकड़ा और बेदर्दी से सीट से नीचे गिरा दिया।

उसने सीट के आगे के रिक्त स्थान पर नजर मारी।

एक साधारण-सा एयरबैग पड़ा था वहां।

उसने अधेड़ के बालों को छोड़कर बैग की तरफ हाथ बढ़ाया तो एकाएक ही उस अधेड़ में न जाने कहां से इतनी शक्ति आ गई थी कि अपनी जान की परवाह किये बिना वह व्यक्ति की तरफ पलटा और उसे नीचे गिरा कर ताबड़तोड़ घूंसे बरसाने लगा।

इस बदली स्थिति को देख जहां अन्य यात्री और ज्यादा

https://t.me/Hindiupanyas

भयभीत हो गए—वहीं अपहरणकर्त्ता सकते में आ गए।

मगर जल्द ही उन्होंने स्वयं को इस स्थिति से उभारा और तुरंत दो अपहरणकर्त्ता अधेड़ की तरफ झपटे।

एक ने उसे बालों से पकड़कर परे खींच लिया।

"नहीं...।" अधेड़ पीड़ा भरे स्वर में चीखा—"मैं अपनी जिन्दगी भर की मेहनत को नहीं ले जाने दूंगा।" अपनी तरफ से वह स्वयं को छुड़ाने की पूरी कोशिश कर रहा था—लेकिन कामयाबी नहीं मिल पा रही थी उसे। उस व्यक्ति ने अधेड़ के बालों को बुरी तरह से जकड़ रखा था।

इधर मुंह ढांपे व्यक्ति कराहते हुए खड़ा हुआ और कहर भरी निगाहों से अधेड़ को देखा।

"ढिशुम!" उसकी रिवॉल्वर का दस्ता पूरी शक्ति से अधेड़ के पेट पर पड़ा।

पीड़ा से चीखता हुआ अधेड़ दोहरा हो गया।

मुंह ढांपे व्यक्ति पुनः बैग की तरफ आकर्षित हुआ।

झुककर उसने बैग को उठाकर सीट पर रखा और उसकी जिप खोलकर उसमें रखे कपड़े निकालकर बाहर फेंकने लगा।

तभी उसने एक रोल किया हुआ कागज निकाला।

उस कागज को देख उसकी आंखों में गहरी चमक जाग उठी—जबकि अधेड़ का चेहरा पीला जर्द पड़ गया। मुंह ढांपे व्यक्ति ने रोल किये पेपर के ऊपर चढ़ा रबड़ उतारा और उसे थोड़ा-सा खोलकर उस पर गौर किया—फिर पुनः रोल करके रबड़ चढ़ाया और रोल को अपने कपड़ों में गायब कर दिया।

"खत्म कर दो उसे।" वह गुर्राया।

तुरन्त एक अपहरणकर्त्ता ने जेब से चाकू निकाला और उसका बटन दबाया।

'खट' की आवाज के साथ चाकू का लपलपाता फल बाहर निकल आया।

चाकू देख कई यात्रियों की चीखें निकल गईं।

जो यात्री उस अधेड़ के आसपास की सीटों पर बैठे थे, वे तो बुरी तरह से कांपने लगे थे।

चाकू वाले अपहरणकर्त्ता ने अधेड़ की गर्दन को पकड़ा और दूसरे हाथ में थमा चाकू उसके सीने में घुसा दिया।

अधेड़ के होठों से जिब्ह होने वाले बकरे की सी चीख निकली और वह वहीं गिरकर छटपटाने लगा।

https://t.me/Hindiupanyas

इधर इस दृश्य को देख तीन यात्री बेहोश हो गए। जबकि बाकियों की हालत और ज्यादा खराब होने लगी।

अधेड़ कुछ देर छटपटाया—फिर शांत हो गया।

वह मर चुका था।

मुंह ढांपे व्यक्ति ने हाथ हिलाकर अपने साथियों को इशारा किया और अपनी सीट की तरफ बढ़ा।

उसने अपना बैग उठाकर सीट पर रखा और उसे खोलकर उसमें से एक पिट्ठू बैग-सा निकाला और अपनी पीठ पर बांधकर उसकी बैल्ट कस दी।

वह लाइफ जैकेट थी।

अन्यों ने भी लाइफ जैकेट पहन लीं।

मुंह ढांपे व्यक्ति वहां से हटा और काकपिट की तरफ बढ़ा।

पायलेट के करीब आकर उसने रिवॉल्वर उसकी तरफ तानी।

"इस वक्त हम कहां हैं?" उसने पूछा।

"अमृतसर के ऊपर उड़ रहे हैं।" पायलेट बोला।

"लाहौर कितनी देर में पहुंचेंगे?"

"दस मिनट लग जायेंगे।"

मुंह ढांपे व्यक्ति ने अपनी कलाई घड़ी पर निगाह डाली।

ठीक दस मिनट बाद पायलेट बोला—

"हम लाहौर हवाई अड्डे के ऊपर उड़ रहे हैं।" कहकर उसने हवाई अड्डे के कंट्रोल रूम से सम्पर्क किया और बोला—"हैलो... हमारे प्लेन में सिर्फ पन्द्रह मिनट का ईंधन बचा है...इसलिये प्लीज हमें उतरने की इजाजत दी जाए।"

"सॉरी...।" आवाज हैडफोन के जरिये पायलेट के कानों में पड़ी—"हम प्लेन को उतरने की इजाजत नहीं देते—इस प्लेन को कहीं और ले जाइए।"

पायलेट ने मुंह ढांपे व्यक्ति की तरफ देखा।

"प्लेन को उतरने की इजाजत नहीं मिल रही।" वह व्याकुल स्वर में बोला।

"वापस अमृतसर चलो।" मुंह ढांपे व्यक्ति बोला और वहां से हट गया।

काकपिट से बाहर आकर उसने अपने साथियों को इशारा किया और स्वयं दरवाजे के करीब आ गया। उसके सभी साथी भी

https://t.me/Hindiupanyas

दरवाजे की तरफ बढ़ गये।

सभी के पहुंच जाने के पश्चात् मुंह ढांपे व्यक्ति ने दरवाजा खोला और बाहर छलांग लगा दी। उसके पीछे-पीछे अन्यों ने भी छलांगें लगा दीं।

जैसे ही आखिरी व्यक्ति ने बाहर छलांग लगाई—एयर होस्टेज ने तुरन्त दरवाजा बंद किया और काकपिट की तरफ भागी।

प्लेन से बाहर कूदते ही सभी अपहरणकर्त्ताओं ने पैराशूट खोलने के लिए बटन दबाया।

लेकिन सिर्फ एक का ही पैराशूट खुला।

वह जिसके पास पेपर का रोल था। बाकी किसी का पैराशूट नहीं खुला।

अपने पैराशूट खुलते न देख सभी के होठों से चीखें उबल पड़ीं। और वे द्रुतगति से नीचे की तरफ गिरने लगे।

दो व्यक्ति मुंह ढांपे व्यक्ति के पास से गुजरे तो कपड़े के पीछे ढंके उसके होठों पर फैली विषैली मुस्कान नाच उठी। आंखों में कमीनापन आ गया।

"अलविदा...अब हम कभी नहीं मिलेंगे।" वह हंसते हुए हाथ हिलाते हुए बोला।

नीचे रात की लाइटें जगमगा रही थीं तथा गाड़ियों की हैडलाइट इधर-उधर भाग रही थी।

और फिर—सभी गोलों की तरह एक-एक करके नीचे गिरने लगे।

एक किसी मकान की छत पर गिरा—उस छत को तोड़ते हुए भीतरी कमरे में पहुंच गया। तीन सड़कों पर गिरे और चीथड़ों में तब्दील हो इधर-उधर बिखर गए जबकि एक, एक कार की छत पर इतनी जोरों से गिरा कि कार बुरी तरह पिचक गई और उसमें बैठे तीन व्यक्ति भी उसके साथ नर्क की तरफ रवाना हो गए। मौत ऐसे उन पर टपकेगी—यह तो उन्होंने सोचा भी नहीं था।

ऊपर मुंह ढांपे व्यक्ति वहां से करीब दो किलोमीटर दूर आकाश की सैर करते हुए धीरे-धीरे नीचे उतर रहा था।

जैसे ही उसके पैर जमीन पर लगे—एक साथ कई व्यक्ति उसकी तरफ लपके।

https://t.me/Hindiupanyas

उसके करीब आते ही उन्होंने उसे घेर लिया।

"आपरेशन सक्सैसफुल।" मुंह ढांपे व्यक्ति अपने साथ बंधी बैल्टें खोलते हुए बोला।

तभी एक वैन उनके करीब आ खड़ी हुई और सभी उसमें समा गए।

❑❑❑

"ट्रिन...ट्रिन...।"

फोन की घण्टी बजते ही रीमा राठौर की आंखें ऐसी खुलीं जैसे वह सो नहीं रही थी बल्कि आंखें बंद किये लेटी थी। अंधेरे में उसने टटोलकर बैड स्विच ऑन किया तो जीरो वाट की रोशनी में उसका अंग-अंग लश्कारें मारता नजर आने लगा।

सिर से पांव तक वह पूरी तरह से निर्वस्त्र थी।

वह बैड के करीब पड़े साइड स्टूल की तरफ सरकी, जिस पर रखा फोन बज रहा था।

रिसीवर उठाकर रीमा राठौर ने कान से लगाया।

"हैलो!"

दूसरी तरफ से जो आवाज उसके कान में पड़ी—उसे सुन रीमा राठौर एकदम सीधी बैठ गई। चेहरा एकदम सतर्क नजर आने लगा।

"यस सर।" वह तेजी से बोली—"मैं अभी पहुंच रही हूं।"

"पहुंचने की जरूरत नहीं।" दूसरी तरफ से आवाज आई—"हमारी बात गौर से सुनो।"

"यस सर।"

दूसरी तरफ से जो कुछ बताया गया—उसे सुन रीमा राठौर का चेहरा सख्त हो उठा। आंखों में सख्ती के भाव उभर आये।

"यस सर...मैं अभी रवाना होती हूं।"

".....।"

"यस सर।"

उसने पलंजर दबाया और सिकंदर ठाकरे का नम्बर डायल करने लगी।

"हैलो...।" उसके कान में सिकंदर ठाकरे की अलसाई आवाज आई।

"क्या कर रहे हो ठाकरे?" रीमा राठौर बोली।

"तुम्हारी बहन को खुश कर रहा हूं।" आवाज आई।

https://t.me/Hindiupanyas

"खुश कर दिया?"

"एक बार कर चुका हूं—अब दूसरी पारी शुरू करूंगा।"

उस पारी को स्थगित करो और फौरन यहां पहुंचो।

"खैरियत तो है?"

"जो कहा है—सिर्फ उस पर अमल करो—बाकी बातें यहां होंगी।"

कहकर रीमा राठौर ने रिसीवर रखा और खड़ी हो गई।

उसके खड़े होते ही उसके उभार इस अंदाज में हिले कि अगर कोई उन्हें देखता तो अवश्य ही उसका हार्टफेल हो जाता।

अपने भारी कूल्हे मटकाते हुए वह बाथरूम की तरफ बढ़ गई।

आधे घण्टे बाद सिकंदर ठाकरे रीमा राठौर के बेडरूम में पहुंचा।

इस वक्त रीमा राठौर स्कर्ट पहने हुए थी तथा ऊपर ब्रा पहनकर टाप पहन रही थी।

"बटन मैं बंद कर दूं...।" सिकंदर ठाकरे उसकी छातियों को देखते हुए मुस्कुराया।

"इससे मेरा तो कुछ नहीं जायेगा—हां तुम्हारा नुकसान जरूर हो जायेगा।"

"वो कैसे?"

"तुम्हें बाथरूम में जाना पड़ेगा...।" रीमा राठौर हंसी—"क्योंकि मैं तो हासिल होऊंगी नहीं तुम्हें—सो तुम्हें अपने हाथों को कष्ट देने के लिये बाथरूम में भागना पड़ेगा।"

"लानत!" भुनभुनाया सिकंदर ठाकरे।

रीमा राठौर हंसी।

"इस वक्त क्यों बुलाया?" सिंकदर ठाकरे असल बात पर आते हुए बोला।

रीमा राठौर ने टॉप का आखिरी बटन बंद किया और सिकंदर ठाकरे के सामने बेड पर पालथी मारकर बैठ गई। उसके इस तरह से टांगें फैलाने से उसकी स्कर्ट उसके कूल्हों तक चढ़ गई।

सिकंदर ठाकरे की निगाह सीधा उसकी काले रंग की पैंटी पर पड़ी जो कि स्कर्ट ऊपर उठने से नजर आने लगी।

https://t.me/Hindiupanyas

"मेरी तरफ देखो।" तभी रीमा राठौर बोली।

"क्या खाक देखूं! खुद ही नुमाइश लगाकर बैठ जाती हो और...।"

"ऊपर देखो।" इस बार रीमा राठौर का स्वर गंभीर था।

सिकंदर ठाकरे ने गर्दन सीधी की और रीमा राठौर की तरफ देखने लगा।

तभी पार्वती कॉफी की ट्रे उठाये भीतर प्रविष्ट हुई।

"तीन बजे की फ्लाइट है मैडम।" वह ट्रे उन दोनों के बीच रखते हुए बोली।

फ्लाइट का नाम सुन बुरी तरह से चौंका सिकंदर ठाकरे।

"कहीं जाना है क्या?" वह बोला।

"हां...।"

"कहां?"

"पाकिस्तान।"

बुरी तरह से उछल पड़ा सिकंदर ठाकरे। आंखों में हैरानी के भाव उभरे।

"क्यों?"

"कॉफी पियो।"

सिकंदर ठाकरे ने चुपचाप अपना मग उठा लिया। इस वक्त उसका कलेजा जोर-जोर से धड़क रहा था।

रीमा राठौर ने भी अपना मग उठाया और एक घूंट भर कर बोली—

"तीन घण्टे पहले इण्डियन एयरलाइन्स का बैंगलोर से दिल्ली जा रहा प्लेन हाईजैक हो गया था।"

बुरी तरह से उछल पड़ा सिकंदर ठाकरे।

और लाहौर के एयरपोर्ट के ऊपर एक चक्कर लगाकर वापिस आ गया।

यह एक और झटका था सिकंदर ठाकरे के लिए।

"हाईजैकर लाहौर में ही लाइफ जैकेट पहनकर कूद गए थे और जहाज अमृतसर आ गया।"

सिकंदर ठाकरे की आंखों में सोचें उभर आईं।

"प्लेन हाईजेक करने का जो ड्रामा रचा गया है— उससे तो ऐसा लगता है जैसे हाईजैकर ने सिर्फ पाकिस्तान में जाने के लिये ही यह रास्ता चुना था।"

"प्लेन में एक हत्या भी हुई है।"

https://t.me/Hindiupanyas

"हत्या!"

"हां।"

"किसकी?"

"एस. के. कानितकर की।"

"यह कौन हुआ?"

"हिन्दुस्तान का एक महान वैज्ञानिक था वह।"

सिकंदर ठाकरे की आंखें फैल गईं।

"सिर्फ उसकी हत्या करने के लिये अपहरणकर्त्ताओं ने प्लेन को हाईजैक किया?" वह हैरानी से बोला—"और तुम्हें यह सब पता कैसे चला? जबकि वह सारा काण्ड अभी सिर्फ तीन घण्टे पहले का है।"

रीमा राठौर ने कॉफी का मग खत्म कर ट्रे में रखा और एक सिगरेट सुलगाकर एक भरपूर कश लगाया।

"यह तो तुम जानते ही हो कि मैं गुप्तचर विभाग की एक संस्था 'कम्पनी' की नम्बर वन एजेंट हूं।" वह बोली।

"हां...दिल्ली में सी.एम. पर होने वाले हमले वाले केस में तुमने मुझे अपनी हकीकत बताई थी।"

(विस्तार से जानने के लिये पढ़ें 'सत्यमेव जयते')

"कम्पनी के चीफ का फोन आया था मुझे।"

"ओह।"

"मेरा ख्याल है कि अब तुम समझ गए होगे कि मुझे कैसे पता चला।"

"हां...समझ गया हूं।" सिकंदर ठाकरे सिर हिलाते हुए बोला—साथ ही उसके चेहरे पर ऐसे भाव उभर आए मानो वह किसी बहुत बड़े अफसर के सामने बैठा हो।

"प्रोफेसर एस.के. कानितकर बहुत बड़े साइंटिस्ट थे—पिछले दिनों वे एक ऐसे प्रयोग में जुटे हुए थे जो अगर कामयाब हो जाता तो हिन्दुस्तान दुनिया में एक महाशक्ति बन जाता।"

"वो तो अब भी है।"

"मगर तब दादागिरी दिखाने वाले देश भी उसके सामने बौने हो जाते।"

"अच्छा!" आश्चर्य व्यक्त किया सिकंदर ठाकरे ने।

"हां...।"

"क्या प्रयोग कर रहे थे वे?"

रीमा राठौर ने कश लगाया और नाक से धुएं की दोनाली

https://t.me/Hindiupanyas

छोड़ दी।

"वे एक ऐसी लेजर बीम पर शोध कर रहे थे जो कि परमाणु बम को नकारा कर दे।"

"यानि...।"

"मान लो अगर पाकिस्तान या कोई अन्य देश भारत पर परमाणु आक्रमण करता है तो उस बीम द्वारा उस बम को रास्ते में ही नकारा किया जा सकता है।"

"कमाल है—ऐसा कैसे हो सकता है?" हैरानी से बोला सिकंदर ठाकरे।

"हो सकता है—विज्ञान के युग में वो सब कुछ हो सकता है जिसके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता।"

"कमाल है।" मन्त्रमुग्ध सा बोला सिकंदर ठाकरे।

"यह कमाल प्रोफेसर एस. के. कानितकर ने कर दिया।" रीमा राठौर बोली—"उन्होंने पन्द्रह साल की कड़ी मेहनत से ऐसी बीम का फार्मूला तैयार कर दिया जो कि परमाणु बम को पांच सौ किलोमीटर पहले ही नकारा कर दे।"

"पांच सौ किलोमीटर...।"

"हां।" गम्भीरता से बोली रीमा राठौर—"बस अब मशीन बनाने की कसर रह गई थी। उसी के लिये प्रोफेसर बैंगलोर से दिल्ली आ रहे थे। फार्मूला उनके पास था—पता नहीं कैसे दुश्मन को उसकी पता लग गई और वे भी उनके साथ प्लेन में चढ़ गए।"

"सिफ उस फार्मूले के लिए प्लेन हाईजैक करने का नाटक किया गया था?"

"हां।"

"फार्मूला ले गए हाईजैकर?"

"हां...और उसी फार्मूले के लिए हमें पाकिस्तान जाना है।"

सिकंदर ठाकरे ने पहलू बदला और बोला—

"एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही!"

"क्या?"

"सैंट्रल गवर्नमेंट को जब पता था कि प्रोफेसर फार्मूला ला रहे हैं तो उसे प्रोफेसर की हिफाजत के लिये पहले से ही पुख्ता इंतजाम कर लेने चाहिये थे।"

"तुम क्या समझते हो...सरकार ने ऐसा नहीं किया था?"

"अगर किया होता तो प्रोफेसर की इतनी आसानी से मौत न होती—और न ही फार्मूला देश से बाहर जाता।"

https://t.me/Hindiupanyas

"सरकार ने दो दिन पहले प्रोफेसर की हिफाजत का पूरा बंदोबस्त कर डाला था। यहां तक कि तय किया गया था कि प्रोफेसर को स्पेशल प्लेन से बैंगलोर से दिल्ली लाया जाये।"

"फिर ऐसा किया क्यों नहीं?"

"दो दिन पहले जब प्रोफेसर अपनी प्रयोगशाला से निकलकर प्लेन में जाने के लिये अपनी कार की तरफ बढ़ रहे थे—ठीक तभी इंटैलीजैंस को यह सूचना मिली कि आई.एस.आई. के एजेंट रास्ते में घात लगाये बैठे हैं। सरकार ने फौरन आदेश जारी किये और प्रोफेसर वापिस अपनी प्रयोगशाला में सकुशल पहुंच गए।"

"यानि पाकिस्तान को उस फार्मूले की खबर लग गई थी।"

"हां।" रीमा राठौर कश लगाते हुए बोली।

"फिर?"

"इस फार्मूले की लीकेज के बारे में जांच की गई तो उसी रोज पता चला कि पाकिस्तान को यह खबर देने वाला प्रोफेसर का एक असिस्टेंट मसूद अहमद था।"

"ओह!"

"उसे फौरन जेल में डाल दिया गया।" रीमा राठौर बोली—"अब चूंकि यह खबर पाकिस्तान को लग चुकी थी तो ऐसे में एहतियात और सावधानी बरतनी जरूरी हो गई थी। तब बड़े अधिकारियों की एक बैठक हुई, जिसमें यह निर्णय लिया गया कि प्रोफेसर को एक साधारण व्यक्ति की हैसियत से बैंगलौर से दिल्ली लाया जाये। दुश्मन यही सोचता रहे कि प्रोफेसर अभी अपनी प्रयोगशाला में ही हैं—जबकि वे दिल्ली में होंगे।"

"ओह!"

"तो रातोरात प्रयोगशाला के पीछे की तरफ एक सुरंग खोदी गई और अगले रोज उन्हें साधारण व्यक्ति की तरह प्लेन में चढ़ा दिया गया।"

"कमाल है! इतनी सावधानी के बावजूद दुश्मन को पता कैसे चल गया?"

"यह तो अब जांच करने से पता चलेगा—फिलहाल तो हमें फौरन से पेश्तर वह फार्मूला पाकिस्तान से वापिस लाना है।"

"जबकि हमें यह भी नहीं पता कि पाकिस्तान में वह फार्मूला कहां है?"

"वो तो ढूंढना पड़ेगा।"

"इतनी देर में तो वह फार्मूला पाकिस्तान के वैज्ञानिक

https://t.me/Hindiupanyas

समझ भी जायेंगे।"

रीमा राठौर के होंठों पर मुस्कान नाच उठी।

"प्रोफेसर ने वह फार्मूला अपने बनाये कोड से तैयार किया था। और उस कोड को समझने के लिये पाकिस्तान के वैज्ञानिकों को ज्यादा नहीं तो डेढ़-दो महीने तो सिर खपाना पड़ेगा।"

"ओह।"

"यही नहीं—उस फार्मूले की न तो फोटो खींची जा सकती है—न ही उसकी फोटो कापी की जा सकती है—फ्लैश लाइट या फोटो स्टेट की तेज रोशनी पड़ते ही सारे वर्ड—सारे कोड नष्ट हो जायेंगे। यानि वह फार्मूला एक से दो नहीं बन पायेगा—एक ही रहेगा वह।"

"बड़ी सावधानी बरती प्रोफेसर ने।"

हैरानी से बोला सिकंदर ठाकरे।

"सीक्रेट काम हमेशा ऐसे ही होते हैं।" रीमा राठौर गम्भीर मुस्कान मुस्कुराई।

सिकंदर ठाकरे ने रीमा राठौर की मांसल जांघों पर नजर मारी—फिर उसके खुले गले में से झांकती उसकी छातियों को घूरा। "इन कपड़ों में जाओगी वहां? वह हिन्दुस्तान नहीं मैडम—पाकिस्तान है जहां ऐसे कपड़े पहनने वाली की जो हालत होती है, उसका तुम अन्दाजा भी नहीं लगा सकतीं।"

"जानती हूं।" रीमा राठौर हंसी।

"तो फिर उतारो इन कपड़ों को और...।"

"कपड़े अमृतसर पहुंचकर बदलूंगी।" रीमा राठौर बोली—"क्या पता जिन्दा वापिस लौटूं न लौटूं—इसलिये यह ख्वाहिश तो पूरी कर लूं...।"

"खबरदार.....जो ऐसी बकवास की तो—मरें तुम्हारे दुश्मन।" कहते हुए सिकंदर ठाकरे का गला भर गया।

रीमा राठौर मुस्करा पड़ी। सिकंदर ठाकरे का अपने प्रति स्नेह देख उसका दिल भी भर आया था—लेकिन उसने अपने चेहरे पर ऐसे भाव नहीं आने दिये।

□□□

"फूटी किस्मत—इतनी लाशें बिछाईं—हीरों के शोरूम को लूटा—और पल्ले कुछ भी नहीं पड़ा—उल्टे पल्ले से पांच हजार निकल गए।"

https://t.me/Hindiupanyas

राघव अपने माथे पर हाथ मारते हुए बोला।

दोनों इस वक्त मुम्बई के नटराज होटल के हाल में कोने की एक अपेक्षाकृत अंधेरी टेबल के इर्द-गिर्द बैठे थे। राजनगर से भागकर वे सीधा मुम्बई में आये और सीधा इस होटल में प्रवेश किया।

वैसे उनसे कुछ दूरी पर एक ऊंचे स्टैण्ड पर कलर टी.वी. चल रहा था। लेकिन उनका ध्यान टी.वी. की तरफ नहीं था। वे आपस में बातें करने में मशगूल थे।

राघव की बात पर बलराज गोगिया ने एक गहरी सांस छोड़ी और होंठों पर गम्भीर मुस्कान लाते हुए बोला—"ऊपर वाले को शायद अभी हमारा हिन्दुस्तान से फरार होना मंजूर नहीं। तभी तो हर बार कामयाब होकर भी हमारे पल्ले कुछ भी नहीं लगता।"

"ऐसा सिर्फ इसलिये होता रहा कि हमें हमेशा दूसरों ने प्रयोग किया—हमारा फायदा उठाया दूसरों ने।"

"हां.....तू ठीक कह रहा है।" बलराज गोगिया गम्भीरता से बोला।

"इस बार हम यूज नहीं होंगे यारा...।"

"तो फिर?"

"हम अपने दम पर अकेले ही ऐसा हाथ मारेंगे जिसमें कि हमारा भारत से बाहर निकलने का जुगाड़ हो सके।"

मुस्करा पड़ा बलराज गोगिया।

"तू मुस्करा रहा है? क्या मैंने गलत कहा?"

"गलत तो नहीं कहा तूने—मगर तू जानता है कि अपने दम पर हम दो बार कोशिश कर चुके हैं—और दोनों ही बार कोई दूसरा जिन्न की तरह सामने आ खड़ा हुआ और हम...।"

बात रोक दी बलराज गोगिया ने और वेटर की तरफ देखने लगा, जोकि ट्रे उठाये उनके करीब आ गया था। उसने टेबल पर ब्रेकफास्ट सजाया और वापिस चला गया।

"अब खाना खा—बाकी बातें बाद में...।"

बलराज गोगिया बोला और नाश्ते पर झुक गया।

राघव भी नाश्ता करने लगा।

अभी वे नाश्ता कर ही रहे थे कि तभी वेटर एक प्लेट उठाये उनके करीब आया और प्लेट को रखकर वापिस चला गया।

प्लेट में एक तह किया हुआ कागज पड़ा था।

https://t.me/hindiupanyas

दोनों ने एक-दूसरे को हैरानी से देखा।

"लगता है वेटर किसी और का पत्र गलती से हमें दे गया है।" राघव बोला।

बलराज गोगिया ने आसपास की टेबलों पर निगाह मारी। सभी खाली थीं।

"नहीं...।" वह धीरे स्वर में बोला—"यह पत्र हमारे लिये ही आया है। आसपास की टेबलें खाली पड़ी हैं। ऐसे में साफ जाहिर होता है कि पत्र हमें ही आया है।"

"कमाल है।" राघव उलझे स्वर में बोला—"मुम्बई में आये हमें अभी एक घण्टा भी नहीं हुआ और किसी ने हमें पहचान भी लिया...।"

"तुम्हें याद है...एक बार पहले भी हम यहां आ चुके हैं—जब तुम्हारी मौत की झूठी खबर छपी थी और मैं गुस्से में आकर यहां के अण्डरवर्ल्ड से टकरा गया था।"

"तो?"

"हो सकता है उन्हीं में से कोई यहां हो और उसने हमें देख लिया हो। या यह भी हो सकता है कि विक्की ने हमें देख लिया हो।"

विक्की का नाम आते ही राघव की आंखों के सामने मारथा का चेहरा नाच उठा। मारथा अब विक्की की हो चुकी थी मगर उससे पहले उसने उसे खूब खिलाया था।"

"तू पत्र उठा—देख तो सही किसने लिखा है। अभी पता चल जाएगा।" वह बोला।

बलराज गोगिया ने प्लेट में रखा पत्र उठाकर उसे खोला और पढ़ने लगा।

पुलिस को तुम्हारे मुम्बई पहुंचने का पता चल गया है बलराज गोगिया। पुलिस किसी भी वक्त वहां पहुंच सकती है। अगर मुझे अपना दोस्त समझते हो तो फौरन बाहर निकलो।

बुरी तरह से चौंकते हुए बलराज गोगिया ने हॉल के दरवाजे की तरफ देखा।

वहां कोई भी नजर नहीं आया उसे।

"क्या लिखा है इसमें?" तभी राघव ने पूछा।

बलराज गोगिया ने पत्र उसकी तरफ बढ़ा दिया।

पत्र पढ़कर राघव भी चौंक पड़ा। उसने बलराज गोगिया की तरफ प्रश्न भरी निगाहों से देखा—जैसे पूछ रहा हो कि अब

https://t.me/hindiupanyas

क्या करना चाहिये।

"निगाहों में तो हम आ ही चुके हैं यार...।" बलराज गोगिया बोला—"हो सकता है पुलिस की निगाह भी पड़ गई हो हम पर...।"

"तो?"

"अब तो हमें यह देखना है कि हम पर पुलिस की निगाह पड़ी है या उसकी जिसने हमें यह चिट्ठी लिखी है।" कहते हुए उसने राघव के हाथ में पकड़ी चिट्ठी की तरफ उंगली सीधी की।

"फिर क्या?"

"फिर क्या, चल खड़ा हो जा।"

दोनों नाश्ता बीच में ही रोककर खड़े हो गए।

राघव ने पत्र तह करके अपनी पैंट की जेब में डाल लिया। एक अच्छे बच्चे की तरह बलराज गोगिया की उंगली पकड़े काउन्टर पर पहुंचा। वहां बलराज गोगिया ने बिल पे किया और फिर दोनों होटल के गेट से बाहर आ गये।

गेट के करीब फुटपाथ पर खड़े होकर उन्होंने इधर-उधर निगाह मारी तो बलराज गोगिया को सड़क पार सफेद रंग की टोयोटा के बाहर एक हसीन तरीन औरत खड़ी नजर आई, जोकि उसी की तरफ देख रही थी।

नजरें मिलते ही औरत ने बलराज गोगिया को हाथ हिला कर इशारा किया।

तभी राघव की नजर उस पर पड़ गई।

"वो बुला रही है हमें...।" वह बलराज गोगिया का हाथ दबाते हुए बोला।

राघव की उंगली पकड़े बलराज गोगिया सड़क पर उतरा और सड़क पार करते हुए कार के करीब पहुंचा।

उसने कार के भीतर निगाह मारी।

दो आदमी उसे पहले से ही कार में बैठे नजर आये।

इधर राघव उस औरत को देख रहा था।

मिली स्कर्ट और टॉप पहने वह गोरी चिट्टी युवती ऐसी लग रही थी मानो साक्षात् ऐश्वर्य राय उसके सामने खड़ी हो।

राघव की निगाहों ने उसकी लम्बी तथा सुडौल जांघों पर निगाहें फिराईं। उसके गले में वह झांक नहीं सकता था क्योंकि उसका कद इसकी इजाजत नहीं देता था। उसका सिर ही युवती की कमर तक पहुंच रहा था।

https://t.me/Hindiupanyas

ऐसे में वह उसकी जांघों को देखकर ही उसकी छातियों के साइज का अनुमान लगा रहा था।

इधर जिन्न भी कुनमुनाने लगा था—जैसे वह आंखें खोल कर देख रहा हो कि वह उसके लायक है या नहीं।

बलराज गोगिया ने युवती की तरफ देखा।

"मेरा नाम ऐश्वर्या है।" युवती बोली—"पत्र मैंने ही लिखा था तुम्हें।"

"लेकिन...।"

"अभी बातें करने का वक्त नहीं—पुलिस किसी भी वक्त यहां पहुंच सकती है। इसलिये जो कुछ भी पूछना, रास्ते में पूछ लेना।"

तभी ड्राइविंग सीट पर बैठे व्यक्ति ने हाथ पीछे करके कार का पिछला दरवाजा खोल दिया।

"बैठो।" युवती बोली।

"लेकिन इस तरह हम तुम पर कैसे विश्वास कर सकते हैं—क्या पता तुम लोग ही हमें फंसा रहे होओ और.....।"

तभी राघव ने उसका हाथ दबाया।

बलराज गोगिया ने अपनी बात रोक पहले राघव की तरफ देखा, फिर उधर देखा जिधर कि वह देख रहा था। होटल के गेट के बाहर एक के पीछे एक पुलिस की तीन जिप्सियां रुकीं और उसमें से धड़ाधड़ पुलिस वाले उतरने लगे।

"जल्दी बैठो।" तभी ऐश्वर्या उतावले स्वर में बोली—"कहीं ऐसा न हो कि पुलिस की नजर तुम पर पड़ जाए और हमारे सारे किये-धरे पर पानी फिर जाए।"

सोचने का वक्त नहीं था, सो बलराज गोगिया तुरन्त कार में प्रवेश कर गया।

पीछे-पीछे राघव और ऐश्वर्या भी प्रवेश कर गये।

ऐश्वर्या ने दरवाजा बन्द किया तो ड्राइवर ने तुरन्त कार आगे बढ़ा दी।

ऐश्वर्या ने गर्दन पीछे मोड़ शीशे में से होटल की तरफ देखा—फिर राहत भरी गहरी सांस छोड़ते हुए गर्दन सीधी की।

"उफ! बाल-बाल बचे।"

तभी राघव ने हाथ उठाया और उसकी मांसल जांघ पर फेरते हुए बोला—

"लगता है रोजाना पांच-सात किलोमीटर जॉगिंग करती

https://t.me/Hindiupanyas

हो।"

ऐश्वर्या ने गर्दन झुका कर उसके गालों पर हाथ फेरा—"तुम ठीक कह रहे हो....।"

"तुम्हारी जांघें ही बता रही हैं।" राघव ने उसकी जांघ को हल्के से दबाया।

ऐश्वर्या पुनः मुस्कराई—"बड़े नटखट हो तुम...।" वह बोली।

"पुलिस को हमारा पता कैसे लगा?" तभी बलराज गोगिया बोल पड़ा।

"रघुनाथ से।" ऐश्वर्या उसकी तरफ देखते हुए बोली।

"रघुनाथ कौन?"

"हमारा आदमी था।"

"था?" चौंका बलराज गोगिया।

"हां था...अब वह ऊपर पहुंच चुका है।" ऐश्वर्या गम्भीरता से बोली—"तुम्हारे सैण्ट्रल रेलवे स्टेशन से बाहर निकलते ही उसकी नजर तुम पर पड़ गई थी। कई राज्यों की पुलिस ने तुम्हारे सिर पर ईनाम घोषित कर रखा है। यह उसे भी मालूम था, सो उसने तुम्हारा पीछा किया और तुम्हारे नटराज में पहुंचने के बाद पुलिस को फोन कर दिया।"

"ओह!"

"जबकि उसे पहले बॉस को खबर करनी चाहिए थी। लेकिन उसने पहले पुलिस को खबर की—फिर बॉस को सूचित किया।"

"फिर?"

"फिर क्या...बॉस ने फौरन हमें तुम्हें लाने के लिए रवाना किया और जैकी को रघुनाथ को खत्म करने भेज दिया।"

"लेकिन तुम्हारे बॉस को क्या पड़ी थी हमें बचाने की?" तभी राघव ने सवाल किया।

"यह तो बॉस ही बता सकते हैं।" बोली ऐश्वर्या—"हां, इतना जरूर कहूंगी कि उनके मन में तुम्हारे प्रति कोई खोट नहीं है।"

"यह तो उससे मिलने पर ही पता चलेगा।"

कहते हुए राघव ने अपना हाथ उसकी स्कर्ट के भीतर की तरफ धकेला।

ऐश्वर्या ने फौरन अपनी जांघें सिकोड़ीं और राघव का हाथ बाहर खींचते हुए तनिक नाराजगी भरे स्वर में बोली—"बड़े शरारती

https://t.me/Hindiupanyas

हो तुम...बड़ों से ऐसी हरकतें नहीं किया करते।"

कहकर उसने राघव को बालों से पकड़कर उठाया और बलराज गोगिया की गोद में बिठाते हुए बोली—"बच्चों को अगर इतनी उम्र में ही छूट दे दोगे तो जवान होने से पहले ही यह बूढ़ा हो जाएगा।"

बलराज गोगिया हौले से हंस पड़ा, जैसे ऐश्वर्या ने बचकानी बात कह दी हो।

इधर राघव के होंठों पर भी मुस्कान खेल गई।

उसने ऐश्वर्या की बात के जवाब में कुछ नहीं कहा—बस बलराज गोगिया की गोद में बैठा रहा।

"नाम क्या है तुम्हारे बॉस का?" तभी पूछा बलराज गोगिया ने।

"राबर्ट...राबर्ट बुश।"

"विदेशी है?"

"देखोगे तो पता चल जाएगा।" रहस्यमयी मुस्कान के साथ बोली ऐश्वर्या।

□□□

राबर्ट बुश बलराज गोगिया से इस तरह बगलगीर होकर मिला जैसे कुम्भ के मेले में बिछुड़ा उसका भाई हो।

सफेद रंग की पेंट शर्ट, ऊपर सफेद रंग का ही कोट पहने राबर्ट बुश अपने नाम को चरितार्थ करता शक्ल से ही अमेरिकन नस्ल का नजर आ रहा था।

बलराज गोगिया से मिलकर उसने झुककर राघव से गर्मजोशी से हाथ मिलाया और कुर्सियों की तरफ इशारा करते हुए बोला—"बैठो।"

बलराज गोगिया तथा राघव दो अलग-अलग कुर्सियों पर बैठ गए—जबकि राबर्ट बुश सैंटर टेबल के परली तरफ एक कुर्सी पर बैठ गया।

"कोई तकलीफ तो नहीं हुई पहुंचने में?" उसने पूछा।

बोल तो वह हिन्दी रहा था—मगर उसके हिन्दी बोलने में हो रही कठिनाई साफ नजर आ रही थी।

"तकलीफ कैसी!" राघव बोल पड़ा—"होटल से निकले, कार में बैठे और यहां आ गए।"

राबर्ट बुश ने एक नजर राघव पर डाली, फिर पुनः बलराज

https://t.me/Hindiupanyas

गोगिया की तरफ देखते हुए बोला—"तुम्हें हमारा अहसान मानना चाहिये—अगर हम वक्त रहते तुम्हें बचा नहीं लेते तो इस वक्त तुम दोनों लाशों में तब्दील हो चुके होते।"

बलराज गोगिया के होंठों पर मुस्कान फैल गई। उसने गर्दन नीची कर राघव की तरफ देखा।

राघव तुरन्त कुर्सी से उतरा और हाथ जोड़ते हुए बोला—"आपने हमारी जो जान बचाई, उसका अहसान हम कभी नहीं भुला पायेंगे। आ यारा...।"

बुरी तरह से हड़बड़ाया राबर्ट बुश।

"कहां चले?"

"जहां तकदीर ले जायेगी। हां...हम जहां भी रहेंगे, तुम्हारा अहसान जरूर याद रखेंगे।" बलराज गोगिया खड़ा होते हुए बोला।

"तुम क्या समझते हो—हमने तुम्हें यूं ही छुड़ाया है।"

"तो?"

"तो क्या...हम तुम्हारे काम आये, तुम हमारे काम आओ।"

"तो अहसान क्यों जता रहे हो।" राघव बोला।

"मिस्टर राबर्ट बुश! अहसान वो होता है जिसकी कीमत नहीं वसूली जाती, जबकि तुमने पहले कीमत वसूलने की सोची फिर हमारी जान बचाई। ऐसे में अहसान क्यों जता रहे हो।"

"ओह। सॉरी।" राबर्ट बुश जबरदस्ती मुस्कराया—"मैं अपने शब्द वापिस लेता हूं। बैठो।"

दोनों वापिस कुर्सियों पर बैठ गए।

"अब बोलो क्या चाहते हो तुम?" बलराज गोगिया बोला।

"पहले थोड़ा-थोड़ा ड्रिंक हो जाए, फिर बात करेंगे।"

बलराज गोगिया चुप कर गया।

तभी ऐश्वर्या एक ट्राली धकेलती हुई कमरे में प्रविष्ट हुई। ट्राली पर पीने का सामान रखा हुआ था। ट्राली धकेलने के लिए उसे काफी झुकना पड़ रहा था, जिससे कि उसकी टॉप के खुले गले में से काफी कुछ बाहर को निकला नजर आ रहा था।

राघव की नजर उसकी गुलाबी गोलाइयों पर पड़ी तो फटाक से जिन्न ने आंखें खोलीं और बार-बार गर्दन उचकाने लगा।

ऐश्वर्या सैंटर टेबल के करीब आई और सामान ट्राली से उतार कर सैंटर टेबल पर सजाने लगी।

https://t.me/Hindiupanyas

राघव की निगाहें निरंतर उसकी छातियों पर टिकी रहीं। क्या मजाल जो उसने एक बार भी वहां से निगाहें हटाई हों। सामान सजाते हुए ऐश्वर्या ने राघव की तरफ देखा तो बुरा मुंह बनाते हुए राबर्ट बुश की तरफ देखा।

"यह लड़का कुछ ज्यादा ही बिगड़ा हुआ है बॉस।" वह शिकायत भरे स्वर में बोली—"देखिये न कैसे घूर रहा है! जबकि इतनी उम्र के बच्चे खिलौनों से खेलते हैं।"

राबर्ट बुश ने बलराज गोगिया की तरफ देखा।

"मुझे हैरानी है मिस्टर बलराज गोगिया।" वह बोला—"कि तुमने अपना जोड़ीदार बनाया भी तो एक लड़के को! क्या तुम्हारा कोई रिश्तेदार है यह?"

"मेरा यार है यह।" बलराज गोगिया रहस्यपूर्ण ढंग से हंसा।

"यार...।"

"दोस्त...फ्रैण्ड।"

"कमाल है.....यह लड़का तो तुम्हारे बेटे की उम्र का है और तुम इसे दोस्त कह रहे हो...।" बलराज गोगिया के होंठों पर फैली मुस्कान तेज हो गई।

"मेरा यार मेरी जान है—और तुम इसे लड़का समझने की भूल मत करना। यह जितना दिखाई दे रहा है, उससे कहीं ज्यादा जमीन के नीचे है।"

"क्या मतलब?"

"लगता है दुनिया में नये आये हो—या अण्डरवर्ल्ड में नये हो। वर्ना ऐसा प्रश्न बिल्कुल न करते।"

"मैं कुछ समझा नहीं।" हड़बड़ाया राबर्ट बुश।

बलराज गोगिया ने एक नजर ऐश्वर्या पर मारी, फिर बोला—"दरअसल राघव ऐश्वर्या को मेरे लिये पसंद कर रहा है।"

सुनकर ऐश्वर्या की आंखों में वासना भरी एक चमक उभर आई। साथ ही उसका चेहरा खिला उठा।

"लेकिन हम यारों में एक एग्रीमेंट हुआ है।"

"कैसा एग्रीमेंट?" इस बार ऐश्वर्या बोली।

"यही कि कोई भी चीज चाहे वो खाने-पीने की हो या भोगने की—उसे पहले मेरा यार अच्छी तरह से चैक करे—उसके बाद ही मुझे हरी झण्डी मिलेगी।"

"यानि...।"

https://t.me/Hindiupanyas

"यानि राघव पहले तुम्हें अच्छी तरह से टटोल कर देखेगा—उसके बाद ही मैं तुम्हें पा सकूंगा।"

"फिर तो ड्रिंक भी पहले राघव लेगा।"

"बिल्कुल।"

"अजीब एग्रीमेंट है।"

"यारी है—निभानी तो पड़ेगी ही।" कह कर उसने राबर्ट बुश की तरफ देखा—"तुम क्या कहते हो राबर्ट बुश...क्या मैं ऐश्वर्या के साथ...।"

"हां...हां क्यों नहीं—सच मानो तो मैंने ऐश्वर्या को तुम्हें लाने के लिये भेजा ही इसलिये था।"

"हमें फंसाने के लिए?"

जवाब देने की बजाये राबर्ट बुश हो-हो करते हुए हंस पड़ा।

"तो मैं जाऊं यारा?" तभी राघव बोल पड़ा।

"कहां?"

"तेरे लिये ठोक बजाकर देखने।"

"लेकिन बात...।"

"बात तू कर लेना...मैं चलता हूं।" कहते हुए वह कुर्सी से उतर गया।

"और यह ड्रिंक.....क्या इसे नहीं चखोगे?" राबर्ट बुश बोला—"अगर ऐसे चले गए तो तुम्हारा यार प्यासा रह जायेगा।"

राघव ने बोतल को गर्दन से पकड़ा...उसका ढक्कन खोला और मुंह से लगा लिया।

राबर्ट बुश तथा ऐश्वर्या उसके इस तरह स्काच पीने से बुरी तरह से भौंचक्के रह गए। बोतल जितना वह खुद नहीं था और बोतल खत्म करता जा रहा था।

राघव ने सांस तब ली जब बोतल खाली कर दी।

बोतल को टेबल पर रख उसने बलराज गोगिया की तरफ देखा—"अब तू पी सकता है यारा।" कह कर उसने ऐश्वर्या की तरफ देखा, जोकि फटी-फटी आंखों से उसी को देख रही थी।

"किधर चलना है?" उसने पूछा।

ऐश्वर्या ने राबर्ट बुश की तरफ देखा—जैसे उससे इजाजत मांग रही हो कि वह जाए या नहीं। राबर्ट बुश ने गर्दन हिला कर इशारा किया।

ऐश्वर्या ने राघव को बगलों से पकड़कर उठाया तो राघव

https://t.me/Hindiupanyas

ने तुरन्त उसकी गर्दन में बांहें लपेटते हुए उसकी कमर के गिर्द अपनी टांगें फंसा दीं।

ठीक तभी ऐश्वर्या को अपने पैर पर चुभन का अहसास हुआ।

आश्चर्य से आंखें फट पड़ीं उसकी।

"यह क्या है?" वह बोली।

"क्या?"

"जो मेरे पैर पर चुभ रहा है...।"

"जिन्न...!"

"जिन्न?"

"तुम चलो तो सही—कमरे में चलकर समझाऊंगा कि जिन्न क्या है।"

चेहरे पर असमंजसता के भाव लिये ऐश्वर्या उसे उठाये हुए वहां से हटी और दरवाजे की तरफ बढ़ गई।

❑❑❑

"मेरा ख्याल है अब हमें काम की बात करनी चाहिये।"

दो पैग हलक से नीचे उतारने के बाद बोला बलराज गोगिया।

"तुम ठीक कह रहे हो।" मुस्कराया राबर्ट बुश—"अब हमें काम की बात करनी चाहिये।"

"तो फिर बोलो—क्या चाहते हो तुम?"

राबर्ट बुश ने पहलू बदला और बोला—

"तुम्हें पता है रात इण्डियन एयर लाइन्स का प्लेन हाईजैक हुआ था।"

"नहीं।" हल्के से चौंकते हुए बोला बलराज गोगिया।

"हाईजैकर्स ने एक यात्री की हत्या कर दी थी और प्लेन को लाहौर ले जाकर, पैराशूट लेकर वहां से कूद गए और प्लेन वापिस इण्डिया में आ गया।"

"कमाल है! सिर्फ एक हत्या करने के लिये उन्होंने प्लेन हाईजैक किया?"

"नहीं।"

"तो?"

"वह यात्री कोई साधारण यात्री नहीं था—बल्कि बड़ा वैज्ञानिक था जिसने कि एक ऐसा अविष्कार किया था कि उस

https://t.me/Hindiupanyas

आविष्कार के परीक्षण के सफल होते ही पूरी दुनिया में हिन्दुस्तान की धाक जम जाती।"

"ओह!"

"मैं अमेरिका की गुप्तचर संस्था सी.आई.ए. का एजेंट हूं।"

बुरी तरह से उछल पड़ा बलराज गोगिया—"त...तुम सी.आई.ए. ऐजेंट...।"

"हां...।"

"ओह...अब समझा...तो तुम्हें वो फार्मूला चाहिये।"

"तुम ठीक समझे।" गम्भीरता से बोला राबर्ट बुश—"उस फार्मूले का पता हमें तीन दिन पहले ही चल गया था और हमने उसे हथियाने की पूरी तैयारी भी कर ली थी। लेकिन पाकिस्तान हमसे तेज निकला—हमने तो दिल्ली में फार्मूला हथियाने की तैयारी की हुई थी और पाकिस्तान ने उसे बीच रास्ते में ही उड़ा लिया।"

"ओह।"

"वह फार्मूला इस वक्त पाकिस्तान के कब्जे में है। और वह फार्मूला हमें चाहिये...किसी भी कीमत पर।"

"और तुम चाहते हो कि वह फार्मूला मैं लेकर आऊंगा।"

"हां।"

"और तुम्हें सौंप दूं।"

"बदले में तुम्हें एक करोड़ डालर मिलेंगे...साथ में अमेरिका में एक शानदार बंगला।"

बलराज गोगिया के होंठों पर विष भरी मुस्कान फैल गई।

"मिस्टर अमेरिकन!" वह गुर्राया—"बेशक मैं चोर हूं—कानून ने मुझे जिन्दा या मुर्दा पकड़ने पर ईनाम भी रखा हुआ है। मैं कई कत्ल भी कर चुका हूं। मैं कानून का दुश्मन जरूर हूं—देश का दुश्मन नहीं। अपने देश की मेहनत मैं तुम्हारे हाथों में लाकर रख दूं, ऐसा हरगिज नहीं हो सकता।"

"तुम शायद भूल रहे हो, मैंने तुम्हें पुलिस से बचाया है।"

"तो हमें पुलिस को सौंप दो। मगर हम अपनी भारत मां से गद्दारी हरगिज नहीं करेंगे।"

"गद्दारी तो तब मानी जाती, जब तुम वह फार्मूला हिन्दुस्तान की अलमारी में से चुराते। तुम्हें तो पाकिस्तान जाना है और वहां से...।"

"पाकिस्तान की सेफ से वह फार्मूला अवश्य निकलेगा। अपने देश की अमानत को वापिस लाने के लिये हमारे कई जाबांज जासूस अब तक पाकिस्तान पहुंच भी चुके होंगे.....।"

https://t.me/Hindiupanyas

"लेकिन कामयाब तुम्हें ही होना है।"

"मैं जाऊंगा तब न!"

"दो करोड़ डालर में भी नहीं जाओगे?"

"तुम पचास करोड़ दो, तब भी इन्कार ही होगा। और यह भी सुन लो—अगर मुझे पता चल गया कि वह फार्मूला तुम्हारे हाथ लग गया है तो यह मेरा वादा रहा कि मैं उसे पाने के लिए अमेरिका जरूर पहुंच जाऊंगा।"

राबर्ट बुश के होंठों पर विषैली मुस्कान फैल गई।

"वह फार्मूला मेरे हाथ में ही पड़ेगा और लाओगे भी तुम!"

"तुम्हें शायद बलराज गोगिया के बारे में पूरा मालूम नहीं, तभी ऐसा बोल रहे हो।"

"मैं सी.आई.ए. का एजेंट हूं, कोई घसियारा नहीं। पाकिस्तान की आई.एस.आई. का नम्बर भी हमारे बहुत बाद आता है। हमारा हर अगला कदम आगे की जमीन टटोल कर ही पड़ता है। तुम्हारे और राघव के बारे में पूरी मालूमात हासिल करके ही हमने तुम पर हाथ डाला है बलराज गोगिया।"

"क्या मतलब?" चौंका बलराज गोगिया।

राबर्ट बुश के होंठों पर फैली मुस्कान तीखी हो गई।

"पूरी दुनिया में सी.आई.ए. का जाल फैला हुआ है मिस्टर बलराज गोगिया। पूरी दुनिया की तरह इण्डिया में भी हमारा नाम फैला हुआ है। वहां के अण्डरवर्ल्ड के एक-एक वाशिन्दे पर हमारी नजर है....।"

"ओह!"

"तुम क्या समझते हो पुलिस को सचमुच तुम्हारे यहां आने की खबर लग गई है?"

"क्या मतलब?"

"वो पुलिस नहीं थी जिसे तुमने होटल में दाखिल होते देखा था—पुलिस की वर्दी में वो हमारे आदमी थे। तुम यहां आने में कोई आनाकानी न करो, इसलिये हमने यह चाल चली।"

बलराज गोगिया बुरी तरह से उछल पड़ा। हैरत से उसकी आंखें फट पड़ीं।

"तुम्हारे बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करने के बाद ही रात हमने मीटिंग में यह फैसला लिया था कि तुम्हें ही इस ऑपरेशन पर रवाना करना चाहिये। क्योंकि तुम एक बेहतरीन चोर हो। और एक बार पहले भी पाकिस्तान से अपने देश की अमानत वापिस

https://t.me/Hindiupanyas

ला चुके हो—फार्मूला अभिमन्यु.....याद है न?"

बलराज गोगिया की आंखें फट पड़ीं। मन ही मन वह हैरान हो रहा था कि इतनी सीक्रेट फाइल का राबर्ट बुश को पता कैसे चल गया।

"अब तुम खुद ही अन्दाजा लगा सकते हो कि हमारी पहुंच कहां तक है।"

"यह तुम्हारी पहुंच का कमाल नहीं राबर्ट बुश।" गम्भीरता से बोला बजराज गोगिया—"बल्कि यह उन आस्तीन के सांपों का कमाल है जो जिस धरती का अन्न खाते हैं, उसी धरती में जहर के बीज बिखेरते हैं।"

"तुम कुछ भी कहो—हमारी पहुंच को तो मानते हो न?"

"मानता हूं—फिर भी तुम यह बात दिल से निकाल दो कि मैं तुम्हारे लिये यह काम करूंगा।"

"मेरे लिये न सही—अपने यार के लिये तो करोगे।"

एक तेज झटका लगा बलराज गोगिया के जेहन को। साथ ही उसकी आंखों में कहर भर आया।

"अपने यार को देखोगे?" उसकी हालत देख मुस्कराया राबर्ट बुश—"देखो...।"

कहकर उसने अपनी कुर्सी के हत्थे पर लगा हुआ एक पुश दबाया और कुर्सी पर बैठे-बैठे ही घूम गया।

पीछे दीवार पर एक स्क्रीन उभर आई—फिर उस स्क्रीन पर राघव और ऐश्वर्या की तस्वीरें आयीं।

दोनों बैड पर थे और उनके जिस्मों पर कपड़े का एक भी रेशा नहीं था।

ऐश्वर्या पीठ के बल नीचे लेटी हुई थी तथा राघव उस पर पड़ा ऐसे लग रहा था जैसे किसी भैंस पर बकरा चढ़ा हुआ हो।

तभी राघव के कूल्हे ऊपर उठे।

"ओह गॉड!" आश्चर्य से राबर्ट बुश के मुंह से निकला—"आई डोंट विलीव...। ऐसा कैसे हो सकता है...यह तो...यह तो...।"

मुंह से अल्फाज नहीं निकल पा रहे थे उसके।

राघव के नीचे पड़ी ऐश्वर्या के चेहरे पर ऐसी भाव थे जैसे वर्षों बाद उसकी प्यास बुझ रही हो। उसकी आंखों में दर्द था—मगर दर्द के साथ-साथ चाहत भी थी।

कुछ देर बाद राबर्ट बुश ने कुर्सी वापिस बलराज गोगिया की तरफ घुमाई—

https://t.me/Hindiupanyas

"तुम्हारे यार राघव के बारे में मुझे पता था कि वह हाथी का सा बल रखता है—बेहद खतरनाक भी है—मगर वह इतने बड़े शैतान का मालिक है...यह मुझे नहीं पता था। हां, इतना जरूर पता था कि वह औरतों का रसिक है और जो भी औरत एक बार उसके संसर्ग में आती है, वह उसी की होकर रह जाती है।"

बलराज गोगिया कुछ नहीं बोला—बस उसे घूरता रहा।

"अपने यार को देखा तुमने? कितना खुश नजर आ रहा है। हो भी कैसे न! इसे पता जो नहीं कि यह इस वक्त कैद में है।"

बुरी तरह से उछल पड़ा बलराज गोगिया—साथ ही उसकी आंखों में एकदम से खून उतर आया।

तुरन्त वह कुर्सी छोड़कर खड़ा हुआ और झुककर उसने राबर्ट बुश का गिरहबान पकड़ लिया।

"मेरे यार को अभी और इसी वक्त यहां बुला अमेरिकन कुत्ते...।" वह फुंफकारा—"वर्ना मैं तेरे टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा।"

जरा भी बुरा नहीं माना राबर्ट बुश ने—उल्टे उसके होंठों पर कमीनी मुस्कान रेंग गई।

"मेरी जान लेना इतना आसान नहीं है बलराज गोगिया।" वह बोला—"अपने पीछे देख।"

बलराज गोगिया की गर्दन झटके से पीछे मुड़ी।

चार हट्टे-कट्टे पहलवान सरीखे आदमी बलराज गोगिया को इस तरह देख रहे थे मानो मजबूरीवश रुके हुए हों वे—जबकि उनका दिल कर रहा हो कि वे उसे चीर-फाड़ डालें।"

"मेरा सिर्फ एक इशारा करने की देर है।" राबर्ट बुश बोला—"और यह चारों तुम पर एक साथ टूट पड़ेंगे। तुम लाख ताकतवर सही, फिर भी इन चारों से तुम पार नहीं पा सकोगे—पलभर में ही यह तुम्हारी टांगें-बांहें तोड़ने की कूव्वत रखते हैं।"

बलराज गोगिया को उसकी कही बात सही लग रही थी। उन चारों के भैंसे जैसे शरीर और चौकन्नी निगाहें बता रही थीं कि वे अव्वल दर्जे के लड़ाके हैं। हां, अगर राघव साथ होता तो वह उनसे भिड़ने की सोच सकता था।

"गिरहबान छोड़ो मेरा।" तभी गुर्राया राबर्ट बुश।

मजबूर था बलराज गोगिया। उसने गहरी सांस छोड़ते हुए राबर्ट बुश का गिरहबान छोड़ दिया।

"यह चारों तो सिर्फ एक ट्रेलर हैं बलराज गोगिया।" राबर्ट

https://t.me/Hindiupanyas

बुश अपनी शर्ट ठीक करते हुए हंसा—"मेरे पास इतनी ताकत है कि तुम्हारे जैसे बीस बलराज गोगिया भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"

बलराज गोगिया ने कहर भरी निगाहों से उसे देखा।

"एक करोड़ डालर कम नहीं होते बलराज गोगिया—ऊपर से एक शानदार बंगला—वो भी अमेरिका में और इन सबसे बढ़कर अरबों डालर का तुम्हारा यार...बदले में वह फार्मूला लाना है तुम्हें बस।" कहकर उसने स्क्रीन की तरफ इशारा किया—"यह जो लड़की तुम्हारे यार के नीचे पड़ी है, इसकी ड्यूटी यही है कि यह कैद में भी राघव के साथ रहेगी।"

"मैं राघव से बात करना चाहता हूं।" बलराज गोगिया गम्भीरता से बोला।

"जरूर करो।" मुस्कराया राबर्ट बुश और कुर्सी के हत्थे पर लगा एक और बटन दबा दिया।

"राघव।" वह स्क्रीन की तरफ देखते हुए बोला।

स्क्रीन पर ऐश्वर्या के ऊपर पड़े राघव को एकदम से चौंककर उठते देखा बलराज गोगिया ने।

"वण्डरफुल।" तभी राबर्ट बुश उसकी कमर के नीचे नजर मारते हुए मुस्कराया।

"अबे वण्डरफुल के बच्चे! जानता है किसी की ख्वाबगाह में झांकने से कितना बुरा पाप लगता है।"

स्क्रीन में राघव इधर-उधर देखते हुए बोला—

"कोई तकलीफ तो नहीं हो रही?" हंसा राबर्ट बुश।

"तकलीफ के बारे में इससे पूछ।" राघव ने बैड पर पड़ी ऐश्वर्या की तरफ इशारा किया—"मगर तू बोल कहां से रहा है?"

"वहीं से जहां से तुम ऐश्वर्या को लेकर गए थे। लाइव टेलीकास्ट देख रहे हैं हम। वाकई जादुई जिन्न है तुम्हारे पास।"

"कहीं मेरी ब्लू फिल्म तो नहीं बना रहे?"

"नहीं...हमारा ऐसा कोई इरादा नहीं।" हंसा राबर्ट बुश।

"तो फिर बात क्यों कर रहे हो?" राघव की आवाज स्क्रीन के ऊपर लगे एक स्पीकर से आई।

"तुम्हारा यार तुम से बात करना चाहता है।" कहकर राबर्ट बुश ने बलराज गोगिया की तरफ देखा—"बात कर लो अपने दोस्त से।"

"यारा...।" बलराज गोगिया का गला भर्रा गया।

https://t.me/Hindiupanyas

स्क्रीन में नजर आ रहा राघव बुरी तरह से चौंका। जिन्न जो पल भर पहले छलांगें मार रहा था, एकदम से आंख बंद कर सो गया।

"क्या बात है यारा?" राघव की आवाज स्पीकर में से आई—"खैरियत तो है?"

"हमारे साथ धोखा हुआ है यारा...।" बलराज गोगिया बोला।

"धोखा?"

"इन्होंने तुम्हें कैद कर लिया है।"

बुरी तरह से उछल पड़ा राघव। फिर एकाएक ही उसके होंठों पर मुस्कान फैल गई।

"यह बेवकूफ नहीं जानते कि राघव को कैद में रखना नामुमकिन है।" वह क्रूर लब्जों में बोला।

"लेकिन यारा...।"

"मैं अभी तेरे पास आ रहा हूं।"

कहकर राघव ने कपड़े पहने और जैसे ही बैड से उतरने लगा—राबर्ट बुश एकदम से बोल पड़ा—"फर्श पर पैर नहीं रखना राघव।"

स्क्रीन में राघव ने कैमरे की तरफ क्रूर निगाहों से देखा।

"मेरा यार मेरी जान है राबर्ट!" वह फुंफकारा—"तू मेरी जान को कह रहा है कि मैं कैद में हूं...।"

कहते हुए उसने पुनः फर्श पर उतरना चाहा।

मगर तुरन्त ही उसे अपना पैर वापिस खींच लेना पड़ा।

इधर बलराज गोगिया ने स्क्रीन पर जो देखा, उसे देख उसका कलेजा जोरों से धड़क गया।

पूरे कमरे का फर्श जैसे जादू के जोर से गायब हो गया था। अब वह कुआं नजर आ रहा था, जिसके बीचों-बीच बस बैड वाली जगह सुरक्षित थी।

"वह मौत का कुआं है राघव।" राबर्ट बुश गुर्राया—"इसमें पानी नजर आ रहा होगा तुम्हें...।"

राघव ने नीचे झांक पर देखा तो दो शार्क को पानी में विचरते देख उसका कलेजा धड़क गया।

"तुम्हारा चेहरा बता रहा है कि तुमने शार्क देख ली हैं। अब तुम खुद ही सोच सकते हो कि कुएं को पार करने का परिणाम क्या होगा।"

https://t.me/Hindiupanyas

राघव खा जाने वाली निगाहों से कैमरे को देखने लगा।

"क्या चाहता है तू?" वह गुर्राया।

"वो मैंने तेरे यार को बता दिया है।"

"क्या चाहता है यह यारा?"

"पाकिस्तान भेज रहा है यह मुझे...।" कहकर बलराज गोगिया ने सारी बात कह सुनाई।"

राघव ने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"तू बेवकूफ है राबर्ट बुश।"

"अच्छा।" हंसा राबर्ट बुश।

"अगर तू हमारे बारे में पूरी तरह से जानता होता तो तुझे वह भी पता होता कि हम हर काम मिलकर करते हैं।"

"मुझे मालूम है।" राबर्ट बुश मुस्कराया—"लेकिन इस बार तेरे यार को अकेले अपनी बहादुरी दिखानी होगी।"

"अरे अक्ल के अंधे! जब तू जानता ही है कि हम चोर हैं—फिर यह सब कहने की क्या जरूरत है। सौदा हो गया समझ ले, तेरा काम हो गया—फिर मुझे कैद करने की क्या जरूरत?"

राबर्ट पुनः हंसा।

"तू हंस रहा है?"

"तेरा बात पर हंस रहा हूं—बच्चों की तरह बहला जो रहा है मुझे तू।"

"मैं बहला रहा हूं?"

"मैं जानता हूं कि तुम लाख चोर सही—लेकिन देश के प्रति तुम्हारे दिल में वही जज्बा है जो एक देशप्रेमी के दिल में होता है। तुम किसी भी सूरत में मुझे वह फार्मूला लाकर नहीं दोगे। इसलिये मुझे यह कदम उठना पड़ा।"

सहसा ही राघव ऐश्वर्या पर झपटा और उसकी छातियों पर बैठकर उसकी गर्दन दबोच ली।

ऐश्वर्या जोकि अभी तक निर्विकार सी बैड पर लेटी हुई थी, इस बदली स्थिति से बुरी तरह से बौखला गयी।

"मुझे बाहर निकाल राबर्ट...।" स्पीकर में से राघव की गुर्राहट उभरी—"वर्ना मैं तेरी इस लौंड़िया की गर्दन तोड़ दूंगा।"

"हा....हा.....हा।" जोरों से हंसा राबर्ट बुश।

"मैं गर्दन तोड़ने जा रहा हूं।"

"तोड़ दो.....मुझे कोई फर्क नहीं होगा—लेकिन इतना जान लो तुम्हारा टाइम पास करने के लिये मेरे पास बस यही एक पीस

https://t.me/Hindiupanyas

है। और नहीं मिलेगी तुम्हें। अब यह तुम्हारी मर्जी है कि तुम अकेले वक्त गुजारना चाहते हो या ऐश्वर्या के साथ ऐश करके टाइम पास करना चाहते हो।"

राघव के चेहरे पर मजबूरी उभर आई।

"इसे छोड़ दे यारा।" तभी बलराज गोगिया बोला।

राघव ने गहरी सांस छोड़ते हुए ऐश्वर्या की गर्दन छोड़ दी।

"तू चिन्ता मत करना यारा।" बलराज गोगिया बोला—"मैं बहुत जल्द वह फार्मूला लाकर तुम्हें आजाद करा लूंगा।"

कहकर उसने राबर्ट बुश की तरफ देखा—

"मेरे पाकिस्तान जाने का बन्दोबस्त करो राबर्ट बुश।"

राबर्ट ने मुस्कराते हुए बटन दबा दिया।

तुरन्त स्क्रीन गायब हो गई।

"तुम वाकई सच्चे दोस्त हो!" वह बोला—"मुझे उम्मीद ही नहीं पूरा विश्वास है कि तुम कामयाब होकर लौटोगे।"

"मेरे पाकिस्तान पहुंचने का बन्दोबस्त करो।" बलराज गोगिया ने अपनी बात दोहराई।

"पाकिस्तान तुम अकेले नहीं जाओगे।"

"तो?"

राबर्ट बुश ने कुर्सी के बांये हत्थे पर लगा एक बटन दबाया।

एक मिनट में ही एक सिर से पैर तक हाय-हाय कर देने वाली युवती कमरे में दाखिल हुई।

बलराज गोगिया ने उसका और ऐश्वर्या का मिलान किया तो वह युवती उसे हर तरफ से ऐश्वर्या से इक्कीस ही नजर आई।

"यह सायरा है—सायरा बानो।" राबर्ट ने उस युवती का परिचय करवाया—"तुम इसके साथ पाकिस्तान जाओगे।"

"लेकिन...।"

"वहां तुम्हें किसी भी चीज की जरूरत होगी—वह तुम्हें इससे हासिल हो जाएगी।"

"बात तो ठीक है, मगर मैं अकेला जाना पसंद करूंगा पाकिस्तान में।"

"सायरा के बिना तुम पाकिस्तान में नहीं जाओगे।"

"अजीब जबरदस्ती है।"

"तुम जैसा चाहो सोच सकते हो। मगर तुम्हें सायरा के साथ ही जाना पड़ेगा।"

https://t.me/Hindiupanyas

बलराज गोगिया ने गहरी सांस छोड़ते हुए सायरा की तरफ देखा।

सायरा ने मुस्कराते हुए बांई आंख दबा दी।

हड़बड़ाकर बलराज गोगिया परे देखने लगा।

❑❑❑

एक भयानक मुस्कान रेंग गई सतीश रावण के होंठों पर। आंखों में हजारों वाट की चमक उभर आई। उसकी चमकती आंखें उस व्यक्ति पर टिकी थीं जिसकी उंगलियों से अभी-अभी सिगरेट इस तरह गिरी थी मानो अचानक गिर गई हो। जबकि सिगरेट उसने जानबूझकर नीचे गिराई थी।

इस वक्त वह दादर रेलवे स्टेशन पर ट्रेन में बैठा था।

पुलिस से बचने के लिये वह मुम्बई से कूच करने के लिये ही ट्रेन में बैठा था। मगर उस आदमी को जानबूझकर सिगरेट गिराते देख वह मुस्कुरा पड़ा था और उसने फिलहाल अपना मुम्बई से निकलने का फैसला ड्राप कर दिया था।

तुरन्त वह सीट से उठा और ट्रेन से बाहर निकल आया।

तब तक वह आदमी नई सिगरेट सुलगा चुका था और उसके कश लगाते हुए वह इधर-उधर देख रहा था। जैसे किसी की तलाश हो उसे।

उसके दांये हाथ में एक ब्रीफकेस लटक रहा था, जिसे उसने इस मजबूती से पकड़ रखा था मानो उसमें बहुत कीमती चीज हो।

सतीश रावण को ऐसे आदमियों के लक्षण पूरी तरह से समझ में आ गए थे, जोकि अण्डरवर्ल्ड से सम्बन्धित थे। उसने एक स्टाल से विल्स का पैकेट लिया। एक सिगरेट निकालकर सुलगाई और उस व्यक्ति के सामने आकर सिगरेट बिल्कुल उसी अंदाज में गिराया था, जैसे कि उसने गिराया था। सिगरेट गिराने के साथ ही वह उसकी तरफ देखते हुए मुस्कुराया।

उस आदमी ने झुककर सतीश रावण की गिरी सिगरेट उठाई और बोला—

"आपकी सिगरेट गिर गई है...।"

"कोई बात नहीं—तुम पी लो।" सतीश रावण बोला।

और उस वक्त वह मन ही मन चौंक पड़ा, जब उस व्यक्ति ने ब्रीफकेस उसकी तरफ बढ़ा दिया।

https://t.me/Hindiupanyas

"आपका बैग।" वह बोला।

सतीश रावण तो उस बैग को हथियाने के चक्कर में नीचे उतरा था। उस आदमी की हरकत देखकर वह इस नतीजे पर पहुंचा था कि वह अण्डरवर्ल्ड से सम्बन्धित है और किसी का इन्तजार करता सिगरेट गिरा कर उसे आकर्षित कर रहा है। दूसरा व्यक्ति उसके पास आता और कोड बात करता, फिर दोनों के बैग बदल जाते।

मगर यहां तो उसने बैग सतीश रावण को दे दिया था, और कुछ मांगा भी नहीं था।

ऐसे में उसका चौंकना स्वाभाविक ही था।

ब्रीफकेस कोई खास भारी नहीं था। फिर भी कुछ तो होगा—यही सोचकर उसने वहां से खिसक लेना ही उचित समझा। कहीं ऐसा न हो कि ब्रीफकेस का असली हकदार वहां पहुंच जाए और कोई लफड़ा खड़ा हो जाए।

उसने तुरन्त एक तरफ का रुख किया और तेज कदम चलते हुए सीधा टायलेट की तरफ बढ़ गया। यह इंसानी फितरत होती है कि कोई बन्द चीज किसी को मिल जाए तो वह जल्द से जल्द उसे देखना चाहता है।

बेशक सतीश रावण भेड़िया था, शैतान आदमी था वह—फिर भी फितरत तो उसकी इंसानी ही होनी थी।

टायलेट में प्रवेश कर उसने दरवाजा बन्द किया और ब्रीफकेस को खोल कर भीतर झांका। पांच-पांच सौ की दो गड्डियां पड़ी थीं ब्रीफकेस में।

"एक लाख रुपया!" वह बड़बड़ाया—"कोई नया-नया स्मग्लर होगा। अगर कोई बड़ा होता था दस-बीस लाख से कम क्या होता।"

"चलो इतने ही सही, कुछ तो हासिल हुआ।"

यह सोच कर उसने एक गड्डी उठाई। फिर जैसे ही उसने गड्डी उठाई, गड्डी के नीचे उसे सफेद रंग का बंद लिफाफा नजर आया।

उसने लिफाफे को भी उठा लिया और ब्रीफकेस को बंद कर एक खूंटी पर टांगा और दोनों गड्डियां अपनी जेबों में पहुंचा लिफाफे को फाड़ा और भीतर झांका।

तह किया हुआ कागज था उसमें।

हो सकता है यह कोई ऐसी चिट्ठी हो जिससे कि उसके बारे

https://t.me/Hindiupanyas

न्यारे हो जाएं।

यही सोचकर उसने पत्र बाहर निकाला और उसकी तह खोलकर जैसे ही उसे पढ़ा—

बुरी तरह से उछल पड़ा वह।

जेहन को इतना जबरदस्त झटका लगा उसको मानो चार सौ चालीस वोल्ट का तार छू गया हो। पत्र उसी को लिखा हुआ था। यह बात झटका देने के लिये कम नहीं थी।

उसने पुनः पत्र पढ़ा।

मुम्बई से दिल्ली जाने के लिये एक लाख बहुत होंगे सतीश रावण—फौरन प्लेन से दिल्ली पहुंचो—हम दिल्ली एयरपोर्ट पर तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं।

सतीश रावण का दिमाग नकारा होकर रह गया।

कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था उसके कि यह लफड़ा क्या है—और उसके इस कथित दोस्त को कैसे पता चल गया कि वह उसे दादर रेलवे स्टेशन पर मिलेगा। और वह तो ट्रेन में बैठा था। वहां से उतर कर वह खुद बैग वाले के पास आया था।

उसने अपने जेहन में उमड़ रहे इन सवालों को फिलहाल वक्ती तौर पर टाला और पत्र के बारे में सोचने लगा कि वह उस पर अमल करे या न करे।

एक लाख रुपया उसके पास था। वह उन रुपयों पर सब्र करके वहां से आराम से निकल सकता था। लेकिन उसे सब्र कहां था। वह तो करोड़ों अरबों की चाहत रखने वाला था।

जो आदमी उसे एक लाख रुपये प्लेन की टिकट के दे सकता है, वह उसे करोड़ों भी दे सकता है। अवश्य ही कोई बहुत बड़ा सौदा होगा।

यहीं सोचकर उसने दिल्ली जाने का फैसला किया और पत्र को तह करके जेब में डाला और टायलेट से बाहर आ गया।

❑❑❑

दोपहर बाद तीन बजे प्लेन दिल्ली एयरपोर्ट पर उतरा।

सतीश रावण एयरपोर्ट से बाहर आया और एक तरफ खड़े होकर इधर-उधर देखने लगा।

उसे उस व्यक्ति का इन्तजार था जो वहां उसका इन्तजार कर रहा था।

https://t.me/Hindiupanyas

"हैलो...।" तभी उसके पीछे से शहद में डूबी आवाज उभरी।

सतीश रावण ने तुरन्त गर्दन पीछे मोड़ी।

राल टपक पड़ी सतीश रावण की।

चीज ही ऐसी थी वह कि अच्छे-अच्छों की राल टपक पड़े।

एक तो ऊपर वाले ने उसे जवानी ही थोक के भाव बख्शी थी। ऊपर से उसका पहनावा ही ऐसा था। ऐसा लग रहा था जैसे उसने मजबूरी में वे कपड़े पहन रखे थे—वर्ना उसे कपड़ों से एलर्जी थी।

काले रंग की मिनी स्कर्ट—टॉप उसी हिसाब से शार्ट—जिसके गले में से उसकी भारी और शानदार छातियां नुमायां हो रही थीं।

सतीश रावण अपने धड़कते दिल पर किसी तरह काबू पाये जबरदस्ती मुस्कुराया।

"मैं तुम्हारा ही इन्तजार कर रही थी। वह युवती अपने मोतियों जैसे दांत चमकाते हुए बोली—"आओ...।" कहकर वह दाईं तरफ पार्किंग की तरफ बढ़ने लगी।

सतीश रावण उसके पीछे-पीछे चलता उसके कूल्हों के ऊपर-नीचे होने का करतब देखते हुए भीतर के भारीपन का अंदाजा लगा रहा था।

पार्किंग के करीब जाकर युवती ने उसे वहीं रुकने के लिये कहा और स्वयं भीतर प्रवेश कर गई।

शीघ्र ही वह एक मर्सीडीज चलाती हुई बाहर निकली और साइड को झुकते हुए परली तरफ का दरवाजा खोल दिया।

सतीश रावण उसके बराबर वाली सीट पर बैठ गया।

युवती ने कार आगे बढ़ा दी।

"तुमने बुलाया था मुझे?" एयरपोर्ट से बाहर आते ही पूछा सतीश रावण ने।

"नहीं...।" सामने सड़क पर निगाहें जमाये हुए बोली युवती—"मैं तो सिर्फ एक रखैल हूं चीफ की।"

"मेरा पता कैसे लगा?"

"यह तो चीफ को ही पता होगा। उन्होंने तो बस मुझे तुम्हारी तस्वीर देकर यह कहा था कि तुम एयरपोर्ट पहुंचो, तो मैं तुम्हें ले कर उनके पास पहुंचा दूं।"

"तुम्हारा चीफ कौन है?"

"हम उन्हीं के पास जा रहे हैं।" युवती हंसी।

https://t.me/Hindiupanyas

सतीश रावण ने उसकी गोरी तथा चिकनी जांघों पर नजर मारी और बिना हिचके उसकी जांघ पर हाथ रख दिया। युवती ने जरा भी एतराज नहीं किया, बल्कि वह खिलखिला उठी।

"ऐसे हाथ फेरोगे तो वक्त से पहले ही पिघल जाओगे। सब्र करो, मैं तुम्हें पूरी की पूरी हासिल हो जाऊंगी।"

"नाम क्या है तुम्हारा?" बिना उसकी जांघों से हाथ हटाये बोला सतीश रावण।

"मंजुला।"

सतीश रावण ने उससे और कोई सवाल नहीं किया—बस युवती की जांघों पर हाथ फेरता रहा।

❑❑❑

साढ़े तीन बजे मर्सीडीज एक शानदार दो मंजिला कोठी के लम्बे चौड़े गेट में प्रविष्ट हुई और ड्राइव-वे पार करती हुई कम्पाउन्ड के सामने आकर खड़ी हो गई।

"आओ न...।" अपनी तरफ का दरवाजा खोलते हुए वह बोली और बाहर आ गई।

सतीश रावण परली तरफ का दरवाजा खोलकर बाहर निकला और कम्पाउन्ड में आ गया, जहां पर कि मंजुला पहुंच चुकी थी।

मंजुला ने कोठी का दरवाजा खोला और भीतर प्रवेश कर गई।

पीछे-पीछे सतीश रावण था।

कोठी के भीतर की साज सज्जा देखकर ही सतीश रावण समझ गया कि मुर्गा काफी तगड़ा है।

मंजुला उसे लिये एक ऐसे कमरे में आई, जोकि एक शानदार आफिस का रूप लिये हुए था।

दाईं तरफ एक लम्बी आफिस टेबल लगी थी, जिस पर कि एक फोन, इन्टरकाम, लेजर तथा अन्य सामान रखा था। उसके पीछे एक शानदार रिवाल्विंग चेयर थी जोकि खाली पड़ी थी।

टेबल के इस तरफ चार विजिटर्स चेयर थीं। फर्श पर वाल टू वाल कालीन बिछा हुआ था।

"बैठो...।" मंजुला सतीश रावण को बड़ी अदा से देखते हुए बोली।

सतीश रावण ने एक भरपूर निगाह उसकी शानदार छातियों

https://t.me/Hindiupanyas

पर डाली और आगे बढ़कर एक कुर्सी पर बैठ गया।

मंजुला मुड़ी और आफिस से बाहर निकल गई।

तभी आफिस चेयर के पीछे वाली दीवार का एक हिस्सा हल्की सी आवाज के साथ एक तरफ हटने लगा।

सतीश रावण की निगाहें उस स्थान पर टिक गईं—साथ ही वह पूरी तरह से सतर्क हो गया।

दरवाजे में से जो शख्स बाहर निकला, वह किसी भी तरह से गुण्डा, बदमाश या स्मगलर नजर नहीं आ रहा था, उसकी मोटी तोंद नीचे को लटक रही थी—चेहरा ऐसे था मानो चुसा हुआ आम। सिर पर बाल नाम की कोई चीज नहीं थी।

गहरे रंग का पायजामा कुर्ता पहने वह व्यक्ति अपनी कुर्सी की तरफ बढ़ा तो उसके हर कदम पर उसकी तोंद हल्के से उछल जाती।

अपनी कुर्सी पर वह ऐसे बैठा मानो उसमें फंस रहा हो।

"तो तुम हो चीफ?" बिना कोई दुआ-सलाम किये या हाल-चाल पूछे, सतीश रावण ने सवाल दाग दिया।

"हां।" वह मोटी तोंद वाला बोला—"बंदे को नारायण दास बतरा कहते हैं।"

"मेरा पता कैसे चला?" सतीश रावण ने वह सवाल किया जो उसी वक्त से उसके जेहन में घुमड़ रहा था, जब से उसने पत्र पढ़ा था।

नारायण दास बतरा मुस्कुरा पड़ा।

"मेरे लिये किसी को भी ढूंढ निकालना कोई मुश्किल काम नहीं—बस मुझे यह पता होना चाहिए कि वह किस इलाके में है।"

"मुझे कैसे ढूंढा?"

"तुम्हारा पता था मुझे कि तुम मुम्बई में हो—नासिक में जो कारनामा तुमने कर दिखाया था वह काबिले तारीफ था। तुम्हारी तस्वीर मेरे पास थी। मैंने उस एक तस्वीर की कई कापियां निकलवा लीं और अपने आदमियों को मुम्बई के हर रेलवे स्टेशन, बस अड्डे तथा एयरपोर्ट पर तैनात करते हुए यह हिदायत दे दी कि वे जानबूझकर ऐसी हरकतें करते रहें जिससे कि अण्डरवर्ल्ड से सम्बन्धित व्यक्ति उसकी तरफ आकर्षित हों।"

"ओह।"

"मुझे पूरा यकीन था कि तुम्हारी नजरें भी मेरे किसी आदमी पर पड़ेंगी और तुम उससे वह बीफकेस हथियाने की

https://t.me/Hindiupanyas

कोशिश करोगी, जोकि मैंने हर आदमी को दे रखा था। अगर कोई दूसरा उनके करीब आता तो वे फिर समझ जाते कि वो तुम नहीं हो। सो वे उसे भगाकर या इग्नोर कर पुनः वही हरकत करने लगते—तब तक जब तक कि तुम नहीं मिल जाते।"

"यानि मुझे फांसने के लिये तुमने जगह-जगह पिंजरे में रोटी के टुकड़े लगा दिये थे।"

"तुम ऐसा कह सकते हो।"

"बुलाया क्यों मुझे?" सतीश रावण असल बात पर आते हुए बोला।

"जाहिर है काम के लिये ही बुलाया है—कोई पूजा तो करनी नहीं मुझे तुम्हारी...।"

"काम बोलो।"

नारायण दास बतरा ने बड़ी मुश्किल से पहलू बदला और बोला—

"पचास करोड़ कमाना चाहोगे?"

पचास करोड़ का नाम सुन सतीश रावण का कलेजा जोरों से धड़क उठा। मगर तुरंत ही उसने स्वयं पर काबू पाया और बोला—

"कहीं डाका मारना है क्या?"

"ऐसा ही समझ लो।"

"कहां?"

"पाकिस्तान में।"

बुरी तरह से उछल पड़ा सतीश रावण।

"पाकिस्तान में।"

"हां।"

"क्या वहां के बैंकों में इण्डियन करेंसी भरी पड़ी है या अमेरिकन डालर जो...।"

"किसी बैंक को नहीं लूटना वहां के।"

"तो फिर किसे लूटना है?"

"एक फार्मूला चुराना है वहां से।"

एक और झटका लगा सतीश रावण को—"कैसा फार्मूला?"

नारायण दास बतरा ने उसे उस फार्मूले के बारे में सब कुछ बताया—।

आंखें फट पड़ीं सतीश रावण की। कलेजे की धड़कन असामान्य हो गई।

https://t.me/Hindiupanyas

किसी तरह उसने स्वयं पर काबू पाया और बोला—

"फार्मूले के बारे में तो तुमने मुझे बता दिया—अब यह भी बता दो वह फार्मूला है कहां?"

"पाकिस्तान में।"

"वो मैं सुन चुका हूं। मुझे यह बताओ, पाकिस्तान में कहां है फार्मूला?"

"इसका पता तुम्हें खुद लगाना होगा।"

"क्या मतलब?"

"अभी रात ही तो चोरी हुआ था फार्मूला। चोर चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो, चोरी का माल हाथ में आते ही वह कुछ अरसे के लिये गायब हो जाता है—फिर उसके बाद जब मामला कुछ ठण्डा पड़ जाता है, वह तभी बिल से बाहर निकलता है। तुम्हें पचास करोड़ इसी बात के मिल रहे हैं कि तुम उस बिल को ढूंढो और चोरी का माल हासिल करो।"

"तुम कौन हो?" सतीश रावण उसे अर्थभरी निगाहों से घूरते हुए बोला।

मुस्कुरा पड़ा नारायण दास बतरा।

"तुमसे बड़ा हूं।"

"हरामी?"

नारायण दास बतरा का चेहरा कानों तक लाल हो उठा। आंखों में कहर उभर आया।

"मेरे ठिकाने पर मुझे गाली निकालने वाला जिन्दा नहीं रहता...।" वह गुर्राया।

"बुरा क्यों मान रहे हो नारायण दास बतरा—तुमने कहा कि तुम मुझसे बड़े हो। मैं तो हूं ही हरामी—ऐसे में मैंने यही समझा कि तुम मुझसे बड़े...।"

"बस।" हाथ उठाते हुए गुर्राया नारायण दास बतरा—"अभी नहीं बोलना।"

सतीश रावण चुप हो मुस्कुरा पड़ा।

नारायण दास बतरा ने दो-तीन गहरी सांसें छोड़कर स्वयं को नार्मल किया और बोला—"बोलो—करोगे हमारा काम?"

"पहले अपने बारे में तो बोलो जनाबे आला—ऐसे कैसे बोल दूं।"

"मैंने बताया तो...।"

"मैं यह नहीं जानना चाहता कि तुम मुझ से बड़े हो या

https://t.me/Hindiupanyas

छोटे—मुझे यह बताओ कि तुम हो कौन—और क्यों उस फार्मूले को पाना चाहते हो?"

"मैं कौन हूं, क्या हूं, उस फार्मूले का मुझे क्या करना है—इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं होना चाहिये। तुम्हें तुम्हारे काम की भरपूर कीमत मिल रही है इसलिये...।"

"सौ करोड़...।" एकदम से बोल पड़ा सतीश रावण।

उछल पड़ा नारायण दास बतरा।

"क्या?"

"सौ करोड़।"

"क्या सौ करोड़?"

"फार्मूला चुराकर लाने की कीमत।"

नारायण दास बतरा ने खा जाने वाले निगाहों से उसे घूरा।

"तुम जानते हो तुम क्या मांग रहे हो?" वह गुर्राया।

हंस पड़ा सतीश रावण।

"मिस्टर नारायण दास बतरा।" "वह बोला—"पढ़ाई के दौरान मैं बाकी के सभी सबजैक्टों में निकम्मा था मगर मैथमैटिक्स में मैं अव्वल था। सौ करोड़ एक अरब को कहते हैं—समझे।"

"मुझे मालूम है कि सौ करोड़ का अरब बनता है।" बुरा मुंह बनाया नारायण दास बतरा ने।

"फिर पूछ क्यों रहे हो?"

"तुम अपनी कीमत बहुत ज्यादा लगा रहे हो सतीश रावण! पचास करोड़ कम नहीं होते।"

"कम तो पचास लाख भी नहीं होते—मैं अरबों की चीज के एक अरब मांग रहा हूं।"

"लेकिन....।"

"चेहरे से इतने देशभक्त तो नजर आते नहीं तुम जो पचास करोड़ पल्ले से खर्च करके फार्मूले को लाकर सरकार को सौंप दोगे। अवश्य ही तुमने किसी देश की सरकार के साथ उस फार्मूले का सौदा किया है—और ऐसे सौदे हमेशा अरबों-खरबों में ही होते हैं।"

नारायण दास बतरा ने बेचैनी से पहलू बदला।

"फिर भी तुम बहुत ज्यादा मांग रहे हो।" वह फंसे स्वर में बोला।

"तो खुद ही यह काम कर लो—सौ करोड़ की बचत हो जाएगी।"

https://t.me/Hindiupanyas

नारायण दास बतरा ने पुनः पहलू बदला।

"तुम क्या समझते हो नारायण दास बतरा! अपना फार्मूला चोरी हो जाने पर भारत सरकार चुप बैठी रहेगी? अब तक तो कई इन्टैलीजेंस ऐजेंसियां सक्रिय हो उठी होंगी और कई तो पाकिस्तान पहुंच भी चुकी होंगी। ऐसे में तुम खुद सोच सकते हो कि यह काम कितने खतरों से भरा है। हिन्दुस्तानी जासूसों की आंखों में धूल झोंकना—पाकिस्तानी हुकूमत की ऐसी-तैसी कर फार्मूला वापिस लाना—यह कोई साधारण चोरी नहीं है। यह बात तुम्हारे जेहन में भी है। ऐसे में कोई बड़ी बात नहीं कि तुमने किसी देश के साथ सौ करोड़ डालर का या इससे भी ज्यादा का सौदा किया हो। उस हिसाब से तो मुझे मिलने वाला सौ करोड़ रुपया चिड़िया का चुग्गा ही बनता है। फिर भी अगर तुम्हें यह ज्यादा नजर आता है तो तुम कोई दूसरा ढूंढ लो।"

"ठीक है।" गहरी सांस छोड़ी नारायण दास बतरा ने—"मुझे मंजूर है। तुम्हें सौ करोड़ मिलेगा।"

"पच्चीस करोड़ एडवांस—साथ में सारा ताम-झाम।"

"तामझाम.....।"

"क्या अकेले करूंगा चोरी?"

"चोरी तो तुम्हे अकेले ही करनी पड़ेगी। हां, जिस चीज की तुम्हें जरूरत होगी, वह मुहैया हो जाएगी तुम्हें।"

सतीश रावण ने कुछ पलों के लिये सोचा—फिर सिर हिलाते हुए बोला—

"ठीक है—मुझे मंजूर है। अब रहा पच्चीस करोड़ एडवांस।"

"मेरी तरफ से बेशक पचास करोड़ ले लो—मगर उसे रखोगे कहां? पाकिस्तान साथ ले जाओगे?"

सतीश रावण चुप रहा।

"अगर यहीं कहीं छुपाकर जाओगे तो हो सकता है पीछे से कोई लूट ले। इसलिये मेरी मानो, वापिस आकर पूरी की पूरी रकम ले लेना—आगे जो तुम चाहो।"

सतीश रावण ने पुनः सोचा।

नारायण दास बतरा की बात उसे सही लगी। पच्चीस करोड़ को साथ लादे रहना सिवाये बेवकूफी के और कुछ न था।

"ठीक है।" उसने गहरी सांस छोड़ी—"मैं वापिस आकर ले लूंगा। लेकिन सौ करोड़ मिलने के बाद ही तुम्हें फार्मूला मिलेगा।"

"सौ करोड़ किस रूप में लोगे?"

https://t.me/hindiupanyas

"हीरों की सूरत में।"

"पहचान है हीरों की?"

सतीश रावण मुस्कुरा पड़ा। अब वह उसे क्या बताता कि वह कौन है। अगर उसे बताता कि वह वो भेड़िया है जिसने नामालूम कितने ही जिस्मों में प्रवेश कर उनके तजुर्बों को हासिल कर रखा है—जिसने धर्मराज को भी कई बार हिला डाला था—तो शायद इस वक्त नारायण दास बतरा को अटैक हो चुका होता।

"तुम नकली हीरे देकर देख लेना।" वह बोला।

"हीरे असली ही मिलेंगे तुम्हें।" बोला नारायण दास बतरा—"मैंने तो यूं ही पूछा था।"

सतीश रावण ने पहलू बदला और बोला—

"आज रात तुम्हें पाकिस्तानी सीमा में दाखिल करा दिया जायेगा। उससे आगे के रास्ते तुम्हें खुद तलाशने होंगे—इस्लामाबाद तक तुम अपनी हिफाजत और अक्ल से पहुंचोगे।"

"फिर?"

"वहां तुम्हें हसनपुरा में पुरानी गली में हमारे आदमी मिलेंगे।"

"पुरानी गली में किस जगह?"

"मकान नम्बर छः में—तुम्हें उस मकान में जो भी मिले, उसे बस यही कहना है कि तुम दो बकरे सालम के सालम खा सकते हो।"

"यह कोड है?"

"हां।"

"कौन-कौन मिलेगा वहां?"

"जो भी मिले, जितने भी मिलें, वो हमारे आदमी होंगे, जोकि तुम्हें हर वो चीज मुहैया करायेंगे जिसकी तुम्हें जरूरत होगी—साथ ही फार्मूला चोरी के काम को छोड़कर हर वो काम भी करेंगे जो तुम चाहोगे।"

"मैं पाकिस्तानी हद में अकेला जाऊंगा?"

"हां।"

"कब?"

"बस अभी रवाना हो जाओ तुम।"

"किस रास्ते से दाखिल कराओगे?"

"गंगानगर के रास्ते से।"

"लेकिन मंजुला ने तो कहा था कि वह मुझे सालम की

https://t.me/hindiupanyas

सालम हासिल होगी—और तुम कह रहे हो कि अभी रवाना होना है।"

हंसा नारायण दास बतरा।

"गंगानगर तक वह तुम्हारे साथ जायेगी—रास्ते में हासिल कर लेना—सालम की सालम।"

सतीश रावण मुस्कुराया, पहलू बदला और बोला—

"सौदा तो हममें हो चुका—रास्ते में मंजुला को भी हासिल कर लूंगा। अब मेरे एक सवाल का जवाब दो।"

"पूछो।"

"इस काम के लिये तुमने मुझे ही क्यों चुना—जबकि यहां एक से एक धाकड़ हैं।"

नारायण दास बतरा ने मुस्कुराते हुए पहलू बदला।

"मैं मानता हूं कि यहां एक से एक धाकड़ है। खुद मेरे पास भी बेहतरीन हीरे हैं।"

"तो फिर...?"

"लेकिन उनमें हरामी कोई नहीं।"

"यानि तुम्हे इस काम के लिये हरामी की जरूरत थी।"

"सबसे बड़े हरामी की। यह काम आसान नहीं—बल्कि बहुत मुश्किल है—यूं समझ लो कि असम्भव को सम्भव बनाना है जिसके लिये क्रूरता के दिमाग की—शैतानी चालों की जरूरत पड़ेगी—और ऐसी चालें वही चल सकता है जिसके दिल में रहम नाम की कोई चीज न हो—और ऐसा आदमी हरामी के अलावा और कौन हो सकता है।"

सतीश रावण मुस्कुरा पड़ा—ऐसे जैसे नारायण दास बतरा उसका गुणगान कर रहा हो।

"खट...खट...खट।"

अमृतसर में लौहगढ़ गेट के करीब होटल चंदन के रूम नम्बर बत्तीस के दरवाजे पर दस्तक हुई।

"कम इन।" कुर्सी पर बैठी रीमा राठौर ने आवाज लगाई।

उसके करीब ही बैड पर सिकंदर ठाकरे अधनंगी अवस्था में बैठा था।

मुम्बई से वे तीन बजे रवाना हुए थे और सुबह छः बजे अमृतसर के राजा सांसी एयरपोर्ट पर उतर गए थे।

https://t.me/Hindiupanyas

वहां से वे एक टैक्सी द्वारा लौहगढ़ गेट पहुंचे और चंदन होटल में आ गए जहां पर कि उनके लिये पहले से ही कमरा रिजर्व था।

"जी भर कर आराम कर लो ठाकरे।" कमरे में आते ही रीमा राठौर बोली—"फिर पता नहीं नींद नसीब हो या न हो।"

"क्या पता जिन्दगी नसीब हो या न हो।" सिकंदर ठाकरे बैड पर बैठते हुए बोला।

"क्या पता...।" रीमा राठौर बैठकर अपने जूते के फीते खोलने लगी।

"फिर क्यों न हम आराम करने के लिये मिले इस वक्त का फायदा उठा लें।"

"कैसे?"

"कैसे क्या—कमरा बंद है—बैड भी एक है—और हम दोनों के अलावा यहां कोई तीसरा नहीं। तुम्हें कुछ नहीं करना। तुम बस कपड़े उतार कर पीठ के बल लेट जाओ—बाकी जो करना होगा, मैं कर लूंगा।"

"लगता है आज तुम पक्का इरादा किये हुए हो मूंछ मुड़वाने का।" रीमा राठौर हंसी।

"क्या मूंछ वाले पर बैन लगा हुआ है।" जलते-भुनते स्वर में बोला सिकंदर ठाकरे।

"ऐसा ही समझ लो।"

"लानत!"

रीमा राठौर हंसी।

"एक बात सुन लो—अगर मैं मर गया तो मेरी आत्मा भटकती रहेगी—क्योंकि जिसकी अन्तिम इच्छा पूरी नहीं होती उसे शान्ति नहीं मिलती—और उसकी आत्मा अपनी तृप्ति के लिये भटकती रहती है...।"

"भेड़िया की तरह।"

सुनकर सिकंदर ठाकरे पहले तो चौंका फिर उसका मुंह ऐसे बिगड़ गया जैसे उसने कुनैन की गोली खा ली हो।

"किस मनहूस का नाम ले दिया इस वक्त!" वह बोला।

"क्या पता वह इस वक्त तुम्हारे, मेरे ऊपर चढ़ने का इन्तजार कर रहा हो—ताकि जैसे ही तुम मुझ पर चढ़ो—वह तुममें प्रवेश कर जाये।"

"होने को तो कुछ भी हो सकता है...।" सिकंदर ठाकरे

https://t.me/Hindiupanyas

गम्भीर हो गया—"वैसे काफी अर्से से उसकी खबर नहीं मिली... ।"

"यह सोच कर कई बार मुझे भी हैरानी होने लगती है।" रीमा राठौर बोली—"ऐसे शैतान कभी भी लम्बे वक्त तक शांत नहीं रह सकते। जबकि भेड़िया की कोई खबर हुए तीन महीने से ऊपर हो चुके हैं।"

"कहीं वह अपनी सचमुच की मौत तो नहीं मर गया?"

"नहीं... ।" रीमा राठौर गम्भीरता तथा दृढ़ता से बोली—"उसे अपनी मौत का पता है—और वह अपनी मौत के करीब भी नहीं फटकेगा।"

"फिर उसकी खबर क्यों नहीं मिली?"

"हो सकता है।" रीमा राठौर बैड पर लेटते हुए बोली—"कि वह तीन महीनों से एक ही आदमी के जिस्म में रह रहा हो और किसी औरत के नजदीक भी न गया हो।"

"मगर पहली बार तो उसने किसी औरत की ऐसी-तैसी फेरी होगी। क्योंकि धर्मराज के शाप के मुताबिक वह केवल उसी व्यक्ति में प्रवेश कर सकता है जो किसी पराई औरत पर चढ़ा हुआ हो और भेड़िया के उसमें प्रवेश करते ही उसका अंग इतना ज्यादा विकसित हो जायेगा कि वह घोड़े को भी मात दे देगा।"

"म...मुझसे पूछ रहे हो—जबकि मैं उससे भुगत चुकी हूं। तुम्हीं ने तो वक्त पर आकर मेरी जान बचाई थी—वर्ना अब तक रीमा राठौर की मिट्टी भी पता नहीं कहां की कहां पहुंच चुकी होती।"

"उसे छोड़ो—और यह बताओ कि वह इस वक्त जिस शरीर में है—उस शरीर को प्राप्त करते ही उसने उस औरत की ऐसी-तैसी फेरी होगी.... ।"

"भेड़िया बेवकूफ नहीं ठाकरे—महाशैतान है वह। उसने अवश्य ही उस औरत की लाश को गायब कर दिया होगा और फिर उसके बाद किसी औरत के पास फटका भी नहीं होगा।"

सिकंदर ठाकरे समझने वाले अंदाज में सिर हिलाने लगा। कुछ देर वह यूं ही सिर हिलाता रहा, फिर खिसक कर रीमा राठौर के करीब आया और भेदभरे स्वर में बोला—

"क्या पता वह भी उस फार्मूले के चक्कर में पाकिस्तान पहुंच जाए... ।"

बुरी तरह से उछल पड़ी रीमा राठौर। आंखें फट पड़ीं।

"यह...यह क्या कह रहे हो तुम?" वह बोली।

https://t.me/Hindiupanyas

"क्या ऐसा नहीं हो सकता?"

"ऐसा कैसे हो सकता है? इण्डियन गवर्नमेंट ने हल्के अंदाज में पाकिस्तान सरकार से प्रोटेस्ट किया है कि उसके आदमियों ने प्लेन हाईजैक किया था और पाकिस्तानी सरकार ने यह कह कर प्रोटेस्ट खारिज कर दिया कि हाईजैकर उसके आदमी नहीं थे और वे डरकर प्लेन से कूद पड़े थे तथा पृथ्वी से टकराकर टुकड़े-टुकड़े हो गए थे। यानि भारत सरकार ने पाकिस्तान को यह तक नहीं कहा कि उसने हमारा फार्मूला चुराया है—इतनी सीक्रेसी बरती है भारत सरकार ने। ऐसे में भेड़िया को पता कैसे चल जाएगा यह सब?"

"जिस भेद का पता पाकिस्तान को चल सकता है—उसका पता किसी को भी चल सकता है रीमा।"

सिकंदर ठाकरे सही कह रहा था। सो रीमा राठौर की आंखों में पहले सोच उभरी—फिर उनमें दरिंदगी भरने लगी।

"अगर भेड़िया पाकिस्तान पहुंचा तो उसे एक बार फिर नया जिस्म ढूंढना पड़ेगा...।"

कहते हुए उसकी आवाज में गुर्राहट उभर आई थी।

सिकंदर ठाकरे उसे देखता रहा—बोला कुछ नहीं वह।

बात हंसी मजाक से शुरू होकर गम्भीर मोड़ पर आ गई थी, सो सिकंदर ठाकरे ने आराम करना ही बेहतर समझा।

एक बजे तक दोनों एक ही बैड पर गहरी नींद सोते रहे। क्या मजाल जो उनके दिलों में जरा सा भी गलत विचार उभरा हो।

दो बजे दोनों नहा-धोकर फ्रैश हो गए। तीन बजे तक उन्होंने लंच किया और अब साढ़े तीन बजे उनके दरवाजे पर दस्तक हुई थी।

दरवाजा खुला।

दरवाजा खोलने वाला करीब पैंतीस साल का सेहतमंद व्यक्ति था। उसने अपने दांये हाथ में लाल रंग का एक बड़ा सूटकेस उठा रखा था।

सूटकेस को बैड के करीब फर्श पर खड़ी हालत में रखकर उसने रीमा राठौर को सलाम किया और जेब से दो पासपोर्ट निकाल कर उसकी तरफ बढ़ाते हुए बोला—

"आपके पासपोर्ट मैडम।"

रीमा राठौर ने पासपोर्ट लिये।

दोनों पासपोर्ट पर गौर किया।

https://t.me/Hindiupanyas

एक पर उसकी तस्वीर थी जिसके नीचे उसका नाम शकीला, पत्नी मुस्तकीन लिखा था। साथ ही पाकिस्तान के लाहौर का पता लिखा था। फोटो में वह सिर पर चुनरी ओढ़े थी तथा बिना मेकअप के थी।

दूसरा पासपोर्ट मुस्तकीन वल्द शौकत अली का था, जिस पर कि सिकंदर ठाकरे की तस्वीर थी।

रीमा राठौर ने दोनों पासपोर्ट सिकंदर ठाकरे को दिये और आने वाले व्यक्ति की तरफ देखा।

"समझौता एक्सप्रैस में आपके टिकट बुक हो चुके हैं मैडम।" वह व्यक्ति बोला—"और यह सामान है जो आपने पाकिस्तान ले जाना है।" उसने सूटकेस की तरफ इशारा किया।

रीमा राठौर ने एक नजर सूटकेस पर डाली—फिर पुनः उसकी तरफ देखने लगी।

"इण्डिया में आप अपने मामूजान से मिलने आई थीं जोकि जामा मस्जिद के करीब गली नम्बर सात में रहते हैं—आपके मामूजान का नाम वहीमुद्दीन है और वे पेशे से कारपेंटर हैं। आप पहली बार इण्डियन आई थीं। इसलिये आपको सिवाये दिल्ली या मुम्बई के और किसी जगह के बारे में नहीं पता...।"

आने वाला रीमा राठौर को बारीकी से सब कुछ समझ रहा था।

रीमा राठौर व सिकंदर ठाकरे उसकी एक-एक बात को अपने भेजे में सुरक्षित कर रहे थे।

करीब एक घण्टे बाद आने वाला व्यक्ति वापिस चला गया तो रीमा राठौर ने सिकंदर ठाकरे की तरफ देखते हुए कहा—"सूटकेस खोलकर देखो।"

सिकंदर ठाकरे ने सूटकेस उठाकर बैड पर रखा।

चाबी उसके हैंडल के साथ ही बंधी हुई थी। उसने चाबी खोलकर उससे सूटकेस के लाक खोले और भीतर झांका।

जनाना मर्दाना कपड़ों के अलावा सूटकेस में पान के पत्तों की एक गांठ तथा चाय पत्ती के चार पैकेट भी नजर आये—साथ में गिफ्ट में मिलने वाला कुछ दूसरा सामान भी था।

"यह पान के पत्ते और चाय पत्ती...।"

"यह दोनों चीजें पाकिस्तान में काफी मंहगी हैं—कस्टम वाले देखेंगे तो उन्हें हम पर जरा भी संदेह नहीं होगा। वे यही समझेंगे कि अन्य पाकिस्तानियों की तरह हम भी अपना फायदा

https://t.me/Hindiupanyas

कमाने के लिये यह सामान ले जा रहे हैं।"

"यानि स्मगलिंग?"

"ऐसा ही समझ लो—और स्मगलिंग पिचानवे प्रतिशत पाकिस्तानी करते हैं जो कि भारत में आते हैं।"

"ओह!"

"एक बात और...।"

"क्या?"

"पाकिस्तान क्या होटल से निकलने के पश्चात तुम्हारे होठों पर 'फार्मूला' शब्द नहीं आना चाहिये—मैं एक छोटा सा भी रिस्क नहीं लेना चाहती।"

"लेकिन इस शब्द का हमें कई बार प्रयोग करना पड़ सकता है।"

"हम फार्मूले को कोई दूसरा नाम दे देते हैं।"

"कौन-सा।"

"आबेहयात...।"

"यानि अमृत?"

"भारत के लिये तो यह अमृत ही है।"

सिकंदर ठाकरे मुस्कुराया—"यानि अब हमें फार्मूले को आबे हयात के नाम से बुलाना पड़ेगा।

"हां।" रीमा राठौर भी मुस्कुराई।

अटारी बार्डर पार कर समझौता एक्सप्रेस पाकिस्तान में दाखिल हुई और स्टेशन पर खड़ी हो गई।

यात्री अपना-अपना सामान उठाये प्लेटफार्म पर उतरने लगे।

सिकंदर ठाकरे भी रीमा राठौर के साथ उतरा और सूटकेस उठाये उधर बढ़ा जिधर कि कस्टम अधिकारी यात्रियों का सामान चैक कर रहे थे।

रीमा राठौर इस वक्त सफेद रंग की शलवार कमीज में थी। उसकी कमीज के गले में बटन लगे हुए थे, जोकि उसकी गर्दन तक को पहुंच रहे थे। सिर पर काले रंग की चुनरी ओढ़ रखी थी उसने, जोकि उसके उभारों को छुपाती हुई बांए कंधे पर से होती हुई पीठ की तरफ लटक रही थी। पैरों में ऊंची हील के सैंडिल पहन रखे थे उसने।

https://t.me/Hindiupanyas

इधर सिकंदर ठाकरे ने महरून रंग की शलवार कमीज पहनी हुई थी।

अगर उसकी मूंछों के स्थान पर सिर्फ दाढ़ी होती तो वह किसी पठान की औलाद नजर आता।

दोनों आकर दो अलग-अलग लाइनों में खड़े हो गए।

सिकंदर ठाकरे मर्दों वाली लाइन में तथा रीमा राठौर औरतों की लाइन में।

दो घण्टे बाद सिकंदर ठाकरे की बारी आई।

उसने सूटकेस काउंटर पर रखा और चाबी कस्टम अधिकारी की तरफ बढ़ा दी।

"पासपोर्ट।" अधिकारी चाबी लेते हुए बोला।

सिकंदर ठाकरे ने पासपोर्ट तथा वीजा निकालकर उसकी तरफ बढ़ा दिया।

"मुस्तकीन?" अधिकारी बोला।

"जी जनाब।" सिकंदर ठाकरे बड़े अदब से बोला।

"अपनी बेगम के मामू से मिलने गए थे?" वीजा पर निगाह डालते हुए बोला अधिकारी।

"जनाब ठीक समझ रहे हैं।"

"क्या लेकर आये हो?"

"जनाब खुद ही देख लें।" सिकंदर ठाकरे बोला।

अधिकारी ने पासपोर्ट तथा वीजा पर गहरी निगाह डाली और उन्हें सिकंदर ठाकरे को वापिस कर के चाबी से सूटकेस खोला और उसे चैक करने लगा।

"यह पान और चाय पत्ती...।"

"घर के लिये लाया हूं जनाबे आला।"

अधिकारी ने चाय पत्ती का एक पैकेट निकाल कर काउंटर के नीचे गायब किया और बाकी सामान देखने लगा। सामान देखने के दौरान उसने दो गिफ्ट भी गायब किये—फिर सूटकेस बंद कर चाबी सिकंदर ठाकरे को दे, उसकी तलाशी लेने लगा।

पूरी तरह से आश्वस्त होकर उसने सामान पर कस्टम ड्यूटी लगाई, जिसे सिकंदर ठाकरे ने फौरन पाकिस्तानी करंसी में अदा कर दिया।

बीस मिनट बाद सिकंदर ठाकरे स्टेशन से बाहर निकला तो रीमा राठौर को एक तरफ खड़े अपना इंतजार करते पाया।

"कोई दिक्कत हुई?"

https://t.me/Hindiupanyas

उसे करीब आते ही पूछा रीमा राठौर ने।

"कुछ खास नहीं—बस थोड़ा सामान रख लिया उसने—तुम बोलो?"

"मेरे पास था ही क्या...।" रीमा राठौर मुस्कुराई—"जो पूछ ताछ होती।"

"आओ चलें।"

कहकर सिकंदर ठाकरे टैक्सी स्टैण्ड की तरफ बढ़ गया।

रीमा राठौर उसके पीछे-पीछे चलने लगी।

कुछ ही देर में दोनों एक टैक्सी में बैठे नजर आ रहे थे।

❑❑❑

पाकिस्तान के वक्त के अनुसार रात साढ़े दस बजे सिकंदर ठाकरे और रीमा राठौर लाहौर के रहमत बाड़ा पहुंचे।

टैक्सी से निकल कर दोनों करीब आधा किलोमीटर पैदल चले और एक गली में प्रवेश कर गए।

रीमा राठौर सिकंदर ठाकरे के आगे-आगे चल रही थी—और सिकंदर ठाकरे सूटकेस उठाये उसके पीछे-पीछे था। सिकंदर ठाकरे ने देखा कि वह गली भी भारतीय गलियों की तरह गंदगी से भरी हुई थी।

दाईं तरफ के छठे मकान के आगे रीमा राठौर रुकी तो सिकंदर ठाकरे उसके बराबर आ खड़ा हुआ। रीमा राठौर ने एक नजर सिकंदर ठाकरे पर डाली—फिर लोहे के गेट के बराबर में दीवार पर लगा पुश दबा दिया।

भीतर कहीं म्यूजिक बैल का मधुर संगीत गूंजा।

शीघ्र ही प्रतिक्रिया हुई।

"कौन है?" एक भारी स्वर कानों में पड़ा उनके।

"मैं हूं तुम्हारी खाला।" रीमा राठौर बोली।

दरवाजा खुला।

करीब चालीस साल का पठान नजर आने वाला व्यक्ति सामने खड़ा था। लम्बा ऊंचा कद, चौड़ा शरीर। कुछ देर तक तो वह रीमा राठौर को अजीब सी निगाहों से घूरता रहा, फिर एकाएक उसके होंठों पर मुस्कुराहट फैल गई।

"आइए खाला जान।" वह एक तरफ हटते हुए बोला।

रीमा राठौर हौले से हंसी और भीतर प्रवेश कर गई।

पीछे-पीछे सिकंदर ठाकरे था। वह जानता था कि खाला

https://t.me/Hindiupanyas

मौसी को कहते हैं। और रीमा राठौर किसी भी तरफ से उस व्यक्ति की मौसी नजर नहीं आ रही थी।

"हो सकता है यह भी कोई कोड हो...।" वह मन ही मन बोला।

बाहर से मकान जितना साधारण नजर आ रहा था, भीतर से वह उतना ही शानदार था।

सामने कतार में तीन कमरे बने हुए थे—उनके सामने काफी लम्बा चौड़ा बरामदा था। बाईं तरफ दो कमरे तथा टायलेट और किचन थी।

दरवाजा खोलने वाला उन्हें बाईं तरफ के पहले कमरे में ले आया।

ड्राइंग रूम था वह, जोकि काफी खूबसूरती से सजा हुआ था।

"तशरीफ रखिये।" वह पठान बड़े अदब से बोला।

रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे सोफे पर बैठ गए।

"चीफ का मैसेज मिल गया था मुझे।" पठान बोला—"मैं तो यही समझ रहा था कि आप दो बजे के बाद आयेंगी।"

"कुछ पता लगा?" रीमा राठौर उसकी बात को नजरअंदाज करते हुए बोली।

"आप पहले चाय वगैरह पी लीजिये—उसके बाद बात करेंगे।"

"चाय पीने का वक्त नहीं हमारे पास।"

"लेकिन.....।"

"तुम अच्छी तरह से जानते हो शौकत खां कि हम किस मकसद से यहां आये हैं। हमारा एक-एक लम्हा कीमती है। जब चाय पीने का वक्त आयेगा तो वो भी पी लेंगे।"

गहरी सांस छोड़ते हुए शौकत खां नाम का वह पठान उसके सामने वाले सोफे पर बैठ गया।

रीमा राठौर प्रश्न भरी निगाहों से उसे देखती उसके बोलने का इंतजार कर रही थी।

सिकंदर ठाकरे भी उसकी तरफ देख रहा था।

"चीफ का मैसेज मिलते ही मैंने यहां पर काम शुरू कर दिया था।" शौकत अली कहने लगा—"प्लेन के पांच हाईजैकर तो पैराशूट न खुलने की वजह से नीचे गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो गए थे।

https://t.me/hindiupanyas

एक का पैराशूट खुल गया था, जिसके नीचे उतरते ही उसे फौज ने घेरे में ले लिया था।"

"अब कहां है वो?"

"अभी तक तो इतना ही पता चला है कि फौजी उसे इस्लामाबाद ले गए थे। मैंने शाम को अकरम को इस्लामाबाद रवाना कर दिया था। अभी तक तो उसका कोई मैसेज नहीं आया।"

रीमा राठौर ने कुछ पलों तक सोचने की मुद्रा बनाई—फिर बोली—

"अकरम का मैसेज आये तो उससे कहना कि वह हमें इस्लामाबाद के रेलवे स्टेशन के बाहर मिले।"

चौंका शौकत खां—"आप इस्लामाबाद जा रही हैं?"

"हां.....हमारे लिये दो रिवाल्वरों तथा कुछ खाली गोलियों का बंदोबस्त करो। साथ में एक कार चाहिये हमें।"

"लेकिन अगर आप रात को यहां आराम कर लेतीं तो...।"

"तुम जानते हो शौकत—हम आराम करने की स्थिति में नहीं हैं।"

□□□

इस्माइल आहिस्ता से पीछे हटा और सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया।

पैरों के बल सीढ़ियां चढ़ते हुए बिना आवाज किये वह छत पर पहुंचा और मुंडेर के करीब आकर मुंडेर पर हाथ रख वह बाहर गली की तरफ इस तरह उतरने लगा जैसी कोई पेशेवर चोर हो।

हां—वह चोर ही था। उसका धंधा ही चोरी था।

रीमा राठौर तथा सिकंदर ठाकरे के शौकत खां के घर पहुंचने से बस आधा मिनट पहले ही वह शौकत खां की छत पर चढ़ा था। उसका इरादा उस घर में चोरी करने का था।

उस वक्त वह नीचे उतरने जा रहा था जब उसने घंटी की आवाज सुनी। और फिर उसने छत पर से ही रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे को शौकत खां के साथ भीतर प्रवेश करते देखा।

शौकत खां को वह जानता था। पिछले एक हफ्ते से वह शौकत खां को वाच कर रहा था। इस दौरान उसने पता लगा लिया था कि वह अकेला रहता है और काफी मालदार आदमी है।

तीनों ड्राइंग रूम में दाखिल हुए तो इस्माइल आहिस्ता से

https://t.me/Hindiupanyas

सीढ़ियां उतरने लगा।

मेहमानों के आ जाने पर भी उसने अपना चोरी करने का इरादा नहीं छोड़ा था।

स्थिति को परखने के लिये वह ड्राइंग रूम के बाहर दीवार से लगकर भीतर की बातें सुनने लगा।

और जब उसने भीतर की बातें सुनीं तो उसका कलेजा मुंह को आ गया।

बेशक वह चोर था—मगर था तो पाकिस्तानी!

देशभक्ति की भावना उसमें उमड़ पड़ी और वह चोरी करने का इरादा छोड़ फौरन वहां से निकल गया।

❑❑❑

इंस्पेक्टर शेरजंग ने इस्माइल को अपने आफिस में प्रवेश करते देखा तो चौंका।

शेरजंग इस्माइल को अच्छी तरह से क्या बहुत अच्छी तरह से जानता था। इस्माइल द्वारा की गई हर चोरी में उसका बंधा हुआ हिस्सा होता था।

चोर और पुलिस की यह दोस्ती इतनी पक्की थी कि इस्माइल कभी भी, किसी भी वक्त बेरोक-टोक थाने में आ-जा सकता था।

"क्या बात है—रंग क्यों उड़ रहे हैं तेरे?" पूछा शेरजंग ने—"घर में चोरी हो गई क्या? या तेरे ही घर में डाका पड़ गया है।"

"हमारे घर में डाका पड़ने जा रहा है जनाबेआला।" इस्माइल भर्राये स्वर में बोला।

"हमारे घर में?" बुरी तरह से चौंका शेरजंग।

"जी हां हुजूर।"

"क्या हुआ—हमारे घर से तुम्हारा क्या मतलब है?"

"आज मेरा इरादा रहमत बाड़ा में शौकत खां का घर खाली करने का था। मैं वहां वक्त पर पहुंच भी गया—मगर वहां जो कुछ मैंने देखा-सुना, उसे देख मेरे तो पैरों तले से जमीन खिसक गई हुजूर।"

"क्या हुआ?"

प्रत्युत्तर में जब इस्माइल ने सब कुछ बताया तो शेरजंग बुरी तरह से उछल पड़ा। आंखों में हैरत के भाव उभर आये।

https://t.me/Hindiupanyas

"तू.....सच कह रहा है?" अविश्वसनीय स्वर में बोला शेरजंग।

"मैं तो वहां चोरी भी नहीं कर पाया हुजूर—सीधा यहां आ गया।"

शेरजंग ने तुरंत रिसीवर उठाकर कोई नम्बर डायल किया।

"सलामवालेकुम जनाबे आला।" दूसरी तरफ से आवाज आते ही वह उतावलेपन से बोला—"इंस्पेक्टर शेरजंग आपकी खिदमत में है...अभी-अभी एक हैरतंगेज खबर मिली है जनाबे आला...भारत के प्लेन हाईजैक के मामले में...।" सब कुछ कह सुनाया शेरजंग ने—"हो सकता है वे दोनों अब तक इस्लामाबाद के लिय रवाना हो चुके हों—मुझे तो लगता है हुजूर कि वे दोनों हिन्दुस्तानी जासूस हैं...जी जनाब बेहतर है...जी जनाबे आला...मैं अभी रहमत बाड़ा रवाना हो रहा हूं।"

कहकर उसने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और खड़ा हो गया।

"तू अपने घर जा इस्माइल और खबरदार! यह बात किसी तीसरे के कान में नहीं पड़नी चाहिये।"

इस्माइल ने सहमति में सिर हिलाया और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

□□□

रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे को शौकत खां से विदा लिये अभी आधा घण्टा भी नहीं हुआ था कि उसकी कालबैल बज उठी।

बुरी तरह से चौंक कर बिस्तर पर बैठ गया वह।

"इस वक्त कौन हो सकता है?" वह मन ही मन बड़बड़ाया।

"टुन्न...टुन्न...।"

कालबैल पुनः बजी।

दरवाजा तो उसे खोलना ही था। सो वह बैड से उतरा और सिरहाने के नीचे रखी अपनी रिवाल्वर निकाल ली।

कमरे से निकल कर वह गेट के करीब पहुंचा।

"कौन है?" वह ऊंचे स्वर में बोला।

"पुलिस...।" बाहर से शेरजंग की गुर्राती आवाज आई—"दरवाजा खोलो शौकत खां।"

पुलिस का नाम सुन शौकत खां का कलेजा धड़क उठा। ऊपर से उसे उसके नाम से पुकारा गया था।

https://t.me/Hindiupanyas

यानि दाल में काला था।

अवश्य ही पुलिस को रीमा राठौर के यहां आने का पता चल गया है—वर्ना इतनी रात गए पुलिस यहां क्यों आती।

तेजी से उसने कुछ सोचा, फिर बोला—

"मैं चाबी ले आऊं हुजूर—आप जरा इन्तजार कीजिये।"

तेजी से वह ड्राइंग रूम में पहुंचा और बांई तरफ रखी सोफा चेयर की तरफ लपका।

बिना कोई वक्त गंवाये उसने सोफा चेयर को उलटा और नीचे लगे टाट को कोने से पकड़कर हल्के से दाईं तरफ झटका दिया।

अगले ही पल पूरा का पूरा टाट एक तरफ पड़ा नजर आ रहा था तथा सामने एक शक्तिशाली ट्रांसमीटर नजर आने लगा था।

उसने रिवाल्वर सीधी की और दांत पर दांत जमाते हुए ट्रिगर दबा दिया।

"धांय।"

एक तेज धमाका हुआ और ट्रांसमीटर के परखच्चे उड़ गए।

मुस्कान नाच उठी शौकत खां के होठों पर। बड़े इत्मिनान से उसने अपनी कनपटी पर रिवाल्वर की नाल टिकाई और आंखें बंद करके बड़बड़ाया—

"या खुदा! तू जानता है कि मैंने हमेशा नेकी का ही साथ दिया है। मेरा यह गुनाह माफ करना।"

उसने ट्रिगर दबा दिया।

गोली उसका भेजा फाड़ती हुई निकल गई।

वह वहीं फर्श पर औंधे मुंह गिर पड़ा।

रिवाल्वर उसके हाथ से निकल कर एक तरफ जा गिरा।

❑❑❑

गोली की आवाज सुनकर बाहर खड़ा शेरजंग बुरी तरह से उछल पड़ा।

भीतर हुई गड़बड़ का अंदाजा लगाकर ही वह सिहर उठा था।

तभी दूसरा धमाका हुआ।

हड़बड़ा उठा शेरजंग और एक सिपाही से जल्दी से बोला—

https://t.me/hindiupanyas

"करीब के घर से छत के रास्ते भीतर जा।"

तुरंत वह सिपाही साथ वाले घर की तरफ लपका।

करीब पांच मिनट के लम्बे इन्तजार के बाद भीतर से दरवाजा खुला।

"क्या हुआ?" शेरजंग भीतर प्रवेश करते हुए उतावलेपन में बोला।

"शौकत खां ने खुदकुशी कर ली है।"

सिपाही बोला और ड्राइंग रूम की तरफ इशारा किया।

शेरजंग पूरे बल के साथ ड्राइंग रूम की तरफ लपका।

ड्राइंग रूम के दरवाजे पर पहुंचते ही उसके पैर ठिठक गए। फटी हुई निगाहें सामने फर्श पर पड़ी शौकत खां की लाश को देख रही थीं। लाश के करीब ही सोफा चेयर उलटी पड़ी थी जिसके नीचे से उड़ा हुआ ट्रांसमीटर साफ नजर आ रहा था।

बहुत बड़ी शिकस्त मिली थी शेरजंग को। वह तो थाने से यह सोचकर निकला था कि शौकत खां से सब कुछ उगलवाने के साथ-साथ वह उससे अच्छी खासी रकम भी बटोर लेगा।

लेकिन उसकी दोनों में से एक भी इच्छा पूरी नहीं हो पाई।

❑❑❑

वाहनों की कतार लगी देख सिकंदर ठाकरे ने एक्सीलेटर से पैर उठाया और ब्रेक पैडल पर रखते हुए बोला—

"जाम लगा लगता है आगे।"

रीमा राठौर की, जो कि सीट की पुश्त पर सिर रखे आंखें बंद किये बैठी थी, आंखें फौरन खुल गईं।

उसने पहले सामने देखा।

वाहनों की काफी लम्बी लाइन लगी थी।

"कमाल है।" वह बड़बड़ाई—"रात के इस वक्त जाम कैसे लग सकता है, जबकि ट्रेफिक भी कम है।"

कहते हुए वह एकदम सी चौंक पड़ी—साथ ही उसकी निगाहें उन चार फौजियों पर पड़ीं जो कि हाथों में कारबाइन पकड़े खड़े हुए वाहनों में से सिर्फ कारों की ही तलाशी ले रहे थे।

"खतरा!" उसके जेहन में बस यही एक शब्द उभरा।

"लगता है आई.एस.आई. को हमारे आने की खबर लग गई है ठाकरे...।" वह धीमें स्वर में बोली।

"यह क्या कह रही हो तुम?" चौंका सिकंदर ठाकरे।

https://t.me/Hindiupanyas

"उन फौजियों को देखो।" रीमा राठौर ने सामने की तरफ इशारा किया—"सिर्फ कारों की ही तलाशी ले रहे हैं वे। और उनकी कारबाइनें देखो कैसी तनी हुई हैं—जैसे उन्हें खुद पर हमला होने का डर हो।"

"इसका मतलब है शौकत खां ने गद्दारी की है।" चौंकते हुए बोला सिकंदर ठाकरे।

"शौकत खां के बारे में सोचने का अभी वक्त नहीं।" रीमा राठौर गुर्राई—"चुपचाप बाहर निकलो और आगे खड़ी गाड़ियों के नीचे से होते हुए आगे बढ़ो। इस कार ने हमें जहां तक पहुंचाना था, पहुंचा दिया।"

कहने के साथ ही रीमा राठौर ने आहिस्ता से अपनी साइड का दरवाजा खोला और चुपके से नीचे उतर गई। रिवाल्वर उसके कुर्ते की जेब से निकल कर उसके हाथ में आ गई थी।

सिकंदर ठाकरे भी अपनी साइड का दरवाजा खोलकर बाहर आया और रीमा राठौर के पीछे-पीछे आगे खड़े ट्रक के नीचे घुसकर आगे बढ़ने लगा।

काफी ज्यादा झुकना पड़ रहा था उसे—जिससे कि उसे चलने में न केवल कठिनाई हो रही थी, बल्कि उसकी पीठ में दर्द भी होने लगा था।

ट्रक के आगे कार थी।

रीमा राठौर ट्रक के नीचे से निकली और कार के नीचे रेंग गई।

घुटनों तथा कोहिनयों के बल सरकते हुए वह आगे रेंगने लगी।

उस कार के आगे एक और कार थी, फिर तीन ट्रक—और फिर उसके आगे तीन कारें थीं।

रीमा राठौर दो ट्रकों को पार कर तीसरे ट्रक के नीचे पहुंची और गर्दन पीछे मोड़कर सिकंदर ठाकरे की तरफ देखा।

वह पहले ट्रक को पार कर रहा था।

रीमा राठौर वहीं उसका इन्तजार करने लगी।

शीघ्र ही सिकंदर ठाकरे उसके करीब पहुंच गया।

"आगे कार खड़ी है।" रीमा राठौर फुसफुसाई—"जैसे ही वह कार तलाशी देकर आगे बढ़ेगी...तुम इस ट्रक के नीचे चिपक जाना।"

https://t.me/Hindiupanyas

सिकंदर ठाकरे गर्दन इधर-उधर घुमाकर ऐसी जगह ढूंढने लगा जहां से कि वह मजबूती से पकड़ सके।

शीघ्र ही उसे अपनी मन माफिक जगह मिल गई।

इधर रीमा राठौर तो पहले से ही अपने लिये जगह तलाश कर चुकी थी।

शीघ्र ही उन्हें फौजियों की टांगें नजर आईं।

दोनों ने एक दूसरे को देखा और मुस्कुरा पड़े।

सिकंदर ठाकरे को रीमा राठौर का पता नहीं था—मगर उसका कलेजा जरूर धड़क रहा था।

वह पुलिस वाला था। ऐसे कार्यों का तजुर्बा उसे बिल्कुल भी नहीं था। ऐसे में उसका कलेजा धड़कना ही था।

जैसे ही फौजियों की टांगें आगे वाली कार के करीब रुकीं, रीमा राठौर ने तुरन्त उसे इशारा दिया।

सिकंदर ठाकरे ने फौरन एयरबाक्स के करीब लगे दो हुकों को पकड़ा और टांगों को लम्बा कर एक रॉड पर रख दिया।

उधर रीमा राठौर डीजल टैंक की ओट में ट्रक से लटक गई।

करीब पांच मिनट बाद ट्रक रेंगा तो झटका लगने से सिकंदर ठाकरे के हाथ हुकों से छूटते-छूटते बचे।

इन पांच मिनटों में ही उसकी ऐसी-तैसी फिर गई थी। ऊपर से अभी पता नहीं कितनी देर और पकड़े रहना था।

ट्रक धीरे-धीरे गति पकड़ रहा था।

रीमा राठौर ट्रक के नीचे चिपकी निरंतर दांये-बांये देख रही थी।

तभी उसकी नजर दांई तरफ पुलिस बूथ पर पड़ी तो उसके होठों पर मुस्कान रेंग गई।

ट्रक बैरिक पार कर रहा था।

बैरिक पार कर ट्रक थोड़ा आगे बढ़ा तो रीमा राठौर ने सिकंदर ठाकरे की तरफ देखा।

"तुम ठीक हो न ठाकरे?"

"मैं तो ठीक हूं—मगर मेरी पकड़ कमजोर पड़ती जा रही है। ज्यादा देर नहीं पकड़े रह पाऊंगा।"

सिकंदर ठाकरे व्याकुलता भरे स्वर में बोला।

"बस थोड़ा इंतजार और करो ठाकरे। मैं कोई न कोई

https://t.me/Hindiupanyas

रास्ता निकालती हूं।"

"रास्ता तो तभी निकलेगा न...जब ट्रक रुकेगा।"

रीमा राठौर कुछ नहीं बोली—उसने अपना एक हाथ आजाद किया और टंकी के नीचे से ले जाकर उन पत्तियों को खोजने लगी, जिनसे कि टंकी ट्रक से चिपकी हुई थी।

शीघ्र ही उसकी उंगली एक स्थान में घुसी।

उसने अपनी दूसरी उंगली भी पत्ती के उभरे स्थान में फंसाई।

तीसरी उंगली के फंसने की कोई गुंजाइश नहीं थी—सो रीमा राठौर ने आहिस्ता से अपने एक हाथ को आजाद किया और उसे टंकी के पार ले जाकर टंकी को इस तरह अपनी टांग में लपेटा जैसे कोई बच्चा अपनी मां के पेट से टांगें लपेट कर चिपकता है।

अपनी स्थिति मजबूत करके उसने दूसरी टांग को भी टंकी की अन्दर की साइड में लपेटा और फिर दूसरा हाथ छोड़ कर टंकी से लपेट लिया।

अब स्थिति यह थी कि वह पिछले पहिये की ऐन सीध में डीजल की टंकी के नीचे चिपकी हुई थी। अगर ट्रक का पहिया किसी गड्ढे में पड़ता तो निश्चय ही उसकी पकड़ छूट जानी थी और नतीजा यह होता कि पहिया उसके खूबसूरत बदन को कुचलते हुए चला जाता।

मौत से उसकी दूरी बस इतनी रह गई थी।

धीरे-धीरे वह बाहर की तरफ सरकी और पत्ती में से अपनी उंगलियां निकाल कर बांह को लम्बा किया और किसी पकड़ को ढूंढने के लिये हाथ इधर-उधर मारने लगी।

उसकी कोशिश कामयाब रही।

लोहे की सरिया उसके हाथ लग गया, जोकि ट्रक की बाडी से जुड़ा था।

अब कोई परवाह नहीं थी रीमा राठौर को—अब उसकी पकड़ पूरी मजबूत थी।

अपनी अंदर वाली टांग को थोड़ा ढीला कर उसने गर्दन बाहर निकाली और इधर-उधर देखने लगी। वह किसी ऐसी जगह को तलाश कर रही थी जहां कि अपनी टांग फंसा सके।

लेकिन उसकी नौबत नहीं आई।

ठीक तभी...।

□□□

https://t.me/Hindiupanyas

वे चारों जो कि कारों की तलाशी ले रहे थे--फौजी नहीं थे--बल्कि कमांडो फोर्स के जवान थे।

अभी थोड़ी देर पहले ही वे ऊपर से मिले आदेश पर यहां पहुंचे थे। आदेश में उन्हें यह कहा गया था कि दो भारतीय जासूस जिसमें एक खूबसूरत औरत है, लाहौर से इस्लामाबाद की तरफ जा रहे हैं। वे किसी कार में हैं--उन्हें किसी भी सूरत में गिरफ्तार करना है।

बैरिक पर आते ही कमांडोज ने बूथ पर कब्जा कर लिया और वहां खड़े पुलिसकर्मियों को यह आदेश दिया कि जिसे भी आते देखें--फौरन उस पर गोली चला दी जाए।

और फिर चार कमांडोज कारों की तलाशी लेने में जुट गए। सतर्कतावश दोनों भारतीय जासूस कहीं अलग-अलग न हो गए हों--इसलिये वे हर कार की पूरी बारीकी से चैकिंग कर रहे थे।

चैकिंग करते हुए जैसे ही वे शौकत खां वाली कार के करीब पहुंचे, बुरी तरह से चौंक पड़े थे।

कार में कोई भी नहीं था।

उसके दोनों दरवाजे खुले हुए थे, जो कि इस बात की तरफ इशारा कर रहे थे कि दुश्मन बचकर भागने में सफल हो गया है।

देखते ही देखते कमांडोज की दो गाड़ियां वहां से रवाना हुईं। एक उस तरफ जिधर कि रीमा राठौर और ठाकरे गये थे--दूसरी पीछे की तरफ जिधर से कि वे आये थे।

वे चारों कमांडोज अभी भी गाड़ियों की तलाशी ले रहे थे कि कहीं दोनों भारतीय जासूस पीछे वाली किसी गाड़ी में न छुप गए हों।

आगे जा रही गाड़ी के ड्राइवर ने दूर से ही रीमा राठौर को ट्रक की टंकी से चिपके देख लिया था।

"वो रहा जासूस!" वह अपने करीब बैठे कमांडो से बोला और गाड़ी की रफ्तार तेज कर दी।

पीछे बैठे अन्य तीन कमांडोज भी चौंकन्ने हो रीमा राठौर की तरफ देखने लगे।

गोली की रफ्तार से चलती हुई गाड़ी ट्रक से आगे निकली और टेढ़ी होकर खड़ी हो गई। ट्रक ड्राइवर इस तरह किसी गाड़ी को अपने आगे खड़ा होते देख बुरी तरह से हड़बड़ाया और पूरी शक्ति से ब्रेक पैडल पर पैर का दबाव डाल दिया।

https://t.me/Hindiupanyas

"चीडड...।" ट्रक के टायर सड़क पर घिसटते चले गए।

स्वयं को ट्रक पर चढ़ने की कोशिश कर रही रीमा राठौर को जबरदस्त झटका लगा।

अपनी पकड़ कायम नहीं रख पाई और नीचे गिर पड़ी। गिरते ही उसने तेजी से ट्रक से बाहर की तरफ करवट ली। वह तो बच गई मगर उसका कुर्ता पहिये के नीचे फंस गया।

नतीजा—चर्र की आवाज के साथ कुर्ते का काफी हिस्सा फट गया। और बाकी जो बचा था, वह चीथड़ों की सूरत में उसके जिस्म पर लटक रहा था।

उसकी पूरी की पूरी ब्रा साफ नजर आ रही थी जिसमें से उसकी शानदार छातियां नुमाया हो रही थीं।

अपने फटे कुर्ते की परवाह किये बिना रीमा राठौर दांतों में फंसी रिवाल्वर को हाथ में लेते हुए झटके से खड़ी हुई।

लेकिन उसकी सारी की सारी फुर्ती धरी की धरी रह गई।

एक साथ चार कारबाइनें उसके जिस्म से आ लगी थीं।

"डोंट मूव।" एक कमांडो फुंफकारा।

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ते हुए स्वयं को ढीला छोड़ दिया।

तभी उसके दाईं तरफ खड़े कमांडो ने उसकी रिवाल्वर झपट ली।

अब पहले वाले कमांडो ने उसकी छातियों पर निगाह मारी।

"कमाल है...हिन्दुस्तानी औरतें अब इतनी तेज हो गई हैं कि सरकार उन्हें जासूसी करने के लिये भेजने लगी है।

"वैसे माल तो बहुत ही नमकीन है।" दूसरा बोला—"खुदा कसम ऐसा हसीन तरीन जिस्म पहले कभी भी नहीं देखा—ऊपर से यह है भी हिन्दुस्तानी—क्यों न गाड़ी में ही एक-एक राउंड हो जाए।"

पहले वाले ने उसकी बात का जवाब न देते हुए रीमा राठौर को गहरी निगाहों से घूरा।

"क्या नाम है तेरा?"

रीमा राठौर ने अपना नाम बताने की बजाये होंठ सख्ती से भींच लिये।

"पाकिस्तान में क्या करने आई है?" उसने दूसरा सवाल किया।

रीमा राठौर ने मुंह नहीं खोला।

https://t.me/Hindiupanyas

"तेरा एक साथी भी है तेरे साथ—वो कहां है?"

रीमा राठौर पुनः खामोश।

"जासूस है—इतनी आसानी से मुंह कैसे खोलेगी!" दूसरा बोल पड़ा—"सारे कपड़े फाड़ डालो इसके—तभी इसकी जुबान से कुछ फूटेगा।"

पहले वाले ने घूर कर उसे देखा।

दूसरा अचकचा कर उसे देखने लगा।

"यहीं बीच सड़क पर कपड़े फाड़ोगे इसके? हैडक्वार्टर ले चलो।" पहले वाला गुर्राया—"जो करना हो, वहीं करना।"

सुनकर दूसरे वाले का चेहरा खिल उठा।

"चल गाड़ी में बैठ—आप तुझे नस्ले पाकिस्तान के दीदार होंगे।"

रीमा राठौर बिना किसी ऐतराज के कार की तरफ बढ़ी।

चारों कमांडो उसे घेरे हुए थे।

क्या मजाल जो कारबाइनों के घेरे में होकर भी रीमा राठौर के चेहरे पर हल्की सी भी घबराहट उभरी हो।

वह जानती थी कि सिकंदर ठाकरे कुछ न कुछ अवश्य करेगा—उसे बस उसके कुछ करने का इंतजार था।

कुछ क्या बहुत कुछ हुआ।

अभी वे गाड़ी के करीब ही पहुंचे थे कि—

"धांय...धांय...।"

पीछे से एक साथ दो फायर हुए और दो लाशें बिछ गईं।

बाकी के दोनों कमांडो बिजली की सी फुर्ती से पीछे की तरफ मुड़े।

मगर तब तक रीमा राठौर हरकत कर चुकी थी।

बिजली की सी रफ्तार से वह एक कारबाइन पर झपटी और कारबाइन पर झपट कर लुढ़कती चली गई। उसी के साथ ही उसने ट्रिगर दबा दिया।

जब तक उसका लुढ़कना बंद होता—बाकी के दोनों भी लाशों में तब्दील हो चुके थे।

ठीक तभी रीमा राठौर को गाड़ी के स्टार्ट होने की आवाज आई।

उसने फौरन कारबाइन का रुख गाड़ी की तरफ किया और पिछले टायर का निशाना लेकर ट्रिगर दबा दिया।

रेट...ट...ट...ट।

https://t.me/hindiupanyas

"बड़ाम...।" गगनभेदी धमाके के साथ पिछला पहिया बैठ गया।

रीमा राठौर तुरंत गाड़ी की ड्राइविंग सीट की तरफ लपकी।

ठीक तभी उसने ड्राइवर को छलांग लगाकर भागते देखा। मगर उसने उसे भागने नहीं दिया। उसकी कारबाइन का मुंह पुनः खुला और सड़क पर एक और लाश बिछ गई।

उसने आगे बढ़कर गाड़ी में निगाहें दौड़ाईं।

किसी को न पाकर उसने ट्रक की तरफ देखा—फिर उसकी निगाहें सिकंदर ठाकरे पर पड़ीं, जोकि ट्रक की ब्रेक लगते ही जब रीमा राठौर गिरी थी, ठीक उसी वक्त सिकंदर ठाकरे भी गिर गया था। खतरा वह भांप ही चुका था सो तेजी से लुढ़क कर वह ट्रक की परली साइड में चला गया था—और वहां से ट्रक पर चढ़ गया था।

वहीं से उसने दो कमांडोज को निशाना बनाया था।

सिकंदर ठाकरे से निगाहें हटा कर रीमा राठौर ने ट्रक ड्राइवर की तरफ देखा, जो कि कुर्सियों के पीछे बैठा थर-थर कांप रहा था।

उसके करीब बैठा क्लीनर भी कांप रहा था।

कोई और वक्त होता तो जिस पोज में रीमा खड़ी थी, और जिस जानलेवा अंदाज में उसकी छातियां नजर आ रही थीं—वह आंखें फाड़-फाड़ कर उसे देखते हुए खुदा से यही दुआ करता कि वह आखिरी दम तक उसे यूं ही देखता रहे।

मगर इस वक्त माहौल और था। सड़क पर पांच लाशें बिछी हुई थीं। इतने में ही वह समझ गया था कि वह हसीन तरीन युवती कितनी खतरनाक है।

उनकी हालत देख रीमा राठौर के होंठों पर क्रूर मुस्कान नाच उठी। कारबाइन से उसने दोनों को नीचे उतरने का इशारा किया।

मजबूर थे वे दोनों।

दोनों नीचे उतर कर जैसे ही रीमा राठौर के सामने आये—रीमा राठौर ने ट्रिगर दबा दिया।

"रेट...ट...ट...ट।"

ड्राइवर और क्लीनर की लाशें भी सड़क पर बिछ गईं।

रीमा राठौर ने कारबाइन नीचे फेंकी और एक तरफ पड़ी अपनी रिवाल्वर उठा ली।

https://t.me/Hindiupanyas

"इन्हें क्यों मारा?" तभी सिकंदर ठाकरे करीब आकर बोला।

निश्चय ही उसे ड्राइवर और क्लीनर को मारना ठीक नहीं लगा था।

"अपनी कमीज उतारो।" जवाब देने के स्थान पर रीमा राठौर सख्त स्वर में बोली।

उसकी बात पर सिकंदर ठाकरे को जैसे उसकी नग्नता का अहसास हुआ।

तुरंत उसने अपनी कमीज उतार कर रीमा राठौर को दे दी।

"ट्रक में बैठो।" कमीज पहनते हुए रीमा राठौर ट्रक की तरफ बढ़ती हुई बोली।

कुछ ही क्षणों बाद ट्रक कमांडोज की गाड़ी को एक तरफ धकेलते हुए आगे बढ़ता नजर आया।

"मेरा ख्याल है अब समझ आ गया होगा तुम्हें कि ड्राइवर और क्लीनर को मैंने क्यों मारा।"

रीमा राठौर स्वर को नार्मल बनाते हुए बोली।

"वो तो मैं समझ गया कि हमें यहां से फौरन निकलने के लिये ट्रक की जरूरत थी—मगर उन्हें बांधा भी तो जा सकता था।"

"ताकि वे हमारा हुलिया आई.एस.आई. के कुत्तों को बता सकें। नहीं ठाकरे, उनका मरना जरूरी था। जब दो हाथी लड़ते हैं तो घास तो कुचलेगी ही।"

सिकंदर ठाकरे गहरी सांस छोड़कर रह गया।

"ट्रक तेज चलाओ और किसी ऐसे स्थान पर ले चलो जहां से कि हमें इस्लामाबाद पहुंचने के लिये कोई दूसरी सवारी मिल जाए।"

सिकंदर ठाकरे ने सिर हिला दिया।

करीब दस किलोमीटर चलने के उपरांत सिकंदर ठाकरे ने ट्रक को सड़क किनारे खड़ी एक टैक्सी के पीछे खड़ा किया।

"यह टैक्सी हमारे काम आ सकती है।" वह रीमा राठौर से बोला।

"ड्राइवर की गर्दन तोड़ दो और उसे सीट के नीचे डाल दो।"

"लेकिन...।"

"जो कहा है वही करो।" बर्फ की मानिन्द ठण्डा था रीमा

https://t.me/Hindiupanyas

राठौर का स्वर—"और हां, उसके कपड़े उतार कर खुद पहन लेना।"

सिकंदर ठाकरे ने एक आह भरी और नीचे उतर गया।

बेशक वह दुश्मन देश में था—फिर भी था तो वह पुलिस वाला ही। यूं अनाप-शनाप हत्यायें करना उसके हाथ में नहीं था।

मगर रीमा राठौर का आदेश था—सो वह ड्राइविंग डोर के करीब पहुंचा।

ड्राइवर सीट पर बैठा स्टेयरिंग पर सिर टिकाये हुए था।

"छोटे मियां।" दरवाजा खोलते हुए सिकंदर ठाकरे ने आवाज लगाई।

ड्राइवर ने सिर उठा कर जैसे ही उसकी तरफ देखा—बाज की तरह सिकंदर ठाकरे ने उसकी गर्दन दबोच ली और तब तक दबाव बढ़ाता गया तब तक कि ड्राइवर मर नहीं गया।

लम्बी-लम्बी सांसें छोड़ते हुए उसने उसके कपड़े उतारे और उसे सीट के नीचे खिसका दिया।

इधर रीमा राठौर ट्रक से उतर कर टैक्सी की पिछली सीट पर आ बैठी।

टैक्सी ड्राइवर के कपड़े पहनकर सिकंदर ठाकरे ने ड्राइविंग सीट सम्भाली और टैक्सी स्टार्ट कर आगे बढ़ा दी।

"सावधान रहना ठाकरे!" पीछे बैठी रीमा राठौर बोली—"दुश्मनों को हमारे आने का पता लग चुका है। ऐसे में इस्लामाबाद पहुंचते-पहुंचते पता नहीं कितने खतरों का सामना करना पड़े।"

सिकंदर ठाकरे ने जवाब नहीं दिया—बस एक्सीलेटर पर पैर का दबाव बढ़ा दिया।

□□□

"खड़...खड़...खड़...।" वैन का दरवाजा भड़भड़ाया गया—साथ ही एक आवाज सतीश रावण के कान में पड़ी—

"गंगानगर आ गया है।"

सतीश रावण ने अपने पहलू में पड़ी मंजुला की तरफ मुस्कुराते हुए देखा।

दोनों के बदन पर कपड़ों का एक रेशा भी नहीं था। सिर से पांव तक पूरी तरह से निर्वस्त्र थे वे।

नारायण दास बतरा ने स्पेशल वैन दी थी उसे—जिसकी ड्राइविंग सीट पिछले वाले हिस्से से अलग थी। एक कमरा सा बना

https://t.me/Hindiupanyas

हुआ था वह, जिसमें कि बिस्तर लगा हुआ था।

वैन में प्रवेश करते ही सतीश रावण ने अंदर से दरवाजा लॉक कर दिया और मंजुला की तरफ मुड़ते हुए बोला—"हमारे पास वक्त बहुत कम है और हमें इस कम वक्त का ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाना है—इसलिये जल्दी से कपड़े उतार दो।"

मंजुला तो जैसे पहले ही कपड़ों से तंग आई नजर आ रही थी।

बिना वक्त गंवाये उसने कपड़े उतर दिये।

सतीश रावण भी कपड़े उतारकर निर्वस्त्र हो गया।

वैन अभी दिल्ली का बार्डर भी पार नहीं कर पाई थी कि दोनों एक-दूसरे से जूझ पड़े।

हिचकोले खाती वैन में किसी के साथ जिस्म टकराने का यह सतीश रावण का पहला तजुर्बा था—और यह तजुर्बा उसे बहुत आनन्ददायी लगा।

कई बार जब रास्ते में कोई खड्डा आ जाता तो दोनों के जिस्म इतनी जोरों से आपस में टकराते कि मंजुला के होंठों से पूरी-पूरी चीख उबल पड़ती।

दिल्ली से गंगानगर तक के रास्ते का सतीश रावण ने खूब फायदा उठाया।

तीन राउण्ड खेले उसने और तीनों ही बार बाजी बराबरी पर छूटी।

मंजुला तो उस पर निहाल हो रही थी। ऐसा मर्दाना सुख उसने जिन्दगी में पहली बार पाया था।

दरवाजे पर दस्तक मंजुला ने भी सुन ली थी—सो वह उठ बैठी और अपनी ब्रा उठाते हुए बोली—

"बड़ी जल्दी आ गया गंगानगर...।"

"क्यों? क्या देर से आना चाहिये था?" सतीश रावण मुस्कुराया।

"मैं तो चाहती थी कि गंगानगर कभी आता ही नहीं। हम जिन्दगी भर यूं ही वैन में एक-दूसरे से लिपटे रहते।"

सतीश रावण हंस पड़ा।

कपड़े पहनकर उसने अपनी फेवरिट आरी उठाकर अपनी पीठ पर शर्ट के नीचे पेट की बैल्ट में फंसाई और मंजुला की तरफ देखा।

वह भी कपड़े पहन चुकी थी।

https://t.me/Hindiupanyas

सतीश रावण ने आगे बढ़कर दरवाजा खोला और कूद कर बाहर आ गया।

एक साइड में एक दुबला पतला सा व्यक्ति खड़ा था।

यह वह था जो उन्हें गंगानगर लाया था।

सतीश रावण हौले से मुस्कुराया और इधर-उधर देखा।

चारों तरफ घुप्प अंधेरा था। दाईं तरफ काफी दूर लाइटें टिमटिमाती नजर आ रही थीं जो कि यह बता रही थीं कि गंगानगर शहर के बाहर खड़े हैं वे।

वह दुबला पतला व्यक्ति ड्राइविंग गेट के करीब गया और दरवाजा खोल कर एक हैण्ड बैग उठा लाया।

"इसमें दो लाख की पाकिस्तानी करंसी के अलावा दस हैण्डग्रेनेड और बारह राउण्ड की रिवाल्वर है। उम्मीद है इतने सामान के सहारे तुम इस्लामाबाद पहुंच जाओगे।"

सतीश रावण कुछ नहीं बोला—उसने बैग लिया—उसकी जिप खोलकर उसमें से रिवाल्वर निकाल कर अपनी जेब में डाली, फिर नोटों की एक गड्डी निकालकर उसे भी जेब में डालकर बैग को कंधे पर लटका लिया।"

"मुझे बार्डर तक छोड़ने तुम जाओगे?" पूछा उसने।

"हां।"

"तो चलो।"

तभी पीछे से उसके कंधे पर हाथ पड़ा।

सतीश रावण ने गर्दन मोड़कर पीछे खड़ी मंजुला की तरफ देखा।

"तुम मुझे बहुत याद आओगे सतीश रावण...।" वह भर्राये स्वर में बोली—"तुम एक सम्पूर्ण मर्द हो—मैं तुम्हारा इन्तजार करूंगी।"

जवाब में सतीश रावण ने उसकी छाती को दबा दिया।'

मंजुला ने उसके छाती दबा रहे हाथ पर अपने हाथ रखे और उसे अपने साथ जोरों से भींच लिया।

मन ही मन हंसा सतीश रावण—

"बेवकूफ! नहीं जानती मुझे कि मैं कितना बड़ा शैतान हूं। तभी इतना प्यार उड़ेल रही है...। औरत तो मेरे लिये एक जूती से ज्यादा महत्व नहीं रखती।"

प्रत्यक्ष में उसने अपने हाथ को वापिस खींचा और उसके गाल को थपथपा कर उस दुबले व्यक्ति की तरफ मुड़ा जो कि

https://t.me/Hindiupanyas

दोनों को बड़ी दिलचस्पी से देख रहा था।

"चलो।" वह बोला।

दुबले व्यक्ति ने मंजुला की तरफ देखा और बोला—

"मेरे आने तक तुम इधर-उधर कहीं छुप जाओ—मेरे आने के बाद ही सामने आना, वो भी तब जब मैं तुम्हें आवाज लगाऊं।"

मंजूला ने एक नजर भर कर सतीश रावण को देखा, फिर वहां से एक तरफ हट गई।

"आओ।" दुबला व्यक्ति बोला।

सतीश रावण उसके साथ-साथ आगे बढ़ने लगा।

करीब दस मिनट तक तो रास्ता समतल था—उसके बाद ऊबड़-खाबड़ रास्ता शुरू हो गया। कई जगहों पर टीले नजर आते जिन पर चढ़ते वक्त उनके पैर रेत में धंस जाते तो कहीं गहरे गड्ढे आ जाते।

ऊपर से अंधेरा—ऐसे में वह रास्ता और भी कठिन हो गया था।

आधे घण्टे का सफर एक घण्टे में जाकर पूरा हुआ।

एक पथरीली चट्टान की ओट में खड़े होकर दुबले व्यक्ति ने सामने की तरफ उंगली सीधी की।

"वो लाइट देख रहे हो?"

सतीश रावण ने उसके इशारे का पीछा किया।

थोड़ी दूर एक घूमती लाइट नजर आई उसे।

"हां, देख रहा हूं।" वह बोला।

"वह भारतीय रेंजरों का वाच टावर है।" दुबला बोला—"वाच टावर से करीब सौ कदम की दूरी पर पाकिस्तानी सीमा शुरू हो जाती है।"

"कोई बाड़ वगैरह तो नहीं लगी?"

"नहीं—इस तरफ अभी बाड़ नहीं लगाई गई।"

सतीश रावण ने सिर हिलाया।

"इधर से घुसपैठ बहुत ही कम होती है—इसलिये उम्मीद है कि तुम इधर से सरलता से बार्डर पार कर जाओगे।"

सतीश रावण कुछ नहीं बोला—उसने बैग को कंधे से उतार कर उसमें से दो हैण्ड ग्रेनेड निकाले और बैग को अपनी पीठ पर लाद लिया।

"अलविदा।" दुबला पतला बोला।

https://t.me/Hindiupanyas

सतीश रावण ने उसकी बात का जवाब नहीं दिया—बस अपने कदम आगे बढ़ा दिये।

थोड़ी दूर चल कर वह ठिठका—गर्दन पीछे मोड़कर देखा।

वह दुबला व्यक्ति अंधेरे में गायब हो चुका था।

सतीश रावण मुस्कराया—गर्दन सीधी की और पुनः आगे बढ़ने लगा।

मौत का एक छोटा-सा भी खौफ नहीं था उसकी आंखों में।

होता भी कैसे!

भेड़िया था वह—एक शैतान आत्मा जिसे पता था कि उसकी मौत कैसे होगी।

फिर भी लूला लंगड़ा अंधा होने का डर तो था ही। इसी कारण पूरी सावधानी बरतनी जरूरी थी।

वाच टावर की लाइट अब तेज नजर आने लगी थी।

थोड़ा और आगे बढ़ने पर जब उसे महसूस हुआ कि अब वह लाइट की जद में आ सकता है तो उसने इधर-उधर देखा।

करीब ही एक चट्टान थी जो कि रेत के टीले में से सिर निकाले खड़ी थी।

वह तुरन्त उस चट्टान की ओट में हो गया और सर्चलाइट के आने का इन्तजार करने लगा।

शीघ्र ही घूमती हुई सर्चलाइट उसे अपनी तरफ बढ़ती नजर आई।

सतीश रावण उस लाइट में अपने छुपने का स्थान ढूंढने लगा।

करीब पचास कदम आगे एक चट्टान थी।

सो जैसे ही लाइट आगे बढ़ी—सतीश रावण तेजी से उस चट्टान की तरफ लपका।

अपनी तरफ से तो वह पूरी तेजी से बढ़ रहा था—लेकिन रेत में उसके पैर बहुत ज्यादा धंस रहे थे जिसके कारण उसे भागने में बहुत दिक्कत हो रही थी।

बड़ी मुश्किल से वह लाइट उसके ऊपर से होकर गुजर गई।

सतीश रावण ने जाती हुई लाइट में अपने छुपने की जगह ढूंढी तो उसे सिवाये रेत के और कुछ भी नजर नहीं आया।

घूमती हुई लाइट जैसे ही उसके विपरीत दिशा में गई तो

https://t.me/Hindiupanyas

वह मुस्कुरा पड़ा।

लाइट में उसे पाकिस्तान का झण्डा नजर आया—साथ ही हाथों में कारबाइनें लिये रेंजर टहलते नजर आये।

उसकी कुटिल मुस्कुराहट ही बता रही थी कि उसके जेहन में कोई शैतानी स्कीम उभर आई है।

वह लाइट के वापिस आने का इन्तजार करने लगा।

शीघ्र ही राउण्ड लगाती हुई सर्चलाइट जैसे ही चट्टान के ऊपर से होकर आगे निकली—उसने हाथों में पकड़े दोनों हैण्डग्रेनेड की पिन दांतों से खींचीं और लाइट के पीछे-पीछे दौड़ने लगा।

हालांकि वह अंधेरे में था—फिर भी प्रकाश का रिफ्लैक्शन उसे उजागर कर रहा था।

"हाल्ट।"

तभी कड़कती आवाज उसके कानों में पड़ी।

एक पल भी नहीं लगाया सतीश रावण ने और उस तरफ पूरी शक्ति से बम उछाल दिया जिधर से कि उसे रुकने की चेतावनी दी गई थी।

बिजली की सी फुर्ती से उसने दूसरा बम वाच टावर की तरफ फेंका और पूरी शक्ति से पाकिस्तान की तरफ दौड़ लगा दी।

"बड़ा...म...बड़ा..."

एक के बाद एक दो धमाके हुये।

पहले कुछ इंसानी चीखें गूंजीं—जो कि निश्चय ही बी.एस.एफ. के जवानों की थीं—फिर वहां घुप्प अंधेरा छा गया।

वाच टावर नीचे गिर पड़ा था।

ठीक तभी रेट...ट...ट...।"

पुनः दो धमाके हुए और बी.एस.एफ. के चार जवान और शहीद हो गए।

उस शैतान का ध्यान एक बार भी इस तरफ नहीं गया कि एक भारतीय होकर वह अपनी ही फौज के जवानों का खून बहा रहा है।

उसे तो अपनी स्कीम पूरी करनी थी—और उसकी स्कीम यही थी कि जितने ज्यादा भारतीय फौजियों को वह मार सकता है, मारे।

वह जितने ज्यादा जवान मारता—उसकी स्कीम की कामयाबी के उतने ज्यादा चांस थे।

उधर भारतीय सीमा में गोलीबारी होते देख पाकिस्तानी

https://t.me/Hindiupanyas

रेंजर पहले तो चौंके—फिर चौंकन्ने होते हुए उन्होंने तुरंत अपनी पोजीशनें सम्भाल लीं।

इधर सतीश रावण ने दो बम और फोड़ डाले।

मगर लुढ़कना बंद नहीं किया उसने।

पल प्रति पल वह पाकिस्तानी बार्डर के करीब होता जा रहा था।

इधर रेट...ट...की आवाजों के साथ गोलियां उस पर बरस रही थीं—मगर अभी तक वह सुरक्षित था।

लुढ़कते हुए वह जैसे ही सीमा रेखा के करीब पहुंचा—एक धधकता हुआ शोला उसकी बांई बांह में घुसा और उसका मांस फाड़ते हुए निकल गया।

दर्दभरी सिसकारी निकल गई सतीश रावण के होंठों से।

मगर उसने लुढ़कना बंद नहीं किया।

लुढ़कते हुए उसने सीमा रेखा को पार किया ही था कि एक साथ कई कारबाइनें उसके बदन के साथ आ लगीं।

सतीश रावण वहीं थम गया।

पाकिस्तानी रेंजरों के कब्जे में था वह।

भारतीय बी.एस.एफ. के जवानों की तरफ से अभी भी गोलीबारी हो रही थी।

सो पाकिस्तानी रेंजरों ने भी मुंह खोल दिये।

"रेट...रेट...रेट...तड़...तड़" की आवाजों के साथ आकाश गूंजने लगा।

इधर सतीश रावण को कवर किये एक पाकिस्तानी रेंजर ने उसकी कमर पर बूट की तेज ठोकर जड़ दी।

कराहता हुआ सतीश रावण आगे को लुढ़क गया।

"ऐसे ही लुढ़कता हुआ आगे बढ़।" वह रेंजर गुर्राया।

सतीश रावण लुढ़कने लगा।

कुछ ही देर में सतीश रावण एक बंकर में पांच रेंजरों से घिरा हुआ था—उसका बमों वाला बैग-रिवाल्वर-करंसी—सब कुछ रेंजरों ने अपने कब्जे में ले लिया था।

बाहर अभी भी दोनों तरफ से गोलीबारी हो रही थी।

"कौन है तू?"

कैप्टन नजर आने वाला एक पाकिस्तानी गुर्राया।

सतीश रावण ने जोरों से थूक सटकी।

"स...सतीश...र...रावण...।" वह भर्राये स्वर में बोला।

https://t.me/Hindiupanyas

"यह तो हिन्दुस्तानी है।"

एक रेंजर चौंकते हुए बोला।

"खत्म कर दो इसे।" तीसरा बोला—"पाकिस्तान की सरजमीं पर हम हिन्दुस्तानी कदम किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं कर सकते।"

कैप्टन ने हाथ को थोड़ा ऊपर उठा कर उस रेंजर को रुकने का इशारा किया।

उस रेंजर का तना हुआ जिस्म ढीला पड़ गया—लेकिन उसका चेहरा बता रहा था कि वह अपने अफसर के इशारे से खुश नहीं है।

"पाकिस्तान में क्यों आया?" कैप्टन ने सतीश रावण को गहरी निगाहों से घूरते हुए पूछा।

"जान बचाने के लिये।" सतीश रावण गहरी सांस छोड़ते हुए बोला।

"क्या मतलब?"

"अपनी जान हर किसी को प्यारी होती है हुजूर—हिन्दुस्तान में मैंने जितना खून बहाया—उससे पुलिस मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ गई। मेरे सिर पर ईनाम घोषित हो गया। जब मुझे लगा कि अब मैं हिन्दुस्तान में ज्यादा दिन तक जिन्दा नहीं रह पाऊंगा—सो मैंने वहां से भागने का फैसला कर लिया...।"

"और यहां आ गया तू?"

"जी हां हुजूर।"

"इतना असलाह कहां से लाया तू?" कैप्टन ने उसके थैले की तरफ इशारा किया।

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"आप मेरे बारे में मालूमात हासिल करेंगे तो आप खुद ही जान जायेंगे कि किसी भी तरह का हथियार प्राप्त करना मेरे लिये नामुमकिन नहीं। लेकिन खुदा के वास्ते मुझे वापिस हिन्दुस्तान में मत धकेलियेगा—अब तो मुझ पर कोई मुकद्दमा भी नहीं चलेगा—सीधे गोली मार दी जायेगी।"

कैप्टन ने एक-दो पलों तक सोचा, फिर अपने अधीनस्थों से बोला—

"इसका ख्याल रखो—और अगर यह जरा भी चालाकी दिखाने की जुर्रत करे तो बेधड़क गोली मार देना।"

कहकर वह बंकर से बाहर आया और उधर बढ़ने लगा

https://t.me/Hindiupanyas

जिधर कि उसका अपना बंकर था।

बार्डर पर हो रही गोलीबारी अब काफी कम हो चुकी थी।

अपने बंकर में आकर उसने फोन उठाया जो कि मोबाइल फोन जैसा ही था।

फोन पर ही अंकित कुछ नम्बर मिलाकर उसने उसे कान से लगाया और दूसरी तरफ से आवाज आने की प्रतीक्षा करने लगा।

"सलाम वालेकुम...।" तभी दूसरी तरफ से आवाज आई।

"वालेकुम सलाम—मैं कैप्टन असलम बोल रहा हूं। मुझे फौरन जनाबेआला से बात करनी है.....।"

"मगर जनाबेआला तो नींद फरमा रहे हैं।"

"मेरा फौरन उनसे बात करना इन्तहाई जरूरी है।"

"एक मिनट होल्ड कीजिये।"

आवाज आई।

कैप्टन असलम दूसरी तरफ से आवाज आने का इंतजार करने लगा।

"यस।" तभी दूसरी तरफ से भारी आवाज आई।

"मैं कैप्टन असलम बोल रहा हूं जनाब।" तुरंत बोला असलम।

"कहो कैप्टन।"

"अभी-अभी एक हिन्दुस्तानी मुलजिम को पकड़ा है हमने—जो कि बार्डर पार करके आया है।"

"तो गोली मर दो उसे। क्या यही अर्जेन्ट बात कहनी थी?"

"जनाब उसने पन्द्रह-बीस बी.एस.एफ. के जवान मार डाले हैं।"

"क्या?" चौंकती आवाज।

"जी हां जनाब—इसी से पता चलता है कि वह एक बेहद खतरनाक मुलजिम है।"

"क्या नाम है उसका?"

"सतीश रावण।" असलम बोला—"यही नाम बताया है उसने।"

दूसरी तरफ खामोशी छा गई।

थोड़ी देर बाद पुनः आवाज आई—

"बकाया रात उसे अपने पास रखो—सुबह मेरे पास ले

https://t.me/Hindiupanyas

आना तुम उसे।"

"जी, बेहतर जनाब।"

"शब्बा खैर।" दूसरी तरफ से आवाज आई और सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

कैप्टन असलम ने फोन बंद किया और बंकर से बाहर आकर सतीश रावण वाले बंकर की तरफ बढ़ गया।

ब्रिगेडियर इब्राहिम खान ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा, कुछ पल सोचा, फिर पुनः रिसीवर उठाकर कोई नम्बर मिलाया।

"ब्रिगेडियर इब्राहिम खान बोल रहा हूं।" दूसरी तरफ से आवाज आते ही वह बोला।

"जनाबेआला।" दूसरी तरफ से सतर्कता भरी आवाज आई।

"हिन्दुस्तान के जितने भी शातिर मुलजिम हैं जो कि अभी तक पुलिस की गिरफ्त में नहीं आये हैं—उनका तमाम ब्यौरा लेकर यहां पहुंचो।"

"जी जनाबेआला—मैं अभी दस मिनट में रवाना हुआ जाता हूं।"

ब्रिगेडियर इब्राहिम खान ने रिसीवर रखा और बैड से उतर कर ड्राइंग रूम में आया और सोफे पर बैठ कर सिगरेट सुलगा ली।

इब्राहिम खान आई.एस.आई. का एक आला अफसर था। उसका काम पाकिस्तान में तैयार हो रहे उग्रवादियों को ट्रेनिंग देकर हिन्दुस्तान की सीमा में धकेलना था—ताकि वो वहां कत्लोगारत कर सके—तबाही मचा सके।

लम्बा ऊंचा चौड़ी छाती तथा छोटे बालों वाले इब्राहिम की दाढ़ी सिर्फ उसकी ठोड़ी को ही कवर कर रही थी। उसके गाल बालों से सफाचट थे।

उस वक्त वह दूसरी सिगरेट सुलगा चुका था, जब एक सामान्य कद के फौजी ने ड्राइंग रूम के दरवाजे में पैर रखा।

"गुलाम हुजूर में आने की इजाजत चाहता है।" वह बोला।

"आओ रफीक—मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था।" बोला इब्राहिम खान।

रफीक ड्राइंग रूम में दाखिल हो गया। अपने दांये हाथ में उसने एक फाइल उठा रखी थी।

https://t.me/Hindiupanyas

"बैठो।"

रफीक उसके सामने वाले सोफे पर बैठा और फाइल उसके सामने टेबल पर रखते हुए बोला—"हिन्दुस्तान में यूं तो एक से एक शातिर मुजरिम हैं जनाबेआला—मगर मैं सिर्फ चार की ही जानकारी आपके हुजूर में लाया हूं—जनाब बस यूं समझ लीजिये कि यह चार एक तरफ और पूरा अण्डरवर्ल्ड एक तरफ।"

रफीक ने फाइल खोली तो सामने बलराज गोगिया की तस्वीर नजर आई।

तस्वीर के नीचे उसका बायोडॉटा था।

"बजराज गोगिया है यह जनाबेआला—पुलिस के चंगुल से यह उस वक्त फरार हुआ था जब यह फांसी के फंदे के ऐन नीचे था। तब से अब तक यह कितनी ही कामयाब डकैतियां डाल चुका है और नामालूम कितने ही कत्ल कर चुका है।"

"ओह।"

"हुजूर को याद होगा—करीब दो महीने पहले हमारे जासूसों ने हिन्दुस्तान का एक फार्मूला चुराया था। तब यही बलराज गोगिया उसे लेने यहां आया था और कामयाब होकर वापिस गया था।"

"कमाल है—एक मुलजिम होकर यह फार्मूला लेने आया था।"

"जी जनाब.....यह मुलरिम जरूर है—कानून ने इसे जिन्दा या मुर्दा पकड़ने वाले पर ईनाम भी तय किया हुआ है—मगर है यह हिन्दुस्तानी—अपने मुल्क से यह बेहद प्यार करता है।"

इब्राहिम ने सिर हिलाते हुआ पृष्ठ पलटा।

सामने राघव की तस्वीर थी।

"यह बच्चा...।" वह हैरानी से उछल पड़ा।

"यह बच्चा नहीं है जनाबेआला—बलराज गोगिया का जोड़ीदार है। दिखने में यह दस-बारह साल का बच्चा ही नजर आता है—मगर इसकी उम्र सत्ताइस साल है।"

"ओह।"

"बला की ताकत है इसमें—बलराज गोगिया का जोड़ीदार बनने से पहले यह हिन्दुस्तान के पंजाब के लुधियाना शहर में रहता था और पेशेवर खूनी था। यूं समझ लीजिये जनाबेआला कि इतनी इसकी उम्र नहीं जितने कत्ल कर बैठा है यह।"

"कमाल है।" कहते हुए इब्राहिम खान ने राघव की तस्वीर

https://t.me/Hindiupanyas

के चेहरे पर उंगली फिराई।

"बलराज गोगिया के साथ यह भी पाकिस्तान में आया था।"

इब्राहिम खान ने पृष्ठ बदला।

अब सामने सतीश रावण का नाम लिखा देख इब्राहिम खान सीधा होकर बैठ गया।

"यह सतीश रावण है जनाबेआला—कोई दीन मजहब नहीं इसका। इसे प्यार है तो बस दौलत से प्यार है। दौलत की खातिर यह किसी भी हद तक गिर सकता है। अगर इसे दौलत मिले तो यह अपने सबसे करीबी का भी कत्ल करने से गुरेज न करे। एक नम्बर का धोखेबाज—खुद को हरामी कहते हुए यह इस तरह गर्दन अकड़ाता है मानो अपनी शान के कसीदे सुना रहा हो। कई कामयाब डकैतियां डाल चुका है यह—इसका शैतानी दिमाग इतना तेज चलता है कि किसी भी कत्ल की या डाके की स्कीम यह ऐसे बनाता है जिसकी कोई काट नहीं होती।"

रफीक ने सतीश रावण की कुण्डली बताई।

इब्राहिम खान कुछ देर सतीश रावण की तस्वीर को देखता रहा, फिर पृष्ठ बदला।

अगले पृष्ठ पर फोटो वाली जगह खाली थी तथा उसके नीचे भेड़िया लिखा हुआ था। उसके नीचे उसका बायोडाटा वगैरह कुछ नहीं था।

"भेड़िया!" हैरानी से बोला इब्राहिम खान।

"जी जनाबेआला! सचमुच की शैतान रूह जो हर उस आदमी के जिस्म पर काबिज हो सकती है जो किसी बेगानी औरत के साथ गलत काम कर रहा हो।"

"ओह!"

"ऊपर वाले ने इसे गुस्से में दो बद्दुआयें दी थीं—पहली यह कि यह जिस भी आदमी के शरीर में दाखिल होगा—इसके अंग में बेतहाशा बढ़ोत्तरी हो जाएगी। यूं समझ लीजिये कि उसका अंग घोड़ों को भी मात दे देगा।"

"या खुदा...फिर वह औरत बर्दाश्त कैसे करती होगी इसे?"

"इसीलिये तो ऊपर वाले ने इसे यह बद्दुआ दी कि कोई भी औरत इसे बर्दाश्त न कर पाये और मर जाए। और जब डाक्टर उसकी हालत से दो चार होंगे तो समाज में यह खबर फैल जायेगी कि भेड़िया ने फिर से किसी जिस्म पर कब्जा कर लिया है।"

https://t.me/Hindiupanyas

"और दूसरी बद्दुआ क्या थी?"

"दूसरी बद्दुआ इसकी मौत से ताल्लुक रखती थी। जब भी इसकी मौत करीब आयेगी तो मरने से पहले इसके ऊपर के दोनों दांत लम्बे होकर होंठों से बाहर निकल आयेंगे, ताकि इसे खत्म करने वाले को कोई शुबह न रहे कि वो किसी गलत आदमी को मार रहा है।"

"और मरने के बाद इसकी रुह फिर से नया जिस्म ढूंढना शुरू कर देगी।"

"इसी वजह से तो इसकी कोई तस्वीर नहीं बना पाये हम।"

"ऐसे तो यह कभी नहीं मरेगा।"

"मरेगा जनाबेआला—मगर तब जब इसे वो मौत मिलेगी जो ऊपर वाले ने इसके लिये तजवीज की है। इसकी खुशकिस्मती से दुनिया में यह अकेला ऐसा शख्स है जिसे अपनी मौत का इल्म है। इसे मालूम है कि इसकी मौत कैसे होगी।"

"ओह!"

"इससे ताल्लुक रखने वाली आज तक सिर्फ एक ही औरत जिन्दा बच पाई है जनाबेआला—बाकी की सभी औरतों का अंजाम बहुत ही खराब रहा।"

"कौन सी औरत बची?"

"रीमा राठौर...मुम्बई में वकालत करती है। मगर खबर मिली है कि वह किसी इन्टैलीजैंस एजेंसी की एजेंट है।"

बुरी तरह से चौंका इब्राहिम खान।

"रीमा राठौर के बारे में बताओ।" वह बोला।

"इतना तो मालूम नहीं हो पाया—जो पता चला उसके मुताबिक वह पेशे से वकील है—मगर वह हमेशा अण्डरवर्ल्ड के शातिरों से टकराती रहती है। दौलत उसके पास इतनी है जितनी बड़े से बड़े वकील के पास भी नहीं हो सकती। अण्डरवर्ल्ड के जितने भी बड़े-बड़े सरगना हैं, उनमें से आधे तो रीमा राठौर की मेहरबानी से जेलों में बंद हैं—या मारे जा चुके हैं।"

"उसकी कोई तस्वीर है तुम्हारे रिकार्ड में?"

"जी नहीं जनाबेआला—वैसे अगर आप चाहें तो दो एक रोज में मिल सकती है।"

"कोशिश करो।"

"जी बेहतर।"

https://t.me/hindiupanyas

"भेड़िया के बारे में बताओ।"

"जी, क्या जनाबेआला?"

"तुमने अभी भेड़िया का बायोडाटा बताया है—इसके काम के बारे में बताओ।"

रफीक ने पहलू बदला और बोला—"काम इसका सतीश रावण जैसा ही है जनाबेआला।"

"यानि धोखेबाज और बेरहम—जिसका कोई दीन-मजहब नहीं।"

"जी हां जनाबेआला।" रफीक बोला—"और पता चला है कि पिछले पांच महीने से उसका किसी को कुछ पता नहीं चल रहा।"

"यानि ऐसी कोई वारदात नहीं हुई जिसमें किसी औरत की बुरी हालत में मौत हुई हो।"

"जी हां जनाब।"

"हो सकता है उसने पहली बार वाली औरत की लाश कहीं दफना दी हो और उसके बाद किसी औरत के पास भी न फटका हो।"

"हो सकता है।"

तभी इब्राहिम बुरी तरह से चौंका—साथ ही उसकी आंखें सोच भरे अंदाज में सिकुड़ गईं।

"सतीश रावण का नाम सामने आये कितना अर्सा हुआ है?" उसने पूछा।

"यही करीब पांच महीने हो गए हैं।"

इब्राहिम खान की आंखें पुनः सिकुड़ गईं।

"कहीं ऐसा तो नहीं कि सतीश रावण ही भेड़िया हो?"

बुरी तरह उछल पड़ा रफीक।

"यह आप क्या कह रहे हैं जनाबेआला? ऐसा कैसे हो सकता है?

"क्यों नहीं हो सकता। भेड़िया की रुह सतीश रावण पर काबिज हो गई क्यों नहीं हो सकती?"

"मगर जनाबेआला...।"

"भेड़िया को गायब हुए पांच माह बीत चुके हैं। पांच माह से उसकी कोई खबर नहीं कि वह कहां है, किस जिस्म में है। इतना ही वक्फा सतीश रावण का नाम सामने आये हुए हुआ है। भेड़िया भी एक धोखेबाज, मक्कार और बदनीयत शैतान है और

https://t.me/Hindiupanyas

सतीश रावण भी बिल्कुल वैसा ही है।"

"लेकिन इससे यह साबित तो नहीं होता जनाबेआला कि सतीश रावण ही भेड़िया है।"

इब्राहिम खान ने उसकी बात का जबाव नहीं दिया—उसने फाइल बंद की और एक तरफ रखते हुए बोला—

"यह फाइल यहीं रहने दो—तुम जाओ।"

रफीक खड़ा हो गया।

उसने इब्राहिम खान को आदाब किया और ड्राइंग रूम से बाहर निकल गया।

इब्राहिम खान ने एक नई सिगरेट सुलगाई और उसके छोटे-छोटे कश लगाता गहरी सोचों में डूब गया।

❑❑❑

सुबह कैप्टन असलम सतीश रावण को एक दुर्दांत कैदी की तरह बांधे इब्राहिम खान के हुजूर में पेश हुआ। सतीश रावण को देखते ही इब्राहिम खान ने उसे फट से पहचान लिया। उससे पहले वह यही सोच रहा था कि कोई भारतीय जासूस सतीश रावण के नाम से पाकिस्तान में दाखिल हुआ होगा।

हालांकि कई बार उसका मन नहीं भी माना। कारण था सतीश रावण द्वारा बी.एस.एफ. के जवानों की हत्या। अगर वह हत्यायें न करता तो वह ऐसा सोच भी सकता था।

फिर भी बार-बार उसके दिल के किसी कोने से यही आवाज उठती कि हो सकता है वह जासूस ही हो। मगर सतीश रावण को देखते ही उसका सारा शुब्हा दूर हो गया।

उसने सतीश रावण के पैरों में पड़ी बेड़ियों पर निगाहें मारीं—फिर उसके पीठ पीछे बंधे हाथों को देखा—फिर उसके चेहरे पर निगाहें गड़ाते हुए मुस्कुराया—

"आओ भेड़िया साहब। पाकिस्तान में आपका इस्तकबाल है।"

बुरी तरह से चौंक उठा सतीश रावण। मन ही मन वह चकरा कर रह गया कि उसे कैसे पता लगा कि वह भेड़िया है, जबकि अपना यह भेद उसने सिर्फ उसी को बताया था जिसकी जिन्दगी के बस चंद लम्हें ही रह गए थे।

"य...यह आप क्या कह रहे हैं साहब।" वह हड़बड़ाते हुए बोला—"म...मैं तो सतीश रावण हूं।"

https://t.me/Hindiupanyas

"तुम सतीश रावण जरूर हो—मगर तुम्हारे मुंह से निकल रहे अलफाज सतीश रावण के नहीं, भेड़िया के हैं।"

"आपको गलतफहमी हुई है जनाब—मैं कोई भेड़िया भेड़िया नहीं—मैं सतीश रावण हूं। अ...आप चाहें तो मेरे बारे में मालूमात हासिल कर सकते हैं।"

"यहां क्यों आये हो?" बात को बदलते हुए बोला इब्राहिम खान।

"अ...अपनी जान बचाने के लिये।"

"अगर हम ही तुम्हें गोली मार दें तो?"

सतीश रावण पहले तो हड़बड़ाया, फिर गहरी सांस छोड़ते हुए बोला—

"फिर तो मैं यही सोचूंगा कि मैं हिन्दुस्तान में ही ठीक था। यहां आकर मैंने गलती की। क्योंकि हिन्दुस्तान में कम से कम कुछ दिन तो और जी लेता जोकि यहां नसीब नहीं हुए।"

"तुम क्या सोच कर आये थे कि यहां तुम्हारी जान को कोई खतरा नहीं?"

इब्राहिम खान उसे घूरते हुए बोला।

"नहीं...ऐसा तो नहीं सोचकर आया था।"

"तो फिर?"

"मैं तो यह सोचकर आया था कि मैं पाकिस्तानी फौज की नजरों से बचकर पाकिस्तान में दाखिल हो जाऊंगा।

लेकिन अफसोस कि मैं हिन्दुस्तानी फौज की निगाहों से ही नहीं बच पाया। उस कमीने ने तो मुझे यह कहा था कि इस साइड में दोनों तरफ सिर्फ पांच-पांच फौजी तैनात हैं। वर्ना मैं इधर से किसी भी सूरत में दाखिल नहीं होता।"

इब्राहिम ने कुछ पलों तक सोचने की मुद्रा बनाई, फिर कैप्टन असलम की तरफ देखते हुए गुर्राया—

"इसे वापिस हिन्दुस्तानी सीमा में फेंक दो। अपनी एक गोली जाया क्यों करें हम। इससे अब हिन्दुस्तानी बी.एस.एफ. ही निपटेगी।"

"न...ही...।" सतीश रावण एकदम से उसके पैरों में गिर पड़ा—"ए...ऐसा जुल्म हरगिज मत कीजियेगा जनाब—मुझे यहीं गोली मार दीजिये लेकिन हिन्दुस्तानी फौज के हवाले मत कीजिये। वर्ना वह मेरी चिंदियां उधेड़ कर रख देगी।"

कहते हुए उसने उसके पैर जोरों से पकड़ लिये और

https://t.me/Hindiupanyas

मन-मन के नकली आंसू बहाने लगा।

उसके आंसू देख इब्राहिम खान पहले तो अचकचाया, फिर मुस्कुरा पड़ा।

"ड्रामा वाकई अच्छा कर लेते हो। और मौके के हिसाब से खुद को उसी हिसाब से ढाल भी लेते हो। तुम्हारे बारे में जो सुना, वह सही है।"

सतीश रावण ने हड़बड़ाते हुए उसकी तरफ देखा। साथ ही उसने जोरों से थूक निगली।

"पैर छोड़ो मेरे।" बोला इब्राहिम खान।

"न...ही...।" सतीश रावण ने और भी सख्ती से उसके पैरों को पकड़ लिया—"जब तक आप या तो मुझे पनाह देने का या यहीं गोली मार देने का वादा नहीं करते...मैं आपके पैर नहीं छोड़ूंगा।"

"पैर छोड़।" फुंफकारा इब्राहिम खान।

सतीश रावण ने उसके पैरों को इस तरह हड़बड़ाते हुए छोड़ा मानो उसने कोबरा पकड़ रखा हो और उसका पता उसे अब चला हो।

वह वहीं जमीन पर बैठ आतुर निगाहों से उसे देखने लगा, जैसे उसकी जुबान से निकलने वाले शब्दों पर ही उसका भविष्य निर्भर हो।

इब्राहिम खान ने पहलू बदला और अपनी उंगलियों को एक दूसरे में फंसा उसे गहरी निगाहों से देखते हुए बोला—

"तुम्हें पनाह मिल सकती है।"

"सच!" सतीश रावण का चेहरा खिल उठा।

"मगर तुम्हें पहले यह कबूल करना होगा कि तुम ही भेड़िया हो।"

"म...मैं कबूल करता हूं।" फंसे स्वर में बोला सतीश रावण।

"क्या?"

"मैं ही...भेड़िया हूं...।"

"यानि तुम ऊपर वाले के दीदार कर चुके हो?"

सतीश रावण ने थूक सटकी। बोला कुछ नहीं वह।

"और ऊपर वाले की बद्दुआ की वजह से तुम्हारा अंग उस दौरान घोड़े को मात देने लगता है जब तुम किसी औरत पर सवार होते हो।"

https://t.me/Hindiupanyas

सतीश रावण ने पुनः जोरों से थूक सटकी। इस बार भी कुछ नहीं बोला वह।

"हम तुम्हारा वह नमूना देखना चाहते हैं।"

"माई बाप...।" सतीश रावण का स्वर भर्रा गया—"मैं सतीश रावण हूं। भेड़िया नहीं। आपकी पनाह लेने की खातिर मैंने झूठ बोला। मेरा अंग भी सामान्य आदमियों की तरह है।"

इब्राहिम खान ने उसे घूरकर देखा।

सतीश रावण ने आंखें नीची कर लीं।

"फिर भी हम तुम्हें चैक करेंगे।" कहकर उसने असलम की तरफ देखा—"एक खातून का बंदोबस्त करो।"

"जी जनाबेआला।" कहकर असलम वहां से हटा और बाहर निकल गया।

"अगर तुम..." उसके जाने के उपरांत इब्राहिम खान बोला—"भेड़िया न भी हुए तो भी तुम्हें पनाह मिल सकती है।"

"आपके बच्चे जीयें जनाब। मैं सारी उम्र आपके पैर धो-धो पीयूंगा।"

"लेकिन तुम्हें हमारा एक काम करना होगा।"

"मैं आपका कोई भी काम करने के लिये जान लड़ा दूंगा। बस आप मुझ पर अपना रहम बरसाते रहें।"

इब्राहिम ने कुछ पल सोचने की मुद्रा बनाई, फिर बोला—

"तुम्हारे बारे में हमारे पास पूरी जानकारी है।"

"ज...जी...।" हड़बड़ाया सतीश रावण।

"तुम नम्बर एक के हरामी हो—खुदगर्ज हो—डाके डालने में एक्सपर्ट हो—ड्रामेबाज कितने हो, यह हम देख ही रहे हैं। कत्ल करना तुम्हारा शौक है और तुम्हारे पास दिमाग इतना है कि तुम कितनी भी मुश्किल में से निकलने का रास्ता बना लेते हो।"

सतीश रावण इस बार सचमुच हैरान हुआ। पाकिस्तान में भी उसका नाम दर्ज था, यह उसे मालूम नहीं था।

इब्राहिम खान ने पहलू बदला और बोला—

"हिन्दुस्तान के दो जासूस किसी खास मिशन के तहत पाकिस्तान में आये हैं। तुम्हें उन दोनों को ढूंढना है।"

"किस मिशन के तहत आये हैं वे?" पूछा सतीश रावण ने। जबकि मन ही मन वह समझ गया था कि अवश्य ही वे फार्मूला हासिल करने आये होंगे।

"इससे तुम्हें कोई लेना-देना नहीं।"

https://t.me/Hindiupanyas

"लेकिन जनाब ऐसे कैसे पता लगेगा?"

"यह सोचना तुम्हारा काम है। इसी बात के लिये तुम्हें पाकिस्तान में पनाह दी जा रही है।"

"फिर भी कुछ तो क्लू मिलना चाहिये हुजूर कि उनका निशाना किस तरफ है?" सतीश रावण बोला—"तभी तो मैं निर्धारित कर सकूंगा कि मैं उन्हें ढूंढना कहां से शुरू करूं?"

"हो सकता है कि वे अब तक इस्लामाबाद पहुंच चुके हों। अगर नहीं पहुंचे तो पहुंचने वाले होंगे।"

"उनके नाम तो मालूम होंगे?"

"हमें बस यही पता है कि उनमें से एक औरत है—दूसरा आदमी। औरत बला की खूबसूरत है। और आदमी की नाक के नीचे झाड़ीदार मूंछें हैं।"

"उनकी कोई तस्वीर होगी आपके पास...। हो सकता है मैं उसे जानता होऊंगा।"

"नहीं...तस्वीर भी नहीं है हमारे पास।"

"फिर ऐसे कैसे पता चल सकता है?"

"तुम सोचो—पनाह तुमने लेनी है। अगर तुम उन्हें ढूंढने में नाकाम रहे तो हम तुम्हें हिन्दुस्तानी फौज के हवाले कर देंगे।"

सतीश रावण का चेहरा पीला पड़ गया। जैसे हिन्दुस्तान फौज के सामने फेंके जाने के नाम से ही उसके प्राण कांप उठे हों।

यह अलग बात थी कि भीतर ही भीतर वह अपनी पीठ ठोक रहा था।

"शाबास सतीश रावण—ऐसे ही नाटक करता रह—बहुत जल्द तू उस फार्मूले के बारे में जान जाएगा कि वह कहां रखा है।" वह मन ही मन स्वयं से बोला।

"बोलो—क्या तुम उनका पता लगा सकते हो?" इब्राहिम बोला।

"आप निश्चिंत रहिये जनाब—उन जासूसों का पता लगाने के लिये मैं जमीन-आसमान एक कर दूंगा।"

"एक बात कान खोलकर सुन लो।" तभी सहसा ही इब्राहिम खान की आवाज में गुर्राहट उभर आई—"हमें मालूम है कि तुम अव्वल दर्जे के मतलबी और हरामी शख्स हो—अगर तुमने हमें गोली देने की कोशिश भी की तो तुम अगली सांस नहीं ले पाओगे। तुम हर वक्त हमारी गन के निशाने पर रहोगे—जहां कहीं भी हमने यह महसूस किया कि तुम हमें दगा दे रहे हो—हमारी गन

https://t.me/Hindiupanyas

से निकली गोली तुम्हारे सीने को फाड़ डालेगी।"

"म...मैं ऐसा भूलकर भी नहीं करूंगा जनाब—मुझे अपनी जिन्दगी से बहुत प्यार है।"

"एक घण्टे बाद हम तुम्हें रवाना कर देंगे—हमारा एक प्लेन तुम्हें इस्लामाबाद पहुंचा देगा।"

"जी...।" सतीश रावण ने सिर हिलाया।

"और एक घण्टे में तुम हमें यह साबित करके दिखाओगे के तुम भेड़िया नहीं हो।"

सतीश रावण बोला कुछ नहीं—बस सिर झुका दिया।

मन ही मन वह खुश हो रहा था कि उसे यहां आते ही बगैर टोटके के लड़की मिल रही थी।

कैप्टन असलम के साथ जिस युवती ने ड्राइंगरूम में प्रवेश किया, वह सांवले रंग की साधारण शक्लो सूरत वाली करीब तीस साल की औरत थी।

ऊपर वाले ने उसे शक्ल बेशक साधारण दी थी मगर उसके जिस्म को बड़ी लगन से बनाया था—उसकी शानदार फिगर को देखकर ही आदमी उसकी शक्लोसूरत को भूल जाता था।

युवती ने कमर तक झुककर इब्राहिम खान को आदाब किया।

"हसीना।" इब्राहिम खान बोला—"यह हमारा खास गुलाम है। तुम्हें एक घण्टा इसे बर्दाश्त करना है। यह तेरे साथ जैसा चाहे करे, तुझे इनकार नहीं करना।"

युवती ने सहमति में सिर हिलाते हुए सतीश रावण की तरफ देखा।

"बाहर निकलते ही सीधे हाथ को तीसरा कमरा हमारी ख्वाबगाह है। इसे ले आओ वहां।"

इब्राहिम खान ने सतीश रावण से कहा।

सतीश रावण ने सिर हिलाया और हसीना के साथ इस तरह कमरे से बाहर निकला—जैसे वह मजबूरीवश जा रहा हो जबकि उसका दिल न हो।

उसके बाहर निकलते ही इब्राहिम खान के होंठों पर मुस्कान फैल गई।

तुरन्त वह सोफे से खड़ा हुआ और दांई तरफ दरवाजे की

https://t.me/Hindiupanyas

तरफ बढ़ गया।

उसे वह नजारा देखना था—जो उसके बैडरूम में शुरू होने जा रहा था।

□□□

"जूं..." की आवाज करते प्लेन ने अपने पहिये रनवे से लगाये और दूर तक दौड़ता चला गया।

प्लेन के रुकते ही सीढ़ी वाली गाड़ी प्लेन की तरफ बढ़ी और कुछ ही देर में सीढ़ियां प्लेन के दरवाजे के साथ इस तरह फिट नजर आ रही थीं मानो वे प्लेन के भीतर से ही निकली हों।

यात्री बाहर निकलने लगे। और उन यात्रियों में बलराज गोगिया और सायरा भी थे।

बलराज गोगिया इस वक्त मेकअप में था।

ऊपर वाले ने उसे खूबसूरत तो बनाया ही हुआ था—ऊपर से मेकअप हुआ होने के कारण वह बिल्कुल अंग्रेज नजर आ रहा था।

सायरा बिना मेकअप के थी।

प्लेन से उतर कर वे सीधा ग्रीन गेट की तरफ बढ़े और बिना किसी तलाशी के एयरपोर्ट से बाहर आ गए। राबर्ट बुश ने उनके इस्लामाबाद में पहुंचने की सचमुच बहुत शानदार व्यवस्था की थी।

मुम्बई से वे सीधा दिल्ली और दिल्ली से नेपाल पहुंचे थे।

नेपाल में सी.आई.ए. के एक एजेंट ने बलराज गोगिया और सायरा को रिसीव किया और वहीं पर ही उसका मेकअप करके उसे तथा सायरा को उनके पासपोर्ट तथा वीजा पकड़ा दिये।

पासपोर्ट में बलराज गोगिया का नाम पैरी ग्रेग था और सायरा डायना ग्रेग थी।

वहां से दोनों रायल नेपाल के प्लेन द्वारा सीधा इस्लामाबाद पहुंच गये और बिना किसी रुकावट के एयरपोर्ट से बाहर आ गये।

बाहर आते ही सायरा ने एक टैक्सी रुकवाई और बलराज गोगिया से बोली—

"आओ।"

बलराज गोगिया आगे बढ़ा और टैक्सी की पिछली सीट पर बैठ गया।

पीछे-पीछे सायरा भी टैक्सी में प्रवेश कर उसके बराबर

https://t.me/Hindiupanyas

वाली सीट पर बैठ गई।

"चांद होटल।" सायरा टैक्सी ड्राइवर से बोली।

टैक्सी आगे बढ़ी तो सायरा ने बलराज गोगिया की तरफ देखा जो कि गहरी सोचों में डूबा हुआ था।

हां...वह कहीं और ही खोया हुआ था। कितनी आसानी से वह हिन्दुस्तान से निकलकर पाकिस्तान पहुंच गया था। जबकि वह पहले कई दफा हिन्दुस्तान से भागने की कोशिश कर चुका था। मगर हर बार वह गलत हाथों में ही पड़ा और मजबूरन उसे पुनः गलत हाथों की कठपुतली बनना पड़ा।

मन ही मन उसने निश्चय कर लिया कि यह काम निपटा कर वह राघव के साथ अपने दम पर इसी रास्ते से हिन्दुस्तान से फरार होगा।

हां, अगर राबर्ट बुश अपने सौदे पर कायम रहा तो उसे यह मुश्किल भी नहीं करनी पड़ेगी। क्योंकि उसने दो करोड़ डालर देने और उसे अमेरिका में बंगला देने का वादा किया है।

"क्या सोच रहे हो?" तभी सायरा की आवाज उसके कानों में पड़ी।

बलराज गोगिया अपनी सोचों से बाहर निकला—गर्दन सायरा की तरफ मोड़ी और गम्भीर मुस्कान मुस्कुराया। बोला कुछ नहीं वह।

"लगता है प्लान बना रहे हो कि...।"

"बात करने से पहले यह तो देख लो कि हम हैं कहां।" बलराज गोगिया उसकी बात काटते हुए बोला—"जो बात करना, होटल में पहुंच कर करना।"

सायरा को भी अपनी गलती का अहसास हुआ—सो वह चुप कर गई।

आधे घण्टे बाद टैक्सी चांद होटल के ऐन सामने आकर रुकी।

मुल्तान चौक के दांई तरफ बना चांद होटल तीन सितारा दो मंजिला होटल था। जिसके काले शीशे के गेट के बराबर सुरमई रंग की शलवार कमीज पहने दरबान खड़ा था।

बलराज गोगिया ने टैक्सी का भाड़ा अदा किया और सायरा के साथ टैक्सी से बाहर आकर दांये-बांये देखा।

चौक की चहल-पहल देख उसे लगा कि शायद मुल्तान चौक इस्लामाबाद का सबसे व्यस्त चौक है।

https://t.me/Hindiupanyas

गर्दन सीधी की उसने और सायरा के साथ गेट की तरफ बढ़ा

उनके गेट के करीब पहुंचते ही दरबान ने उन्हें आदाब किया और दरवाजा खोल दिया।

दोनों दरवाजे में प्रवेश कर हाल में आ गये।

बलराज गोगिया ने बांई तरफ काउंटर की तरफ देखा—जिसके पीछे लम्बी दाढ़ी वाला दुबला-सा व्यक्ति बैठा था।

बलराज गोगिया उधर बढ़ा और काउंटर के करीब आकर होंठों पर मुस्कान लाते हुए बोला—

"हैलो।"

"आदाब अर्ज है जनाब...हुक्म कीजिये।" काउंटर मैन बोला।

बलराज गोगिया ने अपने चेहरे पर उलझन भरे भाव पैदा किये—जैसे उसे उसकी भाषा समझ में न आई हो।

"यू आर वैलकम इन पाकिस्तान।" उसकी उलझन समझते हुए काउंटर मैन इंगलिश में बोला—"व्हाट केन वुई डू फार यू?"

बलराज गोगिया के चेहरे पर फैली उलझन तुरन्त गायब हो गई।

"मिस्टर एण्ड मिसेज पैरी ग्रेग के नाम से हमारी रिजर्वेशन है यहां।" वह इंगलिश में बोला।

"वेट ए मिनट सर।" काउंटर मैन बोला और रजिस्टर खोलकर देखने लगा। शीघ्र ही उसने गर्दन उठाई और बोला—

"रूम नम्बर सिक्सटीन।"

कहकर उसने एक रूम ब्वाय को बुलाकर की-बोर्ड से चाबी उतारी और उसे थमाते हुए बोला—"साहब और मेमसाहब को कमरा नम्बर सोलह में पहुंचा दो।"

कुछ ही देर में दोनों सोलह नम्बर कमरे में थे।

कमरा पुराने अंदाज में बेहद खूबसूरती से सजा हुआ था। कमरे की साज सज्जा देख कर ऐसा लगता था मानो वे मुगल काल में हों।

कमरे के बीचोंबीच शानदार गोल डबलबैड लगा हुआ था। जिसके चारों तरफ मलमल का गुलाबी कपड़ा लगा था जो कि ऊपर छत पर लगे हुक के साथ इकट्ठा होकर बंधा हुआ था। बैड के करीब ही मुगलई अंदाज की कुर्सियां तथा उनके बीच में वैसा ही टेबल लगा हुआ था—जिस पर कि चांदी का जग और गिलास

https://t.me/Hindiupanyas

रखे थे।

बैड पर सुरमई रंग की शनील की चादर बिछी हुई थी तथा दो गोल तकिये लगे हुये थे।

अगर कमरे में कोई चीज आधुनिक थी तो वह था टेलीफोन, जो कि अभी-अभी बजा था।

"ट्रिन...ट्रिन।"

बलराज गोगिया फोन की तरफ बढ़ा।

"हैलो।" रिसीवर उठाकर कान से लगाते हुए वह बोला।

"आप कुछ लेंगे सर?" दूसरी तरफ से आवाज आई।

"नहीं।" बलराज गोगिया बोला—"फिलहाल हम आराम के मूड में हैं।"

"ओ.के. सर—अगर किसी भी चीज की जरूरत हो तो आप वन डिजिट डायल कर दीजियेगा।"

जवाब न देते हुए बलराज गोगिया ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और सायरा की तरफ देखा—जो कि दरवाजे की चिटकनी बंद कर बैड की तरफ बढ़ रही थी।

"उफ...बहुत थक गई हूं।" वह बैड पर बैठते हुए बोली—"अभी आराम करने को मन कर रहा है। तुम भी आराम कर लो।"

आखिरी शब्द कहते हुए उसने जिस अंदाज से बलराज गोगिया को देखा था—उससे बलराज गोगिया समझ गया कि वह क्या चाहती है।

बलराज गोगिया बैड के किनारे बैठा—झुककर जूते उतारे और बैड पर लेट गया।

"तुम ठीक कह रही हो।" वह बोला—"अभी मैं भी आराम करने के मूड में हूं।"

सायरा ने ऐसे आंखें चमकाईं जैसे उसे मुंहमांगी मुराद मिल गई हो। वह यही समझी कि बलराज गोगिया भी वही सोच रहा है जो वह सोच रही है।

तुरन्त उसने सैंडिल उतारे और बिना देर किये बलराज गोगिया पर छलांग लगा दी।

अपनी छातियों से उसने उसके सीने को दबाया और अपनी गर्म सांसें उसके चेहरे पर छोड़ते हुए बोली—"राबर्ट बुश ने मुझे तुम्हारे साथ भेजा ही इसीलिये था कि मैं तुम्हें बोर न होने दूं।"

https://t.me/Hindiupanyas

जिस तरह गहरी सांसें छोड़ते हुए वह बोल रही थी—उसी से ही बलराज गोगिया समझ गया कि वह बहुत जल्दी गर्म हो जाने वाली चीज थी।

उसने अपना हाथ उसकी टॉप के गले में डाला और आहिस्ता से उसकी छाती को दबाया।

"मुझे रॉबर्ट बुश के बारे में बताओ।" वह बोला।

"क्या?"

"यही कि हिन्दुस्तान में उसका सम्पर्क किस-किस से है। उसके अण्डर काम करने वाले एजेंट कौन-कौन से हैं।"

"मुझे नहीं पता।"

"उस जगह का तो पता होगा जहां से कि मेरे दोस्त राघव के कमरे के फर्श को कन्ट्रोल किया जाता है।"

"सॉरी...मैं नहीं जानती।"

बलराज गोगिया ने उसकी टॉप में से हाथ निकाला और उसे अपने ऊपर से परे धकेल दिया।

"अरे...।" चौंकी सायरा—"क्या हुआ?"

"तुम्हें नींद आ रही है...सो जाओ।" चिढ़े स्वर में बोला बलराज गोगिया।

मुस्कुरा पड़ी सायरा। वह उठ बैठी और बलराज गोगिया के चेहरे पर निगाहें जमाते हुए बोली

"पुरुष मेरी जरूरत है—बलराज गोगिया, मेरी कमजोरी नहीं। अगर तुम यह सोच रहे हो कि इस तरह तुम मुझे अपनी गुलाम बना लोगे तो यह तुम्हारी भूल है। तुम मुझसे सिर्फ फार्मूले से सम्बंधित सवालों का जवाब ही पूछ सकते हो। इसके अलावा कुछ भी पूछने की कोशिश भी मत करना।"

"और तुम भी मेरे करीब आने की कोशिश मत करना।" गुर्राया बलराज गोगिया।

सायरा हंस पड़ी।

"लगता है तुम्हारे पास वो नहीं है जो एक मर्द के पास होना चाहिये। वर्ना एक हसीन-तरीन जवान औरत के इतने करीब होने पर भी तुम इस तरह ठण्डे न पड़े होते।"

"तुम थक गई हो—सो जाओ।" सपाट लहजे में बोला बलराज गोगिया।

"मुझे नींद नहीं आ रही। मैं तो बस तुम्हारा साथ पाने के लिये बहाना बना रही थी।"

https://t.me/Hindiupanyas

बलराज गोगिया ने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"मैं सो रहा हूं। दो घण्टे बाद उठूंगा—इन दो घण्टों में तुम मेरे लिये एक रिवाल्वर का बंदोबस्त करोगी—साथ में कुछ पठानी कपड़ों का भी बंदोबस्त करना है तुम्हें।"

"रिवाल्वर का क्या करोगे?"

"तुम्हारी खोपड़ी उड़ाऊंगा।" भिनभिनाते हुए बोला बलराज गोगिया।

"म...मैं तो यह पूछ रही हूं कि क्या सोचा है तुमने?" हड़बड़ाई सायरा।

बलराज गोगिया ने खा जाने वाली निगाहों से उसे घूरा।

"तुम्हारे साथ ही पहुंचा हूं मैं यहां!"

"तो फिर रिवाल्वर इतनी जल्दी...।"

"क्या राबर्ट बुश ने तुमसे यह कहा था कि तुम मेरी हर बात में नुक्ताचीनी करो? मुझसे सवाल पूछो?"

सायरा पुनः हड़बड़ाई।

"मैंने तुमसे रिवाल्वर मांगी है—जो कि मेरे जागने पर मेरे सामने होनी चाहिये।"

कहने के साथ ही बलराज गोगिया ने बरवट बदली और आंखें बंद कर लीं।

सायरा ने नफरत भरे भाव से उसकी तरफ देखा।

"हीजड़ा...छक्का...।" उसने मन ही मन उसे गालियां निकालीं और बैड से उतर गई।

बलराज गोगिया द्वारा यूं ठुकराये जाने पर वह स्वयं को बहुत अपमानित समझ रही थी। यह उसकी जिन्दगी का पहला वाक्या था जब किसी मर्द ने उसकी यूं उपेक्षा की थी—वो भी तब जब वह स्वयं उसकी गोद में गिर रही थी।

एक औरत के लिये भला इससे बड़ा अपमान और क्या हो सकता था!

कुछ देर वह आग उगलती आंखों से उसे घूरती रही—फिर झटके से मुड़ी और दरवाजे की तरफ बढ़ गई। चिटकनी गिरा कर वह जैसे ही दरवाजे से बाहर निकली—

फटाक से बलराज गोगिया की आंखें खुल गईं।

कुछ पल वह यूं ही बैड पर पड़ा रहा—फिर वह तेजी से उठा। अनाप-शनाप जूते पहने और दरवाजे से बाहर निकल कर दरवाजा बंद किया और सीढ़ियों की तरफ लपका।

https://t.me/Hindiupanyas

जिस वक्त वह हाल में पहुंचा—उसने सायरा को गेट के करीब पहुंचते देखा।

तुरन्त वह वहीं एक खाली कुर्सी पर बैठ गया।

जैसे ही सायरा गेट से बाहर निकली—बलराज गोगिया तुरन्त कुर्सी से उठा और गेट की तरफ तेज कदमों से बढ़ा।

वह होटल से बाहर निकला तो उसने सायरा को एक टैक्सी में बैठते देखा।

उसने टैक्सी के नम्बर पर नजर डाली—फिर व्याकुलता से किसी खाली टैक्सी की तलाश में निगाहें घुमाईं।

टैक्सी उसे तब हासिल हुई, जब सायरा वाली टैक्सी काफी दूर निकल गई थी।

"जल्दी चलो।" वह टैक्सी ड्राइवर से बोला।

ड्राइवर ने टैक्सी आगे बढ़ा दी।

"तेज चलाओ।" पीछे बैठा बलराज गोगिया बोला।

टैक्सी ड्राइवर ने रफ्तार तेज कर दी।

बलराज गोगिया ने उसे और तेज चलाने के लिये कहा।

ड्राइवर ने टैक्सी को पूरी गति दे दी।

मगर बलराज गोगिया उस टैक्सी को नहीं पा सका जिसमें कि सायरा सवार हुई थी।

आधा घण्टा तक बलराज गोगिया सड़कें नापता रहा। मगर नाकामयाबी ही हाथ लगी।

एक निराशा भरी गहरी सांस छोड़ी उसने और हारे स्वर में बोला—

"वापिस चलो।"

ड्राइवर ने अगले चौराहे से टैक्सी को दूसरी लेन पर डाला और एक्सीलेटर पर पैर का दबाव डाल दिया।

"किसी को ढूंढ रहे थे क्या छोटे मियां?"

टैक्सी ड्राइवर ने गर्दन पीछे मोड़कर पूछा और पुनः सामने देखने लगा।

बलराज गोगिया ने तेजी से कुछ सोचा और सीट फांद कर उसके बराबर वाली सीट पर बैठ गया।

"क्या नाम है तुम्हारा?" उसने पूछा।

"शफीक खान।" बोला टैक्सी ड्राइवर।

"कब से चला रहे हो टैक्सी?"

"मेरी तो उम्र ही सड़कों पर बीत गई छोटे मियां।"

https://t.me/Hindiupanyas

"फिर तो तुम यहां के तमाम ड्राइवरों को जानते होगे?"

"तमाम नहीं...फिर भी काफी को जानता हूं। किसको पूछना है?"

"एल.आर.आई. 5786।" बलराज गोगिया ने टैक्सी का नम्बर बताया—"मुझे इस टैक्सी की तलाश है।"

"यह गाड़ी तो नफासत अली की है। मेरा ही शागिर्द है वो।" तुरन्त बोला शफीक।

बलराज गोगिया की आंखों में आशा के भाव उभरे।

"मुझे बताओगे बड़े मियां...नफासत अली कहां रहता है?"

कहते हुए बलराज गोगिया ने जेब से सौ रुपये का नोट निकाल कर उसकी गोद में रख दिया।

शफीक खान ने नोट उठा कर जेब में डाला और बोला—

"किराया अलग से लगेगा छोटे मियां।"

"डबल मिलेगा।"

"ईदगाह रोड पर रहता है नफासत अली।"

"ईदगाह रोड पर किस जगह?"

"सिंधी मौहल्ला पूछ लेना—उस मौहल्ले के करीब ही नीम का एक पेड़ है—बस वहीं नफासत अली का घर है। मगर तुम पूछ क्यों रहे हो उसे—तुम्हारा कोई सामान रह गया है उसकी टैक्सी में?"

"हां।" बलराज गोगिया ने उससे झूठ बोला।

"रात को चले जाना उसके पास—बस थोड़ी जेब गर्म कर देना उसकी—तुम्हारा सामान मिल जायेगा।"

बलराज गोगिया कुछ नहीं बोला—बस सामने देखने लगा।

वह सायरा का पीछा करके यह जानना चाहता था कि यहां राबर्ट बुश की कोई कमजोरी मिल जाये—जिससे कि वह अपने यार को उसकी कैद से आजाद करा सके। मगर अपनी इस कोशिश में वह नाकाम रहा। फिर भी एक हल्की सी आशा थी उसके मन में कि शायद नफासत अली से कुछ मालूम हो जाए।

होटल आकर उसने शफीक को दुगुना किराया देकर रवाना किया और अपने कमरे में आकर बैड पर लेट गया।

जिस वक्त बलराज गोगिया सायरा की टैक्सी को ढूंढ रहा था—उससे काफी पहले ही सायरा की टैक्सी एक शानदार बंगले

https://t.me/Hindiupanyas

के गेट के सामने रुकी।

टैक्सी में बैठे-बैठे ही सायरा ने भाड़ा चुकाया और दरवाजा खोलकर बाहर आ गई।

बंगले के गेट के बाहर खड़े दो गार्ड उसी की तरफ देख रहे थे।

जैसे ही वह गेट की तरफ बढ़ी—दोनों गार्ड एकदम से सतर्क हो गए—उनके हाथों में नमी स्टेनगनों के रुख उसकी तरफ हो गए।

मगर सायरा जरा भी नहीं घबराई—उसके कदम उनकी तरफ बढ़ते रहे।

"कौन हो तुम?" उसके करीब आते ही एक गार्ड सख्त स्वर में बोला।

"हसन साहब से कहो कि इण्डिया से गुलबदन आई है। एक हसीन तोहफा लेकर।"

सायरा बिना किसी खौफ के बोली।

इण्डिया का नाम सुनकर दोनों गार्ड बुरी तरह से चौंक पड़े। साथ ही उनकी निगाहें आपस में मिलीं।

"क्या काम है हसन साहब से?" एक गार्ड उसे घूरते हुए बोला।

सायरा का चेहरा एकदम से सुर्ख हो उठा।

"क्या तुम्हारी ड्यूटी में यह भी शामिल है कि तुम हर आने वाले से पूछताछ करो?"

वह सख्त स्वर में बोली।

दोनों बुरी तरह से हड़बड़ाये।

"इस तरह पूछने का हक तुम्हें तभी है, जब हसन साहब मुझसे मिलने से इन्कार कर दें।" बोली सायरा।

दोनों गार्डों की निगाहें पुनः आपस में मिलीं। फिर दाईं तरफ वाले गार्ड ने अपने साथी को कोई इशारा किया। बाईं तरफ वाले गार्ड ने जेब से एक वाकी टाकी निकाला—उसे आन किया और मुंह के करीब ले जाकर बोला—

"इण्डिया से कोई गुलबदन आई है—हसन साहब के लिये कोई हसीन तोहफा लेकर।"

अभी दो मिनट भी नहीं बीते थे उसे मैसेज प्रेषित किये हुए कि बंगले के भीतर से एक आदमी निकलकर गेट की तरफ बढ़ता नजर आया।

https://t.me/Hindiupanyas

उसे देख कर जिस तरह से दोनों गार्ड एकदम से अटेंशन हो गए थे—उससे साफ जाहिर हो रहा था कि वह कोई बड़ा ओहदेदार है।

वह व्यक्ति दोनों गार्डों के बीच से निकल कर सायरा के सामने आकर रुका और उसे गौर से सिर से पांव तक घूरा।

"कहां से आई हो?" उसने पूछा।

"इण्डिया से।" सायरा मुस्कुराते हुए बोली।

"कोड?"

"गुलबदन का हसीन तोहफा जो सिर्फ हसन साहब के लिये ही है।"

"नम्बर?"

"गुलबदन बिना नम्बर के खेल खेलती है।"

आश्वासन भरे अंदाज में उस व्यक्ति ने सिर हिलाया और सायरा की तरफ पीठ करते हुए बोला—

"आओ।"

सायरा उसके पीछे-पीछे चलने लगी।

कुछ ही देर में सायरा हसन के सामने कोर्निश बजाने वाले अंदाज में आदाब कर रही थी।

"हसन साहब की खिदमत में कनीज का सलाम।"

"आओ सायरा—हमें तुम्हारे पाकिस्तान पहुंचने की खबर मिल चुकी थी। बैठो।" हसन बोला।

हसन करीब पचास साल का तंदरुस्त और छोटे कद तथा सफेद बालों वाला व्यक्ति था।

सायरा उसके सामने वाले सोफे पर बैठ गई।

"शिकार पाकिस्तान पहुंच चुका है हुजूरेआला।" सायरा बोली—"और इस वक्त चांद होटल में आराम फरमा रहा है।"

"यानि हम जब चाहें उसे मौत के घाट उतार सकते हैं!" मुस्कुराया हसन।

"बेशक हुजूरेआला।"

"मगर अभी ऐसा करेंगे नहीं हम...।"

सायरा चौंकी।

"यह आप क्या कह रहे हैं हुजूरेआला।" वह हैरानी से आंखें चौड़ी करते हुए बोली—"बलराज गोगिया यहां वह फार्मूला हासिल करने आया है—जिसे चुराने के लिये हमें नामालूम कितनी मेहनत करनी पड़ी।"

https://t.me/Hindiupanyas

हसन के होंठों पर कमीनी मुस्कुराहट रेंग गई।

"तुम आई.एस.आई. की एक बेहतरीन एजेंट हो। आई. एस.आई. को तुम पर फख्र है। तुम्हारी काबलियत को देखते हुए हमने तुम्हें अमेरिका की खुफिया एजेंसी सी.आई.ए. में भर्ती करा दिया ताकि हमें यह मालूम होता रहे कि अमेरिका भारत के अन्दर क्या गुल खिला रहा है। और जब तुमने हमें मैसेज दिया कि फार्मूले के बारे में सी.आई.ए. को भी पता था तो हम हैरान रह गए और दूसरे मैसेज में तुमने हमें यह बताया कि फार्मूले को हमसे हासिल करने के लिये सी.आई.ए. बलराज गोगिया को तलाश कर रही है तो हमारे दिलों की धड़कनें तेज हो गईं।"

"ओह!"

"वह एक बार पहले भी पाकिस्तान में आ चुका है और इण्डिया की एक ईजाद 'अभिमन्यु' को हासिल करके कामयाबी से वापिस जा चुका है।"

"ओह!"

"हम समझ गये कि अगर बलराज गोगिया पाकिस्तान में दाखिल हो गया तो वह हमारे लिये खतरा बन जायेगा। हमने फौरन बड़े ओहदेदारों की मीटिंग बुलाई—जिसमें यह तय हुआ कि अगर बलराज गोगिया पाकिस्तान में आता है तो साथ में तुम होनी चाहिये। ताकि उसके पाकिस्तान में दाखिल होते ही हमें खबर लग जाये। और फिर जब तुमने अगले मैसेज में बलराज गोगिया के मिल जाने का मैसेज दिया तो हमने तुमसे कहा कि तुम भी उसके साथ पाकिस्तान आना।"

"जी हुजूरआला—मुझे आपका मैसेज मिल गया था। तभी तो मैंने राबर्ट बुश को कहा था कि मैं उसे जानने के साथ-साथ पाकिस्तान में कई साल रह भी चुकी हूं। ऐसे में मेरा ही बलराज गोगिया के साथ पाकिस्तान जाना ठीक रहेगा। ऊपर से मैंने अपनी बहादुरी तथा अक्लमंदी की धाक भी राबर्ट बुश के दिमाग में बिठा रखी थी। सो उसने फौरन हामी भर ली...और इस प्रकार मैं बलराज गोगिया के साथ यहां आ गई।"

सायरा बोली।

"और यही हम चाहते थे।"

"लेकिन हुजूर—अब जबकि शिकार सामने है तो फिर उसे बख्शा क्यों जा रहा है?"

हसन हौले से हंस पड़ा।

https://t.me/Hindiupanyas

"उसे बख्शा नहीं जा रहा सायरा—बल्कि उसे वक्ती तौर पर जिन्दा रखा जा रहा है।"

"मैं कुछ समझी नहीं हुजूरेआला?"

"हम उसके तेज दिमाग का इस्तेमाल करना चाहते हैं।"

"मैं अब भी कुछ नहीं समझी हुजूरेआला।" सायरा उलझन भरे स्वर में बोली।

हसन ने पहलू बदला और टांग पर टांग रखते हुए बोला—

"बलराज गोगिया एक बार पहले भी यहां आ चुका है और हमारे द्वारा किये गये हिफाजत के कड़े बंदोबस्त को नकारा करके वह पूरी कामयाबी से 'अभिमन्यु' को यहां से ले जा चुका है। यह उसके दिमाग की काबलियत का सबूत है।"

सायरा ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया। बोली कुछ नहीं वह।

"जो शख्स 'अभिमन्यु' को हासिल कर सकता है—वह इस फार्मूले को भी हासिल कर सकता है।"

"ऐसे में तो उसे फौरन से पेश्तर खत्म कर देना चाहिये।"

"खत्म तो हम उसे कभी भी कर सकते हैं। मगर इससे पहले हम फार्मूले के लिए किये गए हिफाजत के बदोबस्त को पूरी तरह से मजबूत कर लेना चाहते हैं।"

सायरा के चेहरे पर फिर से उलझन उभर आई।

"मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा हुजूरेआला।" वह बोली।

"तुम बलराज गोगिया के साथ लगी रहो। वह फार्मूले का पता कैसे लगाता है, इसकी खबर हमें करो। इससे हमें यह मालूम हो जायेगा कि आई.एस.आई. में कौन गद्दार है—या कौन जल्दी टूटने वाला है।"

"ओह!"

"फिर जब वह फार्मूले को चुराने की स्कीम बनाये तो उससे भी हमें अवगत करा दोगी तुम। इससे हमें अपनी हिफाजत के बंदोबस्त में हुई कमजोरियों का पता चल जाएगा। अब बोलो, हमने उसके दिमाग का इस्तेमाल किया कि नहीं?"

सायरा की आंखें फैल गई।

"ओह...अब समझी...आप इस तरह उसके दिमाग का इस्तेमाल करना चाहते हैं।" वह हैरानी से बोली।

"चोर का काम होता है उन सुराखों को ढूंढना जिनके बारे

https://t.me/Hindiupanyas

में मालिक कुछ नहीं जानता। हम उन्हीं सुराखों का पता करना चाहते हैं। जिससे कि हमें मालूम हो सके कि हमसे कहां चूक हो रही है और हम वक्त रहने उन सुराखों में सीमेंट भर सकें।"

सायरा ने समझने वाले अन्दाज में सिर हिलाया।

"उसके बाद हम बलराज गोगिया को खत्म कर देंगे।"

सायरा ने पुनः सिर हिलाया।

"तुम उससे क्या कह कर होटल से निकली थीं?" बात का रुख मोड़ते हुए बोला हसन।

"मैं नहीं निकली बल्कि उसने मुझे भेजा था।"

"क्यों?"

सायरा ने सब कुछ कह सुनाया।

मुस्कुरा पड़ा हसन।

"उसने तुम्हें दुत्कार दिया—यह तो तुम्हारे हुस्न की तौहीन हुई।"

गहरी सांस छोड़ी सायरा ने—"सच पूछिये हुजूरेआला तो यह सायरा के साथ पहला मौका था जब किसी मर्द ने उसे दुत्कारा था। वर्ना अब तक मर्द मेरे सामने कुत्ते की तरह दुम हिलाते थे। मैं जो कहती थी वही करते थे। मुझे सिर्फ छूने के लिये ही मर्द लड़ने-मरने को तैयार हो जाते थे...।"

"मगर बलराज गोगिया ने तुम्हारा सारा गुरूर मिट्टी में मिला दिया।"

सायरा ने एक लम्बी सांस छोड़ी।

"घबराओ नहीं...बलराज गोगिया की कमी को हम पूरा करेंगे। हम तुम्हें वो सब देंगे जो कि तुम्हारी जरूरत है।"

"बन्दी तो आपकी कनीज है हुजूरेआला।" सायरा ने सिर झुकाया।

"मगर अभी नहीं...अभी तुम जाओ यहां से—तुम्हारे पास वक्त की कमी है। अभी तुम्हें रिवाल्वर लेने जाना है इसलिये हम तुम्हारी तमन्ना फिर पूरी करेंगे।"

सायरा खड़ी हो गई।

"तो फिर कनीज को इजाजत दीजिये।"

वह आदाब फरमाते हुए बोली।

हसन उसके गले में से झांकती उसकी गुलाबी छातियों को देख मुस्कुराया और सिर हिला दिया।

□□□

https://t.me/Hindiupanyas

हसन के बंगले से निकलकर सायरा एक टैक्सी द्वारा पीर वाली गली में पहुंची।

टैक्सी का भाड़ा अदा करके वह बाहर आ गई और तब तक वहीं खड़ी रही जब तक कि टैक्सी वहां से चली नहीं गई।

जगह के नाम से ऐसा लगता था मानों वह कोई गली हो। मगर ऐसा नहीं था। वह एक काफी बड़ा चौक था। जिसके बीचों बीच किसी पीर की कब्र बनी हुई थी। कब्र के बराबर में ही पीपल का काफी बड़ा वृक्ष था तथा कब्र और पीपल के चारों तरफ गोलाई में जंगला लगा हुआ था। टैक्सी के चले जाने के उपरांत सायरा आगे बढ़ी और बाईं तरफ जाती एक सड़क पर पैदल ही आगे बढ़ने लगी।

कुछ ही देर में वह एक साधारण से मकान के दरवाजे की डोर बैल बजा रही थी।

"कौन है?" शीघ्र ही भीतर से एक मर्दाना आवाज आई।

"मैं हूं...सायरा। दरवाजा खोलो।" सायरा ने आवाज दी।

दरवाजा खुला।

सामने करीब चालीस साल का गोरा चिट्टा चौड़े जिस्म वाला व्यक्ति खड़ा था।

"मेरे आने का मैसेज मिल गया होगा तुम्हें।" सायरा उस व्यक्ति को देखते हुए बोली।

वह व्यक्ति कुछ नहीं बोला—बस एक तरफ हट गया।

सायरा भीतर प्रवेश कर गई।

दरवाजे को बंद करके वह व्यक्ति सायरा को एक कमरे में ले आया।

"बैठो।" वह बोला।

सायरा एक सोफा चेयर पर बैठ गई।

"मैं अभी आया।"

कहकर वह व्यक्ति बाहर निकल गया।

सायरा समझ रही थी कि वह बाहर क्यों निकला है। निश्चय ही वह अपनी तसल्ली करना चाहता था कि वह असली सायरा ही है या कोई और।

करीब पांच मिनट बाद वह वापिस लौटा तो उसके चेहरे पर इत्मिनान के भाव थे। वह उसके सामने वाली सोफा चेयर पर बैठ गया।

"कोई दिक्कत तो नहीं हुई पहुंचने में?" उसने पूछा।

https://t.me/Hindiupanyas

"नहीं...कोई दिक्कत नहीं हुई।"

"तुम्हारा साथी...क्या नाम है उसका...।" उसने जानबूझकर बात अधूरी छोड़ दी।

"बलराज गोगिया।" मुस्कुराई सायरा।

"हां वही...वह कहां है?"

"चांद होटल में।" सायरा बोली—"हमारे लिये उसी होटल में रिजर्वेशन थी।"

उस व्यक्ति ने समझने वाले अन्दाज में सिर हिलाया।

"क्या लोगी?"

"फिलहाल तो एक रिवाल्वर चाहिये मुझे।"

"मैं खाने-पीने की बात कर रहा हूं।"

"वो बाद में—मुझे होटल पहुंचना है।"

वह व्यक्ति सोफा चेयर से उठा और कमरे से बाहर निकल गया।

दो मिनट में वह वापिस लौटा तो उसके हाथ में रिवाल्वर थी।

उसने रिवाल्वर सायरा को दी और बोला—

"रिपोर्ट वक्त पर मिलती रहे।"

"मुझे मालूम है।" रिवाल्वर को अपने कपड़ों में कहीं गायब करते हुये बोली सायरा।

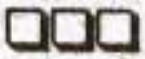

एक घण्टे में सतीश रावण ने उस युवती को वो तारे दिखाये कि युवती उसकी दीवानी हो गई। इधर इब्राहिम खान जो कि एक अन्य कमरें में टी.वी. के सामने बैठा स्क्रीन पर सतीश रावण की मर्दानगी देख रहा था, के दिल से भी यह ख्याल निकल गया कि सतीश रावण और भेड़िया एक ही हैं।

अब उसे क्या मालूम था कि धर्मराज ने काफी पहले ही अपने श्राप में तब्दीली कर दी थी—जिससे कि अब वह एक सामान्य व्यक्ति बन गया था।

बहरहाल उसने सतीश रावण की मर्दानगी के जौहर का खूब आनन्द लिया।

एक घण्टे बाद सतीश रावण के कमरे पर दस्तक पड़ी, तो वह युवती के पहलू से उठा और कपड़े पहनने लगा। कपड़े पहनते वक्त उसने सावधानी से आरी को अपनी पीठ पर चिपका दिया

https://t.me/Hindiupanyas

था।

उसने युवती की तरफ देखा जो कि शलवार पहन चुकी थी और अब ब्रा पहन रही थी।

वह मुस्कुराया और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

दरवाजा खोलकर उसने सामने खड़े कैप्टन असलम की तरफ देखा जो कि युवती की तरफ देख रहा था।

सतीश रावण एक तरफ हट गया—ताकि वह पूरी तसल्ली से उसे देख सके।

उसकी इस हरकत पर असलम पहले तो हड़बड़ाया, फिर मुस्कुराते हुए उसने सतीश रावण की तरफ देखा।

"कैसा लगा पाकिस्तान?" उसने अर्थपूर्ण लहजे में पूछा।

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी—"मैंने तो सोचा था कि पाकिस्तान की औरतों की तीन छातियां होंगी—और कालोनी भी छोटी होगी—मगर मुझे तो कहीं भी कोई भी फर्क नजर नहीं आया।"

असलम जोरों से हंस पड़ा।

"मियां! औरत औरत ही होती है। हर देश की औरत एक जैसी ही मिलेगी तुम्हें—उसकी दो ही छातियां होंगी और कालोनी भी वैसी ही होगी।"

"तो फिर...।"

"आओ...जनाबेआला तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।" उसकी बात को काटते हुए बोला असलम।

सतीश रावण असलम के साथ उसी कमरे में पहुंचा जहां पर कि वह पहले इब्राहिम खान से मिला था।

"तुम भेड़िया नहीं हो।" इब्राहिम खान उसके बैठते ही बोला।

"मैंने तो आपको पहले ही कहा था जनाब कि मैं भेड़िया नहीं हूं।"

"फिर भी तुमने उसे इतना कुछ दिया है कि अब उसकी हफ्तों की तमन्ना खत्म हो गई होगी।"

सतीश रावण ने सिर झुका लिया। जैसे कोई शरीफ आदमी अपनी प्रशंसा पर नम्र हो जाता है।

इब्राहिम खान ने पहलू बदला और बोला—"हमें पता लगा है कि तीनों भारतीय जासूस इस्लामाबाद रेलवे स्टेशन पर अकरम नाम के किसी शख्स से मिलेंगे।"

https://t.me/Hindiupanyas

सतीश रावण ने सिर हिलाया।

"अगर तुम्हें दोनों में से वहां कोई भी पहचान में आ जाये तो तुम अपने सिर पर हाथ फेर कर कंधों को झटक देना। हमारा आदमी फौरन तुम्हारे पास पहुंच जाएगा। तब तुम्हें बस उसकी तरफ इशारा करना होगा। बाकी का काम हम खुद सम्भाल लेंगे।"

सतीश रावण ने सिर हिला दिया।

"और अगर तुम्हारी पहचान में कोई नहीं आता तो तुम्हें एक हफ्ता दिया जायेगा उन्हें ढूंढने में। अगर तुमने एक हफ्ते में उन्हें ढूंढ लिया तो तुम पाकिस्तान के बाशिन्दे बन जाओगे—नहीं तो तुम्हें इण्डियन आर्मी के हवाले कर दिया जाएगा।"

सतीश रावण ने इस तरह थूक सटका मानो इब्राहिम खान की बात ने उसका कलेजा धड़का दिया हो।

"एक गुजारिश है माई बाप।" वह भर्राये स्वर में बोला।

"बोलो।"

"म....मुझे मेरा काम मेरे ही ढंग से करने की इजाजत दी जाए।"

"वो तो तुम करोगे ही। तभी तो हमने तुम्हें यह काम सौंपा है।"

"म...मेरे कहने का मतलब है कि मुझ पर नजर न रखी जाए...।"

"ताकि तुम खुद को पब्लिक में गायब कर लो।" गुर्राया इब्राहिम खान।

"मेरी ऐसी हिम्मत कहां माई बाप—मैं यहां पनाह लेने आया हूं। मुझे मालूम है कि मेरी एक छोटी सी भी गलत हरकत मुझे मौत के मुंह में पहुंचा देगी। ऐसे में मैं गायब होने की बेवकूफी कैसे कर सकता हूं। आप मुझे कोई फोन नम्बर दे दीजिये—जिस पर कि मैं अपनी रिपोर्ट भेजता रहूं। साथ ही मैं उस पर अपनी स्थिति के बारे में भी बताता रहूंगा।" सतीश रावण फरियादी के से अन्दाज में बोला—"आजादी महसूस कर मैं खुद को ज्यादा रिलैक्स महसूस करूंगा—ऐसे में मेरा काम भी बढ़िया होगा।"

"ठीक है।" कुछ सोचकर बोला इब्राहिम खान—"हम तुम्हें एक हफ्ते की आजादी बख्शते हैं।"

"आपके बच्चे जीयें माई बाप—ऊपर वाला आपको इतनी लम्बी उम्र बख्शे कि जमीन खत्म होने के बाद तक भी आप जिन्दा रहें।"

https://t.me/Hindiupanyas

"बातें बहुत शानदार बनाते हो।" मुस्कुराया इब्राहिम खान।

सतीश रावण ने सिर झुका लिया।

"लेकिन इस्लामाबाद स्टेशन पर हमारे आदमी तुम पर नजर रखे होंगे।"

सतीश रावण ने सहमति में सिर हिला दिया।

और फिर सतीश रावण को उसकी रिवाल्वर वापिस लौटा दी गई। और करीब दस मिनट बाद ही वह वायुसेना के एक प्लेन में बैठा इस्लामाबाद की तरफ उड़ा जा रहा था।

मन-ही-मन वह अपनी इस पहली सफलता पर ठहाके लगाता अपनी पीठ ठोंक रहा था।

❑❑❑

सुबह ग्यारह बजे सिकंदर ठाकरे और रीमा राठौर इस्लामाबाद के रेलवे स्टेशन के सामने एक रिक्शा से उतरे।

उस वक्त रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे पति-पत्नी के रूप में थे। रीमा राठौर काले रंग का बुर्का पहने थी और सिकंदर ठाकरे सफेद रंग के पठानी सूट में था।

टैक्सी हथिया कर वे अभी दस किलोमीटर का ही सफर तय कर पाये थे कि एक बैरियर के सामने सिकंदर ठाकरे को टैक्सी रोक देनी पड़ी।

रीमा राठौर को उसने पहले ही सचेत कर दिया था—सो रीमा राठौर फौरन सीट के नीचे दुबक गई थी।

बैरियर पर सिविल पुलिस थी। यह उनके लिये प्लस प्वाइन्ट था।

पुलिस ने टैक्सी में सरसरी तौर पर नजर मारी और पचास का नोट पकड़ा कर उसे वहां से जाने दिया।

"बाहर आ जाओ।" सिकंदर ठाकरे थोड़ा आगे बढ़ने पर बोला।

रीमा राठौर सीट के नीचे से निकली और सीट लांघकर सिकंदर ठाकरे के बराबर आ बैठी।

बेहद गम्भीर नजर आ रही थी इस वक्त वह।

"गाड़ी को किसी कालोनी में ले चलो।" वह गम्भीरता से बोली।

"क्यों?" चौंककर सिकंदर ठाकरे ने उसकी तरफ देखा।

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी और बोली—

https://t.me/Hindiupanyas

"पिछली चैक पोस्ट पर कोई मैसेज नहीं पहुंचा होगा। इसलिये हम बच निकले। मगर आगे जरूर फंस सकते हैं।"

"ओह!"

"इसलिये अब हमें नये ढंग से यहां से निकलना होगा।"

"कैसे?"

"तुम चलो तो सही।"

सिकंदर ठाकरे कुछ नहीं बोला।

करीब एक किलोमीटर चलने के उपरांत सिकंदर ठाकरे की नजर दांई तरफ सड़क किनारे लगे बोर्ड पर पड़ी।

छोटा झंग—बोर्ड पर ऊपर उर्दू में तथा नीचे अंग्रेजी में लिखा हुआ था। बोर्ड से थोड़ा आगे बाईं तरफ भीतर को जाती सड़क थी।

"लगता है कोई कस्बा है यह।" बोली रीमा राठौर—"टैक्सी को कस्बे में ले चलो।"

सिकंदर ठाकरे ने हुक्म का पालन किया और टैक्सी को कस्बे में जाने वाली सड़क पर डाल दिया।

थोड़ा आगे जाने पर बाजार शुरू हो गया, जो कि उस वक्त बंद था।

सड़क के दोनों तरफ दुकानें थीं तथा उनके बीच से भीतर को जाती गालियां थीं।

"बस यहीं रोक दो टैक्सी।" रीमा राठौर एक गली की तरफ इशारा करते हुए बोली।

सिकंदर ठाकरे ने टैक्सी गली के बाहर रोक दी।

टैक्सी में बैठे-बैठे ही रीमा राठौर ने गली के भीतर निगाह मारी।

गली के दोनों तरफ मकान बने हुए थे।

उसने सिकंदर ठाकरे की तरफ देखा और उसे बताने लगी कि उसे क्या करना है।

सुनकर सिकंदर ठाकरे बुरी तरह से उछल पड़ा। आंखें फटने के कगार तक पहुंच गईं।

"त...तुम पागल तो नहीं हो गई रीमा।" वह गुर्राये स्वर में बोला—"मैं तो हैरान हूं कि तुम ऐसी बात कर कैसे रही हो। जरा भी तरस नहीं आ रहा तुम्हारी आवाज में।"

रीमा राठौर के होंठों पर विषैली मुस्कान उभर आई।

"सवाल जनता का नहीं देश का है ठाकरे। देश के लिये

https://t.me/Hindiupanyas

अगर मुझे पूरी दुनिया को ही क्यों न तबाह करना पड़े...मैं पीछे नहीं हटूंगी।"

"लेकिन रीमा यह...।"

"जो कहा गया है—सिर्फ वही करना है।" रीमा राठौर का लहजा सख्त हो उठा।

एक गहरी सांस छोड़ी सिकंदर ठाकरे ने। निश्चय ही वह रीमा राठौर के फैसले से कतई खुश नहीं था। मगर इस वक्त वह कुछ बोल भी नहीं सकता था। सो वह दरवाजा खोलकर सड़क पर आ गया।

रीमा राठौर परली तरफ का दरवाजा खोलकर बाहर निकली और सिकंदर ठाकरे के बराबर आ गई।

"आओ।" वह बोली और कदम आगे बढ़ा दिये।

सिकंदर ठाकरे उसके साथ-साथ चल रहा था। इस वक्त उसका कलेजा धाड़-धाड़ करता उसकी पसलियों से टकरा रहा था।

"वो वाला मकान ठीक रहेगा।" रीमा राठौर दांई तरफ वाले एक दरवाजे की तरफ इशारा करते हुए बोली।

सिकंदर ठाकरे कुछ नहीं बोला। वह स्वयं को जहनी तौर पर मजबूत करने में जुटा हुआ था।

रीमा राठौर उस मकान के दरवाजे के सामने आकर रुकी और बिना किसी हिचकिचाहट के डोर बैल बजा दी।

भीतर कहीं घण्टी का कर्कश स्वर गूंजा।

"कौन है?" थोड़ी देर बाद भीतर से उनींदी आवाज आई।

"मैं हूं।" रीमा राठौर बोली—"दरवाजा खोलिये।"

दरवाजा खुला।

सामने करीब साठ वर्ष का बूढ़ा व्यक्ति खड़ा था, जो कि आंखें मिचमिचाते हुए उसे देख रहा था।

"आदाब।" रीमा राठौर ने माथे पर उलटा हाथ लगाया।

"आदाब—मैंने तुम्हें पहचाना नहीं मोहतरमा।"

वह उसे देखते हुए बोला।

"हम लाहौर से आये हैं।" रीमा राठौर भीतर प्रवेश करते हुए बोली।

मगर बूढ़े ने उसका रास्ता रोक लिया।

"लाहौर से आई हो—मगर अंदर क्यों जा रही हो—जब कि मैं तुम्हें जानता तक नहीं।"

https://t.me/Hindiupanyas

"आपके साहबजादे जानते हैं मुझे—उन्हें बुलाइए।"

"मैं यहां तन्हा रहता हूं।"

"लेकिन...।"

"तुम्हें गलतफहमी हुई है मोहतरमा।"

"क्या यह हाफिज गली नहीं?"

"यहां कोई भी हाफिज गली नहीं...।" बूढ़ा उसे संदेह भरी निगाहों से देखते हुए बोला।

"ओह!" रीमा राठौर के होंठों से अफसोस भरा स्वर निकला।

वह वापिस मुड़ी और दरवाजे तक आ गई।

उसके इस तरह मुड़ने से बूढ़ा लापरवाह हो गया—उसकी आंखों में उभरा संदेह भी गायब हो गया।

ठीक तभी शेरनी की सी फुर्ती से रीमा राठौर मुड़ी और बूढ़े पर टूट पड़ी।

बूढ़ा बुरी तरह से बौखला उठा—और जब तक वह सम्भलता—रीमा राठौर उसे नीचे गिरा उस पर सवार हो उसकी गर्दन दबोच चुकी थी।

इधर सिकंदर ठाकरे ने रिवाल्वर निकाली और दरवाजे को आनन-फानन बंद कर भीतर की तरफ लपका। एक कमरे में उसे एक जवान औरत लेटी नजर आई—जिसके तन पर कपड़े का एक रेशा भी नहीं था।

एक रिवाल्वरधारी को देखकर जोर की चीख निकल गई। साथ ही उसने चादर खींचकर अपने आगे कर ली।

"खबरदार...!" तभी फुंफकारा सिकंदर ठाकरे—"अगर चीखी तो गोली मार दूंगा।"

औरत के होंठ एकदम से मिल गए। मगर उसकी आंखों में छाया आतंक अभी भी वैसा ही था।

सिकंदर ठाकरे उसके करीब आया और रिवाल्वर उसकी तरफ तानते हुए गुर्राया—

"तुम दोनों के अलावा और कौन-कौन है यहां?"

"क...कोई नहीं।" औरत भर्राये स्वर में बोली।

"बूढ़ा तेरा क्या लगता है?"

"म....मेरा शौहर है।"

"साला हलकट।" बड़बड़ाया सिकंदर ठाकरे—"खुद की टांगें कब्र में लटक रही हैं और जवान बीवी को खुश कर रहा है।"

https://t.me/Hindiupanyas

औरत ने उसकी बड़बड़ाहट सुन ली थी। तभी तो उसकी आंखों में छाया खौफ कुछ कम हो गया था।

"क...कौन हो तुम?"

"तेरा यार तो हरगिज नहीं।" सिकंदर ठाकरे बोला—"चादर हटा और कपड़े पहन।"

"मेरे शौहर कहां है।" कहते हुए उसने चादर को जानबूझकर इतना ढीला कर दिया कि उसकी आधी से ज्यादा छातियां नजर आने लगीं। ऊपर से वह ऐसे दर्शा रही थी मानो उसे अपनी छातियों के नग्न होने का आभास न हो।

"बाहर है।" तभी दरवाजे में रीमा राठौर प्रकट हुई।

रीमा राठौर को देख औरत पुनः चौंकी और अपनी छातियों को पुनः ढक लिया।

रीमा राठौर उसके करीब आई और उसके चेहरे पर निगाहें जमाते हुए बोली—

"क्या नाम है तेरे खाविंद का?"

"इ...इस्माइल।"

"और तेरा?"

"रुखसाना...लेकिन तुम...।"

रीमा राठौर ने उसे आगे बोलने का मौका नहीं दिया। एकदम से वह झपटी उस पर और उसे नीचे गिरा कर उसकी गर्दन दबोच ली। और तब तक उसकी गर्दन को दबाती गई जब तक कि रुखसाना के प्राण पखेरू उड़ नहीं गए।

उसके मर जाने के उपरांत उसने उसकी गर्दन से हाथ हटाये और पेट पर बैठे-बैठे ही कहर भरी निगाहों से सिकंदर ठाकरे को देखा।

"क्या कहा था मैंने तुम्हें...।" वह गुर्राई—"कि अन्दर जो भी मिले, उसे खत्म कर देना।"

सिकंदर ठाकरे ने जोरों से थूक सटकी।

"य...यह नंगी थी।" वह हड़बड़ाये लहजे में बोला।

"और तुम इसकी छातियों के दर्शन कर रहे थे।"

सिकंदर ठाकरे पुनः हड़बड़ाया।

"मत भूलो कि हम दुश्मन देश में हैं—इस तरह अगर तुम रहमदिली से पेश आते रहे तो आबेहयात की बजाये हमारी लाशें पहुंचेंगी भारत में।"

"सॉरी...।" सिकंदर ठाकरे को जैसे अपनी भूल का अहसास

https://t.me/Hindiupanyas

हुआ।

"अगर इसकी चीख से पड़ौसी जाग जाते तो...।"

"सॉरी अगेन।"

"आइन्दा ऐसी गलती नहीं होनी चाहिये...बाहर से बूढ़े की लाश उठा लाओ।"

सिकंदर ठाकरे तुरन्त दरवाजे से बाहर निकला और बूढ़े की लाश को टांगों से पकड़कर घसीटते हुए कमरे में ले आया।

इस बीच रीमा राठौर रुखसाना की लाश को घसीटकर बाथरूम में पहुंचा चुकी थी।

उसके कहने पर सिकंदर ठाकरे ने बूढ़े की लाश को भी बाथरूम में पहुंचा दिया।

तत्पश्चात रीमा राठौर ने एक तरफ रखी लोहे की अलमारी की तरफ रुख किया।

उसने अलमारी खोली और उसमें से कपड़े निकालने लगी।

इधर सिकंदर ठाकरे साथ वाले कमरे में से एक बैग उठा लाया।

रीमा राठौर ने एक जोड़ा उसकी तरफ बढ़ाया और बोली—

"इसे पहन लो।"

सिकंदर ठाकरे ने जोड़ा ले, अपने बदन पर पहने टैक्सी ड्राइवर के कपड़े उतारे और वह जोड़ा पहन लिया।

रीमा राठौर ने भी अपने कपड़े उतारकर एक शलवार कमीज पहनी और ऊपर बुर्का पहन लिया।

तत्पश्चात उसने बैग में कुछ मर्दाना तथा जनाना कपड़े डाले और बैग को बंद कर बैड पर आकर बैठ गई।

"अगर..." वह बुर्का उठाते हुए बोली—"कोई पुलिसिया पूछे तो तुम क्या कहोगे?"

"यही कि मैं इस्माइल हूं—और तुम मेरी बेगम रुखसाना हो।"

"हां।" मुस्कुराई रीमा राठौर।

"और मैं ऐसा बदनसीब शौहर हूं कि अपनी बेगम को छू भी नहीं सकता। उस पर सवारी गांठने की बात तो बहुत दूर की हो जाती है।"

रीमा राठौर कुछ नहीं बोली—हां, उसकी मुस्कान जरूर तेज हो गई थी।

सुबह छः बजे तक दोनों उसी मकान में रहे। उनकी

https://t.me/Hindiupanyas

खुशकिस्मती से दरवाजे पर कोई दस्तक नहीं हुई।

छः बजे वे मकान से निकले और पैदल चलते हुए सड़क पर आ गए।

टैक्सी अभी भी यथा स्थान खड़ी थी। मगर उन्होंने टैक्सी की तरफ देखा तक नहीं।

बैग सिकंदर ठाकरे ने उठा रखा था।

पैदल चलते हुए दोनों हाइवे पर पहुंचे।

करीब उस मिनट के इन्तजार के बाद उन्हें दौलताबाद जाने वाली बस मिली।

दोनों उसमें सवार हो गए।

दौलताबाद पहुंचकर उन्होंने इस्लामाबाद जाने वाली बस पकड़ी और इस्लामाबाद के मेन बस अड्डे पर पहुंचे।

वहां से एक रिक्शा करके वे रेलवे स्टेशन की तरफ रवाना हो गए—और इस वक्त वे रेलवे स्टेशन के सामने रिक्शे से उतर रहे थे।

सिकंदर ठाकरे ने रिक्शा का भाड़ा अदा कर बैग उठाया और रिक्शा को वहां से जाने दिया।

"किसी भी स्टेशन की दो टिकट ले आओ।" तभी रीमा राठौर बोली।

"आओ—वेटिंग रूम में चलते हैं।"

सिकंदर ठाकरे बोला और आगे बढ़ गया।

पीछे-पीछे रीमा राठौर चलने लगी।

कुछ ही देर में रीमा राठौर एक बैंच पर बैग को अपने करीब रखे वेटिंग रूम में बैठी थी।

बुर्का उसने अभी भी ओढ़ रखा था।

सिकंदर ठाकरे टिकट लेने गया था।

अभी सिकंदर ठाकरे को गये हुए दो मिनट भी नहीं हुए थे कि सतीश रावण वेटिंग रूम में दाखिल हुआ।

रेलवे स्टेशन पर वह अभी-अभी पहुंचा था।

वेटिंग रूम के दरवाजे के करीब खड़े होकर उसने बैंचों पर बैठे लोगों को गौर से देखना शुरू किया।

घूमती हुई उसकी निगाहें रीमा राठौर पर भी पड़ीं। मगर चूंकि वह बुर्के में थी—इसलिये सतीश रावण उसका चेहरा नहीं देख पाया।

कुछ देर देखने के बाद वह वेटिंग रूम से निकला और एक

https://t.me/Hindiupanyas

तरफ खड़ा हो हर आने वाले शख्स को देखने लगा।

करीब पांच मिनट बाद उसकी निगाहें सिकंदर ठाकरे पर पड़ीं तो उसे ऐसा लगा जैसे उसने उसे पहले भी कहीं देख रखा है।

दिमाग पर जोर डाला उसने और यह सोचने लगा कि कहां देखा है।

सोचते हुए सहसा ही वह बुरी तरह से उछल पड़ा।

"सिकंदर ठाकरे!" वह मन ही मन बड़बड़ाया।

उसे याद हो आया कि जिस वक्त वक इंस्पैक्टर अविनाश के जिस्म में था, तब सिकंदर ठाकरे से उसका सामना हुआ था।

"सिकंदर ठाकरे यहां क्या कर रहा है।" पुनः बड़बड़ाया। "वह तो पुलिस वाला है—जासूस नहीं—जबकि वह जासूस को ढूंढने यहां आया है।"

"कहीं यही तो जासूस बनकर यहां नहीं आया?"

"इब्राहिम कह रहा था कि दो जासूसों में से एक औरत है।"

"कौन औरत हो सकती है इसके साथ...?"

यह प्रश्न दिमाग में आते ही उसके जेहन को एक तेज झटका लगा—साथ ही हथौड़े की चोट की तरह एक नाम उसके जेहन से टकराया—

"रीमा राठौर!"

"तो क्या रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे आये हैं यहां—फार्मूला लेने के लिये?"

यह सोच मन में आते ही उसके होंठों पर एक जहरीली मुस्कान रेंग गई। साथ ही उसकी आंखों के सामने वे क्षण उभर आये—जब पहली बार उसका सामना रीमा राठौर से हुआ था और उसने उसके साथ रेप किया था।

धर्मराज द्वारा श्राप में तब्दीली से पहले एक रीमा राठौर ही ऐसी औरत थी जो कि उसके नीचे आने के बाद जिन्दा रही थी। बाकी की जितनी भी औरतों पर वह सवार हुआ था—उनके चीथड़े उड़ गए थे। कोई भी बर्दाश्त नहीं कर पाई थी उसे—सभी की सभी मर गई थीं।

"तो रीमा राठौर आई है फार्मूला हासिल करने के लिये।" वह मन ही मन बड़बड़ाया और मन ही मन हंस पड़ा।

उसके जेहन में कोई शैतानी योजना पनपने लगी थी।

वह वहां से हटा और टहलता हुआ वेटिंग रूम की तरफ

https://t.me/Hindiupanyas

बढ़ गया जिसमें कि उसने सिकंदर ठाकरे को प्रवेश करते देखा था।

वह जानता था कि उस पर नजर रखी जा रही थी। इसलिये उसने अपने चेहरे पर ऐसा कोई भी भाव नहीं आने दिया था, जिससे कि आई.एस.आई. के जासूसों को यह आभास हो कि उसने उन जासूसों को पहचान लिया है जो कि हिन्दुस्तान से यहां आये हैं।

वेटिंग रूम में प्रवेश कर उसने सिकंदर ठाकरे की तलाश में निगाहें दौड़ाई तो उसे एक बुर्काधारी औरत के करीब बैठे पाया।

वह आगे बढ़ा और उनसे कुछ दूर एक बैंच पर बैठ गया।

दोनों भारतीय जासूसों का पता तो चल चुका था उसे—अब उसे अकरम का इंतजार था।

करीब पांच मिनट अपने स्थान पर बैठा रहने के उपरांत वह बैंच छोड़कर खड़ा हो गया और वेटिंग रूम से बाहर निकल गया।

उस पर नजर रखने वालों को कोई संदेह न हो—इसलिये वह बाहर निकला था।

बाहर निकलकर वह इधर-उधर टहलने लगा—साथ ही वह लोगों पर निगाहें भी रखे हुए था।

"कैसे हो मियां अकरम?" तभी उसके बांई तरफ से आवाज उभरी।

सतीश रावण की गर्दन फौरन आवाज की दिशा में घूमी।

स्टेशन मास्टर था वह—जो कि किसी अकरम को पुकार रहा था।

उसने उधर देखा—जिधर कि स्टेशन मास्टर देख रहा था।

करीब तीस साल का लम्बी दाढ़ी वाला व्यक्ति जो कि सिर पर कुल्लेदार पगड़ी पहने था, उसकी तरफ बढ़ रहा था।

सतीश रावण टहलता हुआ स्टेशन मास्टर के करीब आ गया।

"सलाम वालेकुम।" उस पगड़ी वाले ने करीब आकर सलाम किया—जिसे कि स्टेशन मास्टर ने अकरम कहकर पुकारा था।

"वालेकुम सलाम—आप इधर कैसे? कहीं बाहर जा रहे हो क्या छोटे मियां?"

स्टेशन मास्टर बोला।

https://t.me/Hindiupanyas

"नहीं...हमारा एक दोस्त मुस्तफाबाद से आ रहा है। उसी के खैर मकदम के लिए यहां मौजूद हूं। वर्ना आप तो जानते ही हैं बड़े मियां कि यहां दम मारने की भी फुर्सत नहीं।"

"बेगम कैसी हैं?"

"अल्लाह के फजल से राजी खुशी हैं। कभी आइए हमारे गरीबखाने में।"

"जरूर आयेंगे।"

और फिर दो-चार इधर-उधर की बातें करके अकरम वहां से हट गया।

सतीश रावण की नजर निरंतर उस पर थी। वह यह तसल्ली करना चाहता था कि वह यही अकरम है या कोई और।

शीघ्र ही उसे यह आभास हो गया कि वह किसी की तलाश में है।

"लगता है यह रीमा राठौर को ढूंढ रहा है।" सतीश रावण मन ही मन बड़बड़ाया।

कुछ देर बाद अकरम वेटिंग रूम में दाखिल हुआ तो सतीश रावण भी टहलते हुए उधर बढ़ गया।

□□□

अकरम पर निगाह जाते ही रीमा राठौर ने उसे फौरन पहचान लिया।

तुरंत वह सिकंदर ठाकरे के और करीब सरकी और धीमे स्वर में बोली—

"अकरम आ रहा है ठाकरे। वो जो लम्बी दाढ़ी वाला—कुल्लेदार पगड़ीधारी है—वही अकरम है।"

सिकंदर ठाकरे ने अकरम की तरफ देखा।

"उसके पास जाओ और कहो कि वह किस चक्की का आटा खाता है...जो इतना दुबला हो गया है।"

सिकंदर ठाकरे रीमा राठौर की बात पर पहले तो चौंका—फिर तुरंत ही वह समझ गया कि वह अवश्य ही कोड होगा। सो वह अपने स्थान से उठा और अकरम के सामने आकर खड़ा हो गया।

"सलामवालेकुम अकरम मियां।" वह मुस्कुराया।

एक अपरिचित को सामने देख हड़बड़ाया अकरम।

"माफ कीजिये, मैंने आपको पहचाना नहीं।"

"मैं इस्माइल हूं। उस वक्त तो बहुत मोटे थे तुम। कौन सी

https://t.me/Hindiupanyas

चक्की का आटा खाते हो जो इतने दुबले हो गए हो।"

बुरी तरह से चौंका अकरम।

मगर तुरंत ही उसने खुद को सम्भाला और सिकंदर ठाकरे से इस तरह बगलगीर होकर मिला मानो वर्षों बाद उसे देख रहा हो।

"आधे घण्टे बाद यहां से रवाना होना और सीधे सदर चौक पहुंच जाना। मैं वहीं मिलूंगा तुमसे।"

गले मिलते वक्त वह उसके कान में फुसफुसाया।

"और सुनाओ—किधर जा रहे हो?" अकरम दोनों हाथ अपने हाथों में लेते हुए बोला।

"मुस्तफाबाद—अम्मीजान की तबीयत अचानक बिगड़ गई है।"

"ओह।"

"तुम कैसे यहां?" पूछा सिकंदर ठाकरे ने।

"मेरा एक पुराना दोस्त मुस्तफाबाद से आ रहा है। उसे लेने आया हूं।"

और फिर दो-चार इधर-उधर की बातों के बाद अकरम वहां से हट गया तथा सिकंदर ठाकरे वापिस रीमा राठौर के पास जा बैठा।

"क्या कह रहा था?" रीमा राठौर ने पूछा।

"आधे घण्टे बाद सदर चौक के लिये रवाना होना है।" सिकंदर ठाकरे धीमें स्वर में बोला।

उधर वेटिंग रूम के बाहर खड़ा सतीश रावण मन ही मन मुस्कुरा रहा था। अकरम को उसने सिकंदर ठाकरे से गले मिलते देख लिया था।

यानि अब कोई संदेह नहीं रह गया था कि वह वही अकरम है या कोई और!

वह वहां से हटा और इधर-उधर टहलने लगा।

अकरम की तरफ उसने देखा तक नहीं कि वह किधर गया।

करीब बीस मिनट बाद एक स्पीकर से मुस्तफाबाद जाने वाली गाड़ी के आने की घोषणा हुई तो सिकंदर ठाकरे बैग उठाते हुए बैंच से खड़ा हो गया।

रीमा राठौर भी खड़ी हो गई और सिकंदर ठाकरे के पीछे-पीछे चलती प्लेटफार्म पर पहुंच गई।

https://t.me/Hindiupanyas

यह नाटक सिर्फ इसलिये खेला जा रहा था कि अगर कोई उन पर निगाह रखे हुए हो तो उसे कोई संदेह न हो।

दस मिनट बाद ट्रेन वहां पहुंची तो दोनों तेजी से ट्रेन की तरफ लपके।

ठीक तभी रीमा राठौर हड़बड़ाई और मुंह के बल प्लेटफार्म पर गिरी।

एक तेज चीख उगली उसके होंठों से।

ट्रेन की तरफ बढ़ता सिकंदर ठाकरे पहले ठिठका, फिर तेजी से रीमा राठौर की तरफ झपटा।

"क्या हुआ बेगम?" वह उसके करीब बैठते हुए बोला।

आने-जाने वाली कई सवारियों की निगाहें उन पर टिक गई। कई तो उनके इर्द-गिर्द खड़े हो गए।

"हाय अल्लाह...म...मैं मर गई।" रीमा राठौर अपना पैर दबाये हुए कराहते हुए बोली—"अल्लाह की मार पड़े उस पर जिसने मुझे गिराया।"

"हौसला रखो बेगम...उठो...गाड़ी निकल जाएगी।"

"मुझसे उठा नहीं जा रहा।" रीमा राठौर पैर दबाये हुए ही बोली।

और इस तरह अगले दस मिनट तक यह नाटक चलता रहा। इस बीच ट्रेन निकल चुकी थी।

"ठीक है...तुम यहीं रहो...मैं रिक्शा लेकर आता हूं।"

कहकर सिकंदर ठाकरे ने बैग वहीं छोड़ा और स्टेशन से बाहर निकल गया।

शीघ्र ही वह एक रिक्शा के साथ वापिस लौटा।

रिक्शा को प्लेटफार्म पर लाने के लिये उसे स्टेशन मास्टर से दरख्वास्त करनी पड़ी थी।

बड़ी मुश्किल से उसने रीमा राठौर को रिक्शा में बैठाया और फिर रिक्शा को बाहर खड़ा कर वह टिकट खिड़की की तरफ बढ़ गया।

वहां उसने टिकटें वापिस कर पैसे वापिस लिये और रिक्शा वाले के पास आकर बोला—

"टैक्सी स्टैण्ड पर चलो।"

रिक्शा वाला रिक्शा खींचते हुए टैक्सी स्टैण्ड की तरफ बढ़ा।

टैक्सी में बैठते वक्त भी रीमा राठौर ने असहनीय दर्द का

https://t.me/Hindiupanyas

प्रदर्शन किया। और इस तरह टैक्सी में बैठी मानो यह काम करते हुए उसका दम निकला जा रहा हो।

उधर सतीश रावण मन ही मन मुस्कुरा रहा था।

टैक्सी का पीछा करने की उसने कोई जरूरत महसूस नहीं की।

वह वहीं स्टेशन पर खड़ा आने-जाने वाले यात्रियों को देखता रहा।

दो घण्टे और बीत गये।

तभी एक आदमी उसके करीब आया और बोला—

"कुछ नजर आया?" उसने पूछा।

"अभी तो कुछ भी नहीं दिखा।" सतीश रावण ने मायूसी भरे स्वर में कहा।

"तुमने उस अकरम पर निगाह रखी थी—जिसे स्टेशन मास्टर ने पुकारा था।"

मन ही मन बुरी तरह से चौंका सतीश रावण।

"हां...।" प्रत्यक्षतया वह बोला।

"क्या कह रहा था वह स्टेशन मास्टर से?"

"यही कि मुस्तफाबाद से उसका कोई दोस्त आ रहा है। उसे लेने आया है था वह।"

"फिर?"

"फिर वह वेटिंग रूम में गया और वहां किसी इस्माइल नाम के व्यक्ति से मिला।"

"उस इस्माइल को पहचाना तुमने?"

"उसे पहली बार देखा था मैंने—हो सकता है वही जासूस हो। आप स्टेशन मास्टर से अकरम के बारे में पूछिये।"

"हम पूछ चुके हैं। वह वो अकरम नहीं जिसे हम ढूंढ रहे हैं...वह स्टेशन मास्टर के बड़े भाई के घर के पास रहता है और वहीं उसकी परचून की दुकान है। स्टेशन मास्टर उसे अच्छी तरह से जानता है।"

"और इस्माइल के बारे में पता लगाया?" सतीश रावण ने पूछा।

अपनी तरफ से वह जरा भी आभास नहीं होने देना चाहता था कि उसने सिकंदर ठाकरे को पहचान लिया है।

"वह पाकिस्तानी ही है।"

सतीश रावण ने चेहरे पर हैरानी उभरी।

https://t.me/Hindiupanyas

"आपने कैसे जाना?" वह हैरानी से बोला।

वह व्यक्ति मुस्कुरा पड़ा।

"तुमने उस शख्स की बेगम को देखा?" उसने पूछा

"वह तो बुर्का पहने हुए थी। भला मैं कैसे देख सकता था।"

"उसे गिरते तो देखा तुमने?"

"हां।"

"फिर क्या देखा?"

"उसके शौहर को उसे हौसला देते देखा। फिर उसे रिक्शा लाते देखा। और फिर औरत को रिक्शे का सहारा लेकर रिक्शा में बैठते देखा।"

"बस इसी से पता चलता है कि वह पाकिस्तानी है।"

बुरी तरह से चौंका सतीश रावण—"इससे कैसे पता चल गया आपको?" वह सचमुच हैरान हो रहा था।

"मान लो अगर भारत में किसी औरत के साथ ऐसा हादसा पेश होता तो क्या होता?"

"क्या होता?"

"उसका खाविंद रिक्शा लाने की बजाये अपनी बेगम को अपनी बांहों में उठाकर रिक्शा तक ले जाता। जबकि उस शख्स ने अपनी बेगम को छुआ तक नहीं।"

"यानि पाकिस्तान में अगर किसी की बेगम मर रही हो तो उसके शौहर को यह भी हक नहीं कि वह उसे उठाकर टैक्सी तक भी ले जाये?"

"अपने घर में वह अपनी बेगम के साथ कुछ भी करता रहे—लेकिन घर से बाहर वह अपनी बेगम को छू भी नहीं सकता।"

"क्या यह भी यहां के कानून में शामिल है?"

"शामिल तो नहीं—मगर सदियों से यही रीत चली आ रही है कि घर से बाहर मियां-बीवी शर्मोहया के पर्दे में रहते हैं।"

"बेवकूफ!" मन ही मन मुस्कुराया सतीश रावण—"केवल इतनी सी बात पर यह निश्चय कर लिया कि वह पाकिस्तानी था।"

प्रत्यक्षतया उसने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया और आगे बोला—

"अब मेरे लिये क्या हुक्म है? अभी तक तो मुझे कोई भी ऐसा शख्स नजर नहीं आया जिसे पहचान सकूं।"

https://t.me/Hindiupanyas

"लगता है अब वे दोनों जासूस यहां नहीं पहुंचने वाले।" वह व्यक्ति बोला—"इसलिये तुम एक हफ्ते तक आजाद हो।"

"थैंक यू माई बाप।"

"एक हफ्ते में तुमने किसी भी सूरत में उन दोनों को ढूंढना है।"

सतीश रावण ने सिर हिलाया।

तत्पश्चात उस व्यक्ति ने सतीश रावण को एक टेलीफोन नम्बर बताया और बोला—

"कोई भी जरूरी मैसेज या रिपोर्ट तुम किसी भी वक्त इस नम्बर पर दे सकते हो।"

"जी।"

"और हर शाम पांच बजे तुम्हें इसी नम्बर पर यह बताना होगा कि तुम किस जगह से बोल रहे हो।"

सतीश रावण ने सिर हिलाया।

"और एक बात कान खोलकर सुन लो।"

कहते हुए उस व्यक्ति की आवाज में सख्ती उभर आई।

सतीश रावण कुछ नहीं बोला—बस उसकी तरफ देखता रहा।

"हमें पता है कि तुम एक नम्बर के हरामी हो। धोखा देना तुम्हारी फितरत है। इसलिये हमसे चाल चलने की कोशिश मत करना—वर्ना तुम्हारा वो अंजाम होगा कि तुम सोच भी नहीं सकते।"

"कैसी बात करते हैं आप माई बाप—भला मेरी ऐसी मजाल कहां जो मैं आपको धोखा देने की सोचूंगा। मुझे यहां रहना है। पनाह मिल रही है मुझे यहां—और सतीश रावण अहसान फरामोश नहीं जो आपके खिलाफ कोई चाल खेले।"

वह व्यक्ति कुछ नहीं बोला—बस वहां से हट गया।

सतीश रावण के होंठों पर एक कमीनी मुस्कान आकर लुप्त हो गई। साथ ही उसने इस तरह गहरी सांस छोड़ी जैसे पहली बार खुद को आजाद महसूस कर रहा हो।

वह वहां से हटा और एक रिक्शे की तरफ बढ़ गया।

कुछ ही देर में वह रिक्शे में सवार सड़क पर जा रहा था।

अपने काम की शुरूआत करने से पहले वह पूरी तरह से आराम कर लेना चाहता था। ऊपर से उसे भूख भी लग रही थी।

कुछ ही देर में वह एक होटल में बैठा मटन बिरयानी का

https://t.me/Hindiupanyas

लुत्फ उठा रहा था।

□□□

टैक्सी सदर चौक के साइड में बने टैक्सी स्टैण्ड पर रुकी।

सिकंदर ठाकरे ने भाड़ा चुकाया और दरवाजा खोलकर बाहर आ गया।

रीमा राठौर परली तरफ से बाहर निकली और दर्द से कराहती हुई—लड़खड़ाते हुए एक तरफ बढ़ी और फुटपाथ पर बैठ गई।

दर्द का नाटक अभी उसे तब तक खेलना था जब तक कि उसे पूरी तसल्ली नहीं हो जाती कि उस पर किसी की निगाह नहीं।

सिकंदर ठाकरे बैग उठाये उसके करीब आ खड़ा हुआ और परेशान हाल में इधर-उधर देखने लगा।

जबकि हकीकत में वह अकरम को तलाश कर रहा था।

घूमती हुई उसकी निगाहें सड़क पार टेलीफोन बूथ पर पड़ी थीं। उसे बूथ में अकरम खड़ा नजर आया जो कि फोन कान से लगाये उसी की तरफ देख रहा था।

निगाहें मिलते ही अकरम ने उसे कोई इशारा किया और फोन को हुक पर लटका कर बूथ से बाहर निकला और एक तरफ बढ़ गया।

सिकंदर ठाकरे ने बैग रीमा राठौर के पास रखा और बोला—

"तुम यहीं बैठो बेगम—मैं अभी आया।"

कहकर वह सड़क पार करता हुआ टेलीफोन बूथ की तरफ बढ़ गया।

कुछ ही देर में वह बूथ के अन्दर था।

उसने परली तरफ के शीशे पर निगाह मारी जिस तरफ कि अकरम ने इशारा किया था।

शीशे पर धूल जमी थी—जिस पर कि उंगली से एक नम्बर लिखा हुआ था।

सिकंदर ठाकरे ने रिसीवर पकड़ कर कान से लगाया और शीशे पर लिखा नम्बर डायल करने लगा।

"आदाब अर्ज है।" थोड़ी देर बाद दूसरी तरफ से आवाज आई।

https://t.me/Hindiupanyas

"मुझे अकरम ने इस नम्बर पर फोन करने को कहा है।" सिकंदर ठाकरे बोला।

"आप हयात होटल पहुंचिये—कमरा नम्बर बत्तीस। अकरम आपको वहीं मिलेंगे।"

सिकंदर ठाकरे ने रिसीवर हुक पर लटकाया और शीशे पर लिखे नम्बर को उंगली से साफ कर दिया। उंगली पर लगी धूल को दूसरे हाथ से साफ करते हुए वह टेलीफोन बूथ से बाहर निकला और सड़क पार करते हुए रीमा राठौर की तरफ बढ़ा।

"क्या बात हुई?" उसके करीब आते ही पूछा रीमा राठौर ने।

"हयात होटल में बुलाया है उसने।"

सिकंदर ठाकरे बोला और झुककर बैग उठा लिया।

कुछ ही देर में वे एक टैक्सी में बैठे हयात होटल की तरफ बढ़ रहे थे।

करीब आधे घण्टे बाद टैक्सी हयात होटल के सामने रुकी।

इस बीच रीमा राठौर पूरी तसल्ली कर चुकी थी कि उसका पीछा तो नहीं हो रहा।

फिर भी सावधानीवश वह लंगड़ाती हुई टैक्सी से बाहर निकली।

सिकंदर ठाकरे के साथ वह होटल में प्रविष्ट हुई और एक तरफ खड़ी हो गई—जबकि सिकंदर ठाकरे काउंटर की तरफ बढ़ गया।

उसने काउंटर मैन से बत्तीस नम्बर के बारे में पूछा और रीमा राठौर के करीब आकर बोला—

"आओ।"

रीमा राठौर उसके पीछे-पीछे हाल की पिछली दीवार की तरफ बढ़ी—जिधर कि लिफ्टरूम था।

दोनों लिफ्ट द्वारा दूसरी मंजिल पर पहुंचे और बाहर आकर बांई तरफ बढ़े।

बांई तरफ तीसरा कमरा बत्तीस नम्बर था।

सिकंदर ठाकरे और रीमा राठौर बत्तीस नम्बर के आगे ठिठके।

सिकंदर ठाकरे ने एक बार गर्दन मोड़कर रीमा राठौर की तरफ देखा—जिसने कि अभी भी बुर्के में अपना चेहरा छुपा रखा

https://t.me/Hindiupanyas

था। फिर दरवाजे पर दस्तक दे दी।

"खट...खट...खट।"

दरवाजा इस तरह खुला जैसे भीतर मौजूद आदमी दरवाजे के पीछे खड़ा दरवाजा खटखटाए जाने का ही इंतजार कर रहा है।

सामने अकरम खड़ा था।

सिकंदर ठाकरे को देख वह मुस्कुराया और एक तरफ हट गया।

सिकंदर ठाकरे और रीमा राठौर भीतर दाखिल हुए तो अकरम ने तुरंत दरवाजा बंद कर दिया।

रीमा राठौर ने अपने चेहरे से बुर्का इस तरह हटाया जैसे बड़ी देर से वह कैद में हो।

"कैसे हो अकरम?" उसने मुस्कुराते हुए अकरम की तरफ देखा।

अकरम ने सिर को तनिक झुकाया और बोला—"बंदा बिल्कुल राजी खुशी से है। बैठिये।"

रीमा राठौर आगे बढ़कर बैड पर पालथी मार कर बैठ गई—जबकि सिकंदर ठाकरे और अकरम बैड के करीब कुर्सियों पर बैठ गए।

"लंच तो नहीं किया होगा आपने?" पूछा अकरम ने।

"कल शाम से भूखे हैं।" रीमा राठौर बोली।

अकरम ने अपने आगे सैंटर टेबल पर रखे फोन का रिसीवर उठाकर एक नम्बर डायल किया। फिर तीन जनों के लिये लंच का आर्डर देकर रिसीवर क्रेडिल पर रखकर रीमा राठौर की तरफ देखा।

"स्टेशन पर आपकी खोज बड़ी सख्ती से हो रही थी।" वह बोला—"इसलिये मुझे आपसे मिलने के लिये यह रास्ता चुनना पड़ा। आपको तकलीफ तो हुई होगी—मगर यह सावधानी जरूरी थी।"

रीमा राठौर मुस्कुराई।

"हमें मालूम था कि रेलवे स्टेशन पर हमारी तलाशी होगी।" वह बोली—"रास्ते में हमारे साथ जो घटा—उसी से पता चल रहा था कि आई.एस.आई. को हमारे आगमन की खबर मिल चुकी है। मगर हैरान तो मैं यह सोचकर हूं कि आई.एस.आई. को हमारा पता कैसे लगा।"

"इत्तफाक से।"

https://t.me/Hindiupanyas

"इत्तफाक से?" हैरानी से बोली रीमा राठौर।

"जी हां—इत्तफाक से एक चोर की बदौलत पुलिस को पता चल गया आपके आने का।"

"वो कैसे?"

अकरम ने बताया और यह भी बताया कि शौकत खान ने आत्महत्या कर ली है। फिर बोला—"खुदा का शुक्र है कि उससे पहले मैंने शौकत खान को फोन कर दिया था और मुझे यह खबर मिल गई थी कि आप मुझे रेलवे स्टेशन पर मिलेंगी।"

रीमा राठौर ने हैरानी से सिकंदर ठाकरे को देखा।

सिकंदर ठाकरे खुद हैरान था और ऊपर वाले का शुक्र मना रहा था कि वक्त रहते वे शौकत खान के घर से निकल गए थे—वर्ना वे शर्तिया पुलिस के हत्थे चढ़ जाते।

"मगर तुम तो यहां इस्लामाबाद में हो।" रीमा राठौर बोली—"ऐसे में तुम्हें कैसे मालूम पड़ गया कि लाहौर में क्या हुआ था?"

अकरम के होंठों पर मुस्कान नाच उठी।

"आपको शायद पता नहीं कि हमारा एक साथी लाहौर में बतौर एस.पी. अफसर है।"

"ओह।"

"मैंने उसे रात को फोन किया था कि आपको यहां पहुंचने में कोई तकलीफ न हो। उसी ने मुझे बताया कि वहां क्या हुआ।"

"ओह।"

"शौकत खान ने 'कम्पनी' के प्रति अपनी पूरी वफादारी दिखाई—उसने पुलिस के हत्थे पड़ने की बजाये खुद को गोली मार देना जायज समझा।"

"हमें उसकी वफादारी पर नाज है।" रीमा राठौर गम्भीरता से बोली।

और फिर उसने सिकंदर ठाकरे का परिचय कराया।

तभी डोर बैल बजी।

"लंच आ गया है।" अकरम कुर्सी से उठते हुए बोला—"पहले लंच कर लिया जाए—फिर बातें होंगी।"

कहकर वह दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

उसने दरवाजा खोला तो वेटर चांदी के रंग की तश्तरी उठाये भीतर प्रविष्ट हुआ।

तश्तरी काफी बड़ी थी और उसमें लंच सजा हुआ था।

https://t.me/hindiupanyas

लंच को टेबल पर सजाकर वह वापिस गया तो तीनों खाने की तरफ आकर्षित हुए।

अगले आधे घण्टे तक कमरे में सिर्फ चपर-चपर की आवाजें उभरती रहीं।

खाने से फारिग हो रीमा राठौर ने बाथरूम में जाकर हाथ धोये और आकर बैड पर बैठ गई।

अकरम ने भी हाथ धोया।

"हां...अब बोलो।" उसके कुर्सी पर बैठते ही वह बोली—"क्या पता लगाया?"

"अभी तक सिर्फ इतना ही पता लग सका है कि प्लेन को हाईजैक करने वाले का नाम अब्दुल रशीद है और इस वक्त वह यहां से पच्चीस मील दूर उमर कस्बे में रह रहा है।"

"फार्मूले का कुछ पता लगा?"

"नहीं।"

"किसी ऐसे शख्स के बारे में बोलो जिसे कि फार्मूले का पता हो।"

अकरम ने इन्कार में सिर हिलाया।

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी—"अब्दुल रशीद का पता बोलो।"

अकरम ने पता बताया।

"फार्मूले पर नजर रखो।" वह बोली—"और जैसे ही कुछ पता लगे—हमें फौरन खबर करो।"

अकरम ने सिर हिलाया और जेब से तीन-चार चाबियों का एक गुच्छा निकाल कर उसकी तरफ बढ़ाया। रीमा राठौर ने प्रश्न भरी निगाहों से पहले चाबियों को देखा—फिर अकरम की तरफ देखा।

"हकीम कुरैशी कालोनी में एक सौ साठ नम्बर फ्लैट की चाबियां हैं यह। यूं अगर आप भटकेंगे तो जल्दी ही अ.ई.एस.आई. के हत्थे चढ़ जायेंगे।"

"ओह।"

"फ्लैट में हर सामान मौजूद है। बस एक कार नहीं है। बंदोबस्त नहीं कर सका मैं।" कहकर उसने चाबियां रीमा राठौर के हाथ में रखीं और बोला—"मेरे घर का टेलीफोन नम्बर 3707867 है। किसी भी चीज की जरूरत हो तो आप रुखसाना के नाम से मुझे फोन कर दीजियेगा।"

https://t.me/Hindiupanyas

रीमा राठौर ने सिर हिला दिया।

और फिर कुछ देर और बातें करने के उपरांत रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे अकरम से विदा ले होटल से निकल गए।

उनके जाने के उपरांत अकरम बैड पर लेट गया।

अभी शाम तक उसे वहां रहना था। फिर उसके बाद ही उसे घर का रुख करना था।

❑❑❑

शाम पांच बजे तक सतीश रावण इस्लामाबाद की सड़कों की खाक छानता रहा। वह यह तसल्ली कर लेना चाहता था कि कहीं उस पर नजर तो नहीं रखी जा रही।

पूरी तरह से आश्वस्त हो जाने के उपरांत कि अब वह पूरी तरह से आजाद है—उसने एक टेलीफोन बूथ का रुख किया। बूथ में प्रवेश कर उसने वह नम्बर डायल किया, जोकि आई.एस.आई. के एजेंट ने उसे बताया था।

दूसरी तरफ से आवाज आने पर वह बोला—

"मैं सतीश रावण बोल रहा हूं माई बाप—इस वक्त मैं चौड़ा बाजार से पर्सनल बूथ से फोन कर रहा हूं...जी नहीं अभी कुछ भी हासिल नहीं हुआ...जी बेहतर...।"

उसने रिसीवर हुक पर लटकाया और बूथ से बाहर आ गया।

फोन उसने इसलिये किया था कि आई.एस.आई. को विश्वास हो जाए कि वह उन्हें धोखा नहीं देने वाला।

बाहर आकर उसने एक रिक्शा पकड़ी और स्टेशन की तरफ रवाना हो गया।

साढ़े पांच बजे वह स्टेशन के सामने रिक्शे से उतरा और स्टेशन के अन्दर प्रवेश कर गया।

दांई तरफ एक कमरे के बाहर स्टेशन मास्टर की प्लेट लगी हुई थी।

बिना किसी हिचाकिचाहट के सतीश रावण उस कमरे में प्रवेश कर गया।

दांई तरफ एक कुर्सी पर स्टेशन मास्टर बैठा था। मगर वह वो स्टेशन मास्टर नहीं था, जिसे कि सतीश रावण ने सुबह देखा था।

"सलाम वालेकुम।" स्टेशन मास्टर को अपनी तरफ देखने

https://t.me/Hindiupanyas

पर वह बोला।

"वालेकुम सलाम! फरमाइए।" स्टेशन मास्टर बोला।

"मुझे उन जनाब के बारे में जानना है जो आपसे पहले ड्यूटी पर थे।"

"शेख साहब के बारे में पूछ रहे हो।"

"जी हां—उनका घर कहां है?"

"क्यों?" स्टेशन मास्टर ने माथे पर बल डाले।

"यह सरकारी मामला है।"

सुनकर हड़बड़ाया स्टेशन मास्टर। पाकिस्तान में सैनिक शासन तो था ही—साथ ही आम आदमी की आजादी भी खत्म थी।

सो उसने तुरंत स्टेशन मास्टर का पता बता दिया।

सतीश रावण स्टेशन मास्टर के कमरे से बाहर निकला और स्टेशन से बाहर आकर एक रिक्शा में सवार हो स्टेशन मास्टर शेख साहब के घर की तरफ रवाना हो गया।

पन्द्रह मिनट बाद ही वह स्टेशन मास्टर के घर का दरवाजा खटखटा रहा था।

दरवाजा खुला।

सामने वही स्टेशन मास्टर था जिससे सुबह उसने अकरम के साथ बात करते देखा था।

"आदाब।"

"आदाब...फरमाइए मियां।" स्टेशन मास्टर उसे न पहचानने वाली आंखों से देखते हुए बोला।

"सुबह तुमने अकरम के बारे में बताया था कि वह तुम्हारे भाईजान के घर के पास रहता है।"

"जी...जी हां हुजूर।"

स्टेशन मास्टर का लहजा एकदम से खुशामद भरा हो गया। सुबह उससे खुफिया एजेंसी के दो आदमियों ने बात की थी। ऐसे में वह यही समझा कि उसके सामने खड़ा शख्स भी उसी विभाग का है।

"पता बोलो उसका।" सतीश रावण आवाज में रौब लाते हुए बोला।

"भाईजान का?"

"अकरम का।"

"म...मुझे उसका पता मालूम नहीं हुजूर। वह मेरे भाईजान

https://t.me/hindiupanyas

के घर से पांच-छः घर आगे है।"

"कोई निशानी?"

"उसके घर के बाहर ही उसकी दुकान है—परचून की दुकान।"

"अपने भाई जान का पता बोलो।"

स्टेशन मास्टर ने पता बताया।

सतीश रावण ने एक-दो सवाल और किये और फिर बोला—

"हमें तुम्हारी फिर भी जरूरत पड़ सकती है...।"

"म.....मैं घर में ही रहूंगा हुजूर...आप जब चाहे तशरीफ ला सकते हैं।"

सतीश रावण मुस्कुराया और वापिस मुड़ गया।

उसके वहां से हटते ही स्टेशन मास्टर ने मीलों लम्बी राहत भरी सांस छोड़ी और दरवाजा बन्द कर दिया।

अकरम का घर ढूंढने में सतीश रावण को जरा भी परेशानी नहीं हुई। रिक्शा पोलर ने उसे ऐन अकरम की दुकान के आगे उतारा था।

सतीश रावण ने दुकान में नजर मारी।

अकरम अपनी गद्दी पर बैठा था। वह होटल से अभी पांच मिनट पहले ही यहां आया था।

उससे थोड़ा परे एक ग्राहक खड़ा नौकर से अपना सामान ले रहा था।

सतीश रावण बिना किसी हिचकिचाहट के दुकान में प्रविष्ट हुआ और गद्दी पर बैठे अकरम के सामने आ खड़ा हुआ।

"फरमाइए।" अकरम उसे प्रश्न भरी निगाहों से देखते हुए बोला।

"सुबह स्टेशन पर क्या करने गए थे तुम?" छूटते ही बोला सतीश रावण।

अकरम को अपने सामने खड़े शख्स से ऐसे प्रश्न की सपने में भी उम्मीद नहीं थी। तभी तो उसकी त्वचा एकदम से पीली पड़ गई तथा आंखों में हल्की सी बदहवासी उभर आई।

"क्यों?" वह बड़ी मुश्किल से स्वयं पर काबू पाने की कोशिश करते हुए बोला।

https://t.me/Hindiupanyas

स्टेशन मास्टर की तरह वह भी उसे आई.एस.आई. का कोई ओहदेदार समझा रहा था।

"नौकर की छुट्टी करो—और दुकान बंद करो—मुझे तुमसे कुछ जरूरी सवालात करने हैं।" सतीश रावण सख्त स्वर में बोला।

"ल....लेकिन तुम हो कौन? और...।"

"क्या यह बेहतर होगा कि सवालात तुमसे थाने में किये जाएं।" गुर्राया सतीश रावण।

अकरम ने जोरों से थूक निगली। दिल धाड़-धाड़ करता उसकी पसलियों से टकराने लगा।

अब उसे पूरा विश्वास हो गया था कि उसके सामने खड़ा शख्स आई.एस.आई. का एजेंट था।

मन ही मन वह हैरान था कि इतनी एहतियात बरतने के बावजूद आई.एस.आई. को पता कैसे चल गया। मगर इस वक्त इस सवाल का जवाब ढूढने का वक्त नहीं था।

उसने नौकर को घर जाने को कहा और फिर ग्राहक को स्वयं रवाना करके अपनी दुकान का शटर नीचे गिरा दिया।

दुकान के अन्दर ही नीचे की तरफ दरवाजा बना हुआ था।

अकरम सतीश रावण को उस दरवाजे के रास्ते ड्राइंग रूम में ले आया। मन ही मन उसने निश्चय कर लिया था कि चाहे कुछ भी हो, वह रीमा राठौर के बारे में कुछ नहीं बतायेगा। बल्कि अगर जरूरत पड़ी तो उसका खून कर डालेगा।

"तशरीफ रखिये।" ड्राइंग रूम में आकर उसने सोफे की तरफ इशारा किया।

ड्राइंग रूम की सजावट देखकर ही पता चल रहा था कि अकरम काफी ठाठ की जिन्दगी जी रहा था।

सतीश रावण एक सोफे पर बैठ गया।

अकरम ने दरवाजे की तरफ मुंह करके आवाज लगाई।

"बेगम...दो प्याली चाय लाओ।"

कहकर वह उसके सामने वाले सोफे पर बैठ गया।

"बच्चे हैं तुम्हारे?" पूछा सतीश रावण ने।

"जी हां हुजूर...एक लड़का है—मदरसे गया है।"

"तुम्हारी बेगम के अलावा और कौन-कौन है घर में?"

"कोई नहीं हुजूर।" बोला अकरम और बोला—"आप मुझसे मेरे स्टेशन पर होने के बारे में पूछ रहे थे...।"

"हां।"

https://t.me/Hindiupanyas

"क्या मैं पूछ सकता हूं कि मुझसे यह सवाल क्यों किया गया है?"

सतीश रावण ने सख्त निगाहों से उसे घूरा।

"मुस्तफाबाद से तुम्हारा कौन दोस्त आ रहा था यहां?"

"लेकिन आप...।"

"मैं आई.एस.आई. का ओहदेदार हूं।"

"अपना आईडेंटिटी कार्ड दिखायेंगे आप?"

सतीश रावण ने खा जाने वाली निगाहों से उसे घूरा।

"माफी चाहता हुजूर—मगर मैं यह तसल्ली कर लेना चाहता हूं कि आप वाकई में ही आई.एस.आई. के ओहदेदार हैं—उसके बाद आप कुछ भी पूछिये—मैं बताऊंगा।"

ठीक तभी चेहरे को झीने पर्दे से ढांके अकरम की बीवी हाथों में ट्रे उठाये कमरे में प्रविष्ट हुई।

सैंटर टेबल के करीब आकर उसने झुककर ट्रे टेबल पर रखी और जैसे ही वापिस जाने को मुड़ी—

"ठहरो।" सतीश रावण के होंठों से फुंफकारती आवाज निकली।

अकरम की बीवी ने चौंककर उसकी तरफ जैसे ही गर्दन मोड़ी—उसके होंठों से आतंक भरी घुटी-घुटी चीख उबल पड़ी।

अकरम भी बुरी तरह से चौंक पड़ा।

सतीश रावण के हाथ में रिवाल्वर थी—जिसका रुख अकरम की ही तरफ था।

"चुपचाप अपने शौहर के करीब बैठ जा।"

अकरम की बीवी ने अकरम की तरफ बदहवासी से देखा।

"कौन हो तुम?" गुर्राया अकरम।

"अपनी बेगम को अपने बराबर बिठा अकरम।" गुर्राया सतीश रावण।

अकरम ने अपनी बीवी की तरफ देखा—जो कि थर-थर कांप रही थी।

"घबराओ नहीं बेगम—बैठ जाओ।" वह उसे हौंसला बंधाते हुए बोला।

बुरी तरह से सहमी वह अकरम के बराबर बैठ गई।

अकरम ने सतीश रावण की तरफ देखा और अपना प्रश्न दोहराया।

"कौन हो तुम?"

https://t.me/Hindiupanyas

"रीमा राठौर कहां है?" सतीश रावण ने सीधे सवाल दागा।

यह सवाल अकरम के कानों में ऐसे पड़ा जैसे कोई परमाणु विस्फोट हुआ हो।

"री...रीमा राठौर...।"

"साथ में सिकंदर ठाकरे भी है।"

हैरानी से अकरम की आंखें और भी चौड़ी हो गईं। कलेजा धाड़-धाड़ करता उसकी पसलियों से टकराने लगा।

"द...देखो...तुम जो कोई भी हो—तुम्हें गलतफहमी हुई है—मैं न तो किसी रीमा राठौर को जानता हूं और न ही किसी सिकंदर ठाकरे से मेरा सम्बन्ध है।"

"धांय.....।"

ठीक तभी सतीश रावण के रिवाल्वर से गोली निकली और उसकी बीवी के कंधे में जा धंसी।

बुरी तरह से चीख उठी वह।

अकरम को सपने में भी उम्मीद नहीं थी कि उसके सामने बैठा शख्स इस तरह उसकी पत्नी पर गोली चला देगा।

"रीमा राठौर कहां है?" सतीश रावण ने अपना प्रश्न दोहराया।

अकरम ने जोरों से थूक सटकी।

"देखो...म...मैं किसी...।"

"बहुत बड़ा हरामजादा हूं मैं अकरम.....मेरी मां के एक नहीं हजारों खसम थे। हिन्दुस्तान में क्या पूरी दुनिया में मुझसे बड़ा दरिंदा नहीं मिलेगा। इसलिये अब की बार ठीक बोलना। तेरे मुंह से यह न निकले कि तू किसी रीमा राठौर को नहीं जानता।"

"त...तुम हिन्दुस्तानी हो...?"

"हरामजादों का कोई देश-मजहब या धर्म नहीं होता। उनका धर्म-देश-मजहब सिर्फ रुपया होता है।"

अकरम ने जोरों से थूक सटकी।

"अब बोला—रीमा राठौर कहां है। और भौंकने से पहले यह जान ले कि मैंने अपनी आंखों से तुझे रेलवे स्टेशन पर सिकंदर ठाकरे से मिलते देखा था। रीमा राठौर भी उस वक्त वहीं वेटिंग रूम में बुर्का पहने बैठी थी।"

अकरम के गले की घण्टी जोरों से उछली।

इतना तो वह समझ ही गया था कि उसके सामने बैठा

https://t.me/Hindiupanyas

शख्स भारतीय है। और वह आई.एस.आई. से कतई वास्ता नहीं रखता। क्योंकि अगर ऐसा होता तो आई.एस.आई. ने स्टेशन पर ही रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे को दबोच लेना था।

यानि इसका सम्बंध किसी दूसरे देश से है।

मन ही मन फैसला कर लिया अकरम ने कि वह उसे रीमा राठौर के बारे में कुछ नहीं बतायेगा।

"मैं किसी रीमा राठौर को नहीं जानता।" वह सख्त स्वर में बोला।

सतीश रावण के होंठों पर दरिंदगी भरी मुस्कान उभरी।

"मैं जानता था--तू ऐसा ही कहेगा।"

कहते हुए वह उठा और ट्रे में से चाय का कप उठाकर चाय उसकी पत्नी के ऊपर उड़ेल दी।

गर्म-गर्म चाय अपने चेहरे पर पड़ते ही उसकी पत्नी बुरी तरह से तड़प उठी।

अपनी बीवी की हालत देख बुरी तरह से दहल उठा अकरम। मगर साथ ही उसने होंठों को भींच लिया।

"तुम जो मर्जी कर लो—मगर मेरा एक ही जवाब होगा—मैं किसी रीमा राठौर को नहीं जानता।"

सतीश रावण ने रिवाल्वर की नाल उसकी पत्नी के माथे से लगाई और ट्रिगर दबा दिया।

गोली उसके भेजे को फाड़ती हुई सोफे की पुश्त में जा घुसी।

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी।

"तेरी जिद ने तेरी बेगम की जान ले ली।" वह बोला—"और मुझे यह भी पता है कि तेरा जवाब अभी भी यही होगा कि तू रीमा राठौर को नहीं जानता।"

अकरम के होंठ फड़फड़ा कर रह गए—आंखों में बेबसी के भाव उभर आए।

अपनी बेगम को वह बेइंतहा प्यार करता था। मगर उससे ज्यादा उसे 'कम्पनी' की वफादारी अजीज थी। बोला कुछ नहीं वह--बस थूक सटककर रह गया।

सतीश रावण ने रिवाल्वर की नाल का रुख अकरम की तरफ किया।

"रीमा राठौर कहां है?" वह गुर्राया।

अकरम के होंठों पर नफरत भरी मुस्कान फैल गई।

https://t.me/Hindiupanyas

"मेरी बेगम को तुमने मेरी आंखों के सामने मार डाला—फिर भी मुझसे उम्मीद रखे हुए हो कि मेरी जुबान खुलवा लोगे?"

सतीश रावण हंसा।

"तेरी बेगम एक अलग जान थी—अभी तुझे तो खरोंच भी नहीं आई। जब तेरा यही हश्र करूंगा—तब यह बात कहना।"

अकरम समझ गया कि मौत अब उसके ऐन सामने आ खड़ी है—सो उसने मौत से मुकाबला करने का फैसला किया।

अगले ही पल उसने सतीश रावण पर छलांग लगा दी।

उसकी टांग सतीश रावण की जांघों की ऐन बीचों-बीच पड़ी और हाथ कराटे की सूरत में उसकी रिवाल्वर वाली कलाई पर पड़ा।

नतीजा—सतीश रावण के होंठों से तेज कराह निकली और वह घुटने मोड़े वहीं फर्श पर बैठ गया।

रिवाल्वर उसके हाथ से छूट कर परे जा गिरी थी।

अकरम ने झपटकर रिवाल्वर उठाई और सतीश रावण की तरफ तान दी।

इस वक्त उसकी आखों में खून भरा नजर आ रहा था।

"ठाक्।"

अकरम के बूट की भरपूर ठोकर सतीश रावण के चेहरे पर पड़ी।

कराहता हुआ सतीश रावण पीछे को पलट गया। साथ ही उसकी नाक से खून की धारा बह निकली।

"मेरी बेगम को मार कर तूने समझ लिया कि तू मुझे भी मार डालेगा।" अकरम गुर्राया—"देख—अब तू मेरी रिवाल्वर के निशाने पर है। अब मैं नहीं तू भौंकेगा...बोल...कौन है तू?"

सतीश रावण ने आस्तीन से अपनी नाक पौंछी और कराहते हुए खड़ा हो गया।

"ठाक्।" तभी अकरम के बूट की ठोकर उसके पेट पर पड़ी।

सतीश रावण हलाल होते भैंसे ही तरह डकाराया और दोहरा हो गया।

पीड़ा के मारे उसका चेहरा विकृत हो उठा।

बड़ी मुश्किल से उसने अपनी पीड़ा पर काबू पाया और सीधा हो गया।

"हाथ सिर पर रख।"

https://t.me/Hindiupanyas

थूक सटकते हुए सतीश रावण ने हाथ सिर पर रख दिये।

"बोल...कौन है तू...?"

"स...सतीश।" सतीश के होंठों से भर्राया स्वर निकला।

"रीमा राठौर के बारे में क्यों पूछ रहा था?" गुर्राया अकरम।

सतीश रावण के गले की घण्टी जोरों से उछली।

"भौंक हरामजादे—वर्ना गोली चलाने में मैं एक सैकिण्ड भी नहीं लगाऊंगा।"

तभी सतीश रावण ने अकरम के पीछे देखा और आंखें इस तरह चलाईं मानों उसके पीछे कोई आ खड़ा हुआ हो।

अकरम ने भी यही समझा।

नतीजा—उसने तेजी से पीछे देखा।

बस इतना वक्त बहुत था सतीश रावण के लिये।

बिजली की सी फुर्ती से उसका हाथ उसके कालर में गया और उसकी फेवरिट आरी बाहर आ गई।

"खचाक्।"

आरी तेजी से उसकी रिवाल्वर वाली कलाई पर पड़ी और उसकी कलाई आधी से ज्यादा कटकर लटक गई।

रिवाल्वर नीचे गिर पड़ी।

बाजी एक बार फिर पलट गई।

अब दहशत के भाव अकरम के चेहरे पर नजर आने लगे थे। अपने बांये हाथ में उसने दांई कलाई को पकड़ लिया।

"रिवाल्वर हथिया कर तूने यह समझ लिया कि तू राजा बन गया।" सतीश रावण कुटिलता से मुस्कुराया—"मैंने तुझसे पहले भी कहा था कि मैं सबसे बड़ा हरामी हूं—और हरामियों पर इतनी जल्दी काबू नहीं पाया जा सकता।"

अकरम ने जोरों से थूक सटकी।

"अब बोल—कहां है रीमा राठौर?" गुर्राया सतीश रावण।

"म...मैं नहीं जानता।"

सतीश रावण की आरी तेजी से लहराई और अकरम की दूसरी कलाई भी कट गई।

"तेरे मुंह से निकला हर इन्कार तेरे एक अंग को काटता जाएगा अकरम। इसलिये अब की बार बोलने से पहले खूब सोच लेना कि तू क्या कहने जा रहा है।" फुंफकारा सतीश रावण—"रीमा राठौर कहां है?"

अकरम ने जोरों से थूक सटकी। अपने सामने खड़ा आदमी

https://t.me/Hindiupanyas

उसे किसी दरिंदे से कम नजर नहीं आ रहा था।

"बोल।"

"म...मैं नहीं जानता।"

"खचाक्।"

अकरम की दाईं बाजू कोहनी के पास से कटकर नीचे गिर पड़ी। और जैसे ही उसकी दूसरी कोहनी कटी—वह टूट गया।

"ब...बताता हूं।" वह चीखा।

सतीश रावण के होंठों पर विषैली मुस्कान नाच उठी।

"कहां है रीमा राठौर?"

अकरम ने बताया।

"फार्मूले के सम्बंध में तूने उसे क्या जानकारी दी?"

अकरम ने वह भी बताया।

"मान ले अगर आई.एस.आई. को उस जगह का पता चल जाता है जहां रीमा राठौर छुपी हुई है तो तू क्या करेगा? उसके लिये तूने कोई दूसरी जगह भी रखी होगी।"

"ह.....हां।"

"कौन सी जगह?"

अकरम ने बताया।

"उस जगह का टेलीफोन नम्बर बोल जहां इस वक्त रीमा राठौर छुपी हुई है।" सतीश रावण बोला—"साथ ही उस जगह का भी टेलीफोन नम्बर बोल जहां खतरे के अंदेशे से तू उसे छुपा सकता है।"

अकरम उसे सब कुछ बताता चला गया।

और फिर सतीश रावण ने पूरी तरह से सन्तुष्ट होकर आरी उसकी गर्दन पर चला दी।

अकरम की गर्दन आधी से ज्यादा कट गई और वह नीचे गिर कर बुरी तरह से छटपटाने लगा।

कमरे का फर्श खून से सुर्ख हो रहा था।

सतीश रावण ने सोफे के कपड़े से आरी को अच्छी तरह से पौंछा और उसे अपनी पीठ पर चिपका कर रिवाल्वर उठाई और चाय की ट्रे के करीब रखे फोन की तरफ मुड़ा।

कुछ ही देर में वह रीमा राठौर का नम्बर डायल कर रहा था।

□□□

https://t.me/Hindiupanyas

"ट्रिन...ट्रिन।"

फोन की घण्टी घनघना उठी।

उस वक्त रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे उमर कस्बे की तरफ रवाना होने की तैयारी कर रहे थे।

फोन की घण्टी बजते ही दोनों की निगाहें आपस में मिलीं।

"अवश्य ही अकरम कोई खास बात बताना चाहता है।" रीमा राठौर बोली और फोन की तरफ बढ़ी।

"हैलो।" रिसीवर उठाकर कान से लगाते हुए बोली।

"हैलो...रीमा राठौर?"

दूसरी तरफ से एक अन्जानी आवाज सुनकर रीमा राठौर बुरी तरह से चौंकी।

"रांग नम्बर...यहां कोई रीमा राठौर नहीं रहती।" वह बोली और रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

"कौन था?" तभी पूछा सिकंदर ठाकरे ने।

"लगता है आई.एस.आई. को इस जगह का पता चल गया है कोई...।"

"ट्रिन...ट्रिन।"

फोन की घण्टी पुनः बजी।

रीमा राठौर अपनी बात अधूरी छोड़ पुनः फोन की तरफ आकर्षित हुई।

"हैलो।"

"द...देखिये...खुदा के लिये झूठ मत बोलिये...आपको अकरम का वास्ता...मैं आपका दोस्त हूं। दुश्मन नहीं...प्लीज बताइए—आप रीमा राठौर ही हैं न?"

रीमा राठौर ने तेजी से कुछ सोचा—फिर गहरी सांस छोड़ते हुए बोली—

"हां मैं रीमा राठौर हूं...तुम...।"

"मैं शाहिद हूं—अकरम का दोस्त—आप फौरन वह जगह छोड़ दीजिये। खुफिया एजेंसी के आदमी किसी भी वक्त वहां धावा बोल सकते हैं।"

"क्या...?"

"जी हां...आप वह जगह छोड़कर बेगम सराय के पीछे एक सौ तीस नम्बर मकान में चली जाइए...वह जगह आपके लिये महफूज है।"

"ल...लेकिन...।"

https://t.me/Hindiupanyas

"अकरम अब इस दुनिया में नहीं रहा।"

"क्या?" उछल पड़ी रीमा राठौर।

"अपने बारे में उसने मुझे सब कुछ बता रखा था—और उसने मुझसे यह भी कहा था कि खुदा न खास्ता अगर उसे कुछ हो जाए तो मैं आपको फौरन फोन करके आगाह कर दूं और दूसरी महफूज जगह पर पहुंचने को कह दूं।"

"ओह।"

"अभी कुछ देर पहले ही खुफिया एजेंसी के लोगों ने उससे पूछताछ करते हुए उसे मार डाला है।"

"तुम्हें कैसे पता लगा?" रीमा राठौर बोली—"कि अकरम मर चुका है?"

"कत्ल मेरी आंखों के सामने ही हुआ है मोहतरमा। और जो कुछ उसने बताया था, वह मेरे कानों ने सुना था...।"

"यानि तुम खुफिया एजेंसी के...।"

"प्लीज बात को लम्बा मत खींचिये और फौरन से पेश्तर वहां से निकल जाइए। मेरे पास भी इतना वक्त नहीं...।"

उसी के साथ ही दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

रीमा राठौर ने भी रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया। इस वक्त उसकी आंखों में गहरी सोचें भरी हुई थीं। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह आने वाले फोन पर विश्वास करे या न करे।

"क्या कह रहा था वह?" तभी सिकंदर ठाकरे ने पूछा।

रीमा राठौर ने उसे बताया।

बुरी तरह से चौंका सिकंदर ठाकरे। फिर बोला—"फिर क्या सोचा है तुमने?"

"कुछ समझ में नहीं आ रहा। फोनकर्ता अंजान है।" वह बोली—"क्या पता वह हमसे कोई खेल खेल रहा हो।"

"मेरा तो यह ख्याल है कि हमें फौरन यह जगह छोड़ देनी चाहिये। अगर यहां आई.एस.आई. की रेड पड़ती है तो यह निश्चित हो जाएगा कि वह सचमुच हमारा हमदर्द है।"

रीमा राठौर ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया। सिकंदर ठाकरे की बात उसे जंची थी।

रीमा राठौर को फोन कर सतीश रावण ने वह नम्बर मिलाया, जिस पर उसे रिपोर्ट भेजने को कहा गया था।

https://t.me/Hindiupanyas

"हैलो।" दूसरी तरफ से आवाज आई।

"आपका खादिम सतीश रावण बोल रहा हूं हुजूर।" सतीश रावण चापलूसी भरे स्वर में बोला।

"हां, बोलो।" आवाज आई।

"जासूसों का पता चल गया है।"

"क्या?"

"जी हां.....और मैंने यह भी पता लगा लिया है कि इस वक्त वे कहां हैं।"

"कौन-कौन हैं जासूस?"

"रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे।"

"कहां छुपे हुए हैं वे?"

सतीश रावण ने पता बताया।

"और तुम कहां से बोल रहे हो?"

"अकरम के घर से। वही जो सुबह रेलवे स्टेशन पर देखा गया था।"

"तुम वहीं रहना—हम अभी वहां पहुंच रहे हैं।"

"जी, बेहतर।"

दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

सतीश रावण ने रिसीवर रखा और कुटिलता भरे अंदाज में मुस्कुराया।

"अबे आयेगा मजा!" वह हंसते हुए बड़बड़ाया और ट्रे में रखा चाय का कप उठाकर सोफे की पुश्त से टेक लगाकर पीने लगा।

पन्द्रह मिनट बाद डोर बैल बजी। इस बीच वह चाय समाप्त कर चुका था।

वह सोफे से उठा और ड्राइंग रूम से निकल कर मेन डोर के पीछे पहुंचकर दरवाजा खोल दिया। सामने वही अधिकारी खड़ा था, जिसने उसके इस्लामाबाद पहुंचते ही उसका स्वागत किया था।

"आदाब।" सतीश रावण ने सिर को झुकाया।

अधिकारी ने उसके आदाब का जवाब नहीं दिया और उसे एक तरफ करते हुए भीतर प्रवेश कर गया।

उसके साथ आये छः आदमी भी भीतर प्रवेश कर गए।

सतीश रावण मन ही मन मुस्कुराते हुए उनके पीछे-पीछे चलने लगा।

https://t.me/Hindiupanyas

अधिकारी जिसका नाम हाशिम रजा था, ने जैसे ही ड्राइंग रूम में प्रवेश किया—भीतर का दृश्य देखकर एक बार तो वह भी दहल उठा।

फर्श पर अकरम की लाश पड़ी थी। बेहद वीभत्स हालत में थी उसकी लाश। उसके आसपास खून का तालाब बना हुआ था।

सोफे पर अकरम की बेगम की लाश पड़ी थी।

हाशिम रजा ने गर्दन मोड़कर सतीश रावण की तरफ देखा।

"इसकी यह हालत...।"

"मुझे करनी पड़ी हुजूर...उन जासूसों के बारे में जानने के लिये मुझे मजबूरन यह रास्ता अख्तियार करना पड़ा।"

"क्या मतलब?"

"आपसे आजादी की इजाजत मिलते ही मैंने सबसे पहले यह सोचा कि उन जासूसों को ढूंढने के लिये कौन-सा रास्ता अख्तियार करना चाहिये...मगर कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था मुझे। आखिर मैंने एक बार फिर से अकरम को खंगालने का फैसला किया। मैंने स्टेशन मास्टर से अकरम के घर का पता मालूम किया और खुद को आई.एस.आई. का एजेंट बताकर इससे उन जासूसों के बारे में पूछा।"

"फिर?"

"मैं अकेला था। सो अकरम ने यही सोचा कि यह मुझ पर आसानी से काबू पा लेगा। नतीजा—आप मेरा चेहरे पर देख रहे हैं।" सतीश रावण ने अपने चेहरे पर लगे खून की तरफ इशारा किया—"मगर जल्दी ही मैंने इस पर काबू पा लिया। साथ ही मुझे पूरा यकीन हो गया कि हो न हो यही वो अकरम है जो उन जासूसों से मिलने स्टेशन पर गया था। और फिर मैंने इससे पूछताछ की—मगर यह मुझे बताने को राजी नहीं था। सो मैंने इसकी बेगम को इसकी आंखों के सामने मार डाला—और जब भी यह नहीं टूटा तो मैंने इसे टार्चर करना शुरू कर दिया। आखिर मैं कामयाब हुआ। इसने मुझे बता दिया। सब कुछ बता दिया।"

"क्या बताया?"

सतीश रावण ने बताया—मगर यह नहीं बताया कि रीमा राठौर के छुपने का दूसरा ठिकाना कहां है—फिर आगे बोला—"वह फार्मूला क्या है हुजूर?"

बुरी तरह से उछल पड़ा हाशिम रजा।

https://t.me/Hindiupanyas

"फार्मूला?"

"किसी फार्मूले के बारे में कह रहा था अकरम—कि चाहे यह मर जाए मगर फार्मूला हिन्दुस्तान में पहुंच कर ही रहेगा।"

हाशिम रजा के चेहरे पर हड़बड़ी उभरी। फिर खास अन्दाज से मुस्कुरा पड़ा वह।

उसने सतीश रावण के कंधे को थपथपाया और बोला—

"तुम सचमुच हमारे वफादार हो। तुम्हें पाकिस्तान में पनाह मिलेगी।"

"शुक्रिया जनाब...आपका यह अहसान मैं शायद ही कभी उतार पाऊंगा।"

और फिर दो आदमियों को वहां तैनात करके हाशिम रजा सतीश रावण तथा अन्यों के साथ बाहर आ गया।

मकान के बाहर दो गाड़ियां खड़ी थीं—जिनमें एक काले रंग की मर्सीडीज थी।

"बैठो।" वह काली मर्सीडीज के करीब आकर बोला।

सतीश रावण पिछली सीट पर बैठ गया। उसके पीछे-पीछे हाशिम रजा भी भीतर प्रविष्ट हुआ और उसके बराबर वाली सीट पर बैठ गया।

बाकी के चारों पीछे वाली दूसरी गाड़ी पर बैठ गए।

"रीमा राठौर को जानते हो?" गाड़ी के चलते ही बोला हाशिम रजा।

"जी हां हुजूर—अच्छी तरह से जानता हूं।" सतीश रावण बोला—"हालांकि उससे मेरा कभी सामना तो नहीं हुआ—फिर भी जानता हूं।"

"तुम देखना—अगर वह रीमा राठौर हुई तो पहचान लेना।"

"क्या हम वहां जा रहे हैं जहां वह छुपी हुई है?"

"नहीं—मेरे साथ मेरे घर चल रहे हो तुम। हमारे आदमी उसे पकड़ने तभी निकल गए थे, जब तुमने फोन किया था। रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे को पकड़ कर वे मेरी कोठी में ही लायेंगे।"

"ओह।"

"वैसे देखने में कैसी है रीमा राठौर?"

सुनकर सतीश रावण के होंठों पर अर्थभरी मुस्कान नाच उठी।

"बस इतना समझ लीजिये हुजूर कि चांद का एक टुकड़ा

https://t.me/Hindiupanyas

टूटकर जमीन पर आ गया है।"

हाशिम रजा ने होंठों पर जुबान फेरी। उसकी आंखों में कामुकता के भाव साफ नजर आ रहे थे।

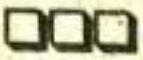

मिलिट्री की तीन गाड़ियां ऐन उस मकान के सामने रुकीं जिसमें कि कुछ देर पहले रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे थे।

मगर अब वहां ताला लगा हुआ था।

पंछी फुर्र हो चुका था।

मिलिट्री के एक अधिकारी ने गाड़ी से नीचे उतर कर इधर-उधर देखा तो दांई तरफ उसे एक व्यक्ति घर के दरवाजे में खड़ा नजर आया।

अधिकारी को अपनी तरफ देखने पर वह व्यक्ति तुरंत पीछे हटा। मगर दरवाजा बंद नहीं कर पाया था।

उससे पहले ही अधिकारी ने उसे आवाज दे दी।

"इधर आ.....।"

उस आदमी का रंग उड़ गया। फौज के प्रति लोगों के दिलों में कितना भय था, यह उस आदमी की उड़ी रंगत बता रही थी।

लड़खड़ाते कदमों से वह अधिकारी के करीब आया।

"ह...हुजूर...।" वह भर्राये लहजे में बोला।

अधिकारी ने ताला लगे दरवाजे की तरफ इशारा किया।

"यहां कौन रहता है?"

उस व्यक्ति ने पहले मकान की तरफ देखा—फिर अधिकारी की तरफ देखते हुए बोला—

"पहले तो यह मकान खाली था हुजूर—आज ही कोई नये किरायेदार आये हैं।"

"कौन हैं वो?"

"पता नहीं हुजूर...लग तो मियां बीवी रहे थे।"

"अब कहां हैं?"

"कहीं गए होंगे...।"

अधिकारी ने चार सैनिकों को बुलाया और बोला—

"सभी इधर-उधर छुप जाओ और जैसे ही वे दोनों आयें, उन्हें दबोच लो।"

चारों ने एक साथ सिर हिलाये और गाड़ियों की तरफ मुड़ गए।

https://t.me/Hindiupanyas

कुछ ही देर में वहां का माहौल ऐसा लग रहा था मानो वहां कभी मिलिट्री के पैर पड़े ही न हों।

"शाहिद ठीक ही कह रहा था।"

मिलिट्री को देख सिकंदर ठाकरे बोला।

दोनों इस वक्त उस मकान से कुछ दूर एक गली में बन रहे मकान की छत पर खड़े उन गाड़ियों को देख रहे थे जो कि अभी-अभी वहां आकर रुकी थीं।

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी—बोली कुछ नहीं वह।

"शुक्र है समय रहते हमें खबर मिल गई—वर्ना इस वक्त शायद हमारी लाशें पड़ी होतीं मकान में।" सिकंदर ठाकरे बोला।

रीमा राठौर मुस्कुराई और उसकी तरफ देखा।

"ऐसे हालात अभी और पता नहीं कितनी बार पेश आयेंगे!" वह बोली—"आओ चलें।"

"कहां? दूसरे मकान में?"

"नहीं—पहले हम उमर कस्बे में जायेंगे—फिर उस मकान में जायेंगे।"

सिकंदर ठाकरे ने एक गहरी सांस छोड़ी और रीमा राठौर के साथ गली में आ गया।

दोनों गली की दूसरी साइड की तरफ बढ़ते हुए सड़क पर पहुंचे और एक टैक्सी में सवार हो गए।

रीमा राठौर अभी भी काले बुर्के में थी। और सिकंदर ठाकरे ने सुबह वाला ही पठानी सूट पहन रखा था।

टैक्सी ड्राइवर को सिकंदर ठाकरे ने उमर कस्बे में चलने को कहा और टैक्सी आगे बढ़ गई।

बलराज गोगिया ने टैक्सी नफासत अली के घर से कुछ पहले ही रुकवाई और भाड़ा चुका कर बाहर आ गया।

रात का अंधेरा अब अपनी चादर चारों तरफ फैला चुका था।

ठीक दो घण्टे बाद लौटी थी सायरा—इस बीच बलराज गोगिया नहा-धो चुका था।

सायरा ने उसे रिवाल्वर दी और बोली—"और कुछ?"

https://t.me/Hindiupanyas

"कुछ करंसी चाहिये।" बलराज गोगिया रिवाल्वर का चैम्बर खोल उसे चैक करते हुए बोला।

सायरा ने बैड के नीचे से बैग निकाल कर उसे खोला और सौ-सौ के पाकिस्तानी नोटों की गड्डी निकाल कर उसकी तरफ बढ़ा दी।

चैम्बर बंद करके बलराज गोगिया ने गड्डी ली और उसकी स्टिचिंग खोल कर नोटों को जेब में डाल कर दूसरी जेब में रिवाल्वर डाल दी।

"और कुछ?" पूछा सायरा ने।

"अब लंच करूंगा।"

"क्या अभी लंच नहीं किया तुमने?"

"तुमने कर लिया?"

"नहीं—मैंने कहां किया।"

"बीवी के बिना आदमी खाना कैसे खा सकता है।"

"बीवी तो बना लिया।" सायरा ने गहरी सांस छोड़ी—"मगर बीवी को उसका हक नहीं दे रहे।"

बलराज गोगिया के होंठों पर मुस्कान आकर लुप्त हो गई।

"मैंने तुमसे शादी नहीं बनाई मैडम—जो मुझसे बीवी का हक मांग रही हो।"

"लेकिन...।"

"यहां के लोगों की निगाहों में हम पति-पत्नी हैं। मैंने खाना इसलिये मंगवाया कि किसी को संदेह न हो कि बीवी के होते हुए मैं अकेला क्यों खा रहा हूं।"

"फिर भी तुम्हें मेरी भावनाओं का ख्याल रखना चाहिये।"

"अगर तुम मेरी दोस्त होतीं तो शायद मैं तुम्हारी भावनाओं की कदर करता।"

"क्या मैं तुम्हारी दोस्त नहीं हूं?"

"मेरे यार को अपने कब्जे में करके मुझे मजबूर करके दोस्ती का दम भरना तुम्हारे मुंह से अच्छा नहीं लगता।"

बलराज गोगिया कड़वे स्वर में बोला।

"राघव को मैंने नहीं, राबर्ट बुश ने कैद किया है।"

"और तुम कौन हो? क्या राबर्ट बुश से तुम्हारा कोई रिश्ता नहीं?"

"खाने का आर्डर दो।" बात बदलते हुए मुंह बनाया सायरा ने।

https://t.me/Hindiupanyas

बलराज गोगिया ने रिसीवर उठाकर एक नम्बर डायल किया और दूसरी तरफ से आवाज आने पर खाने का आर्डर देकर रिसीवर रख दिया।

"तुम्हारे यहां के साथी कौन हैं?"

"क्यों?" सायरा ने उसे घूरा।

निश्चय ही वह बलराज गोगिया से नाराज थी।

"वक्त जरूरत पड़ने पर अगर...।"

"तुम्हें जब जरूरत होगी तो मिल जाएंगे। तुम्हें यह जानने की जरूरत नहीं कि वे कौन हैं और कहां रहते हैं।" जले-भुने स्वर में बोली सायरा।

बलराज गोगिया ने कंधे उचका दिये।

और फिर खाना खाने के पश्चात बलराज गोगिया लम्बी तानकर सो गया।

सायरा भी उसकी परवाह न करते हुए सो गई।

शाम सात बजे बलराज गोगिया उठा—अपने तथा सायरा के लिये चाय मंगवाई और चाय खत्म करके कमरे से निकलने को हुआ तो सायरा बोल पड़ी—

"कहां जा रहे हो?"

बलराज गोगिया ठिठका—मुड़ा और उसके चेहरे पर निगाहें गड़ाते हुए बोला—

"राबर्ट बुश के अनुसार तुम मेरे साथ सिर्फ इसलिये आई हो कि मुझे मेरा मन माफिक सामान मुहैया हो। तुम्हें यह पूछने का कोई हक नहीं कि मैं क्या करता हूं—किधर जाता हूं।"

उसके इस जवाब पर सायरा भीतर ही भीतर तिलमिला कर रह गई। उसके रूखे जवाब का उसे वैसा ही जवाब मिला था।

बलराज गोगिया पुनः दरवाजे की तरफ मुड़ा और बाहर निकल गया।

होटल से बाहर आकर उसने टैक्सी की और इस वक्त वह नफासत अली के घर के करीब था।

उसकी तरह कहीं सायरा भी तो उसके पीछे नहीं थी—इसका यकीन उसने रास्ते में ही कर लिया था। फिर भी इधर-उधर गर्दन घुमाकर तसल्ली की और पूरी तरह से आश्वस्त होने के बाद ही उसने पैर नफासत अली के घर की तरफ बढ़ाये।

नफासत अली की टैक्सी उसके घर के बाहर खड़ी थी—जो कि यह बता रही थी कि वह घर में ही है।

https://t.me/Hindiupanyas

बलराज गोगिया ने टैक्सी के करीब पहुंच कर उसका नम्बर पढ़ा—फिर उसके घर का दरवाजा खटखटा दिया।

"खट...खट....खट।"

शीघ्र ही भीतर से आवाज आई।

"कौन है?"

"मैं हूं—दरवाजा खोलिये मियां।" बलराज गोगिया बोला।

दरवाजा खुला।

सामने करीब अठाइस साल का युवक खड़ा था।

"मियां नफासत अली।" बलराज गोगिया बोला।

"जी हां—फरमाइए।"

"मुझे तुम से कुछ बात करनी है।"

"कैसी बात?"

"घबराओ नहीं—तुम्हें तुम्हारे वक्त का पूरा मुआवजा मिलेगा।"

"वो बात तो ठीक है—मगर आप बात क्या करना चाहते हैं।"

"बात बाहर करने की नहीं।" कहते हुए बलराज गोगिया ने जेब से सौ-सौ के पांच नोट निकालकर उसकी तरफ बढ़ा दिये।

इतने नोट देखकर नफासत अली की आंखें फैल गईं। बिना कोई वक्त गंवाये उसने नोट झपटे और एक तरफ हटते हुए बोला—"आइए।"

बलराज गोगिया भीतर प्रवेश कर गया।

नफासत अली उसे लिये बैठक में आ गया।

बैठक क्या थी कबाड़खाना था वह—जिसमें दो कुर्सियां इधर-उधर अव्यवस्थित अवस्था में पड़ी थीं—टेबल थी ही नहीं और कोने में एक ब्लैक एण्ड व्हाइट टी.वी. रखा था।

फर्श पर धूल जमी थी। इसी तरह टी.वी. पर भी धूल जमी थी। हां, कुर्सियां कुछ साफ थीं।

"बैठिये।" नफासत अली एक कुर्सी खींचते हुए बोला।

बलराज गोगिया दूसरी कुर्सी खींचकर उस पर बैठ गया।

"फारमाइए।" नफासत अली बोला।

"आज सुबह तुमने एक खातून को अपनी टैक्सी में बिठाया था—चांद होटल से।"

"जी हां, याद आया। वह जो नीले रंग का घाघरा-सा पहने थीं।"

https://t.me/Hindiupanyas

"हां, वही।"

"उसके बारे में क्यों पूछ रहे हैं आप?"

"मैं उसका शौहर हूं।" गहरी सांस छोड़ते हुए बोला बलराज गोगिया--"और मुझे शक है कि वह गलत राह पर चल रही है।'

"ओह।" नफासत अली के मुंह से ऐसे निकला जैसे उसे बलराज गोगिया पर तरस आ रहा हो।

"मैं उसका पीछा करना चाहता था--मगर वक्त पर मुझे कोई दूसरी टैक्सी नहीं मिली। मगर मैंने वक्त रहते तुम्हारी टैक्सी का नम्बर नोट कर लिया।"

"और अब आप यह जानना चाहते हैं कि मेरी टैक्सी में आपकी बेगम कहां-कहां गई थीं।"

"हां।"

"वह मस्तान रोड पर गई थीं।"

"मस्तान रोड पर कहां?"

"काफी बड़ी कोठी थी वह--वह उसके सामने उतरी थीं।"

"सिर्फ उतरी थी या कोठी में गई भी थी।"

"कोठी में गई थीं--इत्तफाक से थोड़ा आगे जाकर मुझे एक और सवारी मिल गई जो कि वापिसी की थी। वापिसी में मैंने आपकी बेगम को उस कोठी में जाते देखा था।"

"क्या तुम मुझे उस कोठी को दिखा सकते हो?"

"इस वक्त?" बोला नफासत अली।

"मैं तुम्हें दुगना किराया दूंगा। खुदा के लिये न नहीं करना--तुम खुद सोच सकते हो कि इस वक्त मेरी क्या हालत हो रही होगी।"

नफासत अली ने गहरी सांस छोड़ते हुए सिर हिलाया और खड़ा हो गया।

बलराज गोगिया भी फौरन कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया।

"वो देखिये जनाब--उस कोठी में गई थीं आपकी बेगम।"

एक हाथ से स्टीयरिंग सम्भाले, दूसरे हाथ से नफासत अली ने इशारा किया।

बलराज गोगिया ने उधर देखा।

"वो जिसके गेट पर दो गार्ड खड़े हैं।" वह बोला।

"जी हां जनाब, वही।"

https://t.me/hindiupanyas

अब तक टैक्सी कोठी के काफी करीब आ गई थी।

"टैक्सी को रोकना नहीं—आगे ले चलो।" बलराज गोगिया उसे टैक्सी धीमी करते देख बोला।

नफासत अली ने पुनः एक्सीलेटर पर पैर का दबाव बढ़ा दिया।

"कोई बड़ा सरकारी अफसर लगता है।" नफासत अली बोला—"गेट पर बंदूकधारी तो इसी तरफ इशारा कर रहे हैं।"

बलराज गोगिया कुछ नहीं बोला। यह बात वह भी समझ रहा था कि वह कोठी किसी बड़े अधिकारी की है। तो क्या यह सी.आई.ए. का अड्डा है? या फिर कोई और माजरा है।

"बस यहीं रोक दो।" बलराज गोगिया थोड़ा आगे जाकर बोला।

नफासत अली ने सड़क किनारे टैक्सी रोक दी।

बलराज गोगिया ने सौ-सौ के पांच और नोट निकाले और उसकी झोली में डालते हुए बोला—

"मेरा ख्याल है कि इतना किराया काफी होगा।"

"यह तो चौगुने से भी ज्यादा है जनाब।"

"रख लो।" गहरी सांस छोड़ी बलराज गोगिया ने और दरवाजा खोलकर बाहर आ गया।

नफासत अली ने रहम भरे भाव से उसकी तरफ देखा और टैक्सी आगे बढ़ा दी।

बलराज गोगिया वापिस मुड़ा और कोठी की तरफ बढ़ने लगा।

कुछ ही देर में वह कोठी के सामने से गुजर रहा था।

गेट के दोनों तरफ दो स्टेनगनधारी मुस्तैदी से खड़े थे। गेट से कोठी के कम्पाउण्ड तक लाल बजरी का ड्राइव-वे बना हुआ था, जिसके दोनों तरफ सजावटी वृक्ष लगे हुए थे तथा उनके पीछे लान नजर आ रहा था।

गेट के दांई तरफ पीतल के अक्षरों की प्लेट लगी हुई थी।

"ए. हसन—ब्रिगेडियर आफ आर्मी।"

मन ही मन बड़बड़ाया बलराज गोगिया और आगे बढ़ता चला गया।

थोड़ा आगे जाकर उसने एक टैक्सी रुकवाई और उसमें सवार हो वापिस होटल की तरफ रवाना हो गया।

मन ही मन वह हैरान हो रहा था कि एक ब्रिगेडियर से

https://t.me/Hindiupanyas

सायरा के क्या ताल्लुकात थे।

क्या ब्रिगेडियर सी.आई.ए. का एजेंट था?

क्या सायरा उसी से रिवाल्वर हासिल करने आई थी? या फिर यह कोई और सायरा है?

चक्कर खाकर रह गया था बलराज गोगिया।

"कहां गए थे?"

बलराज गोगिया के कमरे में प्रवेश करते ही सायरा ने उससे इस तरह पूछा जैसे वह जानने के लिये मरी जा रही हो कि वह कहां गया था।

बलराज गोगिया ने जवाब नहीं दिया। वह आगे बढ़कर बैड पर बैठा और झुककर जूतों के तस्में खोलने लगा।

सायरा उसके करीब बैठ गई।

"नाराज हो?"

बलराज गोगिया ने तस्में खोलते हुए ही गर्दन उसकी तरफ घुमाई।

"मेरे यार की जिन्दगी तुम्हारे रहमो-करम पर है—भला मेरी ऐसी जुर्रत कहां कि मैं तुमसे नाराज हो जाऊं।"

"तो फिर बताते क्यों नहीं—कहां गए थे तुम?"

"यहां मैं सैर करने नहीं आया।" सीधे बैठते हुए बोला बलराज गोगिया—"जाहिर है कि किसी ऐसे शख्स की तलाश में निकला था जिसके जरिये मैं उस फार्मूले का पता लगा सकूं...।"

"पता लगा?"

"अभी तो कुछ नहीं लगा—और अगर लगता भी तो भी तुम्हें नहीं बताता।"

कहते हुए बलराज गोगिया ने पालथी मार ली।

"तुम मुझसे सचमुच नाराज हो।"

"जहां एक-दूसरे पर विश्वास न हो—वहां ऐसी समस्यायें पैदा होती ही रहती हैं। तुम मुझे यह बताने को राजी नहीं कि तुम कहां गई थीं। जबकि तुम अच्छी तरह से जानती हो कि जानकर भी मैं तुम लोगों का कुछ नहीं बिगाड़ सकता। ऐसे में तुम कैसे उम्मीद कर सकती हो कि मैं कुछ बता दूंगा।"

"मुझे तुम्हें बताने में कोई हर्ज नहीं। मैंने तो बस इसलिये नहीं बताया था कि मैं तुम्हें पाने में नाकाम रही थी। बस यूं समझ

https://t.me/Hindiupanyas

थी कि मैं खोज गई थी।"

बलराज गोगिया कुछ नहीं बोला—बस उसकी तरफ देखता रहा।

"जिन्दगी में पहली बार पूरी हार का मुंह देखना पड़ा है बलराज गोगिया। तुमने पहले मैंने जिस भी मर्द की तरफ आंख उठाकर देखा—उसी ने तुम हिलानी शुरू कर दी।"

"यही तुम ही नहीं। वैसे अगर तुम चाहो तो मेरी जगह राघव ले सकता है। जब हम वापिस भारत जायेंगे तो वहां राघव से तुम जी भर कर अपनी संतुष्टि कर लेना।"

"मैं पीर वाली गली गई थी।"

"पीर वाली गली?"

"हाजी दरगाह से थोड़ा आगे है पीर वाली गली—वहां हमारे दो एजेंट रहते हैं। तुम्हारे लिये रिवाल्वर का बंदोबस्त करने वहीं गई थी।"

"और कहां गई थीं?"

"कहीं भी नहीं।"

"सोच लो—हो सकता है भूल रही हो तुम।"

सायरा की रंगत पलभर के लिये पीली पड़ी—फिर वह मुस्करा पड़ी।

"जी नहीं जनाब.....मैं सिर्फ और सिर्फ पीर वाली गली गई थी। अगर अब भी तुम्हें यकीन नहीं हो रहा तो मैं तुम्हें अपने एजेंट से मिलवा भी सकती हूं।"

"मैं उनसे मिलना चाहूंगा।"

"तसल्ली करने के लिये?"

"नहीं।"

"तो?"

"कुछ काम सौंपना है उन्हें।"

"ठीक है।" सायरा ने कंधे उचकाये—"अभी चल पड़ते हैं।"

बलराज गोगिया ने तुरंत टांगें नीचे लटकाईं और बूट पहनने लगा।

"अगर मेरी बात सच निकली तो?" तभी सायरा बोली।

"तो?"

"तो रात मेरे नाम करनी होगी तुम्हें।"

बलराज गोगिया ने कुछ सोचा—फिर मुस्कुराते हुए सहमति

https://t.me/Hindiupanyas

में सिर हिला दिया।

सायरा की आंखों में हजारों वाट की चमक नाच उठी। चेहरा एकदम से खिल उठा।

❑❑❑

वह व्यक्ति जो कि सी.आई.ए. का एजेंट था और जिसने सायरा को रिवाल्वर दी थी, का नाम करीम बख्श था।

करीम बख्श सायरा के साथ बलराज गोगिया को देख बुरी तरह से चौंका, फिर सायरा की तरफ प्रश्न भरी निगाहों से देखा।

"यह बलराज गोगिया है।" सायरा ने बलराज गोगिया का परिचय दिया—"इसे तुमसे कोई काम था—इसलिये इसे यहां लाना पड़ा।"

करीम बख्श कुछ नहीं बोला। वह दोनों को उसी कमरे में ले आया जिसमें वह सायरा के साथ बैठा था।

"बैठो।" वह बोला।

"सायरा तो कह रही थी कि यहां दो आदमी हैं—जबकि मुझे तो सिर्फ तुम ही नजर आ रहे हो। तुम्हारा साथी कहां है?"

"तुम आदमियों की चिंता मत करो। काम बोलो।"

बलराज गोगिया ने सायरा की तरफ देखा—फिर पुनः करीब बख्श की तरफ देखते हुए बोला—

"मैं यहां नया हूं। एक बार पहले आया था मैं यहां और यहां एक दोस्त भी बनाया था। लेकिन आज वह नहीं मिला मुझे। अगर वह मिल जाता तो शायद मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं पड़ती।"

"तुम हमें अपना दोस्त समझो—बोलो क्या काम है?"

"मुझे यहां के तमाम बड़े अधिकारियों के नाम और पते चाहिये—खास कर उनके जो आई.एस.आई. के ओहदेदार हैं।"

"मिल जायेंगे।" सहमति में सिर हिलाया करीम बख्श ने—"मगर जितने हमें मालूम हैं—उतने ही मिलेंगे।"

"कोई बात नहीं—मैं काम चला लूंगा।" बलराज गोगिया बोला—"बस एक बार रास्ता ढूंढना है—फिर आगे के रास्ते स्वयं बनते जायेंगे।"

"ओ.के.।" मुस्कुराया करीम बख्श—"सुबह तुम्हारे होटल में नाम और पते पहुंच जाएंगे।"

बलराज गोगिया ने सिर हिलाया।

और फिर वहां पर चाय पीने के बाद बलराज गोगिया और

https://t.me/Hindiupanyas

सायरा वापिस होटल की तरफ रवाना हो गए। सायरा आने वाले वक्त की सोचकर ही रोमांचित हो रही थी। उसका दिल चाह रहा था कि टैक्सी उड़कर होटल पहुंचे और कमरे में प्रवेश करते ही वह बलराज गोगिया पर टूट पड़े तथा उसके कपड़े फाड़कर स्वयं उस पर सवार हो जाये।

आगे की सोचते वक्त उसका चेहरा सुर्ख होने लगा था तथा खून की गर्दिश में तेजी आ गई थी।

आंखों में सुर्ख डोरे तैरने लगे थे।

□□□

एक घण्टा इंतजार करने के बाद भी जब हाशिम रजा के भेजे आदमी रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे को पकड़कर वहां नहीं पहुंचे तो उसके चेहरे पर व्याकुलता उभरी।

"कमाल है।" वह सतीश रावण की तरफ देखते हुए बोला—"उन्हें तो हमारे यहां पहुंचने से पहले ही पहुंच जाना चाहिये था। अब तो हमें एक घण्टे से ऊपर हो गया है।"

□□□

"ट्रिन...ट्रिन।"

उसकी बात खत्म होते ही फोन की घण्टी बज उठी।

उसने तुरंत रिसीवर उठाया और कान से लगाया।

"हैलो...।"

"सलाम वालेकुम जनाबेआला।" दूसरी तरफ से आवाज आई।

"वालेकुम सलाम—क्या बात है? तुम पहुंचे क्यों नहीं अभी तक?" हाशिम रजा व्याकुलता भरे स्वर में बोला।

"वह हमारे यहां पहुंचने से पहले ही फरार हो गई थी जनाबेआला।"

"क्या?" बुरी तरह से चौंका हाशिम रजा।

"लगता है उसे हमारे पहुंचने का पता चल गया था—हम डेढ़ घण्टे से उसके मकान पर नजर रखे हुए हैं। मगर अभी तक वह वापिस नहीं लौटी।"

"ओह!" हाशिम रजा का चेहरा झुक गया।

"हमारे लिये क्या हुक्म है?"

हाशिम रजा ने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

https://t.me/Hindiupanyas

"दो आदमी वहां तैनात करो और बाकी वापिस आ जाओ।"

"बेहतर जनाबेआला।"

मायूसी भरे अंदाज में हाशिम रजा ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और सतीश रावण की तरफ देखा।

"क्या हुआ हुजूर?" सतीश रावण मन ही मन हंसता हुआ बोला—"खैरियत तो है?"

"रीमा राठौर हमारे पहुंचने से पहले ही फरार हो गई।"

बुरी तरह से उछल पड़ा सतीश रावण—और आंखें फाड़ते हुए बोला—

"ए...ऐसा कैसे हो सकता है हुजूर?"

"पता नहीं कैसे उसे हमारे वहां पहुंचने की खबर लग गई—और वह वक्त रहते फरार हो गई।"

"ओह!"

"किसने की होगी खबर?" हाशिम रजा ने जैसे अपने आप से ही पूछा।

सतीश रावण ने पहलू बदला और थोड़ा सहमें स्वर में बोला—

"जान की अमान पाऊं तो एक बात कहूं हुजूर?"

"कहो।" हाशिम रजा उसकी तरफ गहरी निगाहों से देखते हुए बोला।

"मुझे तो लगता है हुजूर कि आपके ही किसी आदमी ने रीमा राठौर को आगाह कर दिया था।"

बुरी तरह से चौंका हाशिम रजा।

"यह क्या कह रहे हो तुम?"

"आप खुद ही सोचिये हुजूर—रीमा राठौर को उस मकान में ठहरे अभी आधा दिन भी नहीं हुआ था कि वह फरार हो गई इतनी देर तो आदमी अपनी थकान उतारने में ही गुजार देता है।" सतीश रावण बोला—"जाहिर है कि उन्हें कहीं न कहीं से खबर लगी कि कोई उनकी तरफ बढ़ रहा है। और उनकी तरफ बढ़ने की खबर या तो मैं जानता था या फिर आप—और आप ही ने अपने मातहतों को आर्डर दिया था।"

हाशिम रजा के चेहरे पर सोचें उभर आईं।

"तुम ठीक कह रहे हो सतीश रावण—हमारी ही आस्तीन में कोई सांप छुपा हुआ है—जिसने रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे

https://t.me/Hindiupanyas

को खबर की है।"

सतीश रावण मन ही मन हंसा।

"वह सांप तेरे सामने ही तो बैठा है हरामी के पिल्ले!" वह मन ही मन बोला।

हाशिम रजा ने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"तुम्हें एक बार फिर रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे को ढूंढना होगा।"

बुरी तरह से हड़बड़ाया सतीश रावण।

"ल...लेकिन हुजूर—मैंने तो...।"

"क्या तुम पाकिस्तान में रहना नहीं चाहते?"

सतीश रावण ने ऐसे मुंह बनाया जैसे उसकी बोलती बंद हो गई हो।

"मैं इब्राहिम खान साहब को तुम्हारे बारे में बता दूंगा कि तुम रीमा राठौर को ढूंढने में आना-कानी कर रहे हो। उसके बाद क्या होगा यह तुम अच्छी तरह से जानते हो—खान साहब तुम्हें भारतीय मिलिट्री को सौंप देंगे।"

"न...नहीं हुजूर...ए...ऐसा गजब मत कीजिएगा।" गिड़गिड़ाया सतीश रावण।

"तो फिर तुम्हें फिर से उन दोनों को ढूंढना होगा।"

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी—साथ ही उसके चेहरे पर आहत भरे भाव उभरे।

"चूंकि हमें यह पता चल गया है कि वे दोनों जासूस कौन हैं—इसलिये हम भी अपनी तरफ से उसे ढूंढने में जमीन-आसमान एक कर देंगे।"

सतीश रावण कुछ नहीं बोला—बस सिर हिला दिया।

"कुछ चाहिये?"

"जी...कुछ गोलियां चाहिये—साथ में कुछ नोट भी।"

"और कुछ?"

सतीश रावण ने इन्कार में सिर हिला दिया।

रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे उमर कस्बे में रात दस बजे पहुंचे।

टैक्सी से निकलकर वे कस्बे में प्रविष्ट हुए।

उस वक्त रीमा राठौर ने अपने चेहरे के आगे से काला पर्दा

https://t.me/hindiupanyas

उठा रखा था तथा अब उसके चेहरे पर काले रंग की जाली थी।

अभी रात के दस ही बजे थे और कस्बे में ऐसा नजर आ रहा था कि मानों वहां कभी किसी इंसान के पैर ही न पड़े हों। बाजार क्या गलियों में भी कोई इंसान नजर नहीं आ रहा था। यहां तक कि कोई चौकीदार भी नहीं दिख रहा था।

नजर आ रहा था तो बस कुछ विचरते हुए गधे—या फिर इधर-उधर लेटे कुत्ते।

"लगता है यहां सिर्फ गधे और कुत्ते ही बसते हैं।" सिकंदर ठाकरे बोला—"कोई आदमी नजर ही नहीं आ रहा। या फिर ऐसा लगता है यहां डाकुओं का प्रकोप हो—जो वक्त रहते लोग घरों में दुबक जाते हैं।"

रीमा राठौर उसकी बात पर हौले से हंस दी।

"अब अब्दुल रशीद का पता किससे पूछें?" सिकंदर ठाकरे बोला।

"इत्मिनान रखो—कोई न कोई मिल जाएगा।"

"अगर न मिला तो?"

"वो हम किसी से मिलकर पता पूछ लेंगे।"

"यानि किसी का दरवाजा खुलवाना होगा?"

"अगर कोई न मिला तो!"

रीमा राठौर कदम आगे बढ़ाते हुए बोली।

थोड़ा आगे चलने पर एक तिराहा था।

तिराहे पर पहुंचकर रीमा राठौर ने पहले दांई तरफ देखा।

उस तरफ सड़क के दोनों तरफ मकान नजर आ रहे थे।

उसने बांई तरफ देखा।

थोड़ी ही दूरी पर उसे रेलवे स्टेशन बना नजर आया।

"इधर रेलवे स्टेशन है।" वह बोली।

"तो?"

"वहां से हमें अब्दुल रशीद का पता चल सकता है।"

कहते हुए उसने रेलवे स्टेशन की तरफ कदम बढ़ा दिये।

दोनों रेलवे स्टेशन पर पहुंचे तो वहां उन्हें दो सवारियां बैठी नजर आईं।

"मैं पूछूं उनसे?" तभी सिकंदर ठाकरे बोला।

रीमा राठौर ने सहमति में सिर हिलाया।

सिकंदर ठाकरे उनके करीब पहुंचा—कुछ बात की और वापिस रीमा राठौर के करीब आ गया।

https://t.me/Hindiupanyas

"आओ।" वह स्टेशन से बाहर निकलते हुए बोला।

"कुछ पता चला?" उसके साथ-साथ चलते हुए पूछा रीमा राठौर ने।

"हां।" सिकंदर ठाकरे बोला।

दोनों वापिस तिराहे पर पहुंचे और उधर बढ़े जिधर कि सड़क के दोनों तरफ मकान बने हुए थे। सिकंदर ठाकरे रीमा राठौर के साथ एक गली छोड़कर दूसरी गली में मुड़ा और पांचवें मकान के सामने आकर ठिठक गया।

"यही है वह मकान।" वह बोला।

"घण्टी बजाओ।" रीमा बोली।

सिकंदर ठाकरे ने चौखट पर लगा घण्टी का बटन दबा दिया।

भीतर कहीं घण्टी का कर्कश स्वर गूंजा।

"कौन?" शीघ्र ही भीतर से एक भारी आवाज आई।

"मैं हूं, दरवाजा खोलो।" रीमा राठौर बोली—साथ ही उसने रिवाल्वर निकालकर हाथ में ले लिया।

सिकंदर ठाकरे ने भी अपनी रिवाल्वर निकाल ली।

और जैसे ही दरवाजा खुला—रीमा राठौर का जिस्म रबड़ के बबुए की तरह अपने स्थान से उछला और उस भारी-भरकम व्यक्ति से जा टकराया जिसने कि दरवाजा खोला था।

इस आकस्मिक आक्रमण के लिये वह मोटा व्यक्ति हरगिज तैयार नहीं था—सो धड़ाम से पीछे फर्श पर जा गिरा।

उसके गिरते ही रीमा राठौर ने रिवाल्वर की नाल उसके माथे पर लगा दी और गुराई—

"खड़ा हो जा।"

इधर सिकंदर ठाकरे फुर्ती से भीतर प्रविष्ट हुआ और दरवाजा बंद करके अन्दर से कुण्डा लगा दिया।

रीमा राठौर की तरफ देखे बिना वह भीतर प्रवेश कर गया।

"क...कौन हो तुम?" तभी वह मोटा व्यक्ति कांपते स्वर में बोला।

"मेरे बारे में जानने की बजाये तू अपने बारे में बोल—तू कौन है?" फुंफकारी रीमा राठौर।

"शे...शेख मुख्तयार।"

वह मोटा बोला। वह रीमा राठौर से नहीं बल्कि उसके हाथ में दबी रिवाल्वर से डरा हुआ था।

https://t.me/Hindiupanyas

"अब्दुल रशीद कहां है?"

अब्दुल रशीद का नाम सुनकर बुरी तरह से उछल पड़ा शेख मुख्तयार।

"क...कौन अब्दुल रशीद?"

वह स्वयं को बाबू पाने की कोशिश करते हुए बोला।

ठीक तभी रीमा राठौर का घुटना तेजी से चला और उसकी जांघों के ऐन बीचों-बीच पड़ा।

शेख मुख्तयार के चेहरे पर पीड़ा के बादल उमड़ आये—साथ ही वह अपनी जांघों में हाथ दबाये आगे को झुका।

"ठाक्।"

रीमा राठौर का घुटना उसकी ठोड़ी पर पड़ा।

तेज कराह उबल पड़ी उसके मुख से—और ठोड़ी फट गई—जहां से कि अब खून बहने लगा था।

"मेरा ख्याल है कि अब तुझे पता चल गया होगा कि मैं किस अब्दुल रशीद के बारे में पूछ रही हूं।"

रीमा राठौर फुंफकारी।

"म....मैं किसी अब्दुल रशीद को नहीं जानता।"

"झूठ मत बोल—मैं जानती हूं कि वह यहीं तेरे घर में छुपा हुआ है।"

"मेरे घर की तलाशी ले लो—यहां सिर्फ मैं अपनी बेगम और बेटी के साथ रहता हूं।"

रीमा राठौर के चेहरे पर क्रूरता उभर आई—आंखों में हिंसक भाव फैल गए।

उसने रिवाल्वर की नाल उसके माथे से लगाई और गुर्राई—

"तू नहीं बताता तो तेरी बीवी से पूछ लेती हूं मैं...खुदा हाफिज।"

"न...नहीं...गोली मत चलाना।" एकदम से चीखा शेख मुख्तयार—"म...मैं बताता हूं।"

"तो बोल...।"

"व...वो तहखाने में है।"

"तहखाने का रास्ता बोल।"

शेख मुख्तयार ने बताया।

सब कुछ जानकर रीमा राठौर ने बिना किसी झिझक के रिवाल्वर का ट्रिगर दबा दिया। गोली सीधा उसके माथे में धंसी और उसका भेजा फाड़ती हुई पीछे को निकल गई। धड़ाम से वह

https://t.me/Hindiupanyas

फर्श पर गिरा। कुछ पल छटपटाया—फिर शांत हो गया। वह मर चुका था।

रीमा राठौर उसकी लाश को फांदती हुई भीतर प्रविष्ट हुई और उस कमरे में जा पहुंची जिसमें कि सिकंदर ठाकरे शेख मुख्तयार की बेगम तथा उसकी जवान बेटी को कवर किये हुए था।

"अब्दुल रशीद बेसमेंट में है।" वह बोला—"मगर इन्हें यह नहीं मालूम कि बेसमेंट का दरवाजा कैसे खुलता है।"

"मुझे मालूम हो चुका है।" बोली रीमा राठौर—"खत्म कर दो इन्हें।"

उसका हुक्म सुनकर दोनों मां-बेटी के चेहरे पीले जर्द पड़ गए।

"न...नहीं...।" औरत चीखी—"ह...हमें मत मारो।"

मगर सिकंदर ठाकरे को उन पर जरा भी रहम नहीं आया। उसने बिना किसी झिझक के दो बार ट्रिगर दबाया।

अगले ही पल दोनों मां-बेटी की लाशें वहां नजर आ रही थीं।

इस बार क्या मजाल जो सिकंदर ठाकरे का हाथ जरा भी कांपा हो।

रीमा राठौर मुस्कुराई और बोली—"आओ—बेसमेंट में चलते हैं।"

दोनों कमरे से निकले और बांई तरफ के आखिरी कमरे की तरफ बढ़े।

उस कमरे पर केवल कुण्डा लगा हुआ था।

रीमा राठौर ने कुण्डा खोलकर दरवाजा खोला तो सामने टूटा-फूटा फर्नीचर तथा घर का फालतू सामान इधर-उधर बिखरा नजर आया।

बिल्कुल जैसे कोई कबाड़खाना नजर आ रहा था वह कमरा।

"आओ।" रीमा राठौर बोली और भीतर प्रवेश कर गई।

पीछे-पीछे सिकंदर ठाकरे भी प्रविष्ट हुआ।

प्रवेश करते ही रीमा राठौर दरवाजे के पीछे वाली दीवार के सामने आई और दीवार को गौर से देखने लगी।

दीवार पर ग्रीस तथा चिकनाई के निशान लगे हुए थे। और रीमा राठौर उन्हीं निशानों में से एक खास निशान को ढूंढ रही

https://t.me/hindiupanyas

थी।

शीघ्र ही उसकी निगाहों ने उस निशान को ढूंढ लिया।

देखने पर ऐसा लगता था जैसे किसी के तेल से सने सिर का पृष्ठ भाग उस स्थान पर लगता रहा हो और वहां पर चिकनाई भरा हाथी का सिर बन गया हो।

रीमा राठौर ने हाथी के सिर के बांये कान के ऐन बीच में उंगली रखी और दबाया।

अगले ही पल हल्की-सी घर्र-र्र की आवाज के साथ कमरे के फर्श का एक हिस्सा एक तरफ सरकने लगा तथा नीचे जाने वाली सीढ़ियां नजर आने लगीं।

रीमा राठौर ने रिवाल्वर सीधी की और सीढ़ियों की तरफ कदम बढ़ाया।

सिकंदर ठाकरे को उसने इशारे से वहीं खड़ा रहने को कह दिया था।

पंजों के बल बिना कोई आवाज किये वह सीढ़ियां उतरने लगी।

उसके हाथ में थमी रिवाल्वर किसी भी पल आग उगलने को तैयार थी।

आखिरी सीढ़ी पर पैर रखते ही उसके होंठों पर अचानक मुस्कान उभर आई।

बांई तरफ बैड पर एक व्यक्ति पूरी तरह से निर्वस्त्र एक औरत के साथ झूम रहा था। उसके कूल्हे जिस तेजी से ऊपर नीचे हो रहे थे—उससे साफ पता चल रहा था कि वह अपने लक्ष्य के काफी करीब पहुंच चुका है।

उसके नीचे दबी औरत भी कूल्हे उचका-उचका कर उसका भरपूर साथ दे रही थी।

चूंकि दोनों की टांगें रीमा राठौर की तरफ थीं—इसलिये उन्हें किसी की आहट का पता नहीं चला था। बड़े इत्मिनान से रीमा राठौर उनके करीब पहुंची और बोली—

"जल्दी-जल्दी निपट लो—फिर पता नहीं मौका मिले या न मिले।"

उसकी आवाज को सुनकर औरत के होंठों से चीख उबल पड़ी—जबकि उस पर चढ़ा आदमी चौंककर पीछे पलटा।

मगर सामने रिवाल्वर देखकर उसकी सारी फुर्ती ठण्डी पड़ गई।

https://t.me/hindiupanyas

"लगा रह।" तभी रीमा राठौर गुर्राई।

"कौन हो तुम?" उसकी बात को अनसुनी करते हुए वह आदमी बोला जो कि अब्दुल रशीद ही था।

"तू वैसे ही पोज में अच्छा लग रहा था—चल उसी पोज में और फिर से शुरू हो जा।"

"लेकिन तुम...?"

"शेख मुख्तयार, उसकी बेगम तथा बेटी जन्नतनशीं हो चुके हैं। अगर तू भी यही चाहता है तो बेशक बात कर मुझसे।"

सुनकर अब्दुल रशीद की रंगत पीली पड़ गई।

वह पुनः औरत पर सवार हो गया।

"ऊपर नीचे हो।"

अब्दुल रशीद ऊपर नीचे होने लगा। मगर अब ऊपर नीचे होने का कोई फायदा नहीं रह गया था।

दोनों एकदम से ठण्डे पड़ चुके थे।

रीमा राठौर बैड का चक्कर लगाती हुई उसके सामने आ गई।

"कौन हो तुम?" अब्दुल रशीद बोला।

"रीमा राठौर।" रीमा राठौर बोली—"हिन्दुस्तान से मैं स्पेशल तुझसे मिलने आई हूं।"

सुनकर बुरी तरह से चौंका अब्दुल रशीद।

"लगा रह।"

लेकिन इस बार अब्दुल रशीद ने उसकी बात अनसुनी कर दी और अपने नीचे पड़ी औरत की जांघों पर बैठ गया।

"हिन्दुस्तान में क्या मर्दों का अकाल पड़ गया है जो औरतों को बाहर भेजा जाने लगा है।" वह बोला।

"हिन्दुस्तानी औरतें सिर्फ चूल्हा जलाना ही नहीं जानतीं, बल्कि वो, वो सब कुछ कर सकती हैं जो मर्द भी नहीं कर सकते।"

"क्या मेरे नीचे आ सकती है तू?" वह हंसा।

"यह खूबी पाकिस्तानियों में है—हिन्दुस्तानियों में नहीं।"

रीमा राठौर की इस बात का जवाब नहीं था अब्दुल रशीद के पास—तभी तो वह हड़बड़ा उठा था।

"अब पहले की तरह इस औरत पर लेट और पहले की तरह शुरू हो जा।"

"अगर मैं इन्कार कर दूं तो?"

https://t.me/Hindiupanyas

"तो इस रिवाल्वर से निकली गोली तेरा एक कंधा तोड़ डालेगी—फिर भी तुझे वही करना होगा जो मैंने कहा है।"

उसकी बात पर अब्दुल रशीद के होंठों पर मुस्कान फैल गई।

"रिवाल्वर पकड़ लेना अलग बात है मैडम—उसे चलाने के लिये जो कलेजा चाहिये होता है—वह तुम जैसी नाजनीनों के पास नहीं होता।"

"धांय...।" तभी रीमा राठौर की रिवाल्वर गरजी।

गोली सीधा अब्दुल रशीद के दांये कंधे में जा धंसी।

पीड़ा भरी तेज चीख उबल पड़ी उसके होंठों से।

उसके नीचे पड़ी औरत को तो जैसे काठ ही मार गया था।

"मेरा ख्याल है कि अब तुझे पता चल गया होगा कि मैंने रिवाल्वर सिर्फ दिखाने के लिये नहीं पकड़ी हुई।"

फुंफकारी रीमा राठौर।

अब्दुल रशीद अपना कंधा पकड़े कराहता रहा—बोला कुछ नहीं वह।

"चल अब शुरू हो जा—वर्ना अभी के अभी दूसरा कंधा भी टूट जाएगा।"

अब की बार कोई आना-कानी नहीं की अब्दुल रशीद ने और अपने नीचे दबी औरत पर लेट गया।

"कूल्हे ऊपर नीचे कर।"

अब्दुल रशीद के कूल्हे ऊपर नीचे होने लगे।

"क्या चाहती हो तुम?" वह गिड़गिड़या।

"फार्मूला कहां है?"

बुरी तरह से चौंक पड़ा अब्दुल रशीद—आंखों में हैरत उभर आई।

"तेरे कूल्हे चलने बन्द हो गए हैं।" फुंफकारी रीमा राठौर।

अब्दुल रशीद के कूल्हे पुनः चलने लगे।

"क...कैसा फार्मूला? मैं किसी फार्मूले के बारे में नहीं जानता?

"मैं याद करा देती हूं।" रीमा राठौर जहरीले स्वर में बोली—"मैं उस फार्मूले के बारे में पूछ रही हूं, जिसे तुमने प्लेन हाइजैक करके हमारे एक वैज्ञानिक की हत्या करके उससे हथियाया था। अब यह न कहना कि तूने कोई प्लेन हाईजैक नहीं किया।"

"मैंने सचमुच कोई प्लेन हाईजैक नहीं किया। तुम्हें कोई

https://t.me/Hindiupanyas

गलतफहमी...आह...।"

तेज चीख उबल पड़ी उसके होंठों से।

रीमा राठौर का झन्नाटेदार थापड़ उसके गाल पर पड़ा था।

"मेरे सामने इंकार करेगा तो वो हाल करूंगी कि मौत को तरसेगा—मगर मौत नसीब नहीं होगी।"

"तुम मेरी चाहे जो भी हालत कर दो—जब मैं कुछ जानता ही नहीं तो बताऊंगा कहां से।"

"लगता है तू लातों का भूत है—डण्डे का शैतान—तू ऐसे नहीं मानेगा।"

"द...देखो-म...मैं सच कह रहा हूं—खुदा कसम—मैं झूठ नहीं बोल रहा...।

बात अधूरी ही रह गई उसकी—रीमा राठौर ने रिवाल्वर का रुख उसके नीचे पड़ी औरत की तरफ किया और गुर्राई—

"जिंदा औरतों के साथ तो तूने खूब ऐश की होगी—मगर लाश पर कभी नहीं चढ़ा होगा तू।"

"क्या मतलब?" हड़बड़ाया अब्दुल रशीद।

रीमा राठौर ने गोली चला दी जो कि ऐन उसके नीचे बिछी औरत की खोपड़ी के बीचो-बीच जा धंसी।

औरत इस कदर छटपटाई कि उसके ऊपर पड़ा अब्दुल रशीद एक तरफ जा गिरा।

"ऊपर चढ़ इसके—और वही सब कुछ कर जो पहले कर रहा था।"

फुंफकारी रीमा राठौर।

"न...नहीं...।" अब्दुल रशीद का स्वर खौफ से भर गया—"मैं...मैं ऐसा हरगिज नहीं करूंगा—तुम चाहे मुझे गोली मार दो—मैं एक मुर्दा औरत के साथ ऐसा हरगिज नहीं करूंगा।"

"तो फिर फार्मूले के बारे में बता।"

"मैं नहीं जानता।" दृढ़ता भरे स्वर में बोला अब्दुल रशीद।

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी और ऊंचे स्वर में बोली—"नीचे आ जाओ ठाकरे।"

तभी सीढ़ियों से किसी के उतरने की आवाज आई।

अब्दुल रशीद ने गर्दन पीछे घुमा कर जैसे ही सीढ़ियों की तरफ देखा—रीमा राठौर की रिवाल्वर का दस्ता उसके सिर पर पड़ा।

वह वहीं औरत की लाश पर ढेर हो गया।

https://t.me/Hindiupanyas

इधर सिकंदर ठाकरे बेसमेंट में आया तो बैड का नजारा देखकर एक गहरी सांस छोड़कर रह गया।

"देख लेना—बहुत बड़ा पाप लगेगा तुम्हें।" वह बोला—"किसी को इस हालत में डिस्टर्ब करने से बहुत बड़ा पाप लगता है।"

"बांधो इसे।" रीमा राठौर उसके मजाक को अनसुना करते हुए सख्त स्वर में बोली।

सिकंदर ठाकरे ने बैड पर पड़ी चादर को लम्बाई में चार हिस्सों में फाड़ा और उन्हें रस्सी की तरह बल देकर बैड के पांवों के साथ उसके हाथ तथा पैर बांध दिये।

अब होश में आने के बाद अब्दुल रशीद अपनी कमर तो उछाल सकता था—मगर वह स्वयं को आजाद नहीं कर सकता था।

"मैं पानी लेकर आती हूं।"

रीमा राठौर बोली और सीढ़ियां चढ़कर ऊपर चली गई। शीघ्र ही वह वापिस लौटी तो उसके एक हाथ में पानी का गिलास था तथा दूसरे में स्टील की बारीक तार थी।

अब्दुल रशीद के करीब आकर उसने पूरा गिलास उसके मुंह पर उंडेल दिया।

हड़बड़ा कर अब्दुल रशीद ने आंखें खोलीं तो स्वयं को बैड पर बंधा पाया।

"हां तो मियां—अब क्या कहते हो?" गुर्राई रीमा राठौर—"फार्मूले का पता बताते हो या मैं शुरू होऊं...।"

"मैं नहीं जानता।"

कहते हुए उसने अपने साथ सटी औरत की लाश की तरफ देखा।

लाश को देखकर उसके चेहरे पर हल्का-सा खौफ उभरा।

"अभी-अभी उसकी रूह आई थी यहां।" रीमा राठौर ने लाश की तरफ इशारा किया—

"कह रही थी कि इसकी तृष्णा बीच में ही रह गई थी—और जब तक इसकी इच्छा की पूर्ति नहीं होती—इसकी रूह भटकती रहेगी। मैंने वादा कर दिया कि तुम्हारी रूह नहीं भटकेगी। तब इसने कहा कि इसे तुझसे नहीं, तेरी मर्दानगी से मतलब है।"

"क्या मतलब?" कांपा अब्दुल रशीद।

"तेरी मर्दानगी ले कर इसकी रूह अपने आप ही खुश हो लेगी।"

https://t.me/Hindiupanyas

"नहीं...।" बुरी तरह से कांप उठा अब्दुल रशीद। रीमा राठौर की बात का मतलब वह समझ गया था।

"त...तुम ऐसा नहीं कर सकतीं।"

"मैं तेरी माशूक की रूह से वादा कर चुकी हूं—अब तुम्हें बगैर मर्दानगी के छक्कों की तरह जीना पड़ेगा।"

"न...नहीं!"

रीमा राठौर ने अपने हाथ में पकड़ी तार दिखाई उसे।

"बस थोड़ी सी तकलीफ होगी तुझे, फिर तुझे छोड़ देंगे हम। उसके बाद हम तो कोई और अब्दुल रशीद ढूंढ लेंगे—लेकिन तुम्हें कोई और औरत नहीं मिलेगी।"

अब्दुल रशीद के चेहरे की त्वचा पीली जर्द पड़ गई—आंखों में बदहवासी उभर आई।

इधर सिकंदर ठाकरे रीमा राठौर की दरिंदगी पर मन ही मन कांप उठा था। वह ऐसा भी कदम उठा सकती है—यह वह सपने में भी नहीं सोच सकता था।

रीमा राठौर उसकी कमर के करीब आई।

"नहीं...म...मुझे छूना भी नहीं...।"

चीखा अब्दुल रशीद और अपनी कमर को उछालने लगा।

"इसे सम्भालो ठाकरे।" गुर्राई रीमा राठौर।

सिकंदर ठाकरे अपने दिल को किसी तरह से सम्भालते हुए बैड पर चढ़ा और उसके पेट पर अपना पैर रख कर दबाया।

रीमा राठौर उसकी जांघों पर बैठ गई।

अब बुरी तरह से असहाय हो चुका था अब्दुल रशीद।

रीमा राठौर ने तार के सिरे का फंदा बनाया और उसे बांधकर हल्के से खींचा।

तुरंत फंदा जड़ में फंस गया।

रीमा राठौर खड़ी हो गई और तार को अपनी तरफ खींचते हुए बोली—

"छोड़ दो इसे।"

सिकंदर ठाकरे ने उसके पेट पर से पैर हटा लिया।

रीमा राठौर ने तार को और खींचा तो अब्दुल रशीद की कमर ऊपर उठ गई। साथ ही उसके चेहरे पर पीड़ा भरे भाव उभरे।

"शाबास...।" रीमा राठौर वहशियाना अंदाज में हंसी—"पक्के रहना और इसी तरह कमर उठाये रहना—यकीन मान—मैं कुछ

https://t.me/Hindiupanyas

नहीं करूंगी। इधर तेरी पीठ बैड पर लगेगी—उधर सब कुछ अपने आप ही हो जाएगा।"

आखिर कब तक कमर उठा सकता था वह—शीघ्र ही उसके होंठों से कराहें फूटने लगीं। जैसे ही उसकी कमर थोड़ी नीचे होती—पीड़ा भरी तेज लहर दौड़ जाती उसके जिस्म में और कमर पुनः ऊपर उठ जाती।

"बस...अब और बर्दाश्त नहीं होता...।" वह गिड़गिड़ाया—"खुदा के लिये तार छोड़ दो।"

"यह तार तभी छूटेगी जब तू बतायेगा कि फार्मूला कहां है।"

"मैं...नहीं जानता।"

"तो फिर ऐसे ही लटका रह।"

"मैं...मैं सचमुच नहीं जानता...खुदा कसम...मुझे नहीं पता कि फार्मूला कहां है।"

"किसे दिया था तूने फार्मूला?" गुर्राई रीमा राठौर।

"मैं...मैं उसे नहीं जानता।"

"कोई बात नहीं—जब याद आ जाए तो कह देना।"

"म.....मैं मर जाऊंगा।"

"तू मरेगा नहीं—यह मेरा वादा रहा।"

"मैं सचमुच उसे नहीं जानता.....मैं तो बस दिलशाद को जानता हूं।"

"दिलशाद कौन?"

"म.....मेरा ट्रेनर...उसी ने मुझे ट्रेनिंग दी थी। उसी ने मुझे बताया था कि मुझे प्लेन हाईजैक करके वह फार्मूला कैसे हासिल करना है।"

"फिर?"

"फिर मैंने वैसे ही किया।" बोला अब्दुल रशीद—"लाहौर में पैराशूट के जरिये नीचे उतरते ही मुझे पुलिस ने घेर लिया और मेरी आंखों पर पट्टी बांध कर कहीं ले गए। आधे घण्टे बाद मेरी पट्टी खुली तो मैंने एक आदमी को अपने सामने देखा—फार्मूला मैंने उसे को दिया था।"

"फिर?"

"मुझसे कहा गया कि कुछ रोज तक मुझे छुपकर रहना होगा—ताकि मैं हिन्दुस्तानी जासूसों की निगाहों में न जाऊं। और फिर मेरी आंखों में फिर से पट्टी बांधकर मुझे यहां ले आया गया।

https://t.me/Hindiupanyas

उस दिन के बाद से मैं यहीं हूं।"

"दिलशाद कहां मिलेगा?"

"वह तो अफगानिस्तान में है।"

"यानि तू किसी और को नहीं जानता?"

"नहीं। खुदा कसम मैं किसी और को नहीं जानता।"

"अफगानिस्तान में कहां मिलेगा दिलशाद?"

"कंधार में।" कहकर उसने दिलशाद का पता बताया।

रीमा राठौर ने उससे कुछ सवाल और किये—और जब यह महसूस किया कि वह और कुछ नहीं जान पायेगी—उसने तार छोड़ दी।

अब्दुल रशीद की कमर बैड पर जा लगी—साथ ही उसके चेहरे पर राहत भरे भाव उभरे।

"इसे गोली मार दो ठाकरे।" रीमा राठौर सपाट लहजे में बोली।

अब्दुल रशीद के चेहरे पर उभरे राहत के भाव फौरन खौफ में तब्दील हो गए।

"म....मैं सचमुच और कुछ नहीं जानता।" वह गिड़गिड़ाया।

"मैं जानती हूं।" मुस्कुराई रीमा राठौर।

"त...तो फिर मुझे मारा क्यों जा रहा है?"

"हमारे एक वैज्ञानिक की हत्या के जुर्म में सजाये मौत दी जा रही है तुझे।"

"धांय।"

तभी सिकंदर ठाकरे की रिवाल्वर ने शोला उगला और अब्दुल रशीद के सीने में सुराख हो गया—बस एक-दो दफा तड़पा वह, फिर स्थिर हो गया।

"आओ।"

रीमा राठौर बोली और सिकंदर ठाकरे के साथ ऊपर आ गई।

ऊपर आकर उसने वैसी ही तकनीक से बेसमेंट का दरवाजा बंद किया, जैसे कि खोला था और सिकंदर ठाकरे के साथ मकान से बाहर आ गई।

"यह पटाखा तो फुस्स हो गया।" सिकंदर ठाकरे रीमा राठौर के साथ हाईवे की तरफ बढ़ते हुए बोला।

"कोई बात नहीं—एक और पटाखे का पता तो चल गया।"

बुरी तरह से चौंका सिकंदर ठाकरे।

https://t.me/Hindiupanyas

"त...तो क्या तुम अफगानिस्तान जाओगी?"

"आबेहयात के लिये मुझे चांद पर भी जाना पड़ा तो जाऊंगी।"

"लेकिन...।"

"अब बाकी बातें उस मकान में चलकर होंगी जिसे हमने अभी देखा भी नहीं।"

सिकंदर ठाकरे चुप कर गया। लेकिन उसका चेहरा बता रहा था कि रीमा राठौर बहुत ही खतरनाक रास्ते का चुनाव कर रही है।

अफगानिस्तान में जहां गोली पहले चलती है, बात बाद में होती है—वहां पर दिलशाद पर हाथ डालना शेर के जबड़े में हाथ डालने के बराबर था।

दोनों हाईवे पर पहुंचे।

शीघ्र ही उन्हें एक बस मिल गई।

दोनों बस में सवार हुए और इस्लामाबाद की तरफ रवाना हो गए।

❑❑❑

"ट्रिन...ट्रिन।"

फोन की घण्टी बजते ही रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे की निगाहें आपस में मिलीं।

रात साढ़े ग्यारह बजे दोनों उस मकान में पहुंचे थे और अभी थोड़ी देर पहले ही सोकर उठे थे।

"शाहिद का फोन होगा।" सिकंदर ठाकरे बोला।

रीमा राठौर बैड के करीब साइड स्टूल पर रखे फोन की तरफ सरकी और रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

"हैलो।"

"सलाम वालेकुम रीमा राठौर—मैं शाहिद बोल रहा हूं।"

दूसरी तरफ से आवाज आई।

"वालेकुम सलाम।"

"कोई तकलीफ तो नहीं हुई?" दूसरी तरफ से पूछा गया।

"नहीं—हम ठीक-ठाक यहां पहुंच गए थे। तुमने वक्त रहते हमारी जो मदद की—उसके लिये शुक्रिया।"

"उमर कस्बे गए थे?"

"हां।"

https://t.me/Hindiupanyas

"कुछ पता लगा वहां से?"

"अभी तो बस इतना पता लगा है कि दिलशाद नाम के आदमी ने अब्दुल रशीद को प्लेन हाईजैक करने के लिये भेजा था. ..।" गहरी सांस छोड़ते हुए बोली रीमा राठौर—"और वो अफगानिस्तान में रहता है।"

"तो क्या अब आप पाकिस्तान जाएंगी?"

"अभी तक तो यही सोचा है।" रीमा राठौर ने पुनः गहरी सांस छोड़ी।

"हाशिम रजा...।"

"हाशि रजा?" चौंकी रीमा राठौर।

"हो सकता है—आपको इससे कुछ मालूम हो जाए।"

रीमा राठौर एकदम से सीधी हो कर बैठ गई।

"कहां रहता है यह?"

दूसरी तरफ से हाशिम रजा का पता बताया गया—फिर आवाज आई—

"हैलो! यह आई.एस.आई. का आला अफसर है—मगर मैं यकीन के साथ नहीं कह सकता कि उसे फार्मूले के बारे में कुछ मालूम है या नहीं।"

"ओह।"

"आप उसे चैक कीजिये—खुदा ने चाहा तो आपको उसी से आपकी मंजिल का पता लग जाएगा।"

"ठीक है—मैं चैक करूंगी उसे।"

"और ध्यान रखियेगा—उसकी कोठी में दाखिल होना मौत के मुंह में दाखिल होने के बराबर होगा।"

"तुम बेफ्रिक रहो शाहिद—मैं पूरा ध्यान रखूंगी।"

"एक बात और।"

"बोलो।"

"आई.एस.आई. को पता चल चुका है कि आप सिकंदर ठाकरे के साथ यहां हैं।"

"ओह।"

"आज शाम तक आप दोनों की तस्वीरें हो सकता है अखबारों में भी छुप जाएं—इसलिये वक्त रहते आप अपने चेहरे बदल लीजियेगा। कहीं ऐसा न हो कि..."

दूसरी तरफ से बात अधूरी छोड़ दी गई।

"तुमने वक्त पर हमें आगाह किया शाहिद—इसके लिये

https://t.me/Hindiupanyas

शुक्रिया।" रीमा राठौर मुस्कुराई—"हम तुम्हारी सलाह पर अमल करेंगे।"

"मैं कोशिश करूंगा कि आपके लिये कुछ और जानकारियां इकट्ठा करूं। वैसे खुदा ने चाहा तो आपका काम हाशिम रजा से ही पूरा हो जाएगा। अब इजाजत चाहूंगा—खुदा हाफिज।"

"खुदा हाफिज।"

दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ते हुए रिसीवर क्रेडिल पर रखा और सिकंदर ठाकरे की तरफ मुड़ी।

"क्या कह रहा था?" सिकंदर ठाकरे ने पूछा।

रीमा राठौर ने बताया।

"ओह!" सिकंदर ठाकरे के होंठों से निकला—"ऐसे तो हम कभी भी फंस सकते हैं।"

"तुम बाजार से मेकअप का सामान खरीद लाओ।" रीमा राठौर बोली—"हाशिम रजा पर हाथ डालने से पहले हमें अपने हुलिये बदलने होंगे।"

सिकंदर ठाकरे ने सिर हिला दिया, फिर बोला—

"शाहिद को हाशिम रजा का पता कैसे लगा?"

रीमा राठौर ने घूर कर उसे देखा—जैसे बहुत ही अहमकाना सवाल पूछा हो उसने।

उसके घूरने से सिकंदर ठाकरे हड़बड़ाया।

"मैंने कोई गलत सवाल किया?" वह बोला।

"क्या तुमने सही सवाल किया?"

सिकंदर ठाकरे पुनः हड़बड़ाया।

"म....मैंने तो यह सवाल इसलिये किया है कि कहीं शाहिद हमें फंसाने के लिये कोई खेल तो नहीं खेल रहा।"

रीमा राठौर ने पहलू बदलते हुए गहरी सांस छोड़ी।

"अगर उसने हमें फंसाना ही होता तो वह हमें फोन करके आगाह नहीं करता कि मिलिट्री हमें पकड़ने आ रही है।"

"वो बात तो ठीक है—मगर उसे हाशिम रजा का पता तभी बताना चाहिये था।"

"हो सकता है उसे रात को उसका पता चला हो।"

"लेकिन...।"

"वह पाकिस्तानी खुफिया विभाग का आदमी है ठाकरे—और जरूरी नहीं कि खुफिया विभाग के आदमी को हर जानकारी हो।

https://t.me/Hindiupanyas

उसे जानकारी इकट्ठी करनी पड़ती है। मुझे तो लगता है कि अकरम इसी शाहिद से ही जानकारियां लेता था।"

सिकंदर ठाकरे कुछ नहीं बोला।

"खैर...तुम बाजार से सामान खरीद लाओ।" रीमा राठौर बोली।

सिकंदर ठाकरे खड़ा हो गया।

□□□

"खट-खट-खट-खट...।"

दरवाजे पर दस्तक पड़ी तो बैड पर लेटे बलराज गोगिया ने अपने पहलू में लेटी सायरा की तरफ देखा।

दोनों के बदन पर कपड़े का एक रेशा भी नहीं था।

सायरा के चेहरे पर ऐसे भाव थे—जैसे उसने बहुत बड़ा किला फतह किया हो। ताजे गुलाब की तरह खिली हुई थी वह।

रात को करीम बख्श के पास से होकर दोनों वापिस चांद होटल पहुंचे—खाना खाया।

खाना खाने के फौरन बाद सायरा ने अपनी शर्त सामने रख दी।

"अपना वायदा याद है न तुम्हें?" वह बोली—"तुमने आज की रात मेरे नाम की हुई है।"

"मुझे याद है।"

गहरी सांस छोड़ी बलराज गोगिया ने।

"तो फिर दीदार कराऊं अपने हुस्न के?"

बलराज गोगिया ने कहा कुछ नहीं—बस हल्के से मुस्कुरा पड़ा।

तुरंत सायरा दरवाजे की तरफ बढ़ी। दरवाजा बंद करके उसने सिटकनी चढ़ाई और बैड पर आकर उसने अपनी कमीज उतार दी।

नीचे उसने काले रंग की ब्रा पहन रखी थी—जिसमें फंसी उसकी दूधिया छातियां ऐसे नजर आ रही थीं जैसे कि चांद जबरदस्ती वहां फंसाये गये हों।

सायरा ने अपने हाथ पीछे किये और ब्रा के हुक खोल दिये।

अगले ही पल उसकी ब्रा भी एक तरफ पड़ी थी और उसकी शानदार छातियां ललकारने वाले अन्दाज में बलराज गोगिया

https://t.me/Hindiupanyas

की तरफ खड़ी नजर आ रही थीं।

सायरा ने अपने हाथों में अपनी गोलाइयों को लिया और बड़े ही कामुक अंदाज में बोली—

"कैसी लग रही हूं मैं।"

बलराज गोगिया बोला कुछ नहीं—बस हाथ आगे बढ़ाया और उसकी छातियों पर फेरने लगा।

सायरा की आंखों में सुर्ख डोरे नाच उठे—उसकी सांसों में एकदम से तेजी आ गई।

अगले ही पल उसके हाथ तेजी से चलने लगे।

देखते ही देखते उसने बलराज गोगिया तथा स्वयं को पूरी तरह से निर्वस्त्र कर डाला।

वह वाकई शानदार—हाय-हाय कर देने वाले बदन की मलिका थी—मगर उसमें सब्र नहीं था।

अभी तो शुरूआत ही हुई थी कि वह इस कदर उतावली हो गई थी मानो अगर उसकी इच्छा जल्दी पूरी नहीं हुई तो वह पागल हो जाएगी।

वह तुरंत बैड पर पीठ के बल लेट गई और बलराज गोगिया को अपने ऊपर करते हुए गर्म सांसें छोड़ते हुए बोली—

"जल्दी करो—मुझसे बर्दाश्त नहीं हो रहा—मुझमें समा जाओ बलराज गोगिया—जालिम जल्दी करो।"

बलराज गोगिया को उसकी इच्छा पूरी करनी पड़ी।

रात साढ़े तीन बजे तक सायरा ने बलराज गोगिया को आंख तक नहीं झपकने दी और न ही खुद सोई।

बलराज गोगिया ने भी उसे हर दफा खुश किया। उसकी उमंगों को पूरा किया—उसे तृप्ति दी।

उसके बाद सायरा थककर ऐसे सोई कि अब दस्तक की आवाज सुनकर जागी।

बलराज गोगिया बस दो मिनट पहले ही जागा था।

उसने सायरा के बदन पर निगाह मारी और बैड से उतर कर कपड़े पहनने लगा।

सायरा भी उठी और अपने कपड़े उठाकर बाथरूम की तरफ बढ़ गई।

"खट-खट-खट।"

दरवाजे पर पुनः दस्तक हुई।

"कौन?"

https://t.me/Hindiupanyas

पैंट के हुक बंद करते हुए बोला बलराज गोगिया।

"मैं हूं हुजूर।" बाहर से आवाज आई।

करीम बख्श की आवाज को फौरन पहचान लिया बलराज गोगिया ने।

उसने शर्ट पहनी और बटन बंद करते हुए दरवाजे की तरफ बढ़ा।

सिटकनी गिरा कर उसने दरवाजा खोला तो करीम बख्श अंदर आ गया।

बलराज गोगिया ने दरवाजा बंद किया और सिटकनी चढ़ा दी।

"लगता है...अभी जागे हो।"

बैड की चादर की हालत देखते हुए बोला करीम बख्श।

"हां।" बलराज गोगिया बोला और आगे बढ़कर बैड पर बैठ गया।

करीम बख्श बैड के साथ वाली कुर्सी पर बैठ गया।

"सायरा कहां है?"

"बाथरूम में।" बलराज गोगिया ने बाथरूम की तरफ इशारा किया।

करीम बख्श ने एक नजर बाथरूम के बंद दरवाजे की तरफ देखा—फिर जेब से एक कागज निकाल कर उसकी तरफ बढ़ाया।

"इसमें तीन आदमियों के नाम और पते हैं।" वह बोला—"जो कि आई.एस.आई. के आला अफसर हैं।"

बलराज गोगिया ने कागज लेकर उसे खोला और उस पर लिखे नाम व पते पढ़ने लगा।

सबसे पहला नाम पढ़कर वह भीतर ही भीतर बुरी तरह से चौंक पड़ा।

"ए. हसन...।" वह मन ही मन बड़बड़ाया।

उसके नीचे उसका पता लिखा था। पता वही था जो कि वह देख कर आया था।

दूसरा नाम मौलाबख्श का था—और तीसरा रजा मुराद का।

"यह ए. हसन कौन है?" उसने पूछा।

"ब्रिगेडियर है—मगर हकीकत में यह आई.एस.आई. का बहुत बड़ा अफसर है।"

बलराज गोगिया ने समझने वाले अन्दाज में सिर हिलाया।

https://t.me/Hindiupanyas

उसके बाद करीम बख्श ने उसे बाकी के दोनों नामों के बारे में बताया।

तभी सायरा बाथरूम से बाहर निकली।

"क्या बातें हो रही हैं?" वह करीब आकर बैड पर बैठते हुए बोली।

प्रत्युतर में करीम बख्श ने बताया।

"देखूं तो—क्या नाम बताये हैं जनाब ने।"

कहते हुए सायरा ने बलराज गोगिया के हाथ से कागज लिया तो बलराज गोगिया की निगाहें उसके चेहरे पर टिक गईं।

बड़े सामान्य भाव से सायरा ने कागज पर लिखे नाम और पते पढ़े और कागज वापिस बलराज गोगिया की तरफ वापिस बढ़ा दिया।

"तुम इनमें से किसी को जानती हो?" कागज लेते हुए पूछा बलराज गोगिया ने।

हंस पड़ी सायरा।

"मैं हिन्दुस्तानी हूं जनाब—भला मुझे क्या पता कि कौन क्या है और कहां रहता है।"

बलराज गोगिया ने समझने वाले भाव से सिर हिलाया और करीम बख्श की तरफ देखा।

"मेरा ख्याल है कि आज रात मौलाबख्श पर हाथ डाला जाए।"

"जैसी तुम्हारी मर्जी।" कंधे उचकाते हुए बोला करीम बख्श।

"कोई ऐसी जगह है तुम्हारे पास, जहां कैदी से पूछताछ की जा सके।"

"है।"

"मैं वह जगह देखना चाहता हूं।"

"तुम मौलाबख्श को लाओ तो सही।"

"ऐसे नहीं—मैं पहले जगह की तसल्ली करूंगा—अगर जगह मेरे मुनासिब हुई, तो ही मैं अगला अगला कदम बढ़ाऊंगा।"

"ठीक है।" करीम बख्श ने पुनः कंधे उचकाये—"चलो पहले जगह देख लो।"

"मैं जरा फ्रैश हो लूं।" बलराज गोगिया कागज एक तरफ रखते हुए बोला—"तब तक तुम ब्रेकफास्ट का आर्डर दे दो।" उसने सायरा से कहा और बैड से उतर कर बाथरूम की तरफ बढ़

https://t.me/Hindiupanyas

गया।

आधे घण्टे बाद बलराज गोगिया बाथरूम से बाहर निकला तो ब्रेकफास्ट आ चुका था।

तीनों ने मिलकर ब्रेकफास्ट किया।

"अब चलें?"

हाथ पोंछते हुए बोला करीम बख्श।

बलराज गोगिया ने सिर हिलाया और सायरा की तरफ गर्दन घुमाते हुए खड़ा हो गया।

"आओ चलें।" वह बोला।

सायरा खड़ी हो गई।

तीनों होटल से निकलकर बाहर सड़क किनारे खड़ी होण्डा की तरफ बढ़े जिसमें कि करीम बख्श आया था।

कुछ ही देर में तीनों कार में बैठे वहां से जाते नजर आ रहे थे।

□□□

वह एक निर्जन से नजर आ रहे मकान का बेसमेंट था, जिसमें कि करीम बख्श बलराज गोगिया और सायरा को लेकर आया था।

बेसमेंट क्या था—अच्छा खासा टार्चर रूम बना हुआ था वह—जिसमें कि टार्चर करने की हर चीज रखी हुई थी।

उसके साथ ही एक तरफ एक टेबल रखी थी जिस पर कि फोन रखा था। टेबल के पीछे ऊंची पुश्त वाली एक कुर्सी रखी थी जो कि उस वक्त खाली थी।

"कुर्सी पर कौन बैठता है?" बलराज गोगिया ने पूछा।

"रमजान।" करीम बख्श बोला—"किसी की भी जुबान खुलवाने का उसे ऐसा तजुर्बा है कि बड़े से बड़ा ढीठ भी पन्द्रह-बीस मिनट में टूट जाता है।"

"क्या टार्चर होने वाले की चीखें बाहर नहीं जातीं?"

"उहूं।" करीम बख्श ने सिर दायें-बायें हिलाया—"यह बेसमेंट पूरी तरह से साउंडप्रूफ है।"

"किन-किन को टार्चर करते हो तुम?" बलराज गोगिया ने पूछा।

"उन्हें जिनसे जानकारी हासिल करनी होती है—मगर वो जानकारी देने को तैयार नहीं होता।" करीम बख्श ने जवाब

https://t.me/Hindiupanyas

दिया—"और सारी जानकारी प्राप्त करके उसे खत्म करके लाश को जला दिया जाता है।"

"क्या किसी गद्दार को भी सजा दी गई है?"

"अभी तक तो किसी ने गद्दारी नहीं की।"

"फिर भी मान लो—अगर तुम्हारी सी.आई.ए. का कोई एजेंट गद्दार हो तो?"

कहते हुए उसने कनखियों से सायरा की तरफ देखा। उसके चेहरे पर हल्की सी बेचैनी उभर आई थी।

"तो उसका फैसला चीफ करता है।"

"चीफ कौन?"

"इतनी दूर पहुंचने की जरूरत नहीं तुम्हें—तुमने टार्चर रूम देखना था—देख लिया—अब तुम यह बोलो कि मौलाबख्श को कैसे लाओगे तुम।"

करीम बख्श बोला।

"उसे नहीं लाऊंगा मैं—मैंने अपना इरादा बदल दिया है।"

मुस्कुराया बलराज गोगिया।

"क्या मतलब?" चौंका करीम बख्श।

"अब मैं ए. हसन पर हाथ डालूंगा।"

"उस पर कैसे डालोगे हाथ?"

"मुझे कुछ भी करने की जरूरत नहीं पड़ेगी—वह खुद यहां आयेगा।"

करीम बख्श ने उसे घूरा।

"कोई जादू का डण्डा है तुम्हारे पास—जो उसके घुमाते ही ए. हसन यहां आ जायेगा?"

"मेरे पास जादू का डण्डा तो नहीं—हां फोन जरूर है।"

कहते हुए बलराज गोगिया ने मेज पर रखे फोन की तरफ इशारा किया।

"यानि तुम उसे फोन करोगे—और यह कहोगे कि तुम यहां उसका इंतजार कर रहे हो—और वह सिर पर पैर रख कर यहां दौड़ा चला आयेगा।"

"फोन मैं नहीं करूंगा।"

"तो क्या मैं करूंगा?"

बलराज गोगिया के होंठों पर नाच रही मुस्कान और भी तेज हो गई।

"फोन सायरा करेगी।" उसने सायरा की तरफ इशारा

https://t.me/Hindiupanyas

किया।

बुरी तरह से उछल पड़ी सायरा—साथ ही उसके चेहरे की रंगत उड़ गई।

"म...मैं।"

"हां तुम!"

"ल...लेकिन मैं...।"

"तुम पागल तो नहीं हो गए बलराज गोगिया।" एकदम से भड़क उठा करीम बख्श—"भला सायरा के फोन करने से वह यहां कैसे आ जाएगा?"

"यह सायरा जानती है कि वह कैसे आयेगा।"

"य...यह क्या बकवास कर रहे हो तुम—भला मैं क्या जानती हूं—जो वह मेरे कहने पर यहां आयेगा—मैं तो उसकी शक्ल से भी वाकिफ नहीं।"

बलराज गोगिया के होंठों पर फैली मुस्कान में विष भर आया।

"तुम हसन की शक्ल क्या खुद हसन से अच्छी तरह से वाकिफ हो सायरा।"

बुरी तरह से हड़बड़ा उठी सायरा।

"य....यह क्या बकवास लगा रखी है तुमने।" वह बोली।

"चीखने से कोई फायदा नहीं मोहतरमा—मैं हकीकत बता रहा हूं।"

"यह क्या कह रहे हो तुम बलराज गोगिया?" करीम बख्श बोल पड़ा—"भला, सायरा कैसे जानती है उसे?"

"यह सवाल तुम सायरा से करो।"

करीम बख्श ने सायरा की तरफ देखा।

"बलराज गोगिया क्या कह रहा है सायरा?"

"मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा।" हड़बड़ाते हुए बोली सायरा—"मुझे तो लगता है कि यह हमें किसी जाल में फांस रहा है।"

"जाल में मैं नहीं फांस रहा—बल्कि तुमने फांस रखा है इन्हें—डबल क्रास कर रही हो तुम इन्हें।"

"क्या मतलब?" करीम बख्श चौंका।

"पूछो इससे कि कल यह हसन की कोठी पर क्या करने गई थी?"

बलराज गोगिया के मुंह से निकले शब्द किसी परमाणु बम

https://t.me/hindiupanyas

से कम नहीं थे करीम बख्श के लिये। बड़ा जबरदस्त झटका लगा था उसे।

उसने झटके से सायरा की तरफ देखा।

सायरा की रंगत पीली पड़ी हुई थी—चेहरा फक्क पड़ा हुआ था।

"क्या बकवास कर रहे हो तुम?" वह चीखी।

"बनो मत बन्नो!" बलराज गोगिया मुस्कुराया—"यही बात मैं होटल में भी कर सकता था मैं तुम से—लेकिन वहां तुम शोर मचा कर या किसी और ढंग से खुद को बचा सकती थीं—इसलिये मैंने करीम बख्श से ऐसी जगह के बारे में पूछा था—ताकि तुम्हें यहां लाकर तुमसे पूछा जाए।

"लेकिन...!"

"कल जब तुम रिवाल्वर लेने निकली थीं तो मैं तुम्हारे पीछे था। तुम सीधा हसन की कोठी पर गई थीं।"

सायरा की आंखों में खौफ के बादल उमड़ आये।

"य...यह...झूठ...!"

बाकी के शब्द कराह में तब्दील हो गए उसके। करीम बख्श का झन्नाटेदार थप्पड़ उसके गाल पर पड़ा था।

"हरामजादी...!" वह उसके बालों को पकड़ते हुए गुर्राया—"हमसे गद्दारी—आई.एस.आई. की एजेंट है तू?"

"यह झूठ है।" कराहते हुए चीखी सायरा—"मैं आई.एस.आई. की एजेंट नहीं हूं।"

"तो क्या बलराज गोगिया झूठ बोल रहा है?" फुंफकारते हुए करीम बख्श ने उसके बाल खींचे।

"हां...हां।" कराहते हुए बोली सायरा—"यह झूठ बोल रहा है। पूछो इससे—अगर मैं आई.एस.आई. की एजेंट होती तो क्या यह अब तक जिंदा होता—आई.एस.आई. को मैं सबसे पहली खबर इसके आने की देती और उसी वक्त इसका काम तमाम हो गया होता। इसका जिन्दा रहना ही यह साबित करता है कि मैं सिर्फ सी.आई.ए. के लिये ही हूं।"

करीम बख्श को उसकी बात ठीक लगी। उसने बलराज गोगिया की तरफ देखा।

"क्या कह रही है यह?"

"यह तो अब यह ही बतायेगी कि मैं अभी तक जिन्दा क्यों हूं।"

https://t.me/Hindiupanyas

"हो सकता है—तुम्हें गलतफहमी हुई हो।"

बलराज गोगिया मुस्कुराया—"अगर मुझे ऐसे ही गलत फहमी होती तो इस वक्त यहां कोई और बलराज गोगिया होता—राबर्ट बुश मुझे इस मिशन के लिये नहीं चुनता।"

"तो फिर तुम अभी तक जिन्दा क्यों हो?"

बलराज गोगिया ने गहरी सांस छोड़ी।

"मुझे लगता है इतना सारा टार्चर करने का सामान तुम लोगों ने सिर्फ दिखाने के लिये रखा है। अरे इस सामान को यूज करो और पूछो इससे कि मुझे मारा क्यों नहीं गया।"

बात सही लगी करीम बख्श को। उसने आवाज लगाई—

"रमजान।"

तुरंत बांई तरफ एक दरवाजा प्रकट हुआ और एक दैत्याकार काला-कलूटा व्यक्ति बाहर निकला।

उस शख्स को देखते ही सायरा की घिग्गी बंध गई।

"सम्भालो इसे।" करीम बख्श ने सायरा को रमजान की तरफ धकेला।

सायरा लड़खड़ाती हुई रमजान के सीने से जा टकराई और रमजान ने फौरन उसे अपनी मजबूत बांहों में भर लिया।

"इसकी जुबान खुलवानी है।" करीम बख्श बोला—"और यह काम पन्द्रह मिनट में पूरा करना होगा तुम्हें।" रमजान ने गर्दन झुकाकर सायरा के चेहरे पर निगाह मारी।

"सिर्फ पन्द्रह मिनट मिले हैं मुझे...।" वह मुस्कुराया—"अगर जनाब मुझे एक घण्टा दे देते तो मेरा भी काम हो जाता और तुम्हारी भी जुबान खुल जाती।"

सायरा ने जोरों से थूक सटकी।

"अब मुझे अपने जज्बात दबाने होंगे—और सिर्फ तुम्हारी जुबान खुलवानी होगी।"

कहकर रमजान ने सायरा को अपनी बांहों में उठाया और दीवार की तरफ बढ़ा।

"न...नहीं करीम बख्श।" चीखी सायरा—"इसे रोको—मैं सचमुच बेगुनाह हूं। मेरा हसन से कोई वास्ता नहीं है।"

लेकिन करीम बख्श ने उसकी चीख पर कान नहीं धरे।

रमजान ने सायरा की पीठ दीवार से लगाई और उसकी बांई बांह लम्बी करके सायरा के सिर के थोड़ा ऊपर एक बटन दबाया।

https://t.me/Hindiupanyas

'खट' से दीवार में से दो हुक निकले और सायरा की कलाई उन हुकों में फंस गई।

इसी प्रकार रमजान ने उसकी दांई बांह भी फंसाई—फिर उसकी टांगों को चौड़ा करके उसने पैरों के करीब ही लगे बटन दबा दिये।

उसके दोनों पैर भी लोहे के मजबूत हुकों में जकड़े गए।

अब सायरा टांगें तथा बांहें फैलाये दीवार से चिपकी नजर आ रही थी।

"पांच मिनट बीत चुके हैं।" रमजान उसकी आंखों में झांकते हुए गुर्राया—"अब बाकी सिर्फ दस मिनट बचे हैं। देखते हैं तू कितनी देर बर्दाश्त करती है।"

कहकर उसने सायरा के गिरहबान में हाथ डाला और एक तेज झटका दिया।

चर्रर...की आवाज के साथ सायरा का अग्र भाग निर्वस्त्र हो गया।

नीचे कुछ भी नहीं पहन रखा था उसने—सो उसकी शानदार गुलाबी छातियां लश्कारे मारती नजर आने लगीं।

इसी तरह रमजान ने झटके मार-मार कर उसकी कमीज को रेशा-रेशा कर डाला।

तत्पश्चात उसने सायरा की शलवार भी फाड़ कर उसके जिस्म से अलग कर दी।

अब सायरा पूरी तरह से निर्वस्त्र उसके सामने खड़ी थी।

बलराज गोगिया और करीम बख्श उसी की तरफ देख रहे थे।

जहां बलराज गोगिया के होंठों पर मुस्कान थी—वहीं करीम बख्श की आंखों में उत्तेजना की गर्मी नजर आ रही थी।

"मेरा यकीन करो करीम बख्श—अल्लाह कसम मैं हसन के बारे में कुछ भी नहीं जानती।"

सायरा गिड़गड़ाते हुए बोली।

मुस्कुराया करीम बख्श—"तुम्हारा यह हसीन जिस्म देखकर दिल तो नहीं करता कि तुम्हें ही मारा जाए—मगर क्या करूं—मैं भी अपने असूलों से बंधा हुआ हूं।"

"मैं बेगुनाह हूं।" सायरा ने आर्तनाद किया।

"उसका पता जल्द लग जाएगा कि तू बेगुनाह है या गुनहगार।"

https://t.me/Hindiupanyas

इधर रमजान ने करीब से एक लम्बा छुरा उठा लिया और सायरा के सामने आ कर छुरा उसकी आंखों के सामने करते हुए बोला—

"इस छुरे का इस्तेमाल मैं तेरह मिनट बाद करूंगा—तेरी दोनों छातियां काटकर उन्हें भून कर खा जाऊंगा। मगर उससे पहले मैं दूसरा तरीका अपनाऊंगा।"

सायरा की आंखों में फैला आतंक कई गुणा ज्यादा हो गया।

"जरा देखूं तो सही तेरे खून का स्वाद कैसा है...।"

कहकर उसने हल्के से छुरा उसकी छातियों पर फेरा।

तेज चीख उबल पड़ी सायरा के होंठों से—उसकी छाती पर चीरा लग गया था, जहां से कि खून बहने लगा था।

रमजान ने मुंह उसकी छाती से बह रहे खून पर लगाया और खून को चाट कर चटखाई लेते हुए बोला—

"स्वाद नमकीन है। मजा आ जाएगा...।"

इस दृश्य को देख बलराज गोगिया के चेहरे पर रमजान के लिए घिन उभर आई—जबकि करीम बख्श हंस पड़ा था।

रमजान ने छुरा एक तरफ रखा और एक डिब्बा उठा लाया।

"जानती है इस डिब्बे में क्या है?"

कुछ नहीं बोली सायरा—बस होंठों पर जुबान फेर कर रह गई। मगर इतना तो वह समझती थी कि डिब्बे में अवश्य ही कोई खतरनाक चीज है।

रमजान ने डिब्बे का ढक्कन हटाकर उसके सामने किया।

"देख इसमें।"

सायरा ने गर्दन झुका कर डिब्बे में देखा तो आतंक से उसकी आंखें फट पड़ीं।

उसका पीला पड़ा चेहरा और भी पीला पड़ गया।

डिब्बे में काले रंग के दो बिच्छू थे।

बेहद खौफनाक नजर आ रहे थे वे।

"इन बिच्छुओं के डंक तुझे महीनों नहीं भूलेंगे। अफ्रीकी बिच्छू हैं यह—जिनके डंक से ऐसा घाव बनता है कि महीनों नासूर रिसता रहता है वहां से।"

सायरा ने जोरों से थूक सटकी।

"अब देखते हैं कि तेरे जिस्म पर कहां-कहां डंक मारते हैं यह...।"

https://t.me/Hindiupanyas

कहकर रमजान ने जैसे ही डिब्बे को उसकी छातियों के ऊपर टेढ़ा किया—

"न...नहीं...।" चीख उठी सायरा—"पीछे करो इसे।"

"पीछे तभी करूंगा जब तू सच बोलने के लिये हां बोलेगी।"

"इसे रोको करीम बख्श।" सायरा ने करीम बख्श की तरफ देखा—"मैं सब कुछ बताने को तैयार हूं।"

"मगर अभी तो दस मिनट भी नहीं हुए।"

रमजान मंदी हंसी हंसा।

"मैं आई.एस.आई. की एजेंट हूं।" चीखी सायरा।

बलराज गोगिया के होंठों पर मुस्कान नाच उठी।

रमजान के टार्चर करने का तरीका उसे बहुत अच्छा लगा था। मानसिक तौर पर उसने सायरा को खत्म कर दिया था।

इधर करीम बख्श के चेहरे पर सायरा के कबूल करने से चमक उभर आई थी।

"पीछे हटो रमजान।" वह बोला।

रमजान ने गहरी सांस छोड़ी और डिब्बे को बंद करके जाकर अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

करीम बख्श आगे बढ़ा और सायरा के सामने आ खड़ा हुआ।

पीछे-पीछे बलराज गोगिया भी खड़ा हो गया।

करीम बख्श ने सायरा की छाती पर हाथ फेरा और बोला—

"तो तू कबूल करती है कि तू आई.एस.आई. की एजेंट है?"

"ह...हां।" सायरा ने जोरों से थूक सटकते हुए कहा।

"हसन से मिलने गई थी तू?"

"ह...हां।"

"क्यों?"

"ब...बलराज गोगिया के बारे में बताने के लिये।"

"क्या बात हुई? बलराज गोगिया को मारा क्यों नहीं गया?"

"फ...फार्मूले की हिफाजत के बंदोबस्त दुरुस्त करने के लिये।"

"क्या मतलब?"

सायरा ने बड़ी मुश्किल से थूक सटकी और बताने लगी।

https://t.me/Hindiupanyas

"ब.....बलराज गोगिया एक बार पहले भी यहां से कामयाब होकर जा चुका है। फ...फार्मूला 'अभिमन्यु' चुराया था इसने। इस बार आई.एस.आई. बलराज गोगिया के जरिये यह जानना चाहती थी कि हिफाजत के बंदोबस्त में कोई कमी तो नहीं। बलराज गोगिया जो भी स्कीम बनाता—मैं जाकर हसन को बता देती और इस तरह फार्मूले की हिफाजत के बंदोबस्त और सख्त हो जाते।"

"ओह।"

"उसके बाद बलराज गोगिया को खत्म कर दिया जाता।"

"तो इसलिये जिन्दा रखा हुआ था मुझे?" बलराज गोगिया बोल पड़ा।

"ह...हां।" होंठों पर जीभ फेरते हुए बोली सायरा।

"फिर तो हसन को मेरा भी पता होगा—वह भारत के राबर्ट बुश के बारे में भी जानता होगा।"

"हां....हां।"

"मेरे उस मकान का भी पता होगा हसन को।" करीम बख्श बोला।

"ह...हां।"

"हसन के अलावा और कौन-कौन जानता है मेरे बारे में?"

"म...मुझे नहीं मालूम।"

करीम बख्श ने आंखें तरेरीं।

"म...मैं सच कहती हूं...म...मैं सिर्फ हसन को जानती हूं—अपनी रिपोर्ट मुझे हसन को ही देनी पड़ती है।"

"क्या हसन को पता है कि फार्मूला कहां है?"

"म....मैं नहीं जानती।"

"वह नहीं भी जानता होगा—तो भी उसे यह मालूम तो होगा ही कि फार्मूले की जानकारी किसे है।"

बलराज गोगिया बोला।

"हां...तुम ठीक कह रहे हो।" करीम बख्श बोला—"उसे यह सब मालूम होगा।"

कह कर उसने सायरा की तरफ गर्दन मोड़ी और उसके पेट पर हाथ फेरा।

"हसन से मिलने का कोड वर्ड तो होगा?"

"हां...है।"

"बोल?"

सायरा ने बताया।

https://t.me/Hindiupanyas

"अगर तू उसे यहां आने को कहे—वो भी अकेले—तो क्या वह आयेगा?"

सायरा ने थूक सटकी—"म...मैंने पहले ऐसी कोशिश कभी नहीं की।"

"तेरे बारे में उसके कैसे ख्यालात हैं?"

बलराज गोगिया अर्थभरी मुस्कान के साथ बोला।

सायरा उसकी तरफ देखने लगी। उसका चेहरा बता रहा था कि वह उसकी बात समझी नहीं थी।

"वह तुम पर कैसी नजर रखता है—क्या कभी उसने तेरे सामने तुझे पाने की कोई आफर रखी है?"

"ह.....हां।"

"तो फिर जो मैं कहूं—वैसा कर।"

सायरा प्रश्न भरी निगाहों से उसे देखने लगी।

बलराज गोगिया उसे समझाने लगा। सब कुछ समझा कर बलराज गोगिया ने कुर्सी पर बैठे रमजान की तरफ देखा।

"फोन इधर ले आओ रमजान।" वह बोला।

रमजान तुरंत कुर्सी से उठा और फोन उठाकर बलराज गोगिया के पास आकर फोन उसे दे दिया।

"क्या कोई प्राइवेट नम्बर है हसन का?"

"ह.....हां।"

"बोल।"

सायरा नम्बर बताने लगी—जो कि मोबाइल फोन का नम्बर था।

□□□

वह कांफ्रेंस हाल था—जिसमें कि काफी लम्बी टेबल लगी हुई थी और उसके इर्द-गिर्द कुर्सियों पर पन्द्रह आदमी बैठे थे।

यह सभी आई.एस.आई. के आला अफसर थे। उन अफसरों में हसन, हाशिम रजा, इब्राहिम खान भी बैठे थे।

टेबल की चौड़ाई में एक सिंहासन नुमा कुर्सी थी जिस पर कि आई.एस.आई. का सुप्रीमो अल मुहम्मद बैठा था।

सभी के सामने पानी की बोतलें रखी थीं तथा एक-एक फाइल सभी के सामने पड़ी हुई थी। मगर सभी की नजरें अल मुहम्मद पर थीं—जो कि वहां मौजूद सभी लोगों को सम्बोधित कर रहा था।

https://t.me/Hindiupanyas

"हाजरीन....। यह बात आप लोगों से छुपी नहीं कि पिछले पचास सालों से हम हिन्दुस्तान को तोड़ने में जुटे हैं—लेकिन हमारी कोशिशों का अभी तक कोई नतीजा नहीं निकला। उल्टे हर बार भारत और ज्यादा मजबूत होकर सामने आया है। भारत को तोड़ने की कोशिश में हम खुद अपना एक हिस्सा गवां बैठे। और अब तो पूरी दुनिया ही जान गई है कि आतंकवाद की पैदावार यहीं से होती है। फिर भी हम अभी तक दुनिया का मुंह बन्द करने में कामयाब रहे हैं। अभी तक किसी भी मुल्क ने सीधे तौर पर यह नहीं माना कि हमारा देश दहशतगर्द है।"

जबकि पाकिस्तान जब से बना है—तभी से हमारा सिर्फ एक ही मकसद रहा है—और वह मकसद है हिन्दुस्तान को कई टुकड़ों में तब्दील करना। बेशक हम अभी तक अपनी कोशिशों में नाकाम रहे हैं। मगर हमें पूरा भरोसा है कि एक न एक दिन हमारा मकसद पूरा होगा।"

"आमीन...।"

वहां मौजूद सभी लोग बोले।

अल मुहम्मद ने अपनी जुबान को पल भर के लिये रोका—फिर आगे कहने लगा—

"पिछले साल भारत ने हमें डराने के लिये एटमी धमाके किये तो हमें भी मजबूर होकर धमाके करने पड़े। इसका नतीजा हमारी उम्मीदों के अनुसार ही हुआ। भारत जो एटमी धमाके करने के बाद हमें डराने लगा था—हमारे एटमी धमाकों से भीगी बिल्ली बन गया।

भारत बेशक एटमी मुल्क बना गया है—मगर हम जानते हैं कि वह हम पर परमाणु बम गिराने का हौसला नहीं करेगा—इसकी वजह यह है कि हिन्दुस्तानियों के दिल में रहम है। वे किसी का खून बहता नहीं देख सकते—जबकि हमारे मुल्क में रहम को कायरता माना जाता है। हममें परमाणु बमे भारत पर गिराने का हौसला है, और यह बात हिन्दुस्तान भी जानता है कि अगर लड़ाई हुई तो हम बिना वक्त गवांये हिन्दुस्तान पर परमाणु बम गिरा देंगे।

इसी चिन्ता की वजह से हिन्दुस्तान के साइंसदानों ने एक ऐसा फार्मूला ईजाद किया जो कि हमारे परमाणु बम को वक्त रहते ही नकारा कर दे।

अगर भारत यह मशीन बना लेता तो हमारे पर ही नहीं—पूरी दुनिया पर उसकी धाक जम जाती—और हमारी हालत ऐसी हो

https://t.me/Hindiupanyas

जाती कि हम हिन्दुस्तान के आगे घुटने टेकने पर मजबूर हो जाते। इसलिये हमने उस फार्मूले को चुराने का फैसला किया और हम इसमें कामयाब हुए।

ऐसे में भला भारत चुप कैसे बैठ सकता था—फौरन उसके जासूस फार्मूले को वापिस हासिल करने के लिये यहां पहुंच गए। जिनमें से दो की जानकारी हमें मिल चुकी है।

वो हैं रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे। वे कल ही हमारे हाथों मारे जाते—मगर पता नहीं किस गद्दार ने वक्त रहते उन्हें आगाह कर दिया और वे वहां से भाग निकले।

सिर्फ हम ही नहीं—अमेरिका भी उस फार्मूले को पाने के लिये मरा जा रहा है। और इस काम के लिये उसने हिन्दुस्तान के सबसे बड़े चोर बलराज गोगिया को लगाया है। आप लोगों को याद होगा कि बलराज गोगिया एक बार पहले भी यहां आ चुका है।

मगर तब हमें उसके बारे में पता नहीं था। और अब वह हमारी बंदूक के निशाने पर है। हम जब चाहें उसे गोली से उड़ा सकते हैं। उसके साथ हमारी ही एक एजेंट है—जो कि हसन साहब के अण्डर काम करती है।"

कहते हुए अल मुहम्मद ने हसन की तरफ देखा।

"उसका नाम सायरा है जनाबेआला।" बोला हसन।

"हां.....और अभी तक हमने बलराज गोगिया को सिर्फ इसीलिये जिन्दा रखा हुआ है कि हम असली खतरे का पता लगा सकें।"

हमारे साइंसदान उस फार्मूले को समझने की कोशिशों में जुट गए हैं। इंशाअल्ला दो-तीन महीनों में हम उस मशीन को बनाने में कामयाब हो जाएंगे—जो कि हिन्दुस्तान बनाने जा रहा था।"

कहकर उसने एक गहरी सांस छोड़ी और अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोला—

"मैंने यह मीटिंग इसलिये बुलाई कि आप लोगों को यह सब बताऊं—बल्कि इसलिये बुलाई है कि आने वाले दिनों में आप लोग ज्यादा होशियार रहें। रीमा राठौर के बारे में हमें जो मालूमात हासिल हुई है—उसके अनुसार वह एक बहुत ही खतरनाक और चालाक लोमड़ी है। उसका हमारे हाथों से बच जाना ही यह जाहिर करता है कि हमारा कोई आदमी उससे मिला हुआ है। वह आदमी रीमा राठौर को आप लोगों में से किसी के बारे में बता सकता

https://t.me/Hindiupanyas

है—इसलिये आप लोग होशियार रहें।"

सभी के सिर एक साथ हिले।

"रीमा राठौर का पता हमें सतीश रावण के जरिये चला। सतीश रावण एक बेहद घटिया और बेरहम शैतान है। और ऐसे शैतानों की हमारे यहां कद्र होती है। बस यह फार्मूले वाला मामला निपट जाए—हम सतीश रावण को और भी बड़ा शैतान बना कर भारत में भेज देंगे।"

और फिर मीटिंग में थोड़ी देर की बहस के बाद मीटिंग बर्खास्त कर दी गई।

हसन भी अन्य सदस्यों के साथ मीटिंग से फारिग होकर अपनी कार की तरफ बढ़ा।

अभी वह कार के करीब पहुंचा ही था कि तभी उसकी जेब में रखा मोबाइल फोन बज उठा।

"टिन-न-न-न।"

हसन ने जेब से मोबाइल फोन निकालकर उसे आन किया और कान से लगाया।

"हैलो।"

"गुलबदन का सलाम कबूल कीजिये हुजूरेआला।" दूसरी तरफ से आवाज आई।

हसन के चेहरे पर एकदम से सतर्कता भरे भाव उभरे।

"कहो सायरा।" वह बोला—"क्या रिपोर्ट है?"

"बन्दी आपका दीदार चाहती है हुजूरेआला।"

"तो मेरी कोठी पर आ जाओ—दीदार हो जाएंगे।"

"समझने की कोशिश कीजिये हुजूरेआला—जानकारी इतनी खास है कि आपको फोन पर नहीं बता सकती।"

"ओह!"

"आप फौरन नबी चौक से दांई तरफ के चौथे मकान में पहुंचिये—और हां—वहां अपने बारे में किसी को कुछ नहीं बताइयेगा कि आप हसन साहब हैं।"

"क्यों?" चौंका हसन।

"इसका पता आपको यहां आकर चलेगा। बस इतना समझ लीजिये कि आप खुद अपने कानों से स्कीम सुनेंगे।"

बुरी तरह से उछल पड़ा हसन।

"स्कीम?"

https://t.me/Hindiupanyas

"वही जिसके लिये बन्दी यहां आई है।"

"तो क्या बलराज मोगिया ने स्कीम बना ली है?"

"जी हां—और एक घण्टे बाद वह हमें स्कीम बता देगा—मैं चाहती हूं कि आप भी उस वक्त यहां मौजूद हों। मैंने करीम बख्श और बलराज मोगिया को बताया है कि मेरा एक खास आदमी मुहम्मद जलील यहां रहता है—वह उसके बहुत काम आ सकता है।"

"यानि मैं मुहम्मद जलील बन कर आऊं?"

"जी हां—और आप अपनी ड्रैस में नहीं आइयेगा। सिम्पल सिविल ड्रैस में आइएगा। और कार में नहीं रिक्शा में आइएगा।"

"मगर उसे फार्मूले का पता कैसे.....?"

"प्लीज हुजूरेआला—फोन पर ऐसी बात मत कीजिये—मैं एक दुकान से फोन कर रही हूं।"

"ओह।"

"आप यहां आयेंगे तो आपको खुद ही सब कुछ मालूम हो जाएगा।"

"ठीक है।" हसन बोला—"मैं आ रहा हूं।"

दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

हसन ने मोबाइल फोन आफ करके जेब में डाला और अपनी कार के पीछे खड़ी कार के करीब खड़े अपने बाडीगार्डों को अपने पास आने का इशारा किया।

तुरंत दो बाडीगार्ड उसके सामने आ खड़े हुए।

"मैं किसी जरूरी काम से कहीं जा रहा हूं।" वह बोला—"और इस काम पर मेरा अकेला जाना निहायत जरूरी है—तुम मेरी कोठी पर पहुंचो—मैं बाद में पहुंच जाऊंगा।"

हुक्मउदूली कर नहीं सकते थे बाडीगार्ड—सो वे वापिस मुड़े और कार की तरफ बढ़ गए।

हसन कार में बैठा और ड्राइवर से बोला—"चलो।"

ड्राइवर ने कार आगे बढ़ा दी।

आई.एस.आई. के सुप्रीमो की नजरों में ढेर सारी इज्जत पाने का बहुत ही शानदार मौका मिल रहा था उसे—वह स्कीम जानकर अल मुहम्मद को सुरक्षा प्रबंधों की खामियों के बारे में बतायेगा वो निश्चय ही अल मुहम्मद की तरफ से उसे इज्जत बख्शी जाएगी।

इसके साथ-साथ वह यह सोचकर भी हैरान हो रहा था कि

https://t.me/Hindiupanyas

बलराज गोगिया को इतनी जल्दी फार्मूले का पता कैसे लग गया।

किसने बताया उसे फार्मूले के बारे में?

कोई नाम उसके जेहन में नहीं आया—जिसके बारे में वह यह सोच सके कि बलराज गोगिया ने फार्मूले की जानकारी उससे हासिल की है।

"वहीं पहुंचकर ही पता चलेगा कि कैसे पता चला उसे...।" मन में बड़बड़ाया और सामने देखने लगा।

नबी चौक से काफी पहले उसने ड्राइवर को कार रोकने को कहा।

ड्राइवर ने कार सड़क किनारे रोकी तो वह दरवाजा खोलकर बाहर आ गया।

सिविल ड्रैस में तो वह पहले से ही था।

"तुम जाओ।" वह ड्राइवर से बोला—"मैं खुद ही कोठी पहुंच जाऊंगा।"

ड्राइवर ने कार आगे बढ़ा दी।

फुटपाथ पर खड़े-खड़े ही हसन ने रिक्शा की तलाश में इधर-उधर निगाहें दौड़ाईं।

शीघ्र ही उसे एक खाली रिक्शा मिल गई।

वह रिक्शा पर सवार हुआ और नबी चौक की तरफ बढ़ने लगा।

नबी चौक पहुंच कर उसने रिक्शा पोलर को दांई तरफ मोड़ने को कहा।

कुछ ही देर में वह दांई तरफ के चौथे मकान के सामने रिक्शा से उतर रहा था।

रिक्शा से उतर कर वह मकान के बंद दरवाजे के सामने आया और दरवाजा खटखटा दिया।

कुछ क्षणों बाद दरवाजा खुला।

सामने करीम बख्श खड़ा था।

करीम बख्श ने प्रश्नभरी निगाहों से हसन की तरफ देखा।

"मुझे सायरा ने बुलाया है।" हसन बोला। करीम बख्श को वह पहचान चुका था।

"तुम्हारा नाम?", करीम बख्श ने पूछा।

"मुहम्मद जलील।"

"आ जाओ।" कहते हुए करीम बख्श एक तरफ हो गया।

हसन भीतर प्रविष्ट हुआ तो करीम बख्श ने दरवाजा बंद

https://t.me/Hindiupanyas

करके भीतर से कुण्डा लगा दिया।

"आओ।" वह हसन के आगे होते हुए बोला।

हसन उसके पीछे-पीछे चलने लगा।

एक कमरे में आकर करीम बख्श बेसमेंट की सीढ़ियां उतरने लगा।

हसन उसके पीछे-पीछे था।

यह तो उसके ख्वाबोख्याल में भी नहीं था कि वह बलराज गोगिया के बिछाये जाल में फंस चुका है। बल्कि वह तो स्वयं को शाबासी दे रहा था कि करीम बख्श को उस पर जरा भी शक नहीं हुआ।

जैसे ही वह आखिरी सीढ़ी उतर कर दो कदम आगे बढ़ा—उसकी पीठ से लोहे की ठण्डी नाल आ लगी।

बुरी तरह से उछल पड़ा हसन—साथ ही उसका कलेजा जोरों से धड़क उठा।

"हाथ ऊपर।"

तभी उसके कानों में गुर्राहट पड़ी।

हसन के हाथ अपने आप ही उसके सिर पर पहुंच गए।

"क...कौन हो तुम?" वह बोला।

"इधर देख हसन—सब समझ में आ जाएगा।" तभी उसके बांई तरफ से आवाज उभरी।

हसन ने जैसे ही बांई तरफ देखा—बुरी तरह से चौंक उठा वह—साथ ही वह समझ गया कि वह फंस चुका है।

सामने दीवार के साथ बांहें तथा टांगें फैलाये सायरा लटकी खड़ी थी।

सिर से पैर तक बेलिबास।

करीब ही उसके फटे हुए कपड़े बिखरे हुए थे।

सायरा के करीब बलराज गोगिया खड़ा था—होंठों पर रहस्यमयी मुस्कान लिये।

हसन के पीछे खड़े रमजान ने बांयें हाथ से उसकी तलाशी ली और फिर उसकी पीठ पर हाथ रखकर उसे आगे धकेल दिया।

लड़खड़ाता हुआ हसन बलराज गोगिया के सामने आकर सम्भला।

"हैरान हो रहे होगे हसन—कि मुझे तुम्हारे और सायरा के रिश्ते के बारे में कैसे पता चला?"

हसन कुछ नहीं बोला—बस उसकी तरफ देखता रहा।

https://t.me/Hindiupanyas

"वैसे तुम्हें बुलाने का तरीका कैसा रहा?"

हसन ने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"मैं जानता हूं कि तुम बहुत ही आला दिमाग रखते हो। इसलिये मुझे तुम्हारी इस चाल पर कोई ताज्जुब नहीं हुआ। ताज्जुब तो मुझे यह सोचकर हो रहा कि तुम्हें मेरे और सायरा के रिश्ते के बारे में कैसे पता चला?"

बलराज गोगिया के होंठों पर फैली मुस्कान तेज हो गई।

"इत्तफाक से।" वह बोला—"सायरा के पीछे मैं यह सोच कर लगा था कि सी.आई.ए. के अड्डे को जान सकूं—मगर पता लगा मुझे आई.एस.आई. के करिंदे का—सायरा तुम्हारे पास चली गई...।"

"ओह!" हसन के मुंह से निकला।

"बैठो।" कुर्सी की तरफ इशारा किया बलराज गोगिया ने। "तुम आई.एस.आई. के आला अफ़सर हो—और अफसरों के साथ इज्जत से पेश आया जाता है।"

मुस्कुरा पड़ा हसन। अब तक वह खुद को पूरी तरह से सम्भाल चुका था।

"मैं जानता हूं कि तुम मुझे किस तरह की इज्जत बख़्शोगे।" वह बोला—"यहां पड़ा सामान और सायरा की हालत बता रही है कि मेरे साथ क्या होगा। मगर मुझसे तुम्हें कुछ भी हासिल नहीं होगा—मैं जानता हूं कि तुम फार्मूले के बारे में जानना चाहते हो। और तुम्हारी जानकारी के लिये बता दूं—मुझे यह भी मालूम नहीं कि फार्मूला है कहां।"

"अच्छा।"

"उसके बारे में सिर्फ तीन ही आदमी जानते हैं—जिनमें से एक हमारे चीफ हैं।"

"और बाकी दो?"

"मैं उन्हें नहीं जानता।"

"ओह!"

"मुझे टार्चर करना तुम्हारे लिये बेकार साबित होगा बलराज गोगिया—क्योंकि जो बात मैं जानता ही नहीं—उसे कैसे बता सकता हूं।"

बलराज गोगिया ने करीम बख्श की तरफ देखा। उसका चेहरा मुरझाया हुआ था।

हसन की बातों ने उसे मायूस कर दिया था।

https://t.me/Hindiupanyas

बलराज गोगिया मुस्कुराया और पुनः हसन के चेहरे पर निगाहें गड़ाते हुए बोला—

"मैं जानता हूं कि तुम सच कह रहे हो। मगर अब चूंकि तुम यहां आ ही गए हो—तो क्यों न तुम्हारी थोड़ी बहुत खातिर कर दी जाए।"

"लेकिन...।"

"कई बार खातिरदारी करने से भूली बातें भी याद हो जाती हैं।"

"क्या मतलब?"

"हो सकता है तुम्हें फार्मूले के बारे में मालूम हो और तुम उसे भूल गए हो—खातिरदारी होगी तो याद आ जाएगा।"

"जब मुझे कुछ मालूम ही नहीं तो याद क्या आयेगा?"

"फिर भी कोशिश करना हमारा फर्ज है—तुम भी याद करने की कोशिश करना।"

कह कर उसने रमजान की तरफ देखा।

"रमजान!" वह बोला—"हसन साहब की खातिरदारी में कोई कमी नहीं आनी चाहिये। उनकी खातिरदारी तब तक होती रहे जब तक कि उन्हें याद न आ जाये।"

सुन कर हसन का कलेजा जोरों से धड़क उठा।

सायरा हालांकि ठीक-ठाक खड़ी थी—उसकी छाती पर सिर्फ घाव का निशान था—फिर भी वह इस कदर आतंकित नजर आ रही थी मानो उसे बुरी तरह से टार्चर किया गया हो। सायरा की हालत ही बता रही थी कि रमजान एक बेहद खतरनाक किस्म का आदमी है।

रमजान उसके करीब आया और उसे खिलौने की तरह उठा कर नीचे झटक दिया।

बुरी तरह से चीख उठा हसन।

जिस ढंग से वह फर्श पर गिरा था—उससे उसे ऐसा लगा जैसे उसकी सारी पसलियां कड़क गई हों।

"चीखने पर कोई रोक नहीं है हसन।" बलराज गोगिया बोला—"तुम दिल खोलकर चीख सकते हो।"

कहकर बलराज गोगिया हंसा और घूम कर कुर्सी पर बैठ गया।

करीम बख्श टेबल पर टांगें लटका कर बैठ गया।

रमजान ने नीचे गिरे पड़े हसन के कपड़े भी तार-तार कर

https://t.me/Hindiupanyas

दिये और उसे भी सायरा की तरह निर्वस्त्र करके उसके बराबर में बिलकुल सायरा वाली हालत में खड़ा कर दिया।

हसन के भी हाथ-पैर सायरा की तरह हुकों में कस गए थे।

रमजान ने उसके पैर पर जबरदस्त घूंसा मारा।

हसन मरखने भैंसे की तरह डकारा—साथ ही उसका चेहरा पीड़ा से बुरी तरह से विकृत हो उठा।

"इसकी खाल तो काफी मोटी है बख्श साहब...।" वह बोला।

"तो पतली कर दे।" मुस्कुराया करीम बख्श।

रमजान एक कोने में रखे सफेद रंग के एक प्लास्टिक के डिब्बे को उठा लाया।

डिब्बा नीचे से आधे से ज्यादा काला नजर आ रहा था—जो यह बता रहा था कि आधा डिब्बा किसी काली चीज से भरा हुआ है।

वह हसन के सामने आया और डिब्बे का ढक्कन खोलकर बिना कुछ कहे डिब्बे को हसन के ऊपर पलट दिया।

मकौड़ों की फौज गिरी हसन पर।

कई मकौड़े नीचे गिर पड़े और कई हसन के शरीर पर चलने लगे।

हसन का चेहरा आतंक से पीला पड़ गया—आंखें आतंक से फट पड़ीं।

और जब मकौड़ों के तेज जबड़ों ने अपना काम करना शुरू किया तो हसन के होंठों से तेज चीखें उबलने लगीं।

"घबराओ नहीं हसन—तुम्हारी खाल पतली की जा रही है।" रमजान हंसा।

लेकिन हसन को उसकी बात भला कहां सुनाई देती! मकौड़ों के काटने से उसकी जो हालत हो रही थी, यह वो ही जानता था।

कुछ मकौड़े सायरा की टांगों पर भी चढ़ने लगे—और अब हसन के साथ-साथ वह भी चीखने लगी थी।

मगर रमजान ने उसकी टांगों पर चढ़े मकौड़ों को उतार दिया।

काफी देर तक हसन चीखता रहा—चीख-चीख कर उसका गला बैठ गया था।

आखिर जब उससे दर्द बर्दाश्त नहीं हुआ तो बेहोशी के गर्त

https://t.me/Hindiupanyas

में डूबता चला गया।

"यह तरकीब तो नाकाम रही...।" रमजान बोला—"दूसरी तरकीब आजमाता हूं।"

कहकर वह वैक्यूम क्लीनर उठा लाया और उसकी तार बिजली के प्लग में लगा कर चालू कर दिया।

कुछ ही देर में सारे मकौड़े वैक्यूम क्लीनर के डस्ट बाक्स में पहुंच गए।

रमजान ने मकौड़ों को वापिस डिब्बे में डाला और उसे वापिस कोने में रख कर दूसरा राउण्ड शुरू करने के लिये हसन को होश में लाने की कोशिश करने लगा।

□□□

पानी का तेज छपाका हसन के चेहरे पर पड़ा तो हसन की आंखें इस तरह खुलीं मानो वे फिर से बंद होने जा रही हों।

पिछले तीन घण्टे से वह रमजान के हाथों टार्चर हो रहा था और इन तीन घण्टों में वह चार बार बेहोश हो चुका था।

हर बार होश में आने पर उससे फार्मूले के बारे में पूछा जाता और हर बार उसका उत्तर 'न' में ही होता।

"बोल.....फार्मूला कहां है?"

रमजान उसके गालों को अपनी उंगली तथा अंगूठे से दबाते हुए गुर्राया।

"म....मैं नहीं जानता।"

बेहोशी मे डूबा बोला वह—और उसी के साथ उसकी गर्दन लटक गई।

रमजान ने गहरी सांस छोड़ी और बलराज गोगिया की तरफ देखा।

"यह फार्मूले के बारे में सचमुच कुछ नहीं जानता। इतना टार्चर होने के बाद तो पत्थर भी बोलने लगता है—मगर यह तो एक ही रट लगाये हुए है कि कुछ नहीं जानता।"

"ब्रिगेडियर है यह—कोई मामूली शख्स नहीं।" बलराज गोगिया बोला—"कोशिश करो।"

"जब यह कुछ जानता ही नहीं तो बतायेगा कहां से। और कोशिश बेकार होगी बलराज गोगिया। आदमियों तो क्या जानवरों तक को बोलने को मजबूर करने का मुझे अच्छा खासा तजुर्बा है। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि यह फार्मूले के बारे में कुछ नहीं

https://t.me/Hindiupanyas

जानता।"

"तो गोली मार दो इसे।" करीम बख्श बोल पड़ा—"अब यह हमारे लिये बेकार है।"

"नहीं रमजान—गोली मत चलाना।"

बलराज गोगिया एकदम से गुर्राया।

"लेकिन जब यह कुछ जानता ही नहीं तो...।"

"एक कोशिश मैं भी करके देखना चाहता हूं।"

मुस्कान तैर गयी करीम बख्श के होंठों पर।

"पिछले तीन घण्टे से रमजान जूझ रहा है हसन से और कुछ भी नहीं उगलवा पाया—अब तुम कोशिश करोगे?"

बलराज गोगिया मुस्कुरा पड़ा।

"मैं मानता हूं कि रमजान ऐसे कामों में माहिर है—फिर भी कोशिश करने में क्या हर्ज है।"

"जब यह कुछ जानता ही नहीं तो क्या फायदा कोशिश करने में।"

"यूं भी इसे खत्म करना है तुमने—थोड़ी देर बाद कर लेना।"

करीम बख्श ने कंधे उचका दिये।

बलराज गोगिया कुर्सी से खड़ा हुआ—आगे बढ़ कर हसन के करीब रखे पानी की आधी भरी बाल्टी उठाकर हसन के सिर पर उड़ेल दी।

हड़बड़ाकर हसन ने आंखें खोलीं और बलराज गोगिया को सामने देख मुस्कुरा पड़ा।

"मैं सचमुच कुछ नहीं जानता बलराज गोगिया—अगर जानता होता तो अब तक बोल चुका होता।"

बलराज गोगिया ने कहा कुछ नहीं—बस मुस्कुरा पड़ा।

"तुम मुझे गोली मार दो—दर्द अब बर्दाश्त नहीं हो पा रहा।"

"ठीक है—तुम्हारी यह इच्छा भी पूरी हो जाएगी।" बलराज गोगिया मुस्कुराया—"मगर उससे पहले तुम्हें बताना होगा कि फार्मूला कहां है?"

"मैं.....मैं कह चुका हूं कि मैं कुछ नहीं जानता।"

"अगर मरना चाहते हो तो बोलो—वर्ना तुम्हें मौत नसीब नहीं होगी।"

"मैं नहीं जानता।"

https://t.me/Hindiupanyas

"अपने मुल्क के प्रति तुम्हारी वफादारी काबिलेतारीफ है हसन।" बलराज गोगिया बोला—"रमजान द्वारा इतनी तकलीफें देने के बाद भी तुम जुबान नहीं खोल रहे। यह तुम्हारी देश-भक्ति है। तुम आई.एस.आई. के एक आला अफसर हो। लेकिन तुम यह भूल रहे हो कि अंधे और गूंगे अफसर नहीं बना करते—वो तो फौज में रंगरूट भी नहीं बन पाते। अंधे और गूंगे सिर्फ भीख मांगने के काबिल होते हैं।"

"क्या मतलब?" हड़बड़ाया हसन।

"मतलब यह कि मैंने फैसला किया है कि तुम्हें पहले अंधा बना दूंगा—फिर तुम्हारी जुबान काट दूंगा—उसके बाद तुम्हें इस्लामाबाद की सड़कों पर छोड़ दिया जाएगा।"

"न...नहीं...।"

"इतना ही नहीं—तुम्हारे गले में एक तख्ती लटका दी जाएगी—जिस पर लिखा होगा कि तुम ब्रिगेडियर ए. हसन हो और तुम्हें यह सजा आई.एस.आई. ने इसलिये दी है कि तुमने एक हिन्दुस्तानी को फार्मूले के बारे में बता दिया था।"

"न...नहीं...त...तुम ऐसा नहीं कर सकते।"

"तब मजा आयेगा—लोग तुम्हें लातें मार-मारकर अपने से दूर करेंगे। हिन्दुस्तान के प्रति यहां के लोगों के दिलों में जो जहर तुमने भरा हुआ है—वही जहर तुम्हारे ऊपर उगलेंगे लोग।"

हसन के गले की घण्टी जोरों से उछली।

बलराज गोगिया ने अपने पीछे खड़े रमजान की तरफ गर्दन मोड़ी।

"लाल मिर्च है?"

"मिल जाएगी।"

"लाओ।"

रमजान तुरंत दरवाजे की तरफ बढ़ा।

कुछ ही देर में वह वापिस लौटा तो उसके हाथ में एक पुड़िया थी—जो कि उसने बलराज गोगिया के हाथ में थमा दी।

बलराज गोगिया ने पुड़िया खोल कर उसमें से मिर्च का सिर्फ एक बीज उठाया और हसन के और करीब आकर बोला—

"सिर्फ एक बीज से शुरू करूंगा मैं—देखता हूं यह बीज कब तक तड़पाता है तुम्हें—और यह सिलसिला तक तक चलता रहेगा जब तक कि यह पुड़िया खत्म नहीं हो जाती या फिर तुम अंधे नहीं हो जाते।"

https://t.me/Hindiupanyas

कह कर उसने जबरदस्ती उसकी बांई आंख में वह बीज डाल दिया।

बीज ने आंख में जाते ही रंग दिखाना शुरू किया।

हसन अपना सिर पटकते हुए चीखने लगा। जलन के मारे उसकी हालत बुरी हो रही थी।

उसकी बांई आंख से पानी बह रहा था—जिससे कि थोड़ी देर बाद उसकी जलन को आराम मिलने लगा था।

बलराज गोगिया ने एक और बीज उठाया और हसन की बांई आंख की तरफ किया तो हसन चीख पड़ा।

"ब...बस करो...खुदा के लिये बस करो—यह जलन बर्दाश्त नहीं हो रही मुझसे।"

"अभी तो सिर्फ एक ही बीज डाला है मियां—अभी तो पूरी पुड़िया भरी पड़ी है—अभी से बर्दाश्त खत्म हो रही है?"

बलराज मुस्कुराते हुए बोला।

"नहीं...प्लीज...बीज मत डालना।" गिड़गिड़ाया हसन।

"तो फिर कबूल करो कि तुम फार्मूले के बारे में जानते हो।"

"ह...हां...म...मैं कबूल करता हूं।"

बलराज गोगिया के होंठों पर मुस्कान फैल गई।

उधर करीम बख्श हैरान हो रहा था कि सिर्फ पांच मिनट में ही बलराज गोगिया ने हसन को तोड़ डाला था।

रमजान ऐसा महसूस कर रहा था जैसे बलराज गोगिया ने उसके सारे तजुर्बे को जूता मार दिया हो।

"कहां है फार्मूला?" बलराज गोगिया ने पूछा।

"म...मैं बताऊंगा—मगर उसके लिये तुम्हें मेरी बात माननी होगी।"

"कैसी बात?"

"स...सब कुछ जानने के बाद तुम मुझे गोली मार दोगे—क्योंकि गद्दार का लेबल माथे पर लगाकर मैं जी नहीं पाऊंगा।"

"तुम्हारी इच्छा पूरी होगी—मगर उससे पहले हमें यह यकीन दिलाना होगा तुम्हें कि तुमने सब कुछ सही बताया है।"

"मैं...सही बताऊंगा।"

"कहां है फार्मूला?"

"अ-अल्लापुर में।"

https://t.me/Hindiupanyas

"अल्लापुर?"

"मैं जानता हूं।" करीम बख्श बोला पड़ा—"तुम अल्लापुर छावनी की बात कर रहे हो न—जो पहले रामपुर था।"

"हां...फार्मूला वहीं है।"

"अल्लापुर छावनी में?" बलराज गोगिया ने पूछा।

"हां।"

"छावनी में कहां?"

"छावनी के बीचोबीच बनी लाल कोठी में हमारे साईंसदान उस फार्मूले को समझने की कोशिश कर रहे हैं।"

"लाल कोठी में किस जगह?"

"उसके बेसमेंट में।"

"लाल कोठी की हिफाजत के बंदोबस्त क्या कर रखे हैं।"

"पूरी फौज ही उसकी हिफाजत के लिये तैनात है।"

"पूरी फौज से क्या मतलब है तुम्हारा? क्या पाकिस्तान की पूरी फौज?"

"कैन्ट की फौज।"

"क्या कैन्ट की पूरी फौज उस लाल कोठी के चारों तरफ तैनात है?"

"तुम ऐसा ही समझ सकते हो।" हसन बोला—"कैन्ट में चार हजार फौजी हैं। जिनमें से आधों की ड्यूटी लाल कोठी की हिफाजत के लिये लगी हुई है।"

"उन फौजियों के अलावा और भी बंदोबस्त कर रखे हैं क्या?"

"हां।"

"बोलो।"

हसन बताने लगा।

करीब एक घण्टे तक पूछताछ की बलराज गोगिया ने हसन से—फिर रमजान की तरफ देखते हुए बोला—

"इसे किसी ऐसी जगह कैद कर दो जहां से यह भाग न सके। मैं पहले तसल्ली कर लेना चाहता हूं कि इसने कितना सही कहा है और कितना गलत।"

"मैंने कुछ भी गलत नहीं कहा।" एकदम से बोला हसन।

"फिर भी मैं पहले तसल्ली करूंगा।"

मुस्कुराया बलराज गोगिया।

हसन थूक सटक कर रह गया।

https://t.me/Hindiupanyas

बलराज गोगिया ने सायरा की तरफ रुख किया और उसके सामने आ खड़ा हुआ।

सायरा की रंगत एकदम से पीली पड़ गई—आंखों में आतंक उभर आया।

"दो नावों पर सवार होने वाला हमेशा डूबता है। पता नहीं क्या हाल करेगा तेरा करीम बख्श—मगर जो भी होगा—बहुत ही बुरा होगा।"

"न...नहीं...मुझे माफ कर दो बलराज गोगिया—मैं...।"

"मैं माफी देने वाला कौन होता हूं—मैं तो खुद मजबूर हूं। मेरा यार राबर्ट बुश की कैद में है। अगर मेरा यार कैद में नहीं होता तो यकीन मानों—मैं तुम्हारे जिस्म से कपड़े का एक टुकड़ा भी अलग नहीं होने देता। मेरे यार के कारण ही मैं जानवर बनने को मजबूर हो गया हूं।"

सायरा के गले की घण्टी जोरों से उछली। उसने करीम बख्श की तरफ देखा।

करीम बख्श के होंठों पर पैशानिक मुस्कान नाच उठी।

टेबल से उतर कर वह सायरा के सामने आया और उसकी छातियों पर हाथ फेरता हुए बोला—

"तू सचमुच बहुत ही लाजवाब है। तेरा अंग-अंग लश्कारे मार रहा है। हुस्नो-शबाब से मालामाल तोहफा सामने हो तो उसे छोड़ने वाला बेवकूफ ही होता है। अब पहले मैं तेरे साथ ऐश करूंगा—फिर तुझे रमजान को सौंप दूंगा—उसके बाद चीफ से बात करूंगा कि तेरे साथ क्या सलूक किया जाए।"

कह कर उसने बलराज गोगिया की तरफ देखा।

"लंच का टाइम कब का निकल गया है बलराज गोगिया!" वह बोला—"अब तो डिनर का वक्त होने वाला है।"

"तो?"

"अगर तुम्हें भूख लगी है तो तुम बेशक किसी होटल में जाकर खाना खा सकते हो।"

"और तुम?"

"मैं अभी इसे खाऊंगा—इससे अपनी भूख मिटाऊंगा मैं।"

कहते हुए उसने सायरा की छाती को जोरों से भींचा।

बिलबिला उठी सायरा। पीड़ा से उसकी आंखों में आंसू भर आये।

"ठीक है.....तुम इसे खाओ—मैं किसी होटल में जाकर

https://t.me/Hindiupanyas

खाना खाता हूं।"

करीम बख्श ने सिर हिलाया और रमजान से बोला—

"बलराज गोगिया को बाहर तक छोड़ आओ रमजान।"

"कब मिलोगे तुम?" पूछा बलराज गोगिया ने।

"यहीं आ जाना।"

बलराज गोगिया ने सिर हिलाया और सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया।

पीछे-पीछे रमजान भी चलने लगा।

उनके सीढ़ियों पर चढ़ते ही करीम बख्श ने सायरा की तरफ गर्दन मोड़ी और कदम आगे बढ़ा कर उसके सीने से अपना सीना लगा दिया।

"मेरा ख्याल है कि इस तरीके से तुझे ज्यादा मजा आयेगा।" वह हंसा।

सायरा कुछ नहीं बोली—बस मुंह एक तरफ कर लिया।

करीम बख्श उसके साथ चिपके हुए ही उसके अंगों से खेलने लगा।

जैसे-जैसे उसके हाथ सायरा के बदन पर फिर रहे थे—वैसे-वैसे उसकी सांसों में तेजी आती जा रही थी।

सायरा को अपने पैर पर चुभन महसूस हो रही थी।

कोई और वक्त होता तो इस चुभन से सायरा पागल हो उठती—मगर इस वक्त वह बिल्कुल ठण्डी पड़ी हुई थी।

मौत के खौफ ने उसकी सारी उमंगों को ठण्डा कर डाला था।

तभी रमजान वापिस लौटा।

"इस बूढ़े को दूसरे कमरे में बंद कर दो।" करीम बख्श बोला—"और जब तक न बुलाऊं—तब तक तुम बाहर नहीं निकलना।"

रमजान ने सिर हिलाते हुए सायरा पर एक भरपूर निगाह डाली और हसन के सामने आकर उसकी कनपटी पर एक घूंसा मारा।

हसन कराहा और उसकी गर्दन आगे को लटक गई।

रमजान ने उसके हाथ और पैरों को आजाद किया और उसे कंधे पर लटका कर उस दरवाजे की तरफ बढ़ा जिसमें से कि वह निकला था।

रमजान के दरवाजे के पीछे गायब होते ही करीम बख्श ने

https://t.me/Hindiupanyas

जल्दी-जल्दी अपने कपड़े उतारे और सायरा की तरह बेलिबास हो उससे चिपक गया।

सायरा वैसे ही टांगें तथा बाहें फैलाये खड़ी थी। अपनी जगह से वह हिल भी नहीं सकती थी। अगर कोई और वक्त होता तो वह इस आसन का भरपूर आनन्द उठाती—एक नया तजुर्बा हासिल होता उसे—मगर इस वक्त हालात और थे।

तभी उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई धधकती हुई मीनार उसमें प्रवेश कर गई हो।

उसने अपनी आंखें बंद कर लीं।

करीम बख्श उसकी छातियों को जोरों से भींचे अपने काम में जुट गया।

उसकी सांस धौंकनी की तरह चल रही थी।

अभी वह लक्ष्य से दूर ही था कि तभी—

"खड़-खड़-खड़-खड़।"

दरवाजा भिड़भिड़ाये जाने की आवाज गूंजी वहां।

बुरी तरह से चौंक उठा करीम बख्श।

उसका सारा उत्साह सोडे के झाग की तरह बैठ गया। निगाहें उस स्पीकर की तरफ घूम गईं—जिसमें से कि दरवाजे के भिड़भिड़ाने की आवाजें आ रही थीं।

बेसमेंट साउण्डप्रूफ होने की वजह से मेन डोर के करीब माइक लगा रखा था उन्होंने—ताकि बाहर अगर कोई आये तो उन्हें फौरन उसका पता चल जाए।

तुरंत वह सायरा से अलग हुआ और शलवार उठाकर उसे पहनते हुए रमजान को आवाज लगाई।

"रमजान।"

तुरंत रमजान बाहर निकला।

"ऊपर कौन है देखो।" वह बोला—"और होशियार रहना—अगर खतरा देखो तो फौरन आगाह कर देना।"

रमजान ने सिर हिलाया और सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया।

करीम बख्श अपनी कमीज उठाकर पहनने लगा।

रमजान मेन डोर के करीब पहुंचा और ऊंचे स्वर में आवाज लगाई—

"कौन है?"

"दरवाजा खोलो।"

बाहर से गरजती आवाज आई—साथ ही दरवाजे को जोर

https://t.me/Hindiupanyas

से भिड़भिड़ाया गया।

रमजान के जेहन में खतरे की घण्टी बज उठी।

"खतरा बख्श साहब।"

वह बोला—और जैसे ही दरवाजा खोला—

एक तेज धक्का लगा उसे और वह पीछे जा गिरा।

मिलिट्री के कई जवान भीतर प्रविष्ट हुए और देखते ही देखते रमजान छः जवानों से घिर गया। बाकी के जवान मकान की तलाशी लेने के लिये मकान में फैल गए।

तीन घण्टे तक जब हसन कोठी में वापिस नहीं लौटा तो उसके बाडीगार्डों ने ऊपर रिपोर्ट भेजी।

ऊपर से यह आदेश आया कि फौरन हसन की तलाश शुरू की जाए।

और फिर हसन के ड्राइवर से पूछा गया कि वह हसन को कहां छोड़कर आया था।

इस प्रकार बाडीगार्डों के साथ कई मिलिट्री मैन नबी चौक पहुंच गए और वहां डोर टू डोर तलाशी शुरू की गई।

रमजान समझ गया कि अब जिन्दा रहना नामुमकिन है। हसन तथा सायरा के मिलते ही उससे व्यापक पूछताछ की जायेगी और पूछताछ के दौरान उसे बुरी तरह से टार्चर भी किया जाएगा।

सो टार्चर होने से बचने के लिये उसने खुद की ही इहलीला समाप्त करने का फैसला कर लिया।

अगले ही पल उसने अपनी दाढ़ में लगे साइनाइट के कैप्सूल को चबा डाला। और जब तक जवान कुछ समझते—वह लाश में तब्दील हो चुका था।

□□□

"खतरा बख्श साहब...।"

यह आवाज स्पीकर के जरिये करीम बख्श के कानों में पड़ी तो वह बुरी तरह से उछल पड़ा।

और फिर भारी बूटों की आवाजें स्पीकर में से निकलीं।

पलक झपकते ही वह सब कुछ समझ गया।

उसने तेजी से कुछ सोचा और जेब से रिवाल्वर निकालकर बिना वक्त गंवाये सायरा के सीने में गोली उतार दी।

तत्पश्चात वह तेजी से उस दरवाजे की तरफ लपका जिसमें कि हसन कैद था।

https://t.me/Hindiupanyas

फर्श पर हसन अभी भी बेहोश पड़ा था।

उसने रिवाल्वर की नाल उसके माथे से लगाई और ट्रिगर दबा दिया।

बेहोशी में ही हसन एक-दो बार तड़पा—फिर शांत पड़ गया।

करीम बख्श उसके पास से हटा और वापिस कमरे में आकर उसने फोन उठाया और तेजी से कुछ नम्बर डायल किये।

"हैलो...!" दूसरी तरफ से आवाज आते ही वह बोला—"मैं करीम बख्श बोल रहा हूं—बलराज गोगिया ने फार्मूले का पता लगा लिया है और इस वक्त वह खाना खाने गया है—हमारे टार्चर सैल पर मिलिट्री की रेड पड़ गई है—इसलिये मैं खुद को खत्म करने जा रहा हूं। बलराज गोगिया को अब आप खुद ढूंढ लीजियेगा—खुदा हाफिज।"

कहकर उसने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और रिवाल्वर की नाल अपनी कनपटी से लगा कर ट्रिगर दबा दिया।

"धांय।"

गोली उसका भेजा फाड़ती हुई दूसरी तरफ से निकल गई।

करीम बख्श वहीं मेज पर औंधे मुंह गिर पड़ा।

वह मर चुका था।

ठीक तभी कई मिलिट्री मैन सीढ़ियां उतरते हुए नीचे आये।

मगर तब तक सारा खेल खत्म हो चुका था।

□□□

उस मकान से निकलकर बलराज गोगिया पैदल ही आगे बढ़ा और कुछ दूर स्थित एक होटल में प्रवेश कर गया।

वह जानता था कि करीम बख्श और रमजान को सायरा से फारिग होने में अभी घण्टा भर लग जाएगा—सो इसलिये उसने पूरे इत्मिनान से खाना खाने का निश्चय किया था।

वेटर आया तो उसने अपने लिये खाने का आर्डर दिया।

पंद्रह मिनट बाद खाना उसकी टेबल पर लगा हुआ था।

वह खाना खाने लगा।

पूरे बीस मिनट तक वह खाना खाता रहा।

तत्पश्चात उसने कॉफी का आर्डर दिया।

उस वक्त वह कॉफी पी रहा था—कि तभी एक आदमी

https://t.me/Hindiupanyas

ऐन उसके सामने वाली कुर्सी पर आ बैठा

"बलराज गोगिया।" तभी धीरे से वह व्यक्ति फुसफुसाया।

बलराज गोगिया के हाथ में थमा कप कांप उठा। उस वक्त कप खाली होने जा रहा था—वर्ना अवश्य ही काफी बाहर बिखर जाती।

"करीम बख्श और रमजान मर गए हैं।" वह व्यक्ति आगे बोला—"हसन और सायरा भी मर गई हैं। मैं तुम्हें लेने आया हूं।"

"कौन हो तुम?" पूरी तरह से सतर्क हो उठा था बलराज गोगिया।

करीम बख्श और रमजान की मौत की खबर सुन कर वह हैरान हो गया था।

"सी.आई.ए.।"

"ओह!"

"मरने से पहले करीम बख्श ने फोन पर बता दिया था कि तुम खाना खाने गए हो। सो हम आस-पास के तमाम होटलों में फैल गए—ताकि तुम्हें खतरे से बचाया जा सके।"

"खतरा।"

उस व्यक्ति ने बताया कि किन परिस्थितियों में करीम बख्श और रमजान मरे—फिर बोला—

"तुम खुशकिस्मत थे जो खाना खाने के लिये निकल गए—वर्ना अब तक तुम भी लाश में तब्दील हो गए होते।"

"ओह।"

"आओ।" कहते हुए वह व्यक्ति खड़ा हो गया।

बलराज गोगिया ने कप टेबल पर रखा और खड़ा हो गया।

काउंटर पर पहुंचकर उसने बिल पे किया और होटल से निकल गया।

कुछ ही देर में वह उस व्यक्ति के साथ कार में बैठा नजर आ रहा था। कार का स्टीयरिंग उस व्यक्ति ने सम्भाल रखा था।

"करीम बख्श ने फोन पर बताया था कि हसन ने मरने से पहले फार्मूले के बारे में बता दिया था?"

वह व्यक्ति सड़क पर निगाहें जमाये हुए बोला।

"हां—बता तो दिया था—मगर अभी दावे के साथ नहीं कहा जा सकता कि उसने सब कुछ सच-सच बताया है।"

"फोन पर और क्या-क्या बताया था करीम बख्श ने?" बलराज गोगिया ने पूछा।

https://t.me/Hindiupanyas

उस व्यक्ति ने बताया।

"ओह! खुद को ही गोली मार दी करीम बख्श ने...।"

"हमारे एजेंट किसी के हाथ पड़ने की बजाये मर जाना ज्यादा पसंद करते हैं।"

गर्व से बोला वह व्यक्ति।

बलराज गोगिया के होंठों पर मुस्कान नाच उठी।

"सायरा भी तो तुम्हारी एजेंट थी।"

"हां, थी।" गर्व से बोला वह।

"शायद तुम्हें पता नहीं कि सायरा हकीकत में आई.एस. आई. की एजेंट थी।"

बुरी तरह से चौंक कर उसने बलराज गोगिया की तरफ देखा।

"सामने देखो—वर्ना एक्सीडेंट कर बैठोगे।"

हड़बड़ा कर वह व्यक्ति सामने देखने लगा।

"क्या कहा तुमने?" उसे जैसे विश्वास नहीं हुआ था।

"उसी की मार्फत तो हमने हसन को यहां बुलाया था।" बलराज गोगिया बोला—"वह हसन के कन्टैन्ट में थी।"

"ओह नो!"

"ओह यस।"

वह व्यक्ति चुप हो सामने देखने लगा। निश्चय ही सायरा की हकीकत जानकर उसे जबरदस्त झटका लगा था।

करीब आधे घण्टे बाद कार से उतर कर उस व्यक्ति के साथ कोठी में प्रविष्ट हुआ और ऊपरी मंजिल पर आफिस नुमा एक कमरे में प्रवेश कर गया।

कमरे में लगी शानदार आफिस टेबल के पीछे सिर से एकदम गंजा करीब पचास साल का व्यक्ति बैठा था।

बलराज गोगिया को देखकर वह व्यक्ति खड़ा हुआ और हाथ बलराज गोगिया की तरफ करते हुए बोला—

"चंगेज खान—पाकिस्तान ब्रांच का चीफ।"

बलराज गोगिया ने बड़े निर्विकार ढंग से उससे हाथ मिलाया और बिना उसके कहे एक कुर्सी पर बैठ गया।

चंगेज खान भी अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

"सायरा आई.एस.आई. की एजेंट थी सर।" तभी वह व्यक्ति बोला जो कि बलराज गोगिया को लेकर आया था।

बुरी तरह से चौंका चंगेज खान।

https://t.me/Hindiupanyas

"व्हाट!"

"यस सर।"

चंगेज खान ने बलराज गोगिया की तरफ देखा।

"क्या यह ठीक कह रहा है?"

"हां।" बोला बलराज गोगिया और उसे सायरा का पीछा करने से लेकर हसन को बुलाने तक की सारी बात बता दी।

"अच्छा हुआ जो मर गई—अगर वह जिन्दा रहती तो हम उसे बहुत ही भयानक मौत बख्शते।"

वह फुंफकारा।

"जो भी हो—हम उसी की वजह से फार्मूले के बारे में जान पाये—वर्ना अभी हमें पता नहीं और कितने पापड़ बेलने पड़ते।"

बलराज गोगिया गम्भीरता से बोला।

"क्या बताया हसन ने?"

जवाब में बलराज गोगिया ने सारी बात बताई।

"तो वह फार्मूला अल्लापुर कैन्ट में है।" सिर हिलाते हुए बोला चंगेज खान।

"हां।"

"कुछ सोचा तुमने कि फार्मूला कैसे हासिल किया जा सकता है?"

"अभी तो सिर्फ यही पता लगा है कि फार्मूला कहां है।"

"यानि कुछ नहीं सोचा।"

"पहले लोकेशन तो देख लूं—सारी जानकारी हासिल तो कर लूं—फिर सोचूंगा कि फार्मूला कैसे हासिल हो सकता है।"

चंगेज खान ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया।

"तो कब चलोगे लोकेशन देखने?" उसने पूछा।

"कल।"

"ओ.के.—कल हमारा आदमी तुम्हें अल्लापुर ले जाएगा।"

बलराज गोगिया ने सिर हिलाया।

"और तुम्हें अपना यह मेकअप भी चेंज करना पड़ेगा।" चंगेज खान बोला—"इस हुलिये में तुम कभी भी पहचाने जा सकते हो।"

बलराज गोगिया ने पुनः सिर हिलाया।

"पीने का शौक तो रखते होगे तुम?"

मुस्कुराया चंगेज खान।

बलराज गोगिया मुस्कुरा पड़ा।

https://t.me/Hindiupanyas

चंगेज खान ने टेबल के हत्थे के साथ लगे पुश को दबाया।

कुछ ही देर में एक जवान हसीना हाथों में ट्रे उठाये आफिस में प्रविष्ट हुई।

ट्रे में जानीवाकर ब्लैक लेबल की बोतल के साथ दो गिलास रखे थे।

युवती ने ट्रे टेबल पर रखी और बलराज गोगिया को देखते हुए मुस्कराई। मगर बलराज गोगिया ने उसे कोई भाव नहीं दिया।

युवती ने सामान टेबल पर सजाया और दो पैग तैयार करके आफिस से बाहर निकल गई।

"तुम लोकेशन देख लो।" चंगेज खान अपना पैग उठाते हुए बोला—"मैं भी कोशिश करता हूं कि छावनी के भीतर के किसी आदमी को तोड़ सकूं।"

बलराज गोगिया कुछ नहीं बोला...बस पैग उठाया और होंठों से लगा दिया।

□□□

रीमा राठौर ने आखिरी बार आइने में खुद को निहारा।

इस वक्त वह सिर्फ ब्रा और पैंटी पहने आइने के सामने बैठी थी तथा उसके सामने मेकअप का सामान रखा था।

उसकी गोरी रंगत काली हो चुकी थी तथा चेहरे पर चार पांच भद्दे से नजर आने वाले मुंहासे नजर आ रहे थे।

बस अब उसकी आंखें ही उसे आकर्षक बना रही थीं। अगर वह आंखें बंद कर लेती तो कोई भी आदमी उसे देखकर नाक-भौं सिकोड़ सकता था।

वह अपनी इस बदली हुई सूरत पर आश्वस्त हुई और गर्दन मोड़कर बांई तरफ बैड पर बैठे सिकंदर ठाकरे की तरफ देखा।

पिछले दो घण्टों से सिकंदर ठाकरे उसी को देख रहा था। रीमा राठौर पैंटी और ब्रा में उसके सामने दो घण्टों से बैठी थी—फिर भी क्या मजाल जो उसके दिल में शैतान जागा हो।

"कैसी लग रही हूं मैं?" रीमा राठौर मुस्कुराई।

"सिर्फ दो जगह ऐसी रह गई हैं जहां तुम अभी भी बला की खूबसूरत हो।"

"कौन सी जगह?"

"पैंटी और ब्रा उतारोगी तो खुद ही नजर आ जाएगा।"

https://t.me/Hindiupanyas

हंस पड़ी रीमा राठौर।

"आई.एस.आई. के एजेंट बीच सड़क पर सिर्फ मेरा चेहरा ही देख सकते हैं—मेरे सारे कपड़े उतार कर नहीं देखेंगे वे।"

"फिर तो उनका बाप भी नहीं पहचान पायेगा तुम्हें—बल्कि तुम्हारे चेहरे को देखते ही वे मुंह परे फेर लेंगे।"

रीमा राठौर पुनः हंसी। फिर स्टूल से उठकर वह अपने कपड़ों की तरफ बढ़ी और अपनी कमीज उठाते हुए बोली—

"ड्रेसिंग टेबल पर रेजर पड़ा है—अपनी मूंछें साफ कर दो।"

"क्या?" बुरी तरह से उछल पड़ा सिकंदर ठाकरे।

"मूंछें साफ कर दो—बाकी का मेकअप मैं कर दूंगी।"

"नहीं...म...मैं मर जाऊंगा—मगर मूंछें साफ नहीं करूंगा। ले-दे कर मेरे पास यही एक इज्जत है—और तुम उसे ही काटने पर तुल गई हो।"

"समझने की कोशिश करो ठाकरे—तुम्हारी यह झाड़ीदार मूंछें तुम्हारी पहचान बन चुकी हैं। इन मूंछों की वजह से तुम पहचाने जा सकते हो।"

"नहीं....मैं मूंछें साफ नहीं करूंगा।"

"तुम पागल तो नहीं हो गए। अरे—यह तो घर की खेती है—कट के फिर उग आयेंगी।"

"लेकिन...।"

"लगता है अपने देश से ज्यादा तुम्हें अपनी मूंछें अजीज हैं।"

सिकंदर ठाकरे की शक्ल रोने जैसी हो गई।

भारी मन से वह उठा और स्टूल पर बैठ गया। और फिर जब उसने अपनी मूंछें साफ कीं तो रीमा राठौर के होंठों से हंसी का फव्वारा फूट पड़ा।

"हंस लो...खूब हंस लो।" जले-भुने स्वर में बोला सिकंदर ठाकरे—"मेरी इज्जत उतार कर तुम हंसोगी नहीं तो क्या करोगी!"

रीमा राठौर शलवार पहनते हुए पुनः हंसी।

"शलवार क्यों पहन रही हो?" तभी गुर्राया सिकंदर ठाकरे।

"क्यों? क्या न पहनूं मैं?"

"कमीज भी उतारो और ब्रा और पैंटी भी उतार कर बैड पर लेट जाओ।"

"लगता है कि मुझ पर चढ़ने का इरादा है तुम्हारा।"

"हां.....तुमने मुझसे वादा किया हुआ था कि तुम्हें पाने के

https://t.me/Hindiupanyas

लिये मुझे पहले अपनी मूंछों की कुर्बानी देनी होगी। देख लो—मैंने मूंछें मूंड दीं। अब वायदे के अनुसार तुम्हें मेरे नीचे बिछना होगा।"

रीमा राठौर उसके करीब आई और झुक कर उसकी आंखों में झांकते हुए बोली—

"क्या ये मूंछें तुमने मेरी खातिर मूंडी हैं?"

"क्या मतलब?" हड़बड़ा उठा सिकंदर ठाकरे।

"जब तुम मुझे पाने की खातिर मूंछें मूंडोगे—रीमा राठौर तभी तुम्हें हासिल होगी। इस वक्त तो तुमने अपनी जान बचाने के लिये और देश की खातिर मूंछें साफ की हैं।"

"साफ तो की हैं।"

"मेरी खातिर तो नहीं की।"

"यानि मुझे हासिल नहीं होवोगी तुम?"

"ऐसा नहीं—जब मेरी खातिर मूंडोगे—तभी।"

"हासिल न सही—जलवा तो दिखा दो अपना।"

"दो घण्टे से क्या आंखें बंद किये बैठे थे?"

"तब ब्रा और पैंटी तो नहीं उतारी थी तुमने—जलवा तो उनके पीछे छिपा है।"

"वो जलवा तुम्हें तभी देखना नसीब होगा—जब मैं तुम्हें हासिल होऊंगी।"

"और मुझे हासिल हो नहीं सकतीं तुम...।"

रीमा राठौर खुलकर हंसी।

"लानत!"

रीमा राठौर पुनः हंसी।

"लानत! लानत! घरों घर गंवाया—बाहरों भड़वाया। मूंछें भी गंवाईं—फिर भी हासिल नहीं हुई।"

"अब चुपचाप बैठ जाओ और आंखें बन्द कर लो।"

मुंह बनाते हुए सिकंदर ठाकरे ने आंखें बन्द कर लीं।

और फिर रीमा राठौर उसका मेकअप करने में जुट गई।

एक घण्टे बाद वह सिकंदर ठाकरे से फारिग हुई तो सिकंदर ठाकरे का चेहरा काफी बदल चुका था।

उसके बालों में कहीं-कहीं सफेदी आ गई थी—चेहरे पर भी प्रौढ़ता नजर आने लगी थी तथा आंखों की कोरों पर हल्की झुर्रियां उभर आई थीं।

"अब आंखें खोलो।" रीमा राठौर बोली।

सिकंदर ठाकरे ने जैसे ही आंखें खोलीं—बुरी तरह से चौंक पड़ा वह।

https://t.me/Hindiupanyas

"कौन है यह?" स्वयं को शीशे में निहारते हुए वह बोला।

"यह तुम ही हो।" हंसी रीमा राठौर।

"ओ माई गॉड।" सिकंदर ठाकरे ने अपने सिर पर हाथ मारा—"मैं खुद ही खुद को पहचान नहीं पाया। तुमने तो एक घण्टे में ही मेरी जवानी छीन ली।"

रीमा राठौर पुनः हंसी। फिर बोली—

"तुम यह सारा सामान समेटो—मैं जरा हाशिम रजा के दीदार कर आऊं।"

"अकेली?" चौंका सिकंदर ठाकरे।

"घबराओ नहीं—सिर्फ उसकी कोठी का मुआयना करने जाऊंगी। उसके बाद हम मिलकर सोचेंगे कि उस पर कैसे हाथ डाला जाए।"

सिकंदर ठाकरे ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया।

"और अगर पीछे से शफीक का फोन आये तो तुम उससे पूछना कि क्या वह घण्टे भर के लिये हाशिम रजा को कोठी से बाहर निकाल सकता है।"

"वो किसलिये?"

"वो भी बताऊंगी। अगर वह हां करे तो उसे कहना कि रात दस से ग्यारह बजे तक उसे बाहर निकाले और अगर वह कोई और वक्त दे तो वही सही।"

सिकंदर ठाकरे ने सिर हिला दिया।

और फिर रीमा राठौर सिर पर दुपट्टा करके सिकंदर ठाकरे को सावधान रहने को कह कर मकान से बाहर निकल गई।

कुछ ही देर में वह एक रिक्शे में बैठी हाशिम रजा की कोठी की तरफ जा रही थी।

बुर्का पहनने की जरूरत नहीं थी अब उसे—उसका चेहरा जो बदल चुका था।

□□□

हाशिम रजा की कोठी से काफी पहले ही रीमा राठौर रिक्शा से उतर गई और अब वह पैदल ही कोठी की तरफ बढ़ रही थी।

फुटपाथ पर तो वह लापरवाही से चलती नजर आ रही थी—मगर अन्दर से वह पूरी तरह से चौकन्नी थी।

किसी भी खतरे का सामना करने के लिये पूरी तरह से

https://t.me/Hindiupanyas

तैयार।

जैसे ही कोठी की सीमा शुरू हुई—उसने अपनी चाल में कमी कर दी।

गेट पर खड़े दो गार्ड उसे पहले ही नजर आ गए थे जो कि पूरी तरह से चौकन्ने थे।

वह गेट के आगे से गुजरी तो गर्दन घुमाकर इस तरह भीतर देखा जैसे उत्सुकतावश भीतर देख रही हो।

गेट से कम्पाउंड तक ड्राइव-वे बना हुआ था जिसके दांई तरफ काफी बड़ा और खुला लान था।

लान में कारबाइनों से लैस तीन गार्ड इधर-उधर टहल रहे थे। दो गार्ड सामने कम्पाउंड में मौजूद थे।

रीमा राठौर ने कोठी की छत की तरफ देखा।

छत पर भी उसे दो गार्ड खड़े नजर आये।

इतने प्रबन्ध तो उसे सामने नजर आ रहे थे—भीतर पता नहीं क्या-क्या प्रबंध थे।

गेट पार करके वह आगे बढ़ती चली गई।

थोड़ा आगे जाकर वह भीतर को जाती सड़क पर मुड़ी और आगे बढ़ने लगी।

कुछ ही देर में उसने कोठी की बाउण्ड्री वाल की तरफ देखा।

करीब पंद्रह फीट ऊंची बाउण्ड्री वाल थी वह। दीवार के ऊपर कांटेदार तार थी—तीन लाइनें थीं जो कि एक सिरे से दूसरे सिरे तक जा रही थीं।

दीवार के पीछे उसे कुछ भी नजर नहीं आ सकता था—बस सिर्फ छत के ही दर्शन कर सकी थी वह—जहां पर कि उसे कोई भी नजर नहीं आया।

रीमा राठौर वहीं खड़ी कुछ देर दीवार को देखती रहे—फिर गहरी सांस छोड़ते हुए वह वहां से हटी और वापिसी के लिये रवाना हो गई।

कुछ ही देर में उसने एक रिक्शे में बैठी वापिस अपने मकान की तरफ बढ़ती नजर आ रही थी।

रास्ते में कई स्थानों पर उसे पुलिस वाले लोगों की चैकिंग करते मिले। मगर रीमा राठौर की तरफ किसी ने देखा तक नहीं।

□□□

https://t.me/hindiupanyas

शाम सात बजे तक रीमा राठौर वापिस उस मकान में पहुंची जिसमें कि सिकंदर ठाकरे उसका इंतजार कर रहा था।

"फोन आया था शफीक का?"

"नहीं....।" सिकंदर ठाकरे ने सिर दांये-बांये हिलाया।

"ओह।" रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी।

"तुम बोलो—क्या देख कर आई?" सिकंदर ठाकरे ने पूछा।

"बहुत ही तगड़े सुरक्षा-प्रबंध कर रखे हैं हाशिम रजा के।" रीमा राठौर बोली।

"क्या?"

रीमा राठौर ने बताया।

सुनकर सिकंदर ठाकरे के चेहरे पर निराशा फैल गई।

"फिर तो हमें कोई और रास्ता ढूंढना पड़ेगा।" वह बोला—"इतने तगड़े सुरक्षा घेरे को तोड़ कर उस तक नहीं पहुंचा जा सकता—और अगर किसी तरह पहुंच भी गए तो निकलना मुश्किल होगा।"

"एक बार उस तक पहुंच जाएं—फिर बाहर निकलने का रास्ता खुद ही बन जाएगा।"

"पहुंचेंगे तब न!" सिकंदर ठाकरे बोला—"इतने तगड़े सुरक्षा प्रबंधों को धता बताकर उस तक पहुंचने के लिये हमें कई बार मरना होगा।"

"फिर भी जाना तो पड़ेगा ही—यूं ही हाथ पर हाथ धर कर बैठने से तो कुछ हासिल होगा नहीं।"

"कोई दूसरा रास्ता ढूंढते हैं।"

"रास्ता नजर आये तब न।"

"लेकिन...।"

"फिलहाल हमारे पास सिर्फ यही एक रास्ता है ठाकरे। आबेहयात का पता लगाने के लिये हमें हाशिम रजा पर हाथ डालना ही पड़ेगा।" कहकर उसने एक गहरी सांस छोड़ी—"अगर शफीक का फोन आ जाता तो...।"

"ट्रिन...ट्रिन।"

फोन की घण्टी बज उठी।

"लो...आ गया फोन शफीक का—इसे ही याद कर रही थीं न तुम?"

रीमा राठौर मुस्कुराई और तुरंत फोन की तरफ बढ़ी।

"हैलो।" रिसीवर उठाकर कान से लगाते हुए वह बोली।

https://t.me/hindiupanyas

"रीमा राठौर।" दूसरी तरफ से शफीक की आवाज आई।

"शफीक...।" रीमा राठौर बोली।

"लगता है हाशिम रजा पर हाथ डालने की तैयारी की जा रही है?" आवाज आई।

"तैयारी तो कर ली है—लेकिन कोठी के सुरक्षा प्रबंधों को देखकर ऐसा लगता है जैसे हम मौत के कुएं में जानबूझकर कूदने जा रहे हों।"

"मैंने तुम्हें शिकार के बारे में बता दिया—अब आगे तुमने क्या करना है, यह तुम जानो।"

"मैं जानती हूं—कैसे क्या करना है—तुम हमारे लिये एक काम कर सकते हो?"

"अगर काम मेरे बस का हुआ तो जरूर करूंगा। बोलो क्या काम है।"

"तुम सिर्फ एक घण्टे के लिये हाशिम रजा को कोठी से बाहर निकाल सकते हो?"

"क्यों? क्या उसे कोठी के बाहर पकड़ने का इरादा है?" आवाज आई—"अगर ऐसा कोई इरादा है तो उसे दिल से निकाल दो—क्योंकि कोठी के बाहर वह कोठी के अंदर से भी ज्यादा सुरक्षा प्रबंधों में घिरा होता है।"

"फिर भी क्या तुम उसे निकाल सकते हो?"

"मैं कोशिश कर सकता हूं।"

"तो करो।"

दूसरी तरफ से गहरी सांस छोड़ने की आवाज आई।

"हालांकि मैं जानता हूं कि मेरा यह कदम मेरी जान का दुश्मन बन सकता है। फिर भी मैं कोशिश करूंगा—अकरम मेरा जिगरी दोस्त था और मैं अपनी जान देकर भी दोस्ती निभाऊंगा।"

"थैंक यू शफीक—हम तुम्हारा यह अहसान जिन्दगी भर नहीं उतार पायेंगे।"

"तुम मेरे फोन का इंतजार करना—अगर मेरी स्कीम कामयाब रही तो मैं तुम्हें फोन कर दूंगा।"

"मैं इंतजार करूंगी।"

दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

रीमा राठौर ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और सिकंदर ठाकरे की तरफ देखा।

"क्या कह रहा था शफीक?" पूछा सिकंदर ठाकरे ने।

https://t.me/Hindiupanyas

रीमा राठौर ने बताया।

"यानि वह कोशिश करेगा—हाशिम रजा को पिंजरे से बाहर निकालने की।"

"हां।"

"भगवान करे वह अपनी कोशिश में कामयाब हो।"

"वह कामयाब ही होगा।" मुस्कुराई रीमा राठौर।

सिकंदर ठाकरे ने घूरकर उसे देखा।

"तुम तो ऐसे कह रही हो जैसे तुम्हें पूरा विश्वास हो उसकी कामयाबी पर।"

रीमा राठौर के होंठों पर फैली मुस्कान में रहस्य उमड़ गया।

"अगर गहराई से सोचोगे तो तुम्हें भी विश्वास हो जाएगा।" वह बोली।

"क्या मतलब?"

"शफीक को देखा है तुमने?"

"तुमने देखा है?"

"नहीं...मैंने भी नहीं देखा—अकरम की मौत के बाद वह एकदम से हमारा खुदाई मददगार बनकर सामने आया और हमारी हर तरह से मदद कर रहा है। ऐसे जैसे आबेहयात के यहां से निकलने की उसे हमसे ज्यादा जल्दी हो। जैसे वह हमारी कामयाबी के लिये मरा जा रहा हो।"

"वह अकरम का दोस्त था।"

"दोस्ती तो अकरम की मौत के साथ ही खत्म हो गई।"

"वह अपनी दोस्ती का फर्ज निभा रहा है।"

"मगर अकरम ने तो मुझे शफीक के बारे में कुछ नहीं बताया था।"

"वह भूल गया होगा।"

"इतने जिगरी दोस्त को भूल गया वह—हैरानी होती है यह सोचकर।"

"तुम कहना क्या चाहती हो?"

सिकंदर ठाकरे उलझे स्वर में बोला।

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी और बोली—

"कुछ लोग पकी पकाई खाने पर ज्यादा विश्वास करते हैं। और मुझे लगता है कि शफीक उन्हीं लोगों में से एक है। वह खुद पर्दे के पीछे रहकर हमारी कामयाबी पर नजर रख रहा है। और

https://t.me/Hindiupanyas

इस ताक में है कि कब हम आबेहयात हासिल करें और कब वह हम पर बाज की तरह झपट्टा मारे।"

बुरी तरह से उछल पड़ा सिकंदर ठाकरे—आंखें हैरानी से फट पड़ीं।

"तुम...बहुत खतरनाक सोच रही हो।"

"हो सकता है मैं गलत सोच रही होऊं—मगर अभी तक तो जो हालात हैं—उनसे तो ऐसा लगता है कि मैं ठीक सोच रही हूं। और अगर मेरी सोच सही है तो इतना जान लो कि ऐसे लोग अव्वल दर्जे के धूर्त और मक्कार होते हैं।"

"कहीं...यह शफीक भेड़िया तो नहीं?"

बुरी तरह से उछल पड़ी रीमा राठौर।

"भेड़िया...।"

"वह भी तो धूर्त है—मक्कार है—धोखेबाज है।"

"मगर वह यहां पाकिस्तान में...।"

"शैतान आत्मा है वो—वह कभी भी कहीं भी पहुंच सकता है।"

रीमा राठौर ने बेचैनी से पहलू बदला और बोली—

"अगर ऐसा है—और अगर शफीक भेड़िया है तो फिर हम में से एक ही हिन्दुस्तान वापिस जा पायेगा।"

कहते हुए रीमा राठौर की आंखों में दरिंदगी से भरे भाव उभर आये।

"वो बात तो ठीक है।" सिकंदर ठाकरे बोला—"मगर हमें कैसे पता चलेगा कि वह भेड़िया है।"

"यह तो आबेहयात को हासिल करने के बाद ही पता चलेगा—जब वह हम पर हाथ डालने की कोशिश करेगा।"

"अगर तुम चाहो तो पहले पता लगा सकती हो।"

"कैसे?"

रीमा राठौर दिलचस्पी भरे स्वर में बोली।

"अब जब उसका फोन आये तो तुम उससे मिलने के लिये कहना।"

"कैसी बेवकूफी भरी बात कर रहे हो तुम।"

"क...कुछ गलत कहा मैंने?"

हड़बड़ाया सिकंदर ठाकरे।

"जानते हो—अगर हमने ऐसा किया तो वह फौरन गायब हो जाएगा।"

https://t.me/Hindiupanyas

"ओह।"

"समझदारी इसी में है कि तब तक कुछ न करो जब तक कि आबेहयात हासिल न हो जाए—उसके बाद अगर वह हम पर हाथ डालेगा—तो तब देखेंगे। हमारा सबसे पहला मकसद है आबेहयात को हासिल करना—समझे।"

सिकंदर ठाकरे सिर हिलाने लगा।

"अब तुम उठो और बाजार से थोड़ा सामान खरीद लाओ।"

"कैसा सामान?"

रीमा राठौर बताने लगी। सारा सामान बताकर वह आगे बोली।

"वापिसी पर डिनर भी पैक करवा लाना।"

सिकंदर ठाकरे ने सिर हिला दिया।

"और मेरे लिये सिगरेट का एक पैकेट भी लेते आना।"

सिकंदर ठाकरे ने पुनः सिर हिलाया।

❑❑❑

सतीश रावण ने रिसीवर हुक पर लटकाया और टेलीफोन बूथ से बाहर आ गया था।

रीमा राठौर को उसने अपना मोहरा बनाया हुआ था। और अब उसे आगे बढ़ने के लिये हाशिम रजा को उसके घर से बाहर निकालना था।

कैसे निकाले वह हाशिम रजा को उसके घर से बाहर? वह सोचने लगा—और उसकी हर सोच का यही अन्त होता कि हाशिम रजा अपने घर से तभी निकल सकता है, जब उसे यह पता चले कि रीमा राठौर कहां है।

और अगर उसने उसे यही बता दिया तो उसके किये-कराये पर पानी फिर जायेगा। फार्मूला रीमा राठौर के हाथ आने तक वह रीमा राठौर को आंच भी नहीं आने देना चाहता था। बस एक बार रीमा राठौर फार्मूला हासिल कर ले—फिर वह उसे खत्म करने में देर नहीं करेगा। फटाक से उसके तथा सिकंदर ठाकरे के सीनों में गोली उतार देगा—और फार्मूला हासिल करके इण्डिया चला जाएगा—जहां पर कि सौ करोड़ रुपया बड़ी बेसब्री से उसका इंतजार कर रहा है।

सौ करोड़ की सोच जेहन में आते ही उसकी राल टपक पड़ी।

https://t.me/Hindiupanyas

"अब तो मुझे कैसे भी हाशिम रजा को उसकी कोठी से निकालना ही होगा।"

वह स्वयं से ही बड़बड़ाया और फुटपाथ पर आगे बढ़ा।

ठीक तभी वह अपने करीब से निकली कार को देख चौंका।

कार की अगली पैसेंजर सीट पर जो व्यक्ति बैठा था—उसकी सिर्फ एक झलक देखी थी उसने।

वह वहीं खड़ा हो कार को देखने लगा—जो कि अब उससे काफी दूर हो चुकी थी।

सिर को खुजाते हुए वह यह सोच रहा था कि कार में बैठा कौन था। यह उसका दिल कह रहा था कि उसने उस व्यक्ति को देखा है—और यह भी उसे पूरा विश्वास था कि उसने उसे भारत में ही देखा था।

कहां?

यह उसे याद नहीं आ रहा था।

उसने अपने जेहन पर पूरा जोर डाला—मगर यह याद नहीं कर पाया कि उसने उसे कहां देखा है। आखिर जब लाख जोर लगाने के बाद भी उसे याद नहीं आया तो उसने लापरवाही से सिर को झटका और आगे बढ़ने लगा।

अगर उसे याद आ जाता तो अवश्य ही उसका कलेजा धड़क उठता और वह बुरी तरह से चौंक पड़ता।

बलराज गोगिया था वह—जो कि चंगेज खान के एक आदमी के साथ जा रहा था।

सतीश रावण ने उस व्यक्ति को अपने जेहन के कोने में फेंका और पुनः पहली सोचों में आ गया कि किस तरह उसने हाशिम रजा को उसके घर से निकालना है।

और जैसे ही इसकी स्कीम उसके जेहन में आई—उसके होंठों पर एक कमीनी मुस्कान उभर आई। आंखों में भेड़िये की सी चमक नाच उठी।

कुछ ही देर में वह एक टैक्सी में बैठा नजर आ रहा था।

□□□

दरगाह चौक से थोड़ा आगे सतीश रावण टैक्सी से उतरा और पैदल ही एक तरफ बढ़ने लगा।

अब उसे अपने शिकार की तलाश थी।

https://t.me/Hindiupanyas

शीघ्र ही उसे शिकार मिला।

वह एक घनी मूंछ वाला व्यक्ति था, जो कि एक बाइक से अभी-अभी उतर कर एक मकान के दरवाजे की तरफ बढ़ा था।

सतीश रावण तुरंत उसकी तरफ लपका।

जब तक वह उसके करीब पहुंचता—दरवाजा खुल चुका था।

दरवाजा खोलने वाली एक खूबसूरत हसीन-तरीन औरत थी—जिसने कि सतीश रावण पर निगाह पड़ते ही अपने चेहरे पर घूंघट कर लिया था—और भीतर चली गई।

दाढ़ी मूंछ वाले ने गर्दन घुमाकर सतीश रावण की तरफ देखा।

"फरमाइए?"

प्रत्युत्तर में सतीश रावण ने बड़े इत्मिनान से रिवाल्वर निकाली और उसकी तरफ तान दी।

रिवाल्वर पर निगाह पड़ते ही दाढ़ी मूंछ वाले का रंग उड़ गया—चेहरे पर बदहवासी उभर आई।

"य....यह क्या है?"

"अन्दर चलो।" गुर्राया सतीश रावण।

"ल...लेकिन भाई जान मैं....।"

"क्या तू बाहर मरना चाहता है?"

उस व्यक्ति के गले की घण्टी जोरों से उछली।

इन्कार वह कर नहीं सकता था—सो वह भीतर दाखिल हो गया।

सतीश रावण ने रिवाल्वर उसकी पीठ से लगाई और उसके पीछे-पीछे भीतर प्रवेश कर गया।

कमरे में प्रवेश करते ही उसके कानों में खौफ भरी चीख पड़ी।

बैड पर दाढ़ी वाले की बीवी बैठी थी। निश्चय ही उसने अपने शौहर की आंखों में छाये भय को भांप लिया था। तभी तो वह चीखी थी।

चीखने के साथ ही उसने पुनः घूंघट निकाल लिया।

"तेरी बेगम है यह?" सतीश रावण ने पूछा।

"ह...हां...।" थर्राये स्वर में बोला वह व्यक्ति—"ल...लेकिन तुम...?"

"क्या नाम है तेरा?"

https://t.me/Hindiupanyas

"सत्तार अली।"

"तुम्हारा निकाह कब हुआ?"

"ह...हमारा तो अभी दो महीने पहले ही निकाह हुआ है भाईजान।"

"तेरा कोई भाई-भाभी या वालिद...।"

"ह...हम दोनों के अलावा और कोई नहीं रहता यहां। लेकिन आप कौन हैं भाईजान। म...मैंने तो आपका कुछ नहीं बिगाड़ा।"

सतीश रावण के होंठों पर विषैली मुस्कान फैल गई।

"मौत सिर्फ उसे नहीं आती मियां जिसने उसका कुछ बिगाड़ा हो।"

सत्तार अली की रंगत और भी पीली पड़ गई।

"तीन रोज पहले मेरी नजर तेरी बेगम पर पड़ गई थी—बस तभी से मेरे दिल में खलबली मची हुई है—तेरी बेगम की खातिर ही मैं यहां आया हूं।"

अगर सत्तार अली के सामने रिवॉल्वर न होता तो निश्चय ही वह सतीश रावण पर टूट पड़ता।

अपने सामने अपनी बेगम का अपमान वह किस तरह बर्दाश्त कर रहा था, यह वह ही जानता था।

"द...देखो...त...तुम हद से आगे बढ़ रहे हो...!" वह भर्राये लहजे में बोला।

"हद से आगे तो मैं अब बढ़ूंगा।"

सतीश रावण कुटिलता से हंसा और रिवाल्वर की नाल उसकी खोपड़ी से लगाकर बिना चेतावनी दिये उसने ट्रिगर दबा दिया।

गोली सत्तार अली का भेजा फाड़ती हुई दूसरी तरफ से निकल गई।

सत्तार अली का जिस्म जोरों से उछला और फर्श पर गिर पड़ा।

मर चुका था वह।

अपने शौहर को अपनी आंखों के सामने मरते देख सत्तार अली की बेगम को जैसे लकवा मार गया।

उसकी फटी-फटी आंखें सत्तार अली की लाश को देख रही थीं—मुंह खुला हुआ था। चेहरा इस तरह सफेद पड़ा हुआ था मानो उसके जिस्म में खून की एक बूंद भी न हो।

https://t.me/Hindiupanyas

सतीश रावण आगे बढ़ा और उस औरत के ऐन सामने आ खड़ा हुआ।

अपने तथा सत्तार अली की लाश के बीच सतीश रावण को देख औरत को जैसे होश आया।

बुरी तरह से हड़बड़ाई वह और खौफ भरी आंखों से उसे देखने लगी।

"चल कपड़े उतार...।" सतीश रावण कमीनी मुस्कान के साथ बोला।

औरत के गले की घण्टी जोरों से उछली।

सतीश रावण ने रिवाल्वर की नाल उसके माथे से लगा दी।

"अगर तू जिन्दा रहना चाहती है तो कपड़े उतार अपने।" वह गुर्राया—"वर्ना तुझे खत्म करते हुए मुझे जरा भी तकलीफ नहीं होगी।"

मौत का खौफ हर किसी को वह सब करने को मजबूर कर देता है जो कि वह किसी भी सूरत में नहीं करना चाहता।

वह भी डर गई।

अपने शौहर की मौत वह अपनी आंखों से देख चुकी थी। सो उसने तुरंत गले से दुपट्टे को निकाला और रोते बिलखते हुए कपड़े उतारने लगी।

कुछ ही देर में वह पूरी तरह निर्वस्त्र बैठी आंसू बहा रही थी। अपने अंगों को छुपाने के लिये उसने घुटनों को सीने पर लगा लिया था।

सतीश रावण ने रस से डूबी उस रसभरी को देखा तो उसकी राल टपक पड़ी।

आंखों में वहशियाना भाव उभर आये।

और उसी के साथ ही शैतान छलांग मारते हुए खड़ा हो गया।

"लेट जा।" वह अपनी पैंट के हुक खोलते हुए बोला।

औरत रोते हुए पीठ के बल बैड पर लेट गई।

सतीश रावण ने पीठ से चिपकी आरी निकाल कर एक तरफ रखी और पैंट उतार कर उस पर छलांग लगा दी।

अपने शौहर की लाश के पास वह बेबस औरत एक दरिंदे के हाथों लुटने लगी।

वह हैवान उसे नोचता-खसोटता उसकी इज्जत से तब तक खेलता रहा जब तक कि उसका मन नहीं भर गया।

https://t.me/Hindiupanyas

पूरी तरह से तृप्त होने के बाद सतीश रावण ने पैंट पहनी। अपनी आरी उठाई और बिना कोई बात किये खचाक् से आरी उस औरत की गर्दन पर चला दी।

पहले ही वार में उसकी गर्दन कटकर अलग हो गई।

वह बैड पर बुरी तरह से छटपटाने लगी और उसी के साथ ही बैड की चादर सुर्ख रंग में रंगने लगी।

सतीश रावण हौले से हंसा और आरी को बैड की चादर से पोंछ कर उसे अपनी पीठ पर शर्ट के नीचे चिपकाया और रिवाल्वर को उठा कर जेब में डाल लिया।

उसने उस औरत की तरफ़ देखा।

शांत हो चुकी थी वह।

"काफी पावरफुल थी तू।" वह हंसा—"अपनी जिन्दगी के आखिरी लम्हें तक मैं शायद ही तुझे भूल पाऊंगा।"

वह शैतानों की तरह खिलखिलाया और वहां से हटकर घर की तलाशी लेने लगा।

सारा माल समेट कर वह बैड के करीब पड़े फोन की तरफ बढ़ा।

कुछ ही देर में वह उस नम्बर को डायल कर रहा था जो कि उसे रिपोर्ट देने के लिये मिला हुआ था।

□□□

"हैला.....मैं सतीश रावण बोल रहा हूं माई बाप।"

दूसरी तरफ से आवाज आते ही वह चापलूसी भरे स्वर में बोला।

"हां बोलो सतीश रावण—पता लगा रीमा राठौर का?"

दूसरी तरफ से आवाज आई।

"तभी तो फोन किया है माई बाप।"

"कहां है रीमा राठौर?" दूसरी तरफ से आयी आवाज में उत्तेजना भर आई।

"बिलाबल बाजार से थोड़ा आगे एक सौ सात नम्बर मकान में।" सतीश रावण बोला—"मैं इस वक्त उसी मकान पर नजर रखे हुए हूं। आप फौरन से पेश्तर यहां रेड कीजिये।"

"तुम वहीं रहना।" आवाज आई—"हम अभी वहां पहुंच रहे हैं।"

सतीश रावण ने रिसीवर रखा और मुस्कुराते हुए दोनों

https://t.me/Hindiupanyas

मियां-बीवी की लाशों की तरफ देखा।

"मुझे रुपयों की सख्त जरूरत थी। इसलिये मुझे तुम्हें खत्म करना पड़ा—वर्ना मैं तो किसी की तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखता। खुदा तुम्हारी रूह को जन्नतनशीं करे।"

कह कर वह वहां से हिला और सत्तार अली की लाश के करीब आकर झुका और उसकी जेब टटोल कर उसमें से बाइक की चाबी हासिल की और बाहर निकल गया।

कुछ ही देर में वह बाइक पर बैठा हाशिम रजा की कोठी की तरफ उड़ा जा रहा था।

वह यह तसल्ली करना चाहता था कि हाशिम रजा अपनी कोठी से निकला है या नहीं।

□□□

"ट्रिन...ट्रिन।"

फोन की घण्टी घनघनाई।

हाशिम रजा ने अपना हाथ में थमा पैग हलक में उतारकर खाली किया और रिसीवर की तरफ हाथ बढ़ाया। अभी पन्द्रह मिनट पहले ही वह मीटिंग से लौटा था।

हसन के खून की खबर उसे अपने चीफ अल मुहम्मद से मिली थी और उसने उसे फौरन हैडक्वार्टर पहुंचने का आदेश दिया था।

आनन-फानन हाशिम रजा वहां पहुंचा तो कांफ्रेंस रूम में उसे हसन की कुर्सी खाली पड़ी नजर आई।

अल मुहम्मद को सलाम कर वह अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

"हाजरीन....।" अल मुहम्मद गम्भीरता भरे स्वर में बोला—"हमारा एक जांबाज अब इस दुनिया में नहीं रहा—ब्रिगेडियर ए. हसन को बलराज गोगिया ने खत्म कर दिया है। धोखे से हसन को बुलाकर उन्हें बुरी तरह से टार्चर किया गया था।

हमें यह नहीं पता कि हसन ने मरने से पहले फार्मूले के बारे में बताया था या नहीं—फिर भी हम यह मान कर चलेंगे कि बलराज गोगिया को पता चल गया है कि फार्मूला कहां है।

मैंने रामपुर फोन करके लाल कोठी पर रेड अलर्ट का हुक्मनामा जारी कर दिया है—और बलराज गोगिया को खत्म करने का भी हुक्म दे दिया है—क्योंकि अब वह हमारे काम का नहीं

https://t.me/Hindiupanyas

रहा—बल्कि हमारे लिये सिरदर्द बन चुका है।

बलराज गोगिया के बाद बचती है रीमा राठौर।

वह भी उसी फार्मूले को हासिल करने के लिये यहां आई है—और कितने शर्म की बात है कि हम यह जानते हुए कि वह इस्लामाबाद में ही कहीं छुपी है—हम उसे ढूंढ नहीं पा रहे हैं।"

"मैंने सतीश रावण को इस काम पर लगा रहा है जनाबे आला।" हाशिम रजा बोला।

"मैं जानता हूं।" अल मुहम्मद बोला—"मगर वह एक नम्बर का धोखेबाज शख्स है। हालांकि वह हमारे लिये पूरी वफादारी से काम कर रहा है। उसी की वजह से हमें पता लगा कि वे जासूस रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे हैं—फिर भी उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। इसलिये हम अपने तौर पर भी उन्हें ढूंढ रहे हैं—मगर अभी तक नाकामी ही हासिल हुई है। सतीश रावण बेशक इस वक्त हमारे काम का साबित हो रहा है—मगर वह है तो धोखेबाज है। इसलिये उसकी तरफ से होशियार रहा जाए।"

हाशिम रजा ने सिर हिलाया।

और फिर रामपुर अपने कुछ आदमी रवाना करके बलराज गोगिया को ढूंढने तथा उसे खत्म करने को कह अल मुहम्मद ने मीटिंग समाप्त कर दी।

हाशिम रजा वहां से सीधा अपनी कोठी पर आया और बोतल निकाल कर अपने लिये पैग बनाने लगा।

उस वक्त वह दूसरा पैग खत्म कर रहा था जब फोन की घण्टी बजी थी।

"हैलो।" वह रिसीवर उठाकर कान से लगाते हुए बोला।

"अभी-अभी सतीश रावण का फोन आया था जनाब।" आवाज आई।

हाशिम रजा एकदम से सतर्क हो उठा।

"क्या कह रहा था?"

"रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे बिलाबल बाजार से आगे एक सौ सात नम्बर मकान में हैं।"

"और सतीश रावण कहां है?"

"वह वहीं उस मकान पर नजर रखे हुए है।"

"तुम फौरन आर्मी हैडक्वार्टर फोन करके फौज की तीन गाड़ियां वहां रवाना करो—मैं वहीं पहुंच रहा हूं।"

https://t.me/Hindiupanyas

"जी, बेहतर।"

हाशिम रजा ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और बोतल को बंद कर उसे उठाकर खड़ा हुआ—बोतल को अलमारी में रख कर तेजी से कमरे से निकला।

कुछ ही देर में वह अपनी काली कार में बैठा बिलाबल बाजार की तरफ जा रहा था।

उसके आगे तथा पीछे दो अन्य गाड़ियां थीं जिनमें कि उसके अंगरक्षक थे।

□□□

सतीश रावण ने हाशिम रजा को अपने बाडीगार्डों के साथ कारों में सवार कोठी से बाहर निकलते देखा तो उसके होंठों पर विष भरी मुस्कान फैल गई।

इस वक्त वह हाशिम रजा की कोठी से कुछ दूर एक वृक्ष की ओट में खड़ा था। उससे थोड़ी दूर ही फुटपाथ पर उसकी बाइक खड़ी थी।

हाशिम रजा तथा उसके बाडीगार्डों के थोड़ा आगे बढ़ते ही वह वहां से हटा और अपनी बाइक की तरफ लपका।

कुछ ही देर में वह एक टेलीफोन बूथ में खड़ा रीमा राठौर का नम्बर डायल कर रहा था।

"हैलो।" दूसरी तरफ से फोन की पहली घण्टी पर ही फोन उठा लिया गया।

"मैं शफीक बोल रहा हूं रीमा राठौर।"

सतीश रावण माउथपीस में बोला।

"मैं तुम्हारे ही फोन का इंतजार कर रही थी शफीक। कहो कामयाबी हासिल हुई?"

"हां...हाशिम रजा अभी-अभी अपने बाडीगार्डों के साथ कोठी से निकला है।"

"मुझे तुम्हारी कामयाबी पर पूरा भरोसा था शफीक।"

"तारीफ का शुक्रिया। फिलहाल आप वही कीजिये जो करना चाहती हैं। मैंने उसे कोठी से बाहर निकालना था—निकाल दिया—अब एक डेढ़ घण्टे से पहले वह नहीं आयेगा।"

"थैंक यू शफीक।"

दूसरी तरफ से रीमा राठौर की आवाज आई और सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

https://t.me/hindiupanyas

सतीश रावण के होंठों पर जहरीली मुस्कान फैल गई।

उसने रिसीवर हुक पर लटकाया और टेलीफोन बूथ से बाहर आ गया।

"मैं जानता हूं रीमा राठौर कि अब तू क्या करेगी...।" वह बड़बड़ाया—"इसलिये बंदा तुम्हारा यहीं इंतजार करेगा—क्योंकि तू अब यहीं आयेगी।"

□□□

रिसीवर रखकर रीमा राठौर खड़ी हो गई।

"शफीक ने अपना काम कर दिया है, ठाकरे।" वह सिकंदर ठाकरे की तरफ मुड़ती हुई बोली—"हाशिम रजा एक डेढ़ घण्टे के लिये अपनी कोठी से निकल चुका है।"

"मैं तैयार हूं।" काले रंग का एक बैग कंधे पर लटकाते हुए बोला सिकंदर ठाकरे।

उस बैग में वह सामान था जो कि सिकंदर ठाकरे रीमा राठौर के कहने पर अभी खरीद कर लाया था।

रीमा राठौर ने बैड पर पड़ा दुपट्टा उठाकर उससे अपना सिर ढका और सिकंदर ठाकरे से बोली—

"चलो।"

दोनों मकान से बाहर निकले।

कुछ ही देर में दोनों एक टैक्सी में बैठे हाशिम रजा की कोठी की तरफ जा रहे थे।

"मेरी समझ में नहीं आ रहा...।" पिछली सीट पर बैठा सिकंदर ठाकरे धीमें स्वर में बोला—"हाशिम रजा को कोठी से निकालना क्यों चाहती थीं तुम?"

रीमा राठौर के होंठों पर मुस्कान नाच उठी।

"शेर जब गुफा में होता है तो उस वक्त गुफा में दाखिल होना बहुत ही मुश्किल होता है। मगर जब वह गुफा में नहीं होता तो यही मुश्किल काम आसान हो जाता है।"

"मैं कुछ समझा नहीं।"

"हाशिम रजा की कोठी के जो सुरक्षा प्रबंध मैंने देखे हैं—उन्हें देख कर पहली ही नजर में यह आभास हो जाता है कि कोठी में प्रवेश करना नामुमकिन है। सभी गार्ड अपनी-अपनी जगहों पर पूरी तरह से मुस्तैद थे। यह उस वक्त की बात है जब हाशिम रजा अपनी कोठी के अंदर था।"

https://t.me/Hindiupanyas

"ओह।"

"मालिक जब सिर पर होता है तो नौकर पूरी तरह से मुस्तैद होते हैं—और जैसे ही मालिक बाहर निकलता है—नौकर लापरवाह हो जाते हैं।"

"ओह! अब समझा।" सिकंदर ठाकरे सिर हिलाते हुए बोला—"तुमने इसलिये हाशिम रजा को कोठी से निकाला कि गार्ड्स लापरवाह हो जाएं।"

"लापरवाह नहीं—बेफिक्र हो जाएं।"

"मगर जब वो घर ही नहीं होगा कि फिर हाथ किस पर डालोगी?"

उत्तर में रीमा राठौर कुछ नहीं बोली—बस मुस्कुरा पड़ी।

करीब बीस मिनट बाद टैक्सी हाशिम रजा की कोठी से थोड़ा पहले रुकी।

भाड़ा चुका कर दोनों बाहर निकले और तब तक वहीं खड़े रहे जब तक कि टैक्सी वहां से रवाना नहीं हो गई।

तत्पश्चात रीमा राठौर ने सिकंदर ठाकरे की तरफ देखा—फिर कोठी की तरफ इशारा करते हुए बोली—

"वो रही हाशिम रजा की कोठी।"

सिकंदर ठाकरे ने कोठी की तरफ देखा।

"कोठी के बाहर तुम्हें दो गार्ड नजर आ रहे हैं न?"

"हां—आ रहे हैं।" सिकंदर ठाकरे बोला।

"ठीक पन्द्रह मिनट बाद तुम्हें दोनों गार्डों को गोली से उड़ा देना है।"

बुरी तरह से चौंका सिकंदर ठाकरे।

"क्या?" सिकंदर ठाकरे हैरानी से बोला।

"तुम्हारा काम बस इतना ही है कि दोनों को खत्म करके तुम वहां रुकना नहीं—सीधा अपने मकान में पहुंचना है तुम्हें।"

"और तुम?"

"मैं बाद में पहुंच जाऊंगी।"

"लेकिन...।"

"जो कहा है—उस पर अमल करो ठाकरे।"

रीमा राठौर का स्वर सख्त हो उठा।

गहरी सांस छोड़कर रह गया सिकंदर ठाकरे।

रीमा राठौर ने बैग सिकंदर ठाकरे से लिया और बोली—

"ठीक पन्द्रह मिनट बाद—समझे?"

https://t.me/Hindiupanyas

बुझे मन से सिकंदर ठाकरे ने सिर हिला दिया।

रीमा राठौर थोड़ा और बढ़ी और उस गली में प्रवेश कर गई—जिसमें होकर वह दोपहर को कोठी की पिछली साइड में पहुंची थी।

वह कोठी की पिछली साइड में पहुंची।

गली पूरी तरह से सुनसान थी।

वह दीवार की जड़ में बैठी और बैग खोलकर उसमें से करीब बीस फीट लम्बी रस्सी निकाल ली।

तत्पश्चात उसने बैग में से एक एंकर निकाला और रस्सी का सिरा उससे बांध कर खड़ी हो गई।

करीब पांच मिनट बाद!

□□□

रीमा राठौर के जाने के बाद सिकंदर ठाकरे आगे बढ़ा और एक ऐसे स्थान पर छुप कर बैठ गया जहां से कि वह आसानी से दोनों गार्डों को निशाना बना सकता था।

वह स्थान कोठी के ऐन सामने लगा वृक्ष था—जिसके पीछे कि सिकंदर ठाकरे छुपा था।

उसने रिवाल्वर निकाल कर हाथ में ले ली और पंद्रह मिनट पूरे होने का इंतजार करने लगा।

जैसे ही पंद्रह मिनट पूरे हुए—सिकंदर ठाकरे ने गर्दन वृक्ष के पीछे से निकाली और गार्डों की तरफ देखा।

गेट के दोनों तरफ खड़े गार्ड आपस में बतिया रहे थे।

मौका अच्छा था सिकंदर ठाकरे के पास।

उसने रिवाल्वर सीधी की और—

"धांय...धांय...।"

एक के बाद एक दो धमाके हुए और दोनों गार्डों को उछलकर नीचे गिरते देखा।

सिकंदर ठाकरे ने यह देखने की कोशिश नहीं कि वे मर गए हैं या नहीं—बस एक तरफ दौड़ लगा दी।

वह जल्द से जल्द वहां से ज्यादा से ज्यादा दूर हो जाना चाहता था।

तभी उसके करीब से एक ट्रक निकला।

सिकंदर ठाकरे कुछ दूर ट्रक के पीछे भागा और फिर उसके पीछे बंधी रस्सी को पकड़ कर उसके साथ लटक गया।

https://t.me/Hindiupanyas

□□□

"धांय...धांय...।"

गोलियों की आवाजों ने पूरी कोटी में खलबली मचा दी।

लान में टहल रहे गार्ड तेजी से गेट की तरफ भागे।

छत पर मौजूद गार्ड भी सामने वाली साइड की तरफ भागे।

कम्पाउण्ड के गार्ड तथा कोठी के भीतर से दो गार्ड निकल कर गेट की तरफ भागे।

मगर जब तक वे गेट तक पहुंचते—गोली चलाने वाला वहां से काफी दूर निकल चुका था।

तीन गार्ड उसकी तलाश में कुछ दूर तक गए—फिर वापिस लौट आये।

गेट पर पड़े दोनों गार्डों में से एक दम तोड़ चुका था जबकि दूसरा आखिरी सांसें ले रहा था।

किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि गोली चलाने वाला कौन था और उसने गार्डों पर गोली क्यों चलाई।

"मुझे तो लगता है कि कोई जनाबेआला को खत्म करने के लिये आया था।"

एक बोला।

"नहीं—उसकी दुश्मनी इनसे ही लगती है।" दूसरा बोला—"अगर जनाबेआला को मारना होता तो वह पूरी फौज के साथ आता—यूं इन दोनों की मार कर भाग नहीं जाता।"

"ऊपर से जनाबेआला भी यहां नहीं हैं!"

इधर उनकी बातें हो रही थीं—उधर एक गार्ड ने पुलिस को फोन कर दिया।

जब तक पुलिस यहां पहुंचती—दूसरा गार्ड भी दम तोड़ चुका था।

पुलिस इंस्पैक्टर को जब पता लगा कि वह आई.एस.आई. के एक आला अफसर की कोठी है तो उसने सबसे पहले दोनों गार्डों की लाशों को पोस्टमार्टम के लिये रवाना किया—फिर गार्डों से पूछताछ करने लगा।

□□□

"धांय...धांय...।"

गोलियों की आवाजें सुनते ही रीमा राठौर के होंठों पर

https://t.me/Hindiupanyas

मुस्कान नाच उठी।

मगर अभी वह एक्शन में नहीं आई—हां—एक्शन में आने के लिये तैयार जरूर हो गई थी वह।

तभी उसे भागते हुए कदमों की आवाजें सुनाई दीं।

रीमा राठौर ने रस्सी को घुमाया और उसे बाउण्ड्री वाल के सिरे पर उछाल दिया।

एंकर कटीली तारों को पार कर गया।

रीमा राठौर ने रस्सी को खींचा तो एंकर सबसे ऊपरी कंटीले तार में फंस गया।

रस्सी को झटका देकर रीमा राठौर ने कंटीले तार की मजबूती को परखा और फिर बंदर की तरह ऊपर चढ़ने लगी।

कुछ ही देर में वह दीवार पर लोहे के एंगल को पकड़े खड़ी थी जो कि दीवार के भीतर धंसा हुआ था—और जिससे तारें बंधी हुई थीं।

उसने एंकर को निकालकर रस्सी को खींचा और फिर रस्सी को भीतर की तरफ लटकाकर एंकर को भी नीचे फेंक दिया।

तत्पश्चात उसने ऊपरी तार को ऊपर उठाया और झुक कर तारों के बीच से होकर जैसे ही तारों के बीच में से निकली—

"चर्र...चर्र...।"

उसकी कमीज का पिछला भाग तार से उलझ कर लम्बाई में चिरता चला गया।

उसके साथ ही उसकी पीठ पर एक लम्बी खरोंच भी खिंच गई।

मगर ऐसी खरोंचों की भला उसे क्या परवाह थी!

तारों के भीतरी तरफ होकर उसने नीचे छलांग लगा दी।

'धप्प' की तेज आवाज के साथ उसके पैर लान की घास पर पड़े।

रीमा राठौर हल्की सी लड़खड़ाई—फिर सीधी हो गई।

आनन-फानन उसने एंकर तथा रस्सी समेटी और उसे लान में ही एक झाड़ी के पीछे फेंक कर पिछले कम्पाउण्ड की तरफ लपकी।

कम्पाउण्ड में आकर उसने दरवाजे को भीतर की तरफ धकेला और दरवाजे में प्रवेश कर गई।

आगे करीब बीस फीट लम्बी गली थी जिसके अंत में हाल

https://t.me/Hindiupanyas

नजर आ रहा था।

रीमा राठौर ने रिवाल्वर निकाल कर हाथ में ले ली और आगे बढ़ने लगी।

बैग उसके कंधे से लटक रहा था।

पूरी सतर्कता से आगे बढ़ती हुई वह हाल में आ गई।

उसके हाथ में थमी रिवाल्वर किसी भी पल गरजने को पूरी तरह से तैयार थी।

हाल में दो कमरे बांई तरफ बने हुए थे तथा तीन कमरे दांई तरफ थे।

अपनी तरफ से पूरी तेजी दिखाते हुए रीमा राठौर एक-एक कमरे को चैक करने लगी।

उसने बांई तरफ के पहले कमरे में झांका तो उसके होंठों पर विषैली मुस्कान नाच उठी।

वह कमरा अन्य कमरों से काफी बड़ा था और सबसे शानदार ढंग से सजा हुआ था।

कमरे के बीचो-बीच डीलक्स साइज का शानदार डबलबैड पड़ा था—जिसके करीब साइड स्टूल पर सुनहरी रंग का टेलीफोन रखा था। छत पर बैड के ऐन ऊपर शीशे की टुकड़ियों का बना फानूस लटक रहा था।

दांई तरफ विदेशी क्लर टी.वी. दीवार में एक फ्रेम की भांति लगा हुआ था।

रीमा राठौर कमरे में प्रविष्ट हुई और दरवाजे को आहिस्ता से मिला कर बाथरूम के दरवाजे की तरफ बढ़ गई।

कुछ ही देर में वह बाथरूम में थी—और अब उसे इंतजार था हाशिम रजा के वहां पहुंचने का।

□□□

हाशिम रजा जिस वक्त मकान नम्बर एक सौ सात में पहुंचा—उस वक्त वह मकान फौजियों से पूरी तरह से घिर चुका था।

वह अपनी कार से निकला तो फौरन छः गार्डों से घिर गया।

गार्डों के बीच शान से चलता हुआ वह गेट पर खड़े दो फौजियों के पास पहुंचा—जिन्होंने सीना बाहर करके उसे सलाम ठोका।

https://t.me/Hindiupanyas

"पकड़े गए वे दोनों?" पूछा हाशिम रजा ने।

"नो सर।" एक व्यक्ति बोला।

हाशिम रजा का फूला हुआ सीना उसकी न सुन कर वहीं पिचक गया।

"पूछताछ जारी है सर।" दूसरा बोला।

"पूछताछ?"

"घर के मालिक से रीमा राठौर के बारे में पूछा जा रहा है।" पहले वाला बोला।

हाशिम रजा ने गहरी सांस छोड़ी और इधर-उधर सतीश रावण की तलाश में गर्दन घुमाई।

मगर वह वहां होता तो ही नजर आता न--वह तो उस वक्त उसकी कोठी के इर्द-गिर्द मंडरा रहा था।

जब सतीश रावण उसे कहीं नजर नहीं आया तो वह मकान के भीतर प्रवेश कर गया। भीतर मकान के एकमात्र कमरे में करीब साठ साल का मरियल-सा बूढ़ा छः सिपाहियों से घिरा हुआ था। उसके चेहरे पर चोटों के निशान थे तथा आंखों के नीचे बने नील बता रहे थे कि काफी पिट चुका था वह।

हाशिम रजा को देखते ही एक फौजी ने सलाम किया, जबकि अन्य तन कर खड़े हो गए।

"कुछ बताया इसने?"

"नहीं जनाबेआला।" सलाम करने वाला जो कि कैप्टन के रैंक का था, बोला।

हाशिम रजा ने बूढ़े की तरफ देखा। बूढ़े की हालत बता रही थी कि वह अपनी बर्दाश्त से कहीं ज्यादा पिट चुका है।

"क्या नाम है तेरा?" हाशिम रजा ने पूछा।

"ल...लियाकत अली।" बूढ़ा बड़ी मुश्किल से कह पाया।

"अकेला रहता है तू?"

"जी हां हुजूर। तीस साल से इसी मकान में रह रहा हूं।"

"काम क्या करता है?"

"अब तो घर पर ही रहता हूं हुजूर—पहले रेहड़ी लगाता था। म...मैं खुदा की कसम खा कर कहता हूं कि मैं किसी रीमा राठौर को नहीं जानता—और न ही मैंने किसी को पनाह दी है। पता नहीं किसने मुझसे क्या दुश्मनी निभाई है...।"

हाशिम रजा को वह सच बोलता नजर आया। और उस कमरे की हालत भी बता रही थी कि वह गरीबी का जीवन बिता

https://t.me/Hindiupanyas

रहा है। अगर वह भारतीय जासूस होता तो उसकी ऐसी हालत हरगिज नहीं होती।

हाशिम रजा ने उससे कुछ सवाल और किये और यह ऐलान कर दिया कि रीमा राठौर वहां आई ही नहीं। उसे मिलने वाली खबर झूठी थी।

मन ही मन सतीश रावण को गालियां निकालते हुए वह वापिस अपनी कार में बैठा और अपनी कोठी के लिये रवाना हो गया।

वह दावे से कह सकता था कि रीमा राठौर वहां नहीं पहुंची थी।

मगर उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि सतीश रावण ने उसे झूठी रिपोर्ट क्यों दी।

कहीं वह कोई खेल तो नहीं खेल रहा?

सहसा ही उसके जेहन में यह प्रश्न उभरा।

कैसा खेल?

इसका कोई जवाब नहीं था उसके पास।

सोचों के दौरान जेहन में यह भी आया कि हो सकता है वह भी फार्मूले को हासिल करने के लिये आया हो। मगर अपनी इस सोच को उसने उसी वक्त नकार दिया। उसकी दलील यह थी कि उसे यह भी नहीं पता था कि रीमा राठौर किसी फार्मूले की खातिर यहां आई है। और अगर वह फार्मूले की खातिर आया होता तो कहीं न कहीं वह उससे जरूर बात करता—जबकि उसने तो ऐसा कोई जिक्र ही नहीं छेड़ा।

इन्हीं सोचों में डूबा वह अपनी कोठी पर पहुंचा तो उसे अपने दो गार्डों की मौत की खबर मिली।

सुनकर बुरी तरह से चौंका वह और इंस्पैक्टर की तरफ देखते हुए बोला—

"यहां की पूछताछ कर ली तुमने इंस्पैक्टर?"

"जी जनाब।" तत्परता से बोला इंस्पैक्टर।

"तो जाकर कातिल को ढूंढो—और अगर मुझसे कुछ पूछना चाहते हो तो सुबह आना।"

इंस्पैक्टर की भला क्या मजाल जो वह इन्कार करता।

तुरंत वह अपने सिपाहियों के साथ वहां से रवाना हो गया।

हाशिम रजा ने लान के ड्यूटी पर तैनात गार्डों से पूछा तो उन्होंने सारी बात कह सुनाई।

https://t.me/Hindiupanyas

हाशिम रजा के दिमाग में फौरन सतीश रावण का नाम उभरा।

"जरूर गार्डों को उसी ने मारा है...।" वह मन ही मन बड़बड़ाया।

"मगर क्यों?" उसने स्वयं से सवाल किया—"भला गार्डों से उसकी क्या दुश्मनी थी जो उसने उन्हें मार डाला। हो सकता है किसी और ने आपसी रंजिश के कारण गार्डों को मारा है।"

इन्हीं सोचों में उलझा हुआ वह कोठी में पहुंचा और अपने बैडरूम में आ गया।

साढ़े बारह बज चुके थे—इसलिये उसने तमाम सोचों को सुबह तक के लिये टाला और सिटकनी चढ़ाकर अपने कपड़े उतारने लगा।

कुछ ही देर में वह सिर्फ कच्छे और बनियान में था।

फ्रैश होने के लिये उसने बाथरूम का दरवाजा खोला और जैसे ही वह बाथरूम में प्रविष्ट हुआ—उसकी पसलियों से रिवाल्वर की ठण्डी नाल आ लगी।

बुरी तरह से उछल पड़ा हाशिम रजा—साथ ही उसकी गर्दन तेजी से बांई तरफ घूमी।

सामने एक मुंहासे भरे चेहरे वाली काली औरत खड़ी मुस्कुरा रही थी।

"कौन है तू?" किसी तरह स्वयं पर काबू करते हुए गुर्राया हाशिम रजा—"और तेरी हिम्मत कैसे हुई मेरे स्नानगाह में घुसने की?"

"सिर्फ मेरा नाम सुनकर ही तू सब कुछ समझ जाएगा। रीमा राठौर है मेरा नाम।"

बुरी तरह से उछल पड़ा हाशिम रजा।

आंखों में अविश्वास के भाव उभर आये।

"त...तू रीमा राठौर है?"

"क्यों? कोई शक है तुम्हें?"

"नहीं.....तू रीमा राठौर नहीं हो सकती। रीमा राठौर की बाबत मुझे जो जानकारी मिली है—उसके मुताबिक रीमा राठौर निहायत ही खूबसूरत और जवान खातून है।"

"यह सब मेकअप का कमाल है हाशिम रजा। अगर तू अब भी विश्वास नहीं करता तो न सही। बस तू इतना समझ ले कि मैं वह सब कुछ जानने आई हूं जो कि रीमा राठौर जानना

https://t.me/Hindiupanyas

चाहती है।"

हाशिम रजा के होंठों पर अचानक मुस्कान रेंग गई।

"जानती है कहां खड़ी है तू?" वह गुर्राया—"मेरी एक आवाज तुझे मौत की नींद सुला सकती है।"

"मैं तो जब मरूंगी सो मरूंगी—उससे पहले मैं तेरे सीने में बारूद उतार दूंगी—तू चीख तो सही—फिर देख मेरी रिवाल्वर से गोली कैसे निकलती है।"

हाशिम रजा हड़बड़ाकर रह गया।

तभी एकाएक ही रीमा राठौर ने उस पर छलांग लगा दी।

इस आकस्मिक हमले के लिये हाशिम रजा कतई तैयार नहीं था—सो वह बुरी तरह से हड़बड़ा उठा और उसका सिर बाथरूम के फर्श पर जा टकराया।

आंखों के आगे लाल-पीले तारे नाच उठे उसकी।

आनन-फानन रीमा राठौर ने अपना दुपट्टा उतारा और हाशिम रजा के मुंह में ठूंसती चल गई।

तत्पश्चात् उसने रिवाल्वर उसके माथे से लगाई और फुंफकारी—

"कत्ल करने का मुझ कोई शौक नहीं हाशिम रजा—मगर अगर तूने मुझे मजबूर किया तो मुझे तेरा कत्ल करते हुए जरा भी दुख नहीं होगा। इसलिये ऐसे ही लेटा रह।"

कह कर उसने रिवाल्वर उस पर ताने हुए ही बैग में से टेप निकाली और उसके मुंह पर चिपका दी।

तत्पश्चात् उसने बैग में से रस्सी निकाल कर बेदर्दी से उसे नल के साथ बांध दिया।

अब वह पूरी तरह से सन्तुष्ट थी। हाशिम रजा अब न तो चीख सकता था—और न ही हिल-डुल सकता था।

"हां—अब ठीक है।" रीमा राठौर उसके पास से हटते हुए बोली—"अब मैं तेरे से तसल्ली से पूछताछ कर सकती हूं। मगर उससे पहले मैं तुम्हें यह साबित करके बताऊंगी कि मैं ही रीमा राठौर हूं।"

कह कर रीमा राठौर ने अपनी कमीज ऊपर उठाई।

"मेरा पेट देखा हाशिम रजा।" वह बोली—"कैसा काला है। अब ऊपर देख।" कह कर उसने कमीज ऊपर उठाई और ब्रा में बंद अपनी छातियों को बाहर निकाल लिया।

बिल्कुल ऐसा लग रहा था जैसे काले अंधेरे आसमान में दो

https://t.me/Hindiupanyas

चन्द्रमा उभर आये हों।

"मेरा ख्याल है अब तुझे तसल्ली हो गई होगी कि मैं रीमा राठौर ही हूं।"

रीमा राठौर मुस्कुराई।

बोल तो कुछ सकता नहीं था हाशिम रजा—मगर उसकी फट रही आंखें उसके दिल में मच रही खलबली को साफ दर्शा रही थीं।

रीमा राठौर ने अपनी छातियों को ब्रा में फंसाया और कमीज को नीचे करते हुए बोली—

"तू जानता है कि फार्मूला कहां है?"

हाशिम रजा ने सिर दांये बांये हिलाया।

"नहीं जानता?"

हाशिम रजा ने पुनः सिर हिलाया।

रीमा राठौर ने बैग खोला और उसमें से तीन-तीन इंच लम्बी तीस-चालीस कीलें निकाल लीं।

फिर उसने रबड़ का बना हथौड़ा निकाला।

"यह हथौड़ा देख रहा है हाशिम रजा—जब यह कील पर बजेगा तो इसकी चोट तो लोहे की हथौड़ी के बराबर होगी—मगर टन की आवाज बिल्कुल नहीं निकलेगी। यानि तेरे किसी गार्ड को कोई आवाज नहीं आयेगी।"

कह कर उसने कीलों की तरफ उंगली की।

"यह चालीस से थोड़ी ज्यादा कीलें हैं—जिन्हें मैं एक-एक करके तेरे जिस्म में ठोकूंगी—और आखिरी दो कील तेरी आंखों में ठोकूंगी। मुझे उम्मीद है कि तुझे जल्दी ही याद आ जाएगा कि तुझे पता है कि फार्मूला कहां है। और जैसे ही तुझे याद आये—तू सिर को ऊपर नीचे हिला देना—ऐसे।"

रीमा राठौर ने सिर को हां में हिलाया।

"और अगर तमाम कील ठुकने के बाद भी तुझे याद नहीं आया तो मैं वादा करती हूं कि मैं तुझसे कुछ भी पूछे बिना वापिस चली जाऊंगी।"

हाशिम रजा की आंखों में खौफ छा गया। उसका चेहरा पीला पड़ गया।

रीमा राठौर ने एक कील उठाई और हाशिम रजा के पैरों के करीब बैठते हुए बोली—

"यहां से शुरू करती हूं...।"

https://t.me/Hindiupanyas

कह कर उसने कील को उसके पैर पर रखा और ऊपर रबड़ के हथौड़े की चोट की।

हाशिम रजा का जिस्म जोरों से तड़पा—उसकी आंखों में बेपनाह दर्द उमड़ आया।

"गोंऽऽऽ गोंऽऽऽ।" उसके बंद मुंह से घुटी-घुटी आवाज निकली।

मगर रीमा राठौर ने उसके तड़पने की परवाह नहीं की और उसकी टांगों पर बैठकर कील पर पुनः चोट की।

चौथी चोट पर कील हाशिम रजा के पैर के तलवे से बाहर निकल आई।

रीमा राठौर ने दूसरी कील उठाई और बड़ी बेदर्दी से हाशिम रजा के टखने के नीचे ठोक दी।

उसने हाशिम रजा की तरफ देखा—जिसका चेहरा पसीने से तर-बतर हो रहा था—आंखों में पीड़ा के तूफान उठ रहे थे।

"कुछ याद आया?" वह मुस्कुराई।

हाशिम रजा ने तेज सांसें छोड़ते हुए इन्कार में सिर हिलाया।

रीमा राठौर ने एक और कील उठाई और उसके दूसरे पैर में ठोंक दी।

उस वक्त वह छठी कील ठोंकने जा रही थी जब हाशिम रजा की नाक से गों-गों की आवाज निकली।

रीमा राठौर मुस्कुराई।

"याद आया?" उसने पूछा।

हाशिम रजा का सिर ऊपर नीचे हिला।

"तू जानता है फार्मूला कहां है?"

हाशिम रजा का सिर पुनः हां की सूरत में हिला।

"यह भी जानता है कि उसकी हिफाजत के क्या बंदोबस्त हैं?"

हाशिम रजा का सिर पुनः हिला।

रीमा राठौर मुस्कुराई और कील और हथौड़े को फर्श पर रखकर खड़ी हो गई।

उसने पहले बाथरूम का दरवाजा बंद करके सिटकनी चढ़ाई—फिर उसके पैर पर आकर बैठ गई।

रिवाल्वर निकालकर उसने हाथ में ले ली और गुर्राई—

"मैं तेरा मुंह खोलने जा रही हूं हाशिम रजा—अगर तूने

https://t.me/Hindiupanyas

शोर मचाने की कोशिश की तो फिर मैं तेरे से कोई सवाल नहीं करूंगी—पूरी कीलें तेरे जिस्म में ठोंक दूंगी।"

कह कर उसने उसके मुंह से एक तरफ से टेप हटाई—जबकि दूसरी तरफ से चिपकी रहने दी।

फिर उसने उसके मुंह से ठुंसा अपना दुपट्टा निकाल दिया।

दुपट्टा निकलते ही हाशिम रजा के होंठों से पीड़ा भरी कराहें फूट पड़ीं।

"खामोश।" फुंफकारी रीमा राठौर।

हाशिम रजा के होंठ फौरन बंद हो गए—मगर उसका चेहरा बता रहा था कि वह जोर-जोर से चीखना चाहता है।

"म...मेरे पैरों से कील निकालो।" वह छटपटाते हुए बोला।

"कीलें तभी निकलेंगी जब तू सब कुछ सच-सच बता चुका होगा।"

"म...मैं मरा जा रहा हूं।"

"घबरा नहीं—मैं तुझे मरने नहीं दूंगी।"

"म...मैं...।"

"बात को जितना लम्बा खींचेगा—तेरी तकलीफ उतनी ही बढ़ती जाएगी—इसलिये बोल फार्मूला कहां है?"

"अ...अल्लापुर...।"

"वो कहां है?"

हाशिम रजा ने बताया।

"अल्लापुर में कहां?"

"लाल कोठी में।"

"लाल कोठी कहां पर है?"

"कैंट में।"

"यानि फार्मूला अल्लापुर कैंट में लाल कोठी में पड़ा है।"

"हां।"

"अब यह भी बोल कि लाल कोठी में कहां पड़ा है फार्मूला।"

हाशिम रजा ने बताया।

"उसके सुरक्षा प्रबंधों के बारे में बोल।"

हाशिम रजा उसे सब कुछ बताने लगा।

एक घण्टे तक रीमा राठौर उससे गहन पूछताछ करती रही। जब उसे यह लगा कि अब पूछने लायक कुछ नहीं रहा तो उसने रिवाल्वर की नाल उसके मुंह में घुसेड़ दी।

https://t.me/Hindiupanyas

"मेरी रिवाल्वर में साइलेंसर नहीं है।" वह बोली—"इसलिये तेरे मुंह का इस्तेमाल कर रही हूं।"

हाशिम रजा की आंखों में मौत नाच उठी।

"अपनी मेहनत से तो तुम पाकिस्तानी कुछ कर नहीं सकते इसलिये चोरी करने लगे...और ऐसे चोरों के लिये मेरे दिल में जरा भी रहम नहीं।"

कहने के साथ ही उसने रिवाल्वर की नाल को उसके हलक में घुसेड़ दिया और ट्रिगर दबा दिया।

गोली हाशिम रजा का हलक फाड़ती हुई निकल गई।

वह जोरों से तड़पा—फिर शांत हो गया।

रीमा राठौर उसके ऊपर से उठी और बाथरूम से बाहर निकलकर कमरे में आ गई।

वह सीधा कबर्ड की तरफ बढ़ी।

कबर्ड के सामने आकर उसने दरवाजा खोला और भीतर से कोई चीज उठाकर अपनी ब्रा में डाली और वहां से हट गई।

वह कमरे के दरवाजे के करीब आई और झुक कर की-होल में झांका।

हाल में उसकी तरफ पीठ किये एक व्यक्ति सोफे पर बैठा नजर आया उसे।

रीमा राठौर आहिस्ता से सीधी हुई और बिना कोई आवाज पैदा किये सिटकनी गिरा कर धीरे से दरवाजा खोला और उस व्यक्ति की तरफ बढ़ी जो कि सोफे पर बैठा था।

जब तक उस व्यक्ति को अपने पीछे किसी की मौजूदगी का आभास होता—रीमा राठौर ने पीछे से उसके गले में बांह डाली और एक तेज झटका दिया।

"कड़क" की हल्की आवाज के साथ उसकी गर्दन की हड्डी टूट गई।

रीमा राठौर ने उसकी गर्दन छोड़ी और उसकी गोद में पड़ी कारबाइन उठा ली।

पूरी तरह से सतर्क वह जिस रास्ते से आई थी, उसी रास्ते से कम्पाउण्ड में पहुंच गई।

कम्पाउण्ड में खड़े-खड़े ही उसने सामने दीवार की तरफ देखा।

छत पर आदमी मौजूद थे—उनकी निगाहों से बचकर उसे पहले रस्सी द्वारा एंकर फंसाना था—फिर दीवार फांदनी थी।

https://t.me/Hindiupanyas

अभी वह यह सोच ही रही थी कि क्या किया जाए—उसकी निगाहें दीवार के उस हिस्से पर पड़ीं जहां पर कि दीवार की पूरी ऊंचाई तक आंधी-आंधी ईंट बाहर निकली हुई थी—ऐसे जैसे कमरा बनाने के लिये उन ईंटों को निकाला गया हो।

समस्या हल हो चुकी थी उसकी।

फिर भी खतरा तो था ही—ऊपर से किसी की भी नजर पड़ सकती थी।

और यह खतरा तो उठाना ही था उसे।

उसने कारबाइन को कंधे पर लटकाया और पंजों के बल चलती हुई दीवार की तरफ बढ़ी।

लान पार करके वह दीवार के करीब पहुंची और गर्दन उठाकर ऊपर छत की तरफ देखा।

कोई भी नजर नहीं आया उसे।

तुरंत उन ईंटों की सीढ़ी बनाते हुए वह तेजी से ऊपर चढ़ने लगी।

दीवार के सिरे पर पहुंचकर अभी वह कांटेदार तारों के बीच से निकल ही रही थी कि ऊपर से कड़कती आवाज आई—

"कौन है?"

रीमा राठौर ने फौरन बाहर की तरफ छलांग लगा दी।

ठीक तभी कई गोलियां उसकी तरफ लपकीं।

"रेट-ट-ट-ट-ट।"

मगर रीमा राठौर सकुशल थी—गोलियां उसके ऊपर से निकल गई थीं।

सड़क पर पैर लगाते ही वह एक तरफ लुढ़की—सम्भली खड़ी हुई—कुछ दूर लड़खड़ाकर भागी—फिर उसने पूरी रफ्तार पकड़ ली।

अभी वह गली के मोड़ के करीब ही पहुंची थी कि एक बाइक उसके सामने से धीमी गति से गुजरी।

"बाइक रोको।"

रीमा राठौर एकदम से गुर्राई और कारबाइन कंधे से उतार कर बाइक वाले की तरफ तान दी।

गली में अंधेरा था—इसलिये रीमा राठौर यह नहीं देख पाई कि बाइक पर कौन बैठा है।

सतीश रावण था बाइक पर—जो कि उसी का इंतजार कर रहा था।

https://t.me/Hindiupanyas

अपनी आंखों से उसने सिकंदर ठाकरे को दोनों गार्डों को मारते देखा था—रीमा राठौर को पिछली गली में जाते देखा था—और तब से वह रीमा राठौर के बाहर निकलने का इंतजार कर रहा था।

जैसे ही उसने ऊपर से गोलियां चलने की आवाजें सुनीं, उसने फौरन बाइक स्टार्ट की और गली में प्रवेश कर गया।

रीमा राठौर उछल कर उसके पीछे बैठी और फुंफकारी—

"बाइक चला—और जितनी जल्दी यहां से दूर होगा—उतनी ही जल्दी तुझे मुझसे छुटकारा मिल जायेगा।"

सतीश रावण ने बाइक को एकदम से गति दे दी।

वहां से काफी दूर निकलकर रीमा राठौर ने उसे बाइक को हाजी अली पीर रोड की तरफ बाइक ले जाने को कहा।

करीब दस मिनट बाद बाइक उस रोड पर थी।

रीमा राठौर ने एक अंधेरे स्थान पर गाड़ी रोकने को कहा।

सतीश रावण ने चुपचाप बाइक रोक दी।

रीमा राठौर नीचे उतरी और गुर्राई—

"बिना पीछे मुड़े सीधे चलता जा।"

सतीश रावण ने बाइक वहां से ऐसे भगाई जैसे जान बचाने का उसे यही एक मौका मिला हो।

रीमा राठौर तुरंत वापिस मुड़ी—और थोड़ा आगे चलकर बांई तरफ मुड़ गई।

तीन-चार गलियों को पार कर वह अपने मकान के सामने आ कर रुकी और बैल पुश दबा दिया।

"कौन?"

भीतर से सिकंदर ठाकरे की आवाज आई।

"मैं हूं।" रीमा राठौर बोली।

दरवाजा खुला और रीमा राठौर भीतर प्रवेश कर गई।

उसके हाथों में कारबाइन देख सिकंदर ठाकरे चौंका।

"यह कारबाइन....।"

"दरवाजा बंद करो और अन्दर आ जाओ।"

रीमा राठौर उसकी बात को काटते हुए बोली और भीतर की तरफ बढ़ गई।

सिकंदर ठाकरे ने दरवाजा बंद करके कुण्डा लगाया और रीमा राठौर के पीछे-पीछे चलता कमरे में आ गया।

"यह कारबाइन कैसे हथियाई?" उसने बैड पर बैठते हुए पूछा।

https://t.me/Hindiupanyas

रीमा राठौर ने कारबाइन बैड पर रखते हुए उसे बताया। और फिर वह कोठी में दाखिल कैसे हुई, यह बताया।

"काम हुआ?"

रीमा राठौर मुस्कुराई—"जब आपरेशन पर रीमा राठौर निकले तो काम कैसे नहीं होगा!"

"यानि हुआ?"

"हां, हुआ।"

"कहां है फार्मूला?"

"अल्लापुर में...कैंट में...लाल कोठी में।"

"उसके सुरक्षा प्रबंधों के बारे में भी पूछा?"

"वो भी पूछा।"

"क्या है सुरक्षा प्रबंध?"

"वो भी बताऊंगी—पहले यह पूछो कि शफीक कौन है?"

सिकंदर ठाकरे एकदम से सीधा होकर बैठ गया।

"तुम जानती हो उसे?"

"हाशिम रजा से पता लगा।" मुस्कुराई रीमा राठौर।

"कौन है शफीक?"

"सतीश रावण।"

सिकंदर ठाकरे इतनी जोरों से उछला मानो उसके कानों के करीब परमाणु विस्फोट हुआ हो।

"वह हरामी....।" वह अविश्वास भरे स्वर में बोला—"धोखेबाज...कमीना...अपराधी।"

"बिल्कुल वही।"

सिकंदर ठाकरे के चेहरे पर बेचैनी उभरी।

"क्या हाशिम रजा उसे जानता था?" वह बोला।

"उसी ने तो हमारे वाले स्थान से हमें उखाड़कर यहां फिट किया था और हाशिम रजा को फोन करके हमारे बारे में सूचना दे दी कि हम यहां छुपे हुए हैं। और ऐसा उसने सिर्फ इसलिये किया कि वह आई.एस.आई. के दिल में अपना विश्वास जमा सके।"

"फिर तो अकरम को भी उसी ने ही मारा होगा।"

"वो तो जाहिर हो रहा है।"

"मगर वो यहां पहुंचा कैसे? और फार्मूले से उसका क्या लेना-देना?"

रीमा राठौर ने उसे हाशिम रजा से मिली जानकारी के आधार पर सतीश रावण के पहुंचने के बारे में बताया, फिर बोली—

https://t.me/Hindiupanyas

"सतीश रावण के लिये सिर्फ दौलत ही उसका भगवान है—और धोखा देना उसकी फितरत है। अवश्य ही किसी ने उसके साथ कान्टैक्ट किया होगा और उससे फार्मूले का सौदा किया होगा।"

"कौन हो सकता है वो?"

कहते हुए सिकंदर ठाकरे की आंखों में सोचें उभर आईं।

"वह बात बाद में सोचने की है सिकंदर ठाकरे।" रीमा राठौर बोली—"उससे पहले हमें यह सोचना है कि सतीश रावण से कैसे निपटा जाए।"

"क्या मतलब?"

चौंका सिकंदर ठाकरे।

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी और पहलू बदलते हुए बोली—

"सतीश रावण नम्बर एक का हरामी है। वह इतना पहुंचा हुआ अपराधी है कि वह एक वक्त की रोटी भी खाता है तो उससे पहले किसी के खून से अपने हाथ रंगता है। मक्कार—धोखेबाज! बस यूं समझ लो कि ऐसी कोई बुराई नहीं जो उसमें न हो। इतना सब कुछ होने के बाद भी मैं उसके दिमाग की कायल हूं। वह एक मास्टर माइंड है और हर काम सोच समझ कर करता है। मैं उससे आज तक टकराई तो नहीं—मगर उसे रीड किया है मैंने—उसी से मैं इस नतीजे पर पहुंची हूं कि वह एक शातिर दिमाग का स्वामी है और हर वो काम कर सकता है जो बड़े-बड़े सूरमा भी नहीं कर सकते।"

सिकंदर ठाकरे भी गम्भीर हो गया।

"फिर तो वह हमारे लिये कभी भी खतरा बन सकता है।" वह बोला।

"हां...और यह भी जान लो कि हम हर वक्त, हर लम्हा उसकी निगाहों में हैं।" रीमा राठौर गम्भीरता से बोली—"हमारा उठाया गया हर कदम उसकी निगाहों में है।"

"यानी इस वक्त भी हम उसकी निगाहों में हैं।"

"बेशक—हाशिम रजा को उसने इसलिये बाहर भेजा था कि मैं उससे फार्मूले के बारे में जान सकूं—साथ ही वह यह भी जानता था कि आई.एस.आई. उसके इस कदम पर उसे कुत्ते की तरह सूंघना शुरू कर देगी। सो उसने पहले से ही अपने आपको छुपाने का रास्ता खोज लिया होगा।"

"साथ ही अब वह सिर्फ हम पर निर्भर हो गया है।"

https://t.me/Hindiupanyas

सिकंदर ठाकरे बोला।

"हां।" रीमा राठौर बोली—"इतना तो वह समझ ही गया होगा कि मैं फार्मूले के बारे में जान चुकी हूं। अब वह सिर्फ हम पर ही निगाह रखेगा और इस ताक में रहेगा कि कब मैं फार्मूला हासिल करूं—और कब वह बाज की तरह झपट्टा मार कर मुझसे फार्मूला हथियाये।"

"ओह!"

रीमा राठौर का चेहरा सख्त हो गया।

"अगर वह अपने हरामीपने में उस्ताद है तो मैं भी उसकी उस्ताद हूं। आज तक उसे कोई सवा सेर नहीं मिला इसलिये आज तक वह लोगों को बेवकूफ बनाता रहा—मगर आज उसकी मौत उसे मेरी तरफ खींच लाई है।"

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी और पहलू बदलते हुए बोली—

"पता नहीं क्यों—मुझे ऐसा लगता है कि सतीश रावण ही भेड़िया है।"

बुरी तरह से उछल पड़ा सिकंदर ठाकरे—उसके जेहन को तेज झटका लगा।

"यह तुम क्या कह रही हो? क्या ऐसा सोचने की कोई वजह है तुम्हारे पास?"

"भेड़िये का काम करने का ढंग भी वैसा ही था जैसा सतीश रावण का है।"

"हो सकता है सतीश रावण भेड़िये से प्रेरित हो।"

"हो सकता है—मगर उसके भेड़िया होने के सोचने की वजह एक और भी है।"

"क्या?"

"पांच-छः महीने पहले भेड़िया का नाम था—तब सतीश रावण को कोई जानता भी नहीं था। और पांच-छः महीने से भेड़िये का कोई पता नहीं और सतीश रावण के चर्चे हर तरफ हो रहे हैं।"

"ओह!"

"यह वजह भी मुझे सोचने को मजबूर करती है। बाकी हकीकत तो तभी पता चलेगी जब वह मेरे हाथों मरेगा—या मुझ पर सवार होगा। क्योंकि सिर्फ इन्हीं दोनों बातों से ही हकीकत के बारे में जाना जा सकता है।"

"या फिर वह खुद कबूल करे कि वह भेड़िया है।"

"हां।" रीमा राठौर ने सिर हिलाया।

https://t.me/Hindiupanyas

"फार्मूले के सुरक्षा प्रबंधों के बारे में क्या बताया हाशिम रजा ने?"

सिकंदर ठाकरे ने पूछा।

रीमा राठौर अभी बोलने ही जा रही थी कि टेलीफोन की घण्टी बज उठी।

"ट्रिन...ट्रिन...।"

रीमा राठौर के होठों पर विषैली मुस्कान नाच उठी।

"सतीश रावण का फोन है।" वह फोन की तरफ खिसकते हुए बोली—"अवश्य ही वह फार्मूले के बारे में जानने के लिये छटपटा रहा होगा।"

उसने रिसीवर उठाकर कान से लगाया और माउथपीस में बोली—

"हैलो।"

"शफीक बोल रहा हूं।" दूसरी तरफ से आवाज आई।

रीमा राठौर के होठों पर फैली मुस्कान तेज हो गई।

"हां बोलो।"

"हाशिम रजा से कुछ पता लगा?" आवाज आई।

"हां लगा।"

"क्या बताया उसने।"

"क्या करोगे जानकर?"

"अकरम मेरा दोस्त था—उसकी दोस्ती की खातिर ही मैंने तुम्हारे लिये इतना कुछ किया। हो सकता है अभी भी तुम्हारे काम आ जाऊं। आखिर खुफिया विभाग का एजेंट हूं मैं।"

"तुमसे हमें जितनी मदद की जरूरत थी, वह हमने ले ली। अब हमें तुम्हारी मदद की कोई जरूरत नहीं।"

"क्या मतलब?"

"थैंक्यू शरीफ—और आगे से हमें फोन नहीं करना।"

"त-तुम मेरी तौहीन कर रही हो—मैंने तुम्हारे लिये इतना कुछ किया और तुम मुझे यूं दुत्कार रही हो। जानती हो मैं अभी भी चाहूं तो तुम्हें फंसा सकता हूं।"

"जो कि तुम नहीं करोगे।" हंसी रीमा राठौर।

"क्या मतलब?"

"सोचोगे तो सब समझ आ जायेगा शरीफ उर्फ सतीश रावण उर्फ भेड़िया।"

दूसरी तरफ सन्नाटा छा गया।

"क्या हुआ—काठ मार गया क्या?" रीमा राठौर पुनः हंसी।

https://t.me/Hindiupanyas

"अब समझा...।" दूसरी तरफ से गहरी सांस छोड़ी गई—"तुमने मुझे पहचाना कैसे? मैंने शरीफ बनकर तुमसे कहा था कि मैं हाशिम रजा को कोठी से बाहर निकालूंगा—और हाशिम रजा ने तुमसे कहा कि मैंने यानी सतीश रावण ने उसे बाहर निकाला था।"

"शुक्र है समझ गए तुम।"

"मगर तुम्हें यह कैसे पता चला कि मैं भेड़िया हूं?"

रीमा राठौर हंसी।

"खैर—अब जब तुमने मुझे पहचान ही लिया है तो फिर तुम यह भी समझ गई होगी कि मैं क्या कर सकता हूं।"

"और तुम भी जानते हो भेड़िया कि मैं भी क्या-क्या कर सकती हूं।"

रीमा राठौर की आवाज में गुर्राहट उभरी आई।

"सौ करोड़ का फार्मूला है वह मेरे लिये—उसे पाने के लिये अगर मुझे पूरी दुनिया को ही खत्म क्यों न करना पड़े—मैं पीछे नहीं हटूंगा।"

दूसरी तरफ से फुंफकारती आवाज आई।

"वह फार्मूला मेरे देश की अमानत है सतीश रावण।" रीमा राठौर गुर्राई—"अगर उसके लिये मुझे अपनी जान भी देनी पड़ी तो मैं पीछे नहीं हटूंगी। और तेरे हाथों में तो वह फार्मूला हरगिज नहीं पड़ने दूंगी।"

"तू जानती है कि मैं ऐसे कामों में उस्ताद हूं।"

"और तू भी जानता है कि मैं उस्तादों की उस्ताद हूं।"

"ठीक है—देखते हैं कौन जीतता है बाजी।"

"बाजी तो मैं ही जीतूंगी सतीश रावण।"

"तो फिर एक सौदा कर ले।"

"कैसा सौदा?" रीमा राठौर की आंखें सिकुड़ीं।

"जब तक फार्मूला पाकिस्तानी सरकार के कब्जे में है—हममें से कोई भी एक-दूसरे पर हाथ नहीं डालेगा। हममें से उस्ताद कौन है—इसका फैसला फार्मूला हासिल होने के बाद किया जायेगा उससे पहले अगर जरूरत पड़ी तो हम एक-दूसरे की मदद करेंगे।"

रीमा राठौर ने एक पल के लिये सोचा—फिर बोली—

"ठीक है—मुझे मंजूर है। हालांकि तुम पर विश्वास करना सांप पर विश्वास करने के बराबर है—फिर भी मैं तुम पर विश्वास कर रही हूं।"

"तो फिर मैं तुम्हारे पास आ जाऊं—हम तीनों एक साथ

https://t.me/Hindiupanyas

कोशिश करेंगे तो फार्मूला जल्दी हथिया सकेंगे।"

साफ चैलेंज था यह रीमा राठौर के लिये। वह जानती थी कि भेड़िया किसी भी वक्त उसे धोखा दे सकता है—और इस वक्त वह यही जता रहा था कि अगर वह उससे नहीं घबराती तो वह उसे अपने साथ रख ले।

"आ जाओ।" वह बोली।

चैलेंज से पीछे हटना तो रीमा राठौर ने कभी सीखा ही नहीं था।

"मैं आ रहा हूं।"

दूसरी तरफ से आवाज आई और सम्बंध-विच्छेद हो गया।

रीमा राठौर ने रिसीवर रखा और गर्दन मोड़कर सिकंदर ठाकरे की तरफ देखा।

"क्या कह रहा था वह?"

रीमा राठौर ने उसे सब कुछ कह सुनाया।

बुरी तरह से उछल पड़ा सिकंदर ठाकरे—आंखों में हैरत उभर आई।

"यह क्या किया तुमने—एक दोमुंहे सांप को अपने साथ मिला रही हो तुम?"

रीमा राठौर के होठों पर विषैली मुस्कान नाच उठी।

"तुम देखते चलो ठाकरे...मैं क्या करती हूं।"

"तुम जो भी सोच रही हो, बहुत ही गलत सोच रही हो—मैं इस हक में नहीं हूं कि उसे अपने साथ मिलाया जाये—यह किसी भी वक्त बना-बनाया खेल बिगाड़ सकता है।"

"डिंग-डिंग-डिंग।"

तभी कालबैल बज उठी।

चौंका सिकंदर ठाकरे—"इतनी जल्दी आ गया वह।" हैरानी से बोला वह।

"तुम भूल रहे हो कि हम निरंतर उसकी निगाहों में हैं।" रीमा राठौर बोली।

"ओह!"

"जाओ दरवाजा खोलो।"

"मैं तो कहता हूं एक बार फिर सोच लो रीमा।"

"तुम दरवाजा खोलो।"

सिकंदर ठाकरे ने राहत भरी सांस छोड़ी और कमरे से बाहर निकल गया।

शीघ्र ही वह वापिस लौटा तो सतीश रावण उसके साथ

https://t.me/Hindiupanyas

था।

रीमा राठौर को देख वह धूर्तता भरी मुस्कान मुस्कराया—

"बड़ी काली और भद्दी हो गई हो...।" वह बोला—"पहली बार जब मैंने तुमसे रेप किया था, तब तो तुम बेहद खूबसूरत थीं।"

"बैठो।" रीमा राठौर उसकी बात का जवाब न देते हुए बोली।

सतीश रावण एक कुर्सी पर बैठ गया।

"मेरे द्वारा रेप की गई कोई भी औरत नहीं बच पाई—एक तुम ही ऐसी खुशकिस्मत थीं जो बच गईं। ऊपर वाले ने शायद इसी वक्त के लिये तुम्हें बचा लिया था।

"अच्छा।" हंसी रीमा राठौर—"यानी अब अगर तुम रेप करोगे तो मैं नहीं बचूंगी।"

"अब कुछ नहीं होगा तुम्हें—बल्कि पूरा आनन्द आयेगा। धर्मराज ने मुझे दो रूपों में से एक की तब्दीली कर दी है। अब मैं परमानेंट इसी जिस्म में रहूंगा और मेरी सांसों में कोई परिवर्तन नहीं होगा।"

"यानी यह तुम्हारा आखिरी जिस्म है।"

"हां...मगर यह मत भूल जाना कि मैं अपनी मौत के बारे में नहीं जानता। इसलिये तुम मुझे चाह कर भी नहीं खत्म कर सकतीं।"

"वह तो वक्त ही बतायेगा कि तुम खत्म होओगे या नहीं।"

"शुक्र मनाओ मेरा कि आज मैंने तुम्हें हाशिम रजा के गार्डों से बचाया।"

"क्या मतलब?"

"बाहर बाइक पर बैठकर तुम वहां से भागी थीं—उसे यह खिदमतगार ही चला रहा था।"

रीमा राठौर चौंकी और आंखें फाड़े उसे देखने लगी।

"वो...तुम थे?"

"जी हां।" बड़ी अदा से सतीश रावण ने सिर बनाया—"वैसे अपनी तरफ से मैंने स्कीम तो बहुत शानदार बनाई थी—मगर यही एक बेवकूफी कर गया कि हाशिम रजा को कोठी से निकाल दिया। अगर मैं थोड़ा सोचता तो मैं ऐसा हरगिज नहीं करता—बल्कि तुम्हें कोई और रास्ता सुझाता—जिससे कि तुम उस तक पहुंच जातीं—फिर तुम मुझे किसी भी सूरत में नहीं पहचान पातीं। और

https://t.me/Hindiupanyas

मैं तुम पर नजर रखे हुए उस वक्त का बेसब्री से इंतजार करता जब तुम फार्मूला हासिल करतीं।"

"अब तो तुम मेरे साथ आ रहे हो—उल्टे अब फार्मूला हासिल करना और आसान हो जायेगा तुम्हारे लिये।"

व्यंग्य से बोली रीमा राठौर।

"मैं तुम्हारे व्यंग्य को समझ रहा हूं रीमा राठौर—और देख लेना—इधर फार्मूला हमारे हाथ लगेगा, उधर तुम दोनों की लाशें बिछी होंगी।"

"हो सकता है लाश तुम्हारी बिछी नजर आये।"

"यह तो वक्त ही बतायेगा।" कहते हुए सतीश रावण के होठों पर गुर्राहट उभर आई।

"वक्त से पहले यूं एक-दूसरे से झगड़ोगे तो अपना ही नुकसान होगा।" तभी सिकंदर ठाकरे ने गम्भीरता से कहा।

दोनों ने सिकंदर ठाकरे की तरफ देखा और एक साथ गहरी सांस छोड़ी।

"तुम ठीक कहते हो।" सतीश रावण बोला—"यह सब बाद की बातें हैं। फिलहाल तो हमें यह सोचना है कि हमने करना क्या है?" उसने रीमा राठौर की तरफ देखा—"फार्मूला कहां है?"

"अल्लापुर में।"

"अल्लापुर?"

"अस्सी किलोमीटर दूर है अल्लापुर—वहां जाना पड़ेगा हमें।"

"उसकी सुरक्षा के क्या-क्या प्रबंध किये हुए हैं?"

"वहीं चलकर पूछना—पहले अल्लापुर तो पहुंच लें।" बोली रीमा राठौर—"अब तक तो अल्लापुर जाने वाले हर वाहन की पूरी बारीकी से चैकिंग हो रही होगी।"

"ओह!"

"हमने तो अपना मेकअप कर रखा है—तुम भी कर लो—क्योंकि हमारे साथ-साथ तुम्हारी भी व्यापक रूप से तलाश हो रही होगी।"

सतीश रावण ने सिर हिला दिया और फिर बोला—

"एक बात बताओ।"

"क्या?"

"हसन का खून क्यों किया तुमने?"

"हसन?"

"ह. हसन—ब्रिगेडियर था वह—और आई.एस.आई. का

https://t.me/Hindiupanyas

आला अफसर था।"

रीमा राठौर ने हैरत से सिकंदर ठाकरे की तरफ देखा।

सिकंदर ठाकरे भी हैरान हो रहा था।

"हम तो किसी हसन को जानते तक नहीं—उसका खून कैसे करेंगे?" सिकंदर ठाकरे बोला।

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"अगर तुम लोग सच कह रहे हो तो समझ लो—कोई और उस्ताद भी है पहुंच गया है यहां।"

बुरी तरह से चौंक पड़े दोनों।

"क्या मतलब?" चौंकते हुए बोली रीमा राठौर।

"हसन हाशिम रजा से भी बड़ा अफसर था। जाहिर है कि वह हाशिम रजा से ज्यादा ही जानता होगा—कल चौक के पास एक मकान में से उसकी लाश मिली—उसके साथ तीन लाशें और मिलीं।"

"ओह!"

"ऐसे में यही नजर आता है कि कोई और भी उस फार्मूले की ताड़ में है।"

"हो सकता है उसके कत्ल की कोई और वजह रही हो।" सिकंदर ठाकरे बोला।

"हो सकता है। फिर भी हमें यही सोचकर चलना है कि वजह फार्मूला है। तभी हम सावधान रह पायेंगे।"

रीमा राठौर ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया।

"वैसे मैंने आज एक आदमी को कार में जाते देखा था। उसे देखकर मुझे ऐसा लगा कि मैंने उसे भारत में कहीं देखा है। मगर यह याद नहीं आया कि वह है कौन?"

"याद करने की कोशिश करो—और जैसे ही याद आये, हमें बता देना।" रीमा राठौर बोली—"फिलहाल तुम अपना मेकअप कर लो।"

"वो उधर अलमारी में मेकअप का सामान रखा है—निकाल लो।"

सिकंदर ठाकरे ने अलमारी की तरफ इशारा किया।

सतीश रावण खड़ा हो गया।

□□□

बस रुकी तो बलराज गोगिया ने गर्दन उठाकर सामने देखा।

https://t.me/Hindiupanyas

उसके सामने एक ट्रक खड़ा था।

इस वक्त बलराज गोगिया ड्राइवर की सीट के पीछे दो सीट छोड़कर बैठा था।

उसके बराबर में करीब पचास साल की बूढ़ी औरत बैठी थी।

बलराज गोगिया ने गर्दन घुमाकर उस औरत की तरफ देखा।

औरत ने उसकी जांघ पर हाथ रखकर हल्के से दबाया—मानो कह रही हो घबराने की जरूरत नहीं।

रीमा राठौर ने गलत नहीं कहा था। जैसे ही आई.एस.आई. के सुप्रीमो अल मुहम्मद के पास हाशिम रजा के खून हो जाने की खबर पहुंची—उसने फौरन आदेश जारी कर दिया कि अल्लापुर जाने वाले तमाम वाहनों की पूरी सख्ती से चैकिंग हो—साथ ही बलराज गोगिया तथा रीमा राठौर और सतीश रावण के हुलिये भी बता दिये।

हाशिम रजा की मौत की खबर के साथ ही उसे सतीश रावण की खबर भी मिल गई थी कि उसी ने हाशिम रजा को रीमा राठौर की झूठी खबर देकर हाजी अली पीर वाले बाजार में बुलाया था।

अल मुहम्मद समझ गया कि सतीश रावण ने अपनी जात दिखा दी है—सो उसने उसे भी ढूंढने का हुक्मनामा जारी कर दिया। चंगेज खान भी समझ रहा था कि इस्लामाबाद से अल्लापुर तक बलराज गोगिया की व्यापक तलाश होगी—इसलिये उसने सी. आई.ए. की एजेंट फातिमा को बलराज गोगिया की मां बनाकर उसके साथ भेज दिया।

जिस वक्त सतीश रावण ने उसे कार में देखा था—उस वक्त वह फातिमा के घर जा रहा था।

वहां उसका हुलिया बदल गया और वह अंग्रेज से मुसलमान बन गया।

अब उसकी घनी दाढ़ी-मूंछ थी और बाईं आंख के नीचे एक काला मस्सा था। उसने सारे बाल पीछे को कस लिये थे।

बिल्कुल किसी मदरसे का मौलवी नजर आ रहा था वह।

करीब पांच मिनट बाद बस के आगे वाला ट्रक आगे बढ़ा तो बस आगे रेंगी।

इसी तरह आधा घण्टा तक वह रुक-रुककर चलती रही। इस बीच उसकी बस के पीछे वाहनों की लम्बी लाइन लग गई।

https://t.me/Hindiupanyas

आधे घण्टे बाद उसकी बस में पांच फौजी दाखिल हुए और बस के एक-एक मुसाफिर को इस तरह देखने लगे मानो उन्हें उसी की तलाश है।

बलराज गोगिया चुपचाप गर्दन झुकाये बैठ गया।

तभी उसके कंधे पर हाथ पड़ा।

न चाहते हुए भी बलराज गोगिया का कलेजा धड़क उठा। उसने गर्दन उठाकर देखा।

एक फौजी गहरी निगाहों से उसे घूर रहा था।

"कहां से आ रहा है?" फौजी ने रौब भरे स्वर में पूछा।

"इ-इस्लामाबाद से हुजूर।"

"टिकट दिखा।"

बलराज गोगिया ने अल्लापुर की दो टिकटें निकालकर उसकी हथेली पर रख दीं।

"मेरी अम्मी की और मेरी टिकट।" वह बोला।

फौजी ने टिकटें देखीं—फिर बलराज गोगिया की तरफ देखा।

"अल्लापुर जा रहा है?"

"ज-जी हुजूर।"

"किसी रिश्तेदार से मिलने?"

"ज...जी हां...मेरी आपा रहती हैं वहां।"

फातिमा के साथ होने से उस फौजी का संदेह कम हो चुका था—सो उसने यूं ही दो-तीन सवाल और किये और फिर बोला—

"सामान दिखा अपना।"

बलराज गोगिया ने पहले पीतल की दो गागर सीट के नीचे से निकालीं जिसमें कि देशी घी की पिन्नियां भरी हुई थीं।

पिन्नियां देखकर फौजी मुस्कराया।

"बच्चा हुआ है तेरी आपा का?" वह बोला।

"ज-जी हुजूर।"

फौजी ने गागर में से पांच-छः पिन्नियां निकालीं और बिना कोई और सामान देखे आगे बढ़ गया। साथ में पिन्नियां ले जाने की स्कीम बलराज गोगिया की थी—जो कि पूरी तरह से कामयाब रही थी।

फौजी को जरा भी शक नहीं हुआ—ऊपर से फातिमा का साथ रहा-सहा शक भी खत्म कर गया।

करीब दस मिनट बाद बस को उन फौजियों से निजात मिली।

https://t.me/Hindiupanyas

बस आगे बढ़ने लगी।

एक घण्टे बाद बसें अल्लापुर बस अड्डे पर रुकी तो उन यात्रियों के साथ बलराज गोगिया और फातिमा भी बस से उतरे और बाहर की तरफ बढ़ने लगे।

बस अड्डे गेट पर एक बार फिर उनसे पूछताछ हुई—और आठ दस पिन्नियां और कम हो गईं।

उन्होंने एक रिक्शा पकड़ा और वहां से रवाना हो गया।

करीब बीस मिनट बाद रिक्शा एक साधारण-से मकान के सामने रुकी।

"उतरो।"

फातिमा रिक्शा से उतरकर पीतल की गागर उठाते हुए बोली।

बलराज गोगिया ने रिक्शा का भाड़ा चुकाया और बैग उठाकर कंधे पर लटका लिया।

दोनों मकान के बंद दरवाजे के सामने आये।

बलराज गोगिया ने दरवाज़े की चौखट पर लगा बैल पुश दबाया और फातिमा की तरफ देखा—जो कि उसी की तरफ देखते हुए मुस्करा रही थी।

"कौन?" तभी भीतर से किसी औरत की आवाज आई।

"दरवाजा खोलो।" फातिमा बोली।

दरवाजा खुला।

सामने करीब बाइस-तेइस साल की भरपूर जवान युवती खड़ी थी। युवती की रंगत बेशक सांवली थी मगर उसके नयन-नक्श और फिगर बेहद आकर्षक थी।

युवती ने फातिमा को देखा तो मुस्कुरा दी।

"बड़े लम्बे अर्से के बाद नजर आई हो।" वह बोली और एक तरफ हट गई।

"आओ।" कहती हुई फातिमा भीतर प्रवेश कर गई।

पीछे-पीछे बलराज गोगिया भी भीतर प्रवेश कर गया।

मकान बाहर से जितना साधारण नजर आ रहा था—अंदर से उतना ही आकर्षक और तड़क-भड़क वाला था।

फर्श पर सफेद रंग का पत्थर लगा था। दीवारों पर हरा पेंट हुआ था।

जिस कमरे में वह युवती उन्हें लेकर आई—वह ड्राइंगरूम

https://t.me/Hindiupanyas

था—और उसमें रखी हर वस्तु यन्त्रचालित नजर आ रही थी।

फातिमा ने गागर फर्श पर रखी और बलराज गोगिया की तरफ इशारा करते हुए बोली—

"बलराज गोगिया—हिंदुस्तान से आया है। और यह बेनजीर है।" फातिमा ने युवती का परिचय कराया।

"आदाब।" युवती ने कातिल निगाहों से बलराज गोगिया को देखा।

"आदाब।" बलराज गोगिया मुस्कुराया।

"बैठिये।"

बलराज गोगिया और फातिमा सोफों पर बैठ गये।

"शेखू...चाय बना ला।" बेनजीर ऊंचे स्वर में बोली और बलराज गोगिया के सामने वाले सोफे पर बैठ गई।

"चीफ का फोन तो मिल गया होगा तुम्हें?" फातिमा बोली।

"हां...उन्होंने कहा था कि आपके साथ एक आदमी आ रहा है—वह जो कहे, मुझे वही करना है।"

कहते हुए उसने बलराज गोगिया की तरफ देखा।

"तुम्हें किसी भी चीज की जरूरत हो, मुहैया हो जायेगी।" वह बोली—"जो भी जानकारी चाहिये, हासिल हो जायेगी।"

बलराज गोगिया बोला कुछ नहीं—बस सिर हिला दिया।

"वैसे किस मिशन पर आये हो तुम?"

"पहले चाय पी लें—फिर बातें करेंगे।" फातिमा बोल पड़ी।

बेनजीर चुप हो गई।

थोड़ी देर बाद करीब दस-बारह साल का लड़का हाथों में चाय की ट्रे उठाये भीतर प्रविष्ट हुआ।

उसने ट्रे टेबल पर रखी और वापिस चला गया।

चाय पीने के उपरांत बेनजीर ने पुनः बात छेड़ी।

"हां बोलो बलराज गोगिया—किस मिशन पर आए हो तुम?"

"कैंट यहां से कितनी दूर है?" बलराज गोगिया ने पूछा।

"ज्यादा दूर नहीं—मुश्किल से दस मिनट का रास्ता है।"

"पैदल?"

"नहीं—किसी व्हीकल पर।"

"यानी आठ-दस किलोमीटर दूर है।"

"तुम इतना ही समझ लो।"

"कभी गई हो कैंट में?"

https://t.me/Hindiupanyas

मुस्कुरायी बेनजीर—"वहां तो आना-जाना लगा ही रहता है।" वह बोली।

बलराज गोगिया समझ गया कि उसका किस ढंग का आना-जाना लगा रहता है। कैंट में अवश्य ही वह कैंट के आला अफसरों का पहलू गर्म करने जाती होगी और वहां से जानकारियां हासिल करके सी.आई.ए. चीफ चंगेज खान को भेजती होगी।

"वहां किसके पास जाती हो तुम?"

"कर्नल अहसान अहमद के पास जाती हूं मैं।" बिना किसी हिचकिचाहट के बोली वह—"इसके साथ-साथ एक दो अफसरों से भी सम्बंध हैं मेरे।"

"आज भी जाओगी तुम?"

"अगर जरूरी है तो जाने में क्या हर्ज है।"

"तुम आज जाओगी वहां—और कैंट तक के रास्ते तक की रिपोर्ट दोगी मुझे।"

"चैक क्या करना है?"

"यही कि कैंट की तरफ जाने वाले लोगों से आर्मी वाले कैसे पेश आ रहे हैं?"

बेनजीर ने सिर हिला दिया।

"साथ ही तुम किसी ऐसी जगह की तलाश करके आओगी, जहां से लाल कोठी को देखा जा सके।" बेनजीर ने पुनः सिर हिला दिया।

"और कुछ?" पूछा उसने।

"लाल कोठी के भीतर गई हो तुम?"

"तीन-चार दफा जा चुकी हूं।"

"उसके बारे में बताओ।"

बेनजीर ने सोफे पर बैठे-बैठे पहलू बदला और कुछ देर सोचा और फिर कहने लगी—

"करीब बीस दिन पहले मैं लाल कोठी में आखिरी बार गई थी। उस रोज कर्नल अहसान अहमद की ड्यूटी लाल कोठी में थी—और उसने मुझे फोन करके बुलाया था।"

बलराज गोगिया चुपचाप गौर से उसकी बात सुन रहा था।

"उससे पहले मैं दो-तीन दफा अहसान अहमद के साथ गई थी—और तब किसी ने टोका नहीं था मुझे। मगर उस रोज मुझे लाल कोठी के गेट पर गार्डों ने रोक लिया। मैंने कहा भी कि मुझे कर्नल साहब ने बुलाया है—मगर उन्होंने मेरी बात जैसे सुनी ही नहीं। आखिर मुझे वापिस लौटना पड़ा। और तब कर्नल अहसान

https://t.me/Hindiupanyas

अहमद का एक व्यक्ति मेरे पास आया—मुझे पास दिया जिसके नीचे कर्नल के दस्तखत थे। मैं फिर वहां गई—और पास उन्हें दिखाया।

उन्होंने पास की पूरी बारीकी से जांच की। पूरी तसल्ली हो जाने के बाद उन्होंने मेरी अच्छी तरह से तलाशी ली और तब मुझे भीतर जाने दिया।"

"लाल कोठी भीतर से कैसी है—उसकी सुरक्षा व्यवस्था के बारे में बताने की जरूरत नहीं?"

बलराज गोगिया ने पूछा।

"वह एक छः मंजिला इमारत है।" बेनजीर बोली—"और पूरी की पूरी लाल रंग से पुती हुई है—उसकी हर मंजिल पर जाने के लिये एक अलग लिफ्ट है। हां सीढ़ियां एक ही हैं।

"यानी अगर किसी ने पांचवीं मंजिल पर जाना है तो वह उसी लिफ्ट में चढ़ेगा जो कि उसे सीधे पांचवीं मंजिल पर पहुंचायेगी।"

"हां।"

"और पहली मंजिल पर जाने के लिये भी अलग लिफ्ट होगी।"

"हां।"

"कमाल है।" बलराज गोगिया बोला—"तुम किस मंजिल पर जाती रही हो?"

"चौथी—वहां पर कर्नल अहसान अहमद का ऑफिस है। लाल कोठी का इंचार्ज भी वही है।"

"मगर अब इंचार्ज बदल चुका है...।" मुस्कुराया बलराज गोगिया।

"क्या?" बुरी तरह चौंकी बेनजीर।

"अब ब्रिगेडियर शमीम अख्तर है उस कोठी का इंचार्ज।"

"कमाल है—मुझे खबर भी नहीं।" हैरानी से बोली बेनजीर।

"खैर, तुम वही काम करो जो मैंने बताया है।"

अंदाज में बेनजीर ने सिर हिला दिया।

"और कर्नल अहसान अहमद का भी पता करना कि वह कहां है?"

बेनजीर ने पुनः सिर हिला दिया।

□□□

बाद दोपहर तीन बजे बेनजीर वापिस लौटी तो उसके चेहरे पर आश्चर्य का सागर ठाठें मार रहा था।

https://t.me/Hindiupanyas

आंखों में हल्की-सी उत्तेजना तथा नाराजगी के भाव नजर आ रहे थे।

"क्या रिपोर्ट है?" बलराज गोगिया उसके चेहरे पर निगाहें गड़ाते हुए बोला।

बेनजीर गहरी सांस छोड़ते हुए धम्म से सोफे पर बैठ गई।

"आज ऐसी जलालत मुझे कभी नहीं देखनी पड़ी।" वह बोली।

"हुआ क्या?" फातिमा ने पूछा।

"लाल कोठी तो क्या मुझे कैंट में भी दाखिल नहीं होने दिया गया।" वह बोली—"गेट पर खड़े फौजी मुझे जानते भी थे—फिर भी उन्होंने मुझे ऐसे दुत्कारा मानो मैं किसी गलत मकसद से वहां पहुंची हूं।"

"कौन से गेट से दाखिल हुई थीं तुम?"

"चार नम्बर गेट से—हमेशा वहीं से दाखिल होती थी।"

"क्या बात हुई गेट पर?"

"नाम सुनने को राजी ही नहीं था कोई। मैं वहां पहुंची और हमेशा की तरह बिना किसी से बात किये गेट में दाखिल होने जा रही थी कि एक फौजी ने मुझ पर कारबाइन तान दी—मैं तो हक्की-बक्की रह गई। वह फौजी मुझे अच्छी तरह से जानता था।"

"फिर?"

"फिर क्या—उसने कारबाइन की बैरल से मुझे पीछे धकेला और बोला—वापिस जाओ।"

"फिर?"

"मैंने उससे कहा कि मैं कर्नल साहब से मिलने आई हूं—तो वह बोला कि कर्नल साहब को साथ लेकर आओ—वर्ना वापिस जाओ।"

"ओह!"

"मैंने उससे यह भी कहा कि वह मुझे अच्छी तरह से जानता है—फिर भी इन्कार क्यों कर रहा है—तो जानते हो उसने क्या कहा?"

"क्या कहा?"

"उसने कहा वह मुझे जानता है—तभी तो कह रहा है—वर्ना अब तक वह मेरे सीने में गोली उतार चुका होता।"

"यानी जान-पहचान की वजह से तुम्हारी जान बची।"

"ऐसा ही समझ लो।"

https://t.me/Hindiupanyas

"रास्ते के बारे में बताओ।" बोला बलराज गोगिया।

"कैंट की ओर जाने वाले हर शख्स की चाहे वो आदमी हो या औरत—उसकी पूरी बारीकी से तलाशी हो रही है। यहां तक कि औरतों के बुर्के उतरवाकर उनके पेट तक देखे जा रहे हैं।"

"पेट क्यों?"

"यह मुझे नहीं पता।"

"तुम्हारा भी पेट देखा गया था?"

"तभी तो बता रही हूं।" बोली बेनजीर।

"एतराज नहीं किया तुमने?"

"किया था।"

"तो?"

"बदले में गालियां मिली थीं मुझे। और जब मैंने बताया कि मैं कर्नल अहमद की खासमखास हूं—तब जा कर उनके होंठ सिले थे।"

बलराज गोगिया को हैरानी हुई। उसे समझ में नहीं आया कि औरतों के पेट क्यों देखे जा रहे हैं। उसे अभी मालूम नहीं था कि यह सब रीमा राठौर की वजह से हो रहा है। उनके हिसाब से रीमा राठौर ने अगर मेकअप किया होगा तो सिर्फ चेहरे पर ही किया होगा—बाकी शरीर तो वैसा ही होगा—तब चेहरे तथा पेट की रंगत में अंतर से साफ जाना जा सकता था कि उसका चेहरा असली है या नकली।

"कितनी जगह हो रही है चैकिंग?" पूछा बलराज गोगिया ने।

"तीन जगह...।" बेनजीर बोली—"कैंट की तरफ तीन सड़कें जाती हैं—सो हर सड़क पर तलाशी हो रही है।"

"किसी ऐसी जगह की तलाश की—जहां से लाल कोठी को देखा जा सकता है?"

"करीब दो किलोमीटर दूर होटल कासिम है। चार मंजिला होटल है। मगर चूंकि वह ऊंचाई पर बना हुआ है—इसलिये उसकी ऊंचाई करीब-करीब कोठी के बराबर हो जाती है। अगर तुम्हें दूरबीन मिल जाये तो तुम होटल से ही लाल कोठी ही नहीं कैंट के और भी कई हिस्से देख सकते हो।"

"तो फिर मेरे लिये दूरबीन का बन्दोबस्त करो।"

"हो जायेगा।"

"और मेरी बेगम बनकर होटल कासिम में चलोगी तुम।"

बेनजीर ने सिर हिला दिया। फिर बोली—"कब चलना

https://t.me/Hindiupanyas

है?"

"आज ही—अंधेरा होने से पहले मैं लाल कोठी को देखना चाहता हूं।"

"तो फिर मैं कपड़े बदल लेती हूं।"

कहते हुये वह खड़ी होने को हुई तो बलराज गोगिया बोल पड़ा—

"अहसान अहमद से मुलाकात हुई तुम्हारी?"

"नहीं।" बेनजीर बोली—"मैं उसकी कोठी पर गई थी—वहां से पता चला कि वह किसी काम से बाहर गया है—कल आयेगा।"

"कल कब?"

"यह नहीं पूछा मैंने। वैसे कल फोन करके पूछ लूंगी।"

"ठीक है।" बलराज गोगिया ने गहरी सांस छोड़ी—"तुम चेंज कर लो।"

बेनजीर पिछले कमरे में चली गई।

रीमा राठौर सिकंदर और सतीश रावण के साथ होटल कासिम में प्रविष्ट हुई। इस वक्त वह बुर्का पहने हुए थी। इस्लामाबाद से वह अल्लापुर तक एक टैक्सी में गए थे।

बलराज गोगिया की तरह उनकी टैक्सी भी रोकी गई थी और रीमा राठौर का बुर्का उठाकर उसकी सूरत देखी गई थी। उस वक्त रीमा राठौर ने अपना चेहरा ऐसे बना लिया था जैसे बुर्का उठाते हुए उसे बहुत बड़ी जलालत का सामना करना पड़ा हो।

सिकंदर ठाकरे ने रीमा राठौर का परिचय अपनी पत्नी के रूप में दिया था और सतीश रावण को अपना भाई बताया था।

सतीश रावण के बालों में पूरी सफेदी थी तथा वह अपनी उम्र से दुगुना नजर आ रहा था।

रात को उसने अपना मेकअप खुद किया था—और जिस सफाई से उसने अपना मेकअप किया था—उसे देख रीमा राठौर भी उसकी तारीफ किये बिना नहीं रह सकी।

तीनों की खूब तसल्ली करने के बाद ही फौजियों ने उन्हें आगे जाने दिया था।

हालांकि उनकी टैक्सी की तलाशी भी ली गई थी—मगर उन्हें टैक्सी में कुछ मिला नहीं था। रीमा राठौर ने कारबाइन के चार टुकड़े करके उसे बैग में सबसे नीचे रख दिया था। रिवाल्वरें उन्होंने टैक्सी में बैठते ही उसकी सीट को थोड़ा-सा फाड़ कर

https://t.me/Hindiupanyas

उसमें डाल दी थीं।

इस बात का उन्होंने खास ख्याल रखा था कि टैक्सी ड्राइवर को सीट फटने का पता न चले। और इस प्रकार से पूरी तरह से सकुशल अल्लापुर पहुंच गए।

टैक्सी ड्राइवर से उन्हें पता चला कि होटल कासिम अल्लापुर का सबसे शानदार होटल है। सो उन्होंने उसी होटल में रात गुजारने का निश्चय किया।

होटल में प्रवेश करते वक्त एक बैग सतीश रावण ने उठा रखा था तथा दूसरा सिकंदर ठाकरे ने।

रीमा राठौर खाली हाथ थी।

तीनों की रिवॉल्वरें टैक्सी से उतरने से पहले ही सीट में से निकल कर उनकी जेबों में पहुंच चुकी थीं।

"तुम यहीं ठहरो।" सिकंदर ठाकरे बोला—"मैं कमरा बुक करवाकर आता हूं।"

कहकर वह काउंटर की तरफ बढ़ गया।

रीमा राठौर और सतीश रावण वहीं गेट के पास खड़े हो कर आने-जाने वालों को देखने लगे।

ठीक तभी बलराज गोगिया बेनजीर के साथ होटल में प्रविष्ट हुआ।

उस वक्त उसके चेहरे पर दाढ़ी नहीं थी—सिर्फ मूंछें थीं और उसने आंखों पर नजर का मोटे लैंस वाला चश्मा चढ़ा रखा था।

बलराज गोगिया ने वहीं रीमा राठौर के करीब ही बेनजीर को खड़ा किया और बोला—

"तुम यहीं खड़ी होओ बेगम—मैं कमरा बुक करवाकर आता हूं।"

रीमा राठौर ने एक सरसरी नजर उस पर डाली।

तभी सतीश रावण की फुसफुसाहट उसके कानों में पड़ी—

"इस चश्मे वाले को देखो—मैंने इसे ही कल इस्लामाबाद में कार में देखा था।"

रीमा राठौर बुरी तरह से चौंकी।

"कल वह अंग्रेज लग रहा था—इसकी मूंछें नहीं थीं।"

"हो सकता है कल कोई और हो—तुम्हें गलतफहमी हो रही हो।"

रीमा राठौर बोली।

"तुम भूल रही हो मैं कौन हूं—घाट-घाट का पानी पी रखा

https://t.me/Hindiupanyas

है मैंने। मेरी आंखें धोखा नहीं खा सकतीं—मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि मैंने कल इसी को देखा था।"

रीमा राठौर ने तुरंत बुर्का उठाया और बलराज गोगिया की तरफ देखा।

उस वक्त बलराज गोगिया काउंटर तक पहुंच चुका था और उसकी पीठ रीमा राठौर की तरफ थी।

करीब एक मिनट बाद उसे सिकंदर ठाकरे काउंटर से हटकर अपनी तरफ आता नजर आया तो रीमा राठौर ने फौरन उसे आंख का इशारा किया।

सिकंदर ठाकरे तुरंत वापिस मुड़ा, जैसे कुछ पूछना भूल गया हो।

वह काउंटर पर वापिस गया और काउंटर पर इस तरह खड़ा हो गया जैसे वह बलराज गोगिया के फारिग होने का इंतजार कर रहा हो।

करीब दो मिनट बाद बलराज गोगिया काउंटर से हटा और बेनजीर की तरफ बढ़ा।

सिकंदर ठाकरे काउंटर मैन से बातें करने लगा।

इधर रीमा राठौर की निगाहें बलराज गोगिया पर टिकी हुई थीं—अब उसे भी लग रहा था कि उसने उसे कहीं देखा है।

कहां?

यह याद नहीं आ रहा था उसे।

बलराज गोगिया ने उसकी तथा सतीश रावण की तरफ देखा तक नहीं। वह उनके करीब से निकलकर बेनजीर के पास आया और झुककर उसके पास पड़ी अटैची उठा ली।

"आओ।"

वह बेनजीर से बोला और लिफ्ट रूम की तरफ बढ़ गया।

ठीक तभी सिकंदर ठाकरे वहां पहुंचा।

"एक सौ चार नम्बर कमरा है उसका।" वह रीमा राठौर से धीमे स्वर में बोला—"छठे माले पर।"

"और हमारा?" रीमा राठौर बोली।

"चालीस-इकतालीस।"

"वो कहां है?"

"तीसरे माले पर।"

"आओ।" रीमा राठौर बोली।

तीनों लिफ्ट रूम की तरफ बढ़े।

जब तक वे लिफ्ट रूम के सामने पहुंचते—लिफ्ट ऊपर की

https://t.me/Hindiupanyas

तरफ रवाना हो चुकी थी। बलराज गोगिया और बेनजीर को उनके माले पर पहुंचाकर लिफ्ट वापिस ग्राउंड फ्लोर पर आई तो तीनों लिफ्ट में प्रवेश कर गये।

कुछ ही देर में वे तीनों चालीस नम्बर में बैठे थे।

साथ वाला कमरा इकतालीस नम्बर था जो कि सिकंदर ठाकरे ने सतीश रावण के लिये लिया था। बैड पर बैठते वक्त रीमा राठौर की आंखों में उलझन के भाव थे। वह अभी भी यही सोच रही थी कि वह व्यक्ति कौन था?

"कौन था वह?" तभी सिकंदर ठाकरे ने पूछा।

"वही तो सोच रही हूं...।" रीमा राठौर उलझे स्वर में बोली।

"क्या मतलब?" सिकंदर ठाकरे बोला।

"कोई हिन्दुस्तानी है वह—और है भी देखा भाला—मगर यह याद नहीं आ रहा कि वह कौन है? और उसकी यहां मौजूदगी यही बता रही है कि वह भी उसी फिराक में है जिस फिराक में हम हैं।"

सतीश रावण बोला। रीमा राठौर की तरह वह भी उलझा हुआ था।

सिकंदर ठाकरे ने गहरी सांस छोड़ी और कुर्सी पर बैठते हुए बोला—

"हो सकता है वह किसी खुफिया एजेंसी से ताल्लुक रखता हो।"

"नहीं...।" रीमा राठौर बोली—"ऐसा होता तो मुझे भी उसकी खबर होती।"

"यानी वह कोई अपराधी है?"

एकाएक रीमा राठौर बुरी तरह उछल पड़ी—आंखों में अविश्वास उभर आया।

"ओह नो!"

"क्या हुआ?" सतीश रावण और सिकंदर ठाकरे एक साथ चौंकते हुए बोले।

"व...वह...बलराज गोगिया है।"

रीमा राठौर ने जैसे परमाणु बम फोड़ा।

सिकंदर ठाकरे और सतीश रावण इतनी जोरों से चौंके कि उछलकर खड़े हो गये।

"बलराज गोगिया!" दोनों के होठों से एक साथ निकला।

"हां...वह बलराज गोगिया ही है।" रीमा राठौर दृढ़ स्वर में

https://t.me/Hindiupanyas

बोली—"मैंने उसे पहचान लिया है।"

"ल...लेकिन उसके साथ तो उसका जोड़ीदार राघव होना चाहिये—जबकि वह एक औरत के साथ था।"

"यह मुझे नहीं पता—मुझे बस इतना पता है कि वह बलराज गोगिया है।"

कहते हुए रीमा राठौर ने सतीश रावण की तरफ़ देखा। उसके चेहरे पर हड़बड़ी के भाव उभरे हुए थे।

"क्या हुआ?"

"बहुत ही पहुंचा हुआ चोर है वो।" सतीश रावण पूरी तरह से गम्भीर था।

"मगर शरीफ चोर है। मैंने उसे रीड किया है। किसी मजलूम पर हाथ नहीं डाला उसने आज तक—और जब तक मजबूर नहीं हो जाता—तब तक किसी का खून नहीं बहाता।"

"यानी एक और उस्ताद।" सिकंदर ठाकरे बोला।

"हां...।" रीमा राठौर गम्भीर थी—"वह वाक़ई में उस्ताद है। और अब मैं यह भी कह सकती हूं कि वह किसी के द्वारा मजबूर किये जाने पर यहां आया है।"

"कैसी मजबूरी?"

"यह तो मैं नहीं जानती—मगर इतना जरूर कहूंगी कि वह चोर बेशक है—मगर उसका भी ईमान है। देश के प्रति उसके दिल में वही भावना है जो कि एक देशभक्त के दिल में होनी चाहिये।"

"हो सकता है वह अपने जोड़ीदार के कारण मजबूर हुआ हो।" सिकंदर ठाकरे बोला—"उसका इसके साथ न होना इसी तरफ इशारा करता है कि वह किसी की कैद में है—और उसे कैद करने वाले ने उसे छोड़ने की कीमत यह फार्मूला रखा हो।"

"हो सकता है।"

"जो भी है—हमारे लिये तो एक और मुसीबत खड़ी हो गई।" सतीश रावण बोला—"पहले हम दो थे—अब तीसरा बीच में आ टपका है।"

"फिर क्या किया जाये?"

"मैं तो कहता हूं कि उसे गोली मार दी जाए। न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी।" सतीश रावण बोला—"कहीं ऐसा न हो कि फार्मूला वह ले उड़े—और हम ताकते ही रह जाएं।"

रीमा राठौर ने उसे घूरकर देखा।

"बलराज गोगिया की बजाये अगर तुम्हें गोली मार दी जाये तो कैसा रहेगा?"

https://t.me/Hindiupanyas

बुरी तरह से हड़बड़ाया सतीश रावण।

"म-मुझे भला क्यों मारोगी तुम?"

"तुम नम्बर एक के हरामी हो—तुम्हारी कोई जुबान नहीं। तुम कभी भी किसी भी वक्त कुछ भी कर सकते हो। जबकि बलराज गोगिया की जुबान ही उसका सब कुछ है। वह धोखा नहीं देता—बल्कि उसने हमेशा धोखा खाया है। उस पर आंख मूंदकर विश्वास किया जा सकता है—जबकि तुम पर खुली आंखों से भी विश्वास नहीं किया जा सकता।"

"इत्मीनान रखो रीमा राठौर—जब तक फार्मूला हासिल नहीं हो जाता—मैं सीधा चलने को मजबूर हूं—इसलिये फार्मूला हासिल होने तक मेरी तरफ से निश्चिंत रहो।" सतीश रावण गम्भीरता से बोला—"बलराज गोगिया को खत्म करने के लिये मैं इसलिये कह रहा हूं कि हम दो प्रतिद्वन्द्वियों में तीसरा न आये। वर्ना कहीं ऐसा न हो कि हम जुगाड़ ही भिड़ाते रह जायें और वह फार्मूला ले उड़े।"

"वह ठीक कह रहा है रीमा—बलराज गोगिया का जिन्दा रहना हमारे लिये नुकसानदायक हो सकता है।" सिकंदर ठाकरे ने उसकी बात का समर्थन किया।

"लेकिन ठाकरे...।"

"मैं मानता हूं कि बलराज गोगिया नेक चोर है—मगर उसके बारे में सोचो जिसने बलराज गोगिया को यहां भेजा है—वह हरगिज नेक इंसान नहीं हो सकता। अगर फार्मूला उसके हाथ पड़ गया तो क्या पता वह क्या कहर ढाये...।"

रीमा राठौर की आंखों में सोचें भर आईं।

सिकंदर ठाकरे की दलील उसे ठीक लगी थी।

"ठीक है...।" उसने गहरी सांस छोड़ी और सतीश रावण की तरफ देखा—"तुम खत्म कर दो उसे।"

सतीश रावण के होंठों पर कुटिल मुस्कान फैल गई।

"जरा चाय पी लें—फिर मैं उसे खत्म कर दूंगा।"

"मगर खत्म कैसे करोगे तुम उसे?" सिकंदर ठाकरे बोला—"अगर सीधा कमरे में घुसकर उसे खत्म करोगे तो यह काम तुम हरगिज नहीं कर पाओगे—आमने-सामने की लड़ाई में तुम शायद ही उसे खत्म कर सको।"

"फिक्र मत करो।" धूर्तता से हंसा सतीश रावण—"पीछे से मारने का मुझे अच्छा-खासा तजुर्बा है। जब तक बलराज गोगिया को कुछ पता लगेगा—उसकी मौत हो चुकी होगी।"

https://t.me/Hindiupanyas

"क्या करोगे तुम?" रीमा राठौर बोली।

"तुम देखती रहो।" मुस्कराया सतीश रावण—"बस जरा थकावट उतार लेने दो—फिर देखना क्या खेल खेलता हूं। ऐसी चाल चलूंगा कि बलराज गोगिया खुद मौत के मुंह में खिंचा चला आयेगा।"

□□□

"उस औरत को देखा तुमने?"

"कौन सी औरत?"

"वही काली कलूटी जो नीचे मेरे पास खड़ी थी—कैसी दीदे फाड़-फाड़कर तुम्हें देख रही थी।"

बलराज गोगिया चौंका—"मुझे देख रही थी?"

"हां।"

बलराज गोगिया की आंखों में सोचें उभर आईं। उसे हैरानी हो रही थी कि वह औरत उसे क्यों देख रही थी।

"हो सकता है मेरी शक्ल उसके किसी रिश्तेदार से मिलती हो।" वह बोला।

"हो सकता है—फिर भी होशियार रहना तुम।"

बलराज गोगिया ने सहमति में सिर हिलाया और अटैची को फर्श से उठाकर बैड पर रखकर उसे खोला और उसमें से एक शक्तिशाली दूरबीन निकाल ली।

वह दूरबीन उसे बेनजीर से हासिल हुई थी।

दूरबीन को एक तरफ रखकर उसने अटैची बंद की और बेनजीर से बोला—

"चाय पियोगी।"

मुस्कराई बेनजीर—"यह भी कोई पूछने की बात है!"

बलराज गोगिया ने स्टूल पर रखे फोन का रिसीवर उठाकर उसका एक नम्बर डायल किया।

तुरंत आपरेटर ने दूसरी तरफ से फोन उठाया।

"एक सौ चार नम्बर में दो चाय भेज दो।"

बलराज गोगिया ने कहा और फोन रखकर बेनजीर की तरफ देखा।

"लाल कोठी किस तरफ है?"

"इस खिड़की के ऐन सामने वाली साइड में।"

बेनजीर ने दाईं तरफ वाली खिड़की की तरफ इशारा किया।

https://t.me/Hindiupanyas

बलराज गोगिया उधर बढ़ा और खिड़की के पास पहुंचकर खिड़की खोल दी।

ठण्डी हवा का एक हल्का-सा झोंका उसके चेहरे से टकराया।

उसने सामने वाली साइड में देखा।

उससे काफी दूर काफी ऊंची लाल रंग की एक इमारत नजर आ रही थी।

बस वह इमारत ही नजर आई उसे—उसके अलावा और कुछ भी नहीं दिखा—अगर दिखा तो इतना छोटा कि वह जान नहीं सकता था कि वह क्या है?

वह वापिस मुड़ा और बैड पर रखी दूरबीन उठा ली।

वापिस खिड़की के करीब पहुंचकर उसने दूरबीन आंखों से लगाई और उसका फोकस सैट करने लगा।

शीघ्र ही लाल कोठी उसे ऐसे नजर आने लगी जैसे वह लाल कोठी के सामने खड़ा हो।

तभी डोर बैल बज उठी।

बलराज गोगिया ने तुरंत दूरबीन आंखों से हटाई और आकर सिरहाने के नीचे दूरबीन रख दी।

तत्पश्चात् वह दरवाजे के करीब आया और सिटकनी हटाकर दरवाजा खोल दिया।

वेटर चाय लेकर आया था।

उसने भीतर आकर ट्रे सैंटर टेबल पर रखी और सलाम करके वापिस चला गया।

बलराज गोगिया ने दरवाजा बंद करके सिटकनी चढ़ाई और बेनजीर के करीब आकर बैठ गया।

चुपचाप दोनों ने चाय खत्म की।

"अब तुम इत्मीनान से नजर मारो—मैं अपनी कमर सीधी कर लूं।"

बेनजीर बोली और कुर्सी से उठकर बैड पर लेट गई।

बलराज गोगिया दूरबीन सम्भाले खिड़की के पास पहुंचा और दूरबीन आंखों पर लगा ली।

लाल कोठी पुनः उसके बिल्कुल करीब सरक आई।

छः मंजिला उस इमारत की छत पर उसे करीब पन्द्रह फौजी खड़े नजर आये। उनके हाथों में थमीं कारबाइनें इस तरह तनी हुई थीं मानो किसी भी वक्त उन्हें गोली चलाने का आदेश मिल सकता था।

इमारत की छत की चारों साइडों में एक-एक सर्चलाइट

https://t.me/Hindiupanyas

लगी हुई थी जो कि उस वक्त बंद थीं।

बलराज गोगिया ने इमारत की खिड़कियों पर निगाह मारी तो वहां उसे कुछ खास नजर नहीं आया—मगर वह जानता था कि वहां क्या है। हसन से वह जान चुका था।

उसने इमारत के गेट पर निगाह मारी तो वहां उसे दो फौजी नजर आये—जो कि खाली हाथ थे—उनके साथ दो अन्य फौजी कारबाइनों से लैस थे।

बलराज गोगिया ने दूरबीन का रुख नीचे किया और सड़क पर निगाह मारी।

इमारत के सामने तथा दाईं तरफ उसे साफ नजर आया—पीछे तथा दाईं तरफ का हिस्सा उसे नजर नहीं आया। जितनी सड़क उसे नजर आई, वहां पर उसे पचास से ज्यादा फौजी नजर आये।

सभी के सभी हथियारबंद थे और वे सड़क पर इस तरह इधर से उधर चल रहे थे मानो मार्च पास्ट कर रहे हों।

"इसी तरह पीछे वाली सड़क पर तथा बाईं तरफ वाली सड़क पर भी फौजी हैं।"

वह मन ही मन बड़बड़ाया।

इमारत के दाईं तरफ वाली सड़क घूमकर कैंट के गेट की तरफ आ रही थी—तथा सड़क के दोनों तरफ बड़े-बड़े मैदान थे।

मैदानों में सड़क के किनारे पड़े कटे वृक्षों के ठूंठ बता रहे थे कि उन वृक्षों को हाल ही में काटा गया है। निश्चय ही उन वृक्षों को सुरक्षा के कारण काटा गया था कि कोई अगर आंख बचाकर कैंट में दाखिल हो भी जाये वह स्वयं को किसी वृक्ष पर चढ़कर छुपा न ले।

सड़क के दाईं तरफ वाले मैदान में कारबाइनों से लैस दो सौ से ज्यादा फौजी इधर-उधर फैले हुए थे जबकि बाईं तरफ वाले मैदान में टैंट लगे हुए थे। उन टैंटों के बाहर भी फौजी खड़े थे।

निश्चय ही वह फौजियों के लिये अस्थाई तौर पर बनाये गये थें।

बलराज गोगिया की दूरबीन सड़क से होकर कैंट के गेट पर आकर रुकी।

गेट के अन्दर एक तरफ उसे अंग्रेजी में नम्बर लिखा हुआ साफ नजर आया।

यह वही गेट था जहां से कि बेनजीर को दुत्कारकर वापिस लौटाया गया था।

गेट पर दो रंगरूट खड़े थे जो कि राइफलों से लैस थे।

https://t.me/hindiupanyas

करीब दस कदम आगे बाईं तरफ एन्ट्री काउंटर था।

लकड़ी का बना हुआ एक केबिन था वह—जिसमें एक खिड़की थी और उस खिड़की के पीछे केबिन के अन्दर बैठा व्यक्ति उसे साफ नजर आ रहा था।

तभी केबिन के दरवाजे में से उसे चार फौजी निकलते दिखाई दिये थे जो कि कारबाइनों से लैस थे।

वे दो-दो के गुट में केबिन के ऐन सामने खड़े हो गये।

बलराज गोगिया ने दूरबीन की नजर वहां से हटाई और कैंट का पूरा ऐरिया देखने लगा।

चार नम्बर गेट के बाईं तरफ उसे दो गेट और नजर आये।

वहां पर भी वैसी ही चौकसी थी जैसी गेट नम्बर चार पर थी।

उन दोनों गेटों की सड़कों में से एक लाल कोठी की तरफ जा रही थी तथा दूसरी लाल कोठी के बाईं तरफ पीछे कहीं गायब हो रही थी।

अभी बलराज गोगिया कैंट की स्थिति देख ही रहा था कि तभी—

"ट्रिन-ट्रिन।"

फोन की घण्टी घनघना उठी।

बुरी तरह से चौंकते हुए बलराज गोगिया ने दूरबीन हटाते हुए गर्दन घुमाकर फोन की तरफ देखा।

बेनजीर खुद अचम्भित थी।

"कौन हो सकता है?" बलराज गोगिया फोन के करीब आते हुए बोला।

"क्या पता...।" बेनजीर सतर्क स्वर में बोली—"हो सकता है होटल के मैनेजर का फोन हो—और वह यह पूछने के लिये फोन कर रहा हो कि हमें कोई परेशानी तो नहीं है—फिर भी होशियार रहकर बात करना।"

बलराज गोगिया ने फोन की तरफ देखा जो अभी भी बेशर्मों की तरह बज रहा था।

"ट्रिन-ट्रिन।"

□□□

चाय पीकर सतीश रावण खड़ा हो गया।

"करोगे क्या तुम?" तभी पूछा रीमा राठौर ने।

सतीश रावण के होठों पर मुस्कान नाच उठी।

https://t.me/Hindiupanyas

"ज्यादा कुछ नहीं करूंगा।" वह बोला—"बस एक फोन करूंगा बलराज गोगिया को कि वह पुलिस स्टेशन आकर अपनी शिनाख्त दे।"

"तुम क्या समझते हो कि वह थाने के लिये होटल से निकलेगा?" सिकंदर ठाकरे बोला।

"अपनी शिनाख्त देने के लिये न सही—अपनी जान बचाने के लिये तो निकलेगा।" सतीश रावण कुटिलता से हंसा—"और फिर होटल से ज्यादा दूर नहीं जा पायेगा वह। बीच सड़क पर ही किसी तरफ से गोली चलेगी और उसका काम तमाम हो जायेगा।"

रीमा राठौर ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया और बोली—

"ध्यान रखना सतीश रावण—उसे इस बात का हरगिज पता नहीं चलना चाहिये कि हम भी यहां हैं। खुदा न खास्ता वह बच गया तो हमारे लिये मुश्किलें खड़ी हो सकती हैं—जो कि मैं हरगिज नहीं चाहती।"

"क्यों—मरने से डरती हो क्या?" सतीश रावण हंसा।

सतीश रावण ने उसकी हंसी का जरा भी बुरा नहीं माना।

"मुझ पर देश की अमानत सही सलामत वापिस करने की जिम्मेदारी है सतीश रावण—मुझे फार्मूले को हिन्दुस्तान पहुंचाना है—वर्ना तुम अच्छी तरह से जानते हो कि मैं क्या बला हूं—दो बार मेरे हाथों मारे जा चुके हो तुम—और उसके बाद जब भी तुमने नया शरीर धारण किया..."

"मैं तो हूं ही डरपोक।" हंसा सतीश रावण—"तभी तो हमेशा पीछे से वार करता हूं। बलराज गोगिया को भी ऐसे ही धोखे से मारूंगा।"

कहकर वह वहां से हटा और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

कमरे से बाहर निकलकर वह लिफ्ट द्वारा नीचे हॉल में आया और मेजों के बीच से निकलते हुए होटल के गेट से निकल गया।

कुछ ही देर में वह एक पब्लिक टेलीफोन बूथ में खड़ा कोई नम्बर डायल कर रहा था।

"हैलो।" तभी उसके कानों में आवाज आयी—"इंस्पेक्टर शेरखान स्पीकिंग।"

"सलाम वालेकुम जनाब।" सतीश रावण बोला।

"वालेकुम सलाम—फरमाइये।"

"एक बहुत ही अहम इनफारमेशन नोट कीजिये।" सतीश

https://t.me/Hindiupanyas

रावण माउथपीस में बोला—"दो हिन्दुस्तानी जासूस होटल कासिम में ठहरे हुए हैं।"

"क्या?" दूसरी तरफ से बुरी तरह से चौंकती आवाज आयी।

"जी हां हुजूर—उनके नाम रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे हैं और वे किसी फार्मूले के फेर में यहां आये हैं।"

"तुम्हें कैसे पता?"

"म-मैंने खुद उन्हें आपस में बात करते देखा है हुजूर।"

"किस कमरे में ठहरे हैं वे?"

"चालीस नम्बर में।" सतीश रावण बोला—"जाकर पकड़ लीजिये उन्हें और सरकार से ईनाम मिलने पर थोड़ी-सी बख्शीश मुझे भी दे दीजियेगा।"

कहकर सतीश रावण ने हुक बायें हाथ से नीचे कर सम्बंध-विच्छेद किया और होटल कासिम का नम्बर मिलाने लगा।

"हैलो।" दूसरी तरफ से आवाज आते ही वह बोला—"प्लीज कनेक्ट टू रूम नम्बर जीरो वन जीरो फोर।"

□□□

बलराज गोगिया ने रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

"हैलो।"

"आपका फोन है हुजूर।" दूसरी तरफ से आपरेटर की आवाज आई।

न चाहते हुए भी बलराज गोगिया का कलेजा धड़क उठा। वह हैरान हो रहा था कि अल्लापुर में कौन है जो उसे जानता है।

अवश्य ही वही औरत होगी जो उसे घूर रही थी। वह मन ही मन बड़बड़ाया और बोला—"लाइन दो।" हल्की-सी क्लिक की आवाज हुई और उसके कानों में आवाज पड़ी।

"हैलो।"

"जी हां—फरमाइये।" बलराज गोगिया स्वयं को संयत करके बोला।

"कौन बोल रहे हो तुम?"

"नवाब खान—मगर आप कौन हैं?"

"नवाब खान नहीं—बलराज गोगिया बोलो।"

बलराज गोगिया का कलेजा इतनी जोरों से उछला कि उसके हलक में आ फंसा।

"ब...बलराज गोगिया।"

https://t.me/Hindiupanyas

"मैं नहीं तुम।"

"क्या वाहियात बात कर रहे हो—मेरा नाम नवाब खान है। यह किस काफिर का नाम ले दिया तुमने।"

"अगर तुम यही कहना ही चाहते हो तो तुम्हारी मर्जी—तुम बेशक खुद को नवाब खान बनाये रख सकते हो।"

"क्या मतलब?"

"आई.एस.आई. को तुम्हारा पता चल चुका है—कि तुम इस होटल में ठहरे हो। मगर उसे तुम्हारे कमरे का नम्बर नहीं मालूम। फौज या पुलिस किसी भी वक्त वहां आ सकती है—इसलिए अगर तुम जान बचाना चाहते हो तो फौरन वह होटल छोड़ दो।"

बलराज गोगिया का कलेजा बैठने लगा। साथ ही वह मन ही मन हैरान हो रहा था कि उसे पहचान कैसे लिया गया।

"तुम कौन बोल रहे हो?"

"दोस्त।"

"दोस्त का कोई नाम भी तो होगा।"

"फिलहाल तुम होटल से निकलो—मैं तुमसे खुद ही मिल लूंगा—और मिलने पर खुद को इन्ट्रोड्यूस भी करा दूंगा।" दूसरी तरफ से आवाज आई और सम्बंध-विच्छेद हो गया।

बलसज गोगिया ने रिसीवर रखा और बेनजीर की तरफ गर्दन घुमाई।

"कौन था?"

उत्तर में बलराज गोगिया ने बताया तो बेनजीर का रंग काला पड़ गया।

"हमें फौरन यहां से निकलना होगा बलराज गोगिया।" वह भर्राए स्वर में बोली।

"लेकिन...।"

"तुम आई.एस.आई. को नहीं जानते—जल्लाद से भी बद्तर हैं इनके एजेन्ट। खुदा न खास्ता अगर हम उनके हाथ पड़ गए तो हमारी जो हालत होगी—उसका तुम अंदाजा भी नहीं लगा सकते। आई.एस.आई. के हाथ पड़ने से बेहतर यही है कि हम फौरन यहां से निकल जायें।"

बात ठीक लगी बलराज गोगिया को—सो उसने जल्दी से अटैची उठाई और उसे बैड पर रखकर खोला। दूरबीन को कपड़ों में छिपाकर अटैची बंद कर दी।

कुछ ही देर में वे होटल से निकलकर एक टैक्सी में सवार हो रहे थे।

https://t.me/Hindiupanyas

अभी टैक्सी वहां से सरकी ही थी कि फौज की दो गाड़ियां होटल के गेट के सामने आकर रुकीं और उनमें से फौजी नीचे उतरने लगे।

बलराज गोगिया ने राहत भरी मीलों लम्बी सांस छोड़ी।

वक्त रहते वह होटल से निकल गया था। अगर वह दो मिनट भी लेट हो जाता तो...

आगे की सोच कर ही वह कांप उठा।

उसे अपनी जान की परवाह नहीं थी—उसे परवाह थी तो अपने यार की जो कि हिन्दुस्तान में राबर्ट बुश की कैद में था—जिसकी खातिर वह यहां आया था।

अगर वह पकड़ा जाता तो यह खबर राबर्ट बुश के पास भी पहुंच जाती। और नतीजा यह होता कि राबर्ट बुश बिना कोई वक्त गंवाये उसके यार को गोली मार देता।

अपने यार की मौत की कल्पना से ही वह कांप उठा था।

मगर अब मन ही मन वह उस अजनबी दोस्त का धन्यवाद कर रहा था जिसने वक्त रहते उसे आगाह कर दिया था।

"बाल-बाल बचे।" तभी बेनजीर धीरे से बड़बड़ाई।

बलराज गोगिया ने उसकी तरफ देखा और मुस्करा दिया।

अब तक टैक्सी काफी आगे बढ़ गई थी।

□□□

सतीश रावण ने रिसीवर हुक पर लटकाया और टेलीफोन बूथ से बाहर आ गया।

अब आयेगा मजा—वह कुटिल मुस्कान होठों पर बिखेरते हुए बड़बड़ाया—जब पुलिस रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे को पकड़कर ले जायेगी।

उसने एक गहरी सांस छोड़ी।

बेचारों को सपने में भी अहसास नहीं होगा कि मैं बलराज गोगिया को खत्म करने की बजाये उन्हीं को उड़ाने की योजना बनाये हुए हूं। बेचारे...।

वह हौले से हंसा।

तुम बेशक जानती हो रीमा राठौर कि मैं एक नम्बर का हरामी हूं। लेकिन यह तो तुम सपने में भी नहीं सोच सकतीं कि मैं तुम्हें इस तरह धोखा दे दूंगा—तुम तो यही सोचे हुए होगी कि मैं फार्मूला हासिल होने के बाद ही गुलाटी मारूंगा। मगर अब मुझे तेरी जरूरत नहीं। तेरे साथ तो मैं इसलिये लगा था कि मुझे सुरक्षा

https://t.me/Hindiupanyas

प्रबंधों का पता नहीं था—और तू उसे बता नहीं रही थी। मगर बलराज गोगिया की यहां मौजूदगी बता रही है कि जितना तू जानती है, उतना वह भी जानता है। ऊपर से वो मेरा हमपेशा है।

अगर वह फार्मूला तुमसे बचकर हिन्दुस्तान पहुंच भी गया तो भी मैं वहां पहुंचकर उससे हासिल कर सकता हूं—जबकि अगर तू हिन्दुस्तान पहुंच गई तो वह काम नामुमकिन हो जाएगा। क्योंकि तेरे पीछे तो पूरी सरकार है—जबकि बलराज गोगिया के पीछे कोई नहीं।

यूं भी अब तू बचने वाली नहीं। कुछ ही देर में आई.एस. आई. के कुत्ते तुझे पकड़ने के लिये पहुंच रहे हैं। फिर लड़ाई हम दो में रह जायेगी।

तभी उसे बलराज गोगिया बेनजीर के साथ होटल से निकलकर एक टैक्सी की तरफ बढ़ता नजर आया।

सतीश रावण की आंखों में कुत्ते-की सी चमक जाग उठी।

उसने तेजी से इधर-उधर किसी टैक्सी की तलाश में निगाहें दौड़ाईं—और जब तक बलराज गोगिया वाली टैक्सी आगे बढ़ती—वह एक टैक्सी में सवार हो चुका था।

□□□

उस अजनबी फोन ने इंस्पेक्टर शेरखान के दिल में खलबली मचा दी।

आई.एस.आई. की तरफ से उसे हुक्म मिला हुआ था कि अल्लापुर में किसी भी अजनबी की पूरी खोजबीन की जाये और किसी पर जासूस होने का संदेह होने पर फौरन अल्लापुर कैंट में सूचना भेज दी जाये।

जासूसों की खबर मिल चुकी थी।

सो उसने तुरंत कैंट का एक विशेष नम्बर मिलाया और दूसरी तरफ से फोन उठाये जाने का इंतजार करने लगा।

"हैलो।" थोड़ी देर बाद दूसरी तरफ से आवाज आई।

"जनाब—मैं इंस्पेक्टर शेरखान बोल रहा हूं।" तुरन्त बोला शेरखान।

"हां बोलो।" रूखा स्वर उसके कानों में पड़ा।

"अभी-अभी मुझे खबर मिली है कि होटल कासिम के रूम नम्बर चालीस में रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे नाम के जासूस ठहरे हुए हैं।"

"क्या?" बुरी तरह से चौंकती आवाज आई।

https://t.me/Hindiupanyas

"जी हां, नवाब।"

"फोन करने वाला कौन था?"

"यह नहीं बताया उसने। हां, इतना जरूर बताया कि वह उस होटल का कोई बेटर था—उसने कहा था कि उसने उनकी बातें सुनी थीं—इसी से मैंने अंदाजा लगाया है कि वह कोई वेटर होना चाहिये।"

"फोन कब आया?"

"वह अभी-अभी आया है हुजूर।"

दूसरी तरफ से सम्बंध-विच्छेद हो गया।

□□□

शेरखान के फोन पर फौरन कार्यवाही हुई और फौज की दो गाड़ियां होटल कासिम के सामने पहुंच गईं। करीब पचास फौजी थे दोनों गाड़ियों में—जोकि होटल में प्रविष्ट हुए थे।

इतनी फौज को वहां देख ग्राहक तो सहमे ही थे—होटल के कर्मचारियों की भी हालत पतली होने लगी थी।

तभी मेजर रैंक का एक अफसर काउंटर की तरफ बढ़ा तो काउंटरमैन हड़बड़ाकर खड़ा हो गया।

उसके चेहरे की रंगत एकदम से फक्क पड़ गई।

"चालीस नम्बर किधर है?"

"त...तीसरी मंजिल पर।" कांपते हुए बोला काउंटरमैन।

मेजर पलटा और अलर्ट खड़े फौजियों से बोला—

"फौरन तीसरी मंजिल को घेर लो।"

तुरंत तीस फौजी सीढ़ियों तथा स्टॉफ रूम की तरफ भागे।

"होटल से कोई भी बाहर निकलने की जुर्रत न करे।" मेजर दहाड़ा—"वर्ना अपनी मौत का वह खुद जिम्मेदार होगा।"

वहां मौजूद ग्राहक और भी ज्यादा खौफजदा हो गए।

मेजर ने बाकी बचे फौजियों को हॉल में रहने का हुक्म दिया और स्वयं लिफ्ट की तरफ बढ़ गया।

कुछ ही देर में वह तीसरी मंजिल पर था।

फौजियों ने पूरी मंजिल को घेर रखा था।

मेजर चालीस नम्बर के सामने आकर ठिठका तो तुरंत चार फौजी उसके दायें-बायें खड़े हो गए।

"दरवाजा खुलवाओ।" मेजर गुर्राया।

तुरंत एक फौजी ने कदम आगे बढ़ाकर दरवाजे पर दस्तक दी।

https://t.me/Hindiupanyas

हाथ का दबाव पड़ते ही दरवाजा भीतर की तरफ रेंग गया।

दरवाजे को पहले से ही खुला देख बुरी तरह से चौंका मेजर।

उसने इशारे से अन्य फौजियों को भी वहां बुलाया और फिर स्वयं एक तरफ हटते हुए उन्हें कमरे में प्रवेश करने का हुक्म दिया।

तुरंत एक फौजी ने दरवाजे को पैर की ठोकर मारकर पूरा का पूरा खोल दिया।

दरवाजा खुलने के साथ ही उसने भीतर छलांग लगा दी।

उसके पीछे-पीछे अन्य फौजी भी धड़ाधड़ करते भीतर धंसते चले गए।

बाहर खड़े मेजर ने जब भीतर से गोली चलने की आवाज सुनी तो वह चौंका और दीवार के पास से हटकर कमरे में प्रविष्ट हो गया।

मगर कमरा खाली था।

पंछी उड़ चुका था।

मेजर के हुक्म पर पूरे कमरे की तलाशी ली गई थी—मगर वहां ऐसा लग रहा था जैसे वहां वर्षों से कोई नहीं आया।

मेजर के चेहरे पर पराजय की झुंझलाहट फैल गई।

"काउंटरमैन को पकड़कर लाओ।" वह गुस्से से दहाड़ा।

कुछ ही देर में काउंटरमैन थर-थर कांपता हुआ उसके सामने खड़ा था।

"कौन ठहरा हुआ था यहां?" मेजर गुर्राया।

"यह तो रजिस्टर देखकर ही बताया जा सकता है।" वह थर्राये स्वर में बोली।

"तड़ाक!" मेजर का तेज थप्पड़ उसके गाल पर पड़ा।

"रजिस्टर साथ में लेकर क्यों नहीं आया तू?"

काउंटरमैन फौरन वहां से हटा और लिफ्ट की तरफ लड़खड़ाते कदमों से गया।

कुछ ही देर में काउंटरमैन रजिस्टर लिये उसके सामने खड़ा था।

"इसमें इस्माइल खान और रुखसाना थे हुजूर...।" वह कांपते हुए बोला।

"कब आये थे वे?"

काउंटरमैन ने रजिस्टर में नजर मारी और बोला—

https://t.me/Hindiupanyas

"दो घण्टे पहले आये थे।"

"और चैक आउट भी कर गए?"

काउंटरमैन थूक सटककर रह गया। इस बात का कोई जवाब नहीं था उसके पास।

"उनके चेहरे कैसे थे?" पूछा मेजर ने।

काउंटरमैन के पास इसका भी जवाब नहीं था।

मेज़र ने खा जाने वाली नजरों से उसे देखा—फिर फौजियों को आदेश देते हुए बोला—

"पूरे होटल के एक-एक कमरे की तलाशी ली जाए। जिस पर भी शक हो—उसे घसीटकर यहां लाया जाये।"

फौजी फौरन इधर-उधर बिखर गए।

□□□

सतीश रावण के कमरे से निकलते ही सिकंदर ठाकरे ने रीमा भारती की तरफ देखा।

"क्या कहती हो रीमा।" वह बोला—"क्या सतीश रावण हमारा साथ देगा?"

रीमा राठौर मुस्कराई।

"वह दोमुंहा सांप है ठाकरे—जो अपना एक मुंह बंद रखता है और दूसरे से फूंक मारता है। आदमी एक बार सांप पर तो भरोसा कर सकता है—मगर उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। रही उसके हमारा साथ देने की बात—तो फिलहाल वह हमारा साथ देने के लिये मजबूर है। उसे आबेहयात के सुरक्षा प्रबंध के बारे में कुछ भी नहीं मालूम—और वह भी जानता है कि आबेहयात हासिल करने से पहले आपस में उलझने से उसका भी नुकसान हो सकता है। ऐसे में वह फिलहाल ऐसा कोई भी कदम नहीं उठा सकता। फिर भी कोई बड़ी बात नहीं कि वह किसी भी वक्त कोई बखेड़ा खड़ा कर दे।"

"यानी हमें उसकी तरफ से हर वक्त सावधान रहना पड़ेगा।"

"बिल्कुल रहना पड़ेगा।"

मुस्कुराई रीमा राठौर।

एक गहरी सांस छोड़ी सिकंदर ठाकरे ने।

"फिलहाल तुम जाकर बलराज गोगिया को देखो।" रीमा राठौर बोली—"देखो वह क्या कर रहा है कमरे में।"

सिकंदर ठाकरे फौरन कुर्सी से खड़ा हो गया।

https://t.me/Hindiupanyas

वह कमरे से निकला और तीन मिनट बाद ही वह हड़बड़ाई अवस्था में कमरे में दाखिल हुआ।

"क्या हुआ?" उसे हड़बड़ाते देख चौंकी रीमा राठौर।

"बलराज गोगिया होटल छोड़कर जा रहा है।"

"क्या?" उछल पड़ी रीमा राठौर—"इतनी जल्दी जा भी रहा है वह—अभी दो घण्टे भी नहीं हुए उसे आये।"

"कहीं सतीश रावण ने उसे खत्म करने के लिये तो नहीं बुलाया? वह अटैची लेकर बेनजीर के साथ जा रहा है।"

"बेनजीर।"

"वह औरत जो उसके साथ है—उसका नाम बेनजीर है। मैंने रजिस्टर में दोनों के नाम पढ़े थे।"

"ओह।"

"अगर सतीश रावण ने उसे मारने के लिये बुलाया होता तो वह अकेला बाहर निकलता। उसके साथ बेनजीर न होती—न ही अटैची होती।"

रीमा राठौर के जेहन में खतरे की घण्टियां बजने लगीं।

तेजी से उसने सोचा और खिड़की की तरफ लपकी।

खिड़की खोलकर उसने नीचे सड़क पर झांका।

बलराज गोगिया बेनजीर के साथ एक टैक्सी में बैठ रहा था।

टैक्सी अभी थोड़ी दूर ही जा पाई थी कि मिलिट्री की दो गाड़ियां वहां आकर रुकीं।

बुरी तरह से चौंक पड़ी रीमा राठौर।

तेजी से वह पलटी और सिकंदर ठाकरे की तरफ देखते हुए बोली—

"सतीश रावण ने अपनी जात दिखा दी...।"

"क्या?" उछल पड़ा सिकंदर ठाकरे।

"हमारी मौत का सामान होटल में पहुंच चुका है।"

"क्या मतलब?"

"फौज आ चुकी है यहां...।"

सिकंदर ठाकरे का रंग उड़ गया।

"यानी अब मरना निश्चित है।" वह बोला—"क्योंकि होटल से बाहर निकलना अब बेवकूफी होगी।"

"घबराओ नहीं—अपने जीते जी तुम्हें कुछ नहीं होने दूंगी—बैग उठाओ।"

कहते हुए रीमा राठौर ने बैग उठा लिया।

https://t.me/Hindiupanyas

"किधर जाओगी?" दूसरा बैग उठाते हुए बोला सिकंदर ठाकरे।

रीमा राठौर ने तेजी से कमरे में निगाहें दौड़ाईं कि वहां कोई चीज छूट तो नहीं गई—फिर सिकंदर ठाकरे को साथ लिये कमरे से बाहर आ गई।

"तुम करने क्या जा रही हो?" सिंकदर ठाकरे उसके साथ-साथ लिफ्ट रूम की तरफ बढ़ते हुए बोला—"कुछ बताओ तो सही।"

मगर रीमा राठौर ने उसकी बात का जवाब नहीं दिया।

वह लिफ्ट में सिकंदर ठाकरे के साथ दाखिल हुई और टॉप फ्लोर का बटन दबा दिया।

कुछ ही देर में वह टॉप फ्लोर पर लिफ्ट से बाहर निकल रहे थे।

"बलराज गोगिया का कमरा किधर है?" उसने पूछा।

"उधर...।" सिकंदर ठाकरे ने बाईं तरफ इशारा किया।

रीमा राठौर उधर बढ़ी।

बलराज गोगिया के कमरे के सामने आकर वह ठिठकी और दरवाजे पर हाथ रखकर उसे भीतर की तरफ धकेला तो दरवाजा खुलता चला गया।

रीमा राठौर भीतर दाखिल हो गई।

पीछे-पीछे सिकंदर ठाकरे भी आ गया।

"दरवाजा बंद कर दो।"

सिकंदर ठाकरे मुड़ा और दरवाजा बंद करके सिटकनी चढ़ाई और रीमा राठौर के करीब आ गया।

"रजिस्टर में बलराज गोगिया का क्या नाम पढ़ा था तुमने?" रीमा राठौर बैग को बैड के नीचे खिसकाते हुए बोली।

"नवाब खान।"

"अब गौर से सुनो...।" रीमा राठौर बैड पर बैठते हुए बोली—"तुम नवाब खान हो और मैं बेनजीर।"

सिकंदर ठाकरे पहले तो चौंका—फिर मुस्कुरा पड़ा।

"अब समझा।" वह बोला।

रीमा राठौर भी मुस्करा पड़ी।

"बड़ी दूर की सोची तुमने—रजिस्टर पर हमारा नाम अंकित है। अब चालीस नम्बर वाले चैक आउट कर गए हैं और एक सौ चालीस नम्बर वाले अपने कमरे में हैं।" और रीमा राठौर हंस पड़ी।

https://t.me/Hindiupanyas

ठीक दो मिनट बाद दरवाजे पर थाप पड़ी—"अगर फौरन दरवाजा न खोला गया तो उसे तोड़ दिया जायेगा।"

रीमा राठौर ने सिकंदर ठाकरे को इशारा किया।

"कौन?"

सिकंदर ठाकरे ने आवाज लगाई।

"दरवाजा खोलो।" बाहर से दहाड़ती आवाज आई।

सिकंदर ठाकरे बढ़ा और आगे बढ़कर दरवाजा खोल दिया।

फौरन दो फौजी कारबाइनों से लैस सिकंदर ठाकरे को धकेलते हुए भीतर प्रविष्ट हुए।

फौजियों को देखकर सिकंदर ठाकरे ने ऐसे मुंह बनाया जैसे बुरी तरह से डर गया हो।

उधर रीमा राठौर ने हल्के-से चीख कर चेहरे के आगे बुर्का कर लिया।

"य...यह क्या हिमाकत है।"

सिकंदर ठाकरे भर्राए स्वर में बोला।

"खामोश!" एक फौजी दहाड़ा।

सिकंदर ठाकरे ने हड़बड़ाते हुए अपने होंठ भींच लिये।

"क्या नाम है तेरा?"

"न...नवाब खान।" भर्राए स्वर में बोला सिकंदर ठाकरे।

"यह तेरी बेगम है।"

"ज...जी हुजूर...।"

"बुर्का उतार।" दूसरा फौजी रीमा राठौर से बोला।

रीमा राठौर अपने आप में सिमट गई।

"बुर्का उतार...वर्ना...।" दूसरे ने कारबाइन उसकी तरफ कर दी।

"उ...उतार दो बेगम।" थर्राए स्वर में बोला सतीश रावण।

रीमा राठौर ने बुर्का उतारकर बैड पर रख दिया। इस वक्त उसकी आंखों से किलो-किलो मोटे आंसू बह रहे थे—मानो उसे बहुत ही जलालत का सामना करना पड़ रहा हो।

फौजियों ने अपने सामने काली कलूटी औरत को देखा।

हो सकता है मेकअप कर रखा हो उसने—यह सोचकर पहले वाला दहाड़ा—

"कपड़े उतार...।"

"न...नहीं...म...मैं कपड़े नहीं उतारूंगी।" रीमा राठौर की आंखों से बहने वाले आंसुओं में तेजी आ गई—"बेशक आप गोली मार दीजिये मुझे।"

https://t.me/Hindiupanyas

"इ...इ तरह हमारी अस्मत से तो न खेलो हुजूर...।" सिकंदर ठाकरे बोला।

"तड़ाक!" सिकंदर ठाकरे के चेहरे पर झन्नाटेदार थप्पड़ पड़ा।

चेहरा सुर्ख हो उठा सिकंदर ठाकरे का। उसका दिल तो किया कि वह अभी उस पर टूट पड़े। मगर उसने ऐसा किया नहीं—वह जानता था कि उसकी ऐसी हरकत उसके तथा रीमा राठौर के लिये खतरनाक हो सकती है।

खून का घूंट पीकर रह गया था।

"उतार कपड़े।" फौजी गुर्राया—"वर्ना तेरे शौहर को खत्म कर दिया जायेगा।"

रीमा राठौर हौले से चीख पड़ी।

"नहीं...रब...खुदा के लिये मेरे सरताज को कुछ न कहिये।"

"तो फिर कमीज उतार अपनी।"

रीमा राठौर की आखों से बहने वाले आंसुओं में तेजी आ गई।

उसने मजबूरी भरी आंखों से सिकंदर ठाकरे को देखा और अपनी कमीज उतार दी।

उसका पेट, गर्दन सब उसके चेहरे से मेल खा रहे थे।

छातियों का उभार जो कि ब्रा में से झांक रहा था—वह भी काला था।

"शलवार भी उतार...।" पहले वाले ने चटकारा लेते हुए कहा।

रीमा राठौर ने शलवार का नाड़ा खोला तो शलवार उसकी टांगों को चूमती हुई उसके पैरों में इकट्ठी हो गई।

अब वह सिर्फ ब्रा और पैंटी में थी।

फौजियों ने उसकी टांगों तथा जांघों को देखा तो वे भी उन्हें काले जिस्म का ही हिस्सा नजर आया।

"पहन ले।" पहले वाला बोला।

सिकंदर ठाकरे ने राहत की सांस ली।

मन ही मन वह ऊपर वाले का शुक्रिया अदा कर रहा था कि फौजियों ने रीमा राठौर की ब्रा और पैंटी नहीं उतरवाई—वर्ना भेद खुलने में देर नहीं लगती।

उसने निश्चय कर रखा था कि अगर फौजियों ने उसकी ब्रा तथा पैंटी उतरवाने की मांग की तो वह उन पर टूट पड़ेगा—और मन ही मन उसने स्वयं को उसके लिये तैयार भी कर रखा था।

https://t.me/Hindiupanyas

मगर ऐसा कुछ नहीं हुआ।

रीमा राठौर ने कपड़े पहने और बैड पर बैठकर टांगों के बीच अपना मुंह देकर फूट-फूटकर रोने लगी।

सिकंदर ठाकरे फर्श पर ही सिर थामकर इस तरह बैठ गया जैसे उसका सब कुछ लुट चुका हो।

"इस बैग में क्या है?" दूसरे वाला फौजी सिकंदर ठाकरे से बोला।

वह बैग सिकंदर ठाकरे ने बैड पर ही रख दिया था जो कि वह लाया था।

रीमा राठौर वाला बैग बैड के नीचे था।

"खुद ही देख लो...।"

सिकंदर ठाकरे भर्राए लहजे में बोला।

एक फौजी आगे बढ़ा और बैग की जिप खोलकर उसमें झांका।

कपड़े भरे हुए थे उसमें।

उसने कपड़ों के बीच हाथ डालकर इधर-उधर टटोला और हाथ को वापिस खींच कर अपने साथी की तरफ देखा।

"कुछ मिला?" पहले वाले ने पूछा।

"नहीं।" निचला होंठ बाहर निकालते हुए दूसरे वाले ने इनकार में सिर हिलाया।

"आओ।"

पहले वाला बोला और दरवाजे की तरफ मुड़ गया।

दोनों के दरवाजे से बाहर निकलते ही सिकंदर ठाकरे उठा और दरवाजा बंद करके सिटकनी चढ़ाई—और रीमा राठौर की तरफ मुड़ा।

रीमा राठौर बैड पर बैठी उसी को देख रही थी।

दोनों की निगाहें आपस में मिलीं और होठों पर विजयी मुस्कान फैल गई।

सिकंदर ठाकरे आगे बढ़कर रीमा राठौर के करीब बैड पर बैठ गया।

"बड़ी शानदार एक्टिंग की तुमने?" वह बोला।

"तुम भी तो दिलीप कुमार को मात दे रहे थे।" रीमा राठौर हंसी।

"गाल-वाल बचे—अगर तुम वक्त रहते इस कमरे की ना सोचतीं तो अब तक हमारी लाशें बिछ चुकी होतीं।"

"जब-जब जो-जो होना है...तब-तब सो-सो होता है।" रीमा

https://t.me/Hindiupanyas

राठौर मुस्कराई—"जब बुरा वक्त आता है तो बुद्धि भी साथ छोड़ देती है।"

सिकंदर ठाकरे ने सिर हिलाया। फिर बोला—

"अब हमें यह होटल जल्द-से-जल्द छोड़ना है।"

"क्यों?"

"देख नहीं रहे किस तरह आर्मी हमारी तलाशी ले रही थी।"

"तुम्हारी नहीं—मेरी।"

"वही—वह दोबारा भी तो आ सकते हैं यहां।"

"यहां की तलाशी तो ले चुकी है आर्मी—अब वो इस होटल पर सिर्फ नजर रखेगी—और आने-जाने वाले ग्राहकों को ही टटोलेगी।"

"लेकिन...।"

"अब यह होटल ही हमारे लिये सुरक्षित जगह है—अब यहीं रहेंगे हम।"

सिकंदर ठाकरे सिर हिलाने लगा।

बात उसकी समझ में आ गई थी।

❑❑❑

पूरे होटल की तलाशी के दौरान दो औरतें और एक मर्द मिला फौजियों को—जिन पर कि संदेह किया जा सकता था।

उनके पास से रिवॉल्वरें मिली थीं।

बस यही आधार था संदेह करने का।

तीनों को मेजर के सामने पेश कर दिया गया।

मेजर ने तीनों पर निगाहें दौड़ाईं और गुर्राया—

"तुम तीनों में से रीमा राठौर कौन है?"

अगर कोई होती तो जवाब देती। रीमा राठौर तो एक सौ चार कमरे में बैठी थी।

"रिवॉल्वरों के लाइसेंस हैं तुम्हारे पास?"

मेजर ने अगला सवाल किया।

कोई कुछ नहीं बोला।

"इन्हें कैंट ले चलो।" वह गुर्राया—"वहीं चलकर यह भौंकेंगे।"

आदेश मिलते ही फौजी उन्हें कुत्तों की तरह घसीटते हुए वहां से ले गए।

❑❑❑

"शुक्र है।" सोफे पर धम्म से बैठते हुए बोली बेनजीर—

https://t.me/Hindiupanyas

"बाल-बाल बचे—अगर हमें वक्त पर हमारा खैरख्वार आगाह नहीं कर देता तो पता नहीं क्या हालत होती हमारी।"

"क्या हुआ?" फातिमा ने पूछा।

प्रत्युत्तर में बेनजीर ने उसे सारी बात बताई।

चौंककर फातिमा ने बलराज गोगिया की तरफ देखा।

"किसने किया था फोन?"

"वही तो समझ में नहीं आ रहा।" बलराज गोगिया सोफे की पुश्त से टेक लगाते हुए बोला—"उसने मुझे मेरे नाम से पुकारा था—और खुद को हमारा दोस्त बताया था।"

"जो भी हो—उसने वक्त रहते हमारी मदद की थी।" बेनजीर बोली।

"वो बात तो ठीक है—मगर फिर भी हमें यह तो जानना चाहिये कि फोन किसने किया था और उसका फोन करने के पीछे मकसद क्या था?"

"मकसद हमें बचाना था—तभी तो हम यहां राजी-खुशी बैठे हैं।"

"तुम्हें बचाने के पीछे भी उसका कोई-न-कोई मकसद होना चाहिये।"

"हो सकता है वह हमारी ही आर्गेनाइजेशन का कोई मैम्बर हो।"

"नामुमकिन...।" दृढ़ता से बोली फातिमा—"अगर ऐसा कोई होता तो मुझे उसकी खबर रहती।"

"मगर...।"

"डिंग...डांग...।"

तभी कालबैल बज उठी।

बेनजीर की बात अधूरी रह गई।

चौंककर उसने फातिमा की तरफ देखा—फिर बलराज गोगिया की तरफ।

"जाकर देखो न।" फातिमा बोली—"हो सकता है—कर्नल अहसन का कोई हरकारा आया हो। हम दूसरे कमरे में जा रहे हैं।"

कहते हुए वह खड़ी हो गई।

बलराज गोगिया भी खड़ा हो गया।

दोनों के पिछले कमरे में जाने के उपरांत बेनजीर कमरे से निकली और मेन गेट की तरफ बढ़ी।

मेन डोर के करीब आकर उसने कुण्डा हटाकर दरवाजा

https://t.me/Hindiupanyas

खोला तो सामने एक अजनबी को देख वह चौंकी।

वह अजनबी कोई और नहीं, सतीश रावण था।

"सलाम वालेकुम।" वह होंठों पर मुस्कराहट लाते हुए बड़ी अदा से बोला।

"वालेकुल सलाम—मैंने पहचाना नहीं तुम्हें मियां—कौन हो तुम?"

बेनज़ीर उसे गहरी निगाहों से घूरते हुए बोली।

"इसी बंदे की मेहरबानी से आप इस वक्त घर में मौजूद हैं—वर्ना अब तक ओप होटल कासिम में मुर्दा बन चुकी होतीं।"

बुरी तरह से उछल पड़ी बेनजीर—आंखों का फैलाव बढ़ गया।

"त...तुम...।"

"मेरा शुक्रिया अदा करो मोहतरमा—और मुझे बलराज गोगिया के दीदार कराओ।"

बेनजीर अपने आप ही एक तरफ हट गई।

सतीश रावण भीतर दाखिल हुआ तो बेनजीर ने दरवाजा बंद किया और उसको लिये हुए ड्राइंगरूम में आई।

"बैठो।" वह बोली।

सतीश रावण सोफे पर बैठ गया।

बेनजीर ने भीतर की तरफ मुंह करते हुए आवाज लगाई।

"बाहर आ जाओ बलराज गोगिया।"

बलराज गोगिया फातिमा के साथ बाहर आ गया।

सतीश रावण ने खड़े होकर बड़ी अदा से सिर झुकाते हुए बलराज गोगिया का इस्तकबाल किया और वापिस सोफे पर बैठ गया।

बलराज गोगिया ने प्रश्न भरी निगाहों से बेनजीर को देखा।

"फोन इसी ने किया था तुम्हें।" बेनजीर बोली।

बुरी तरह से चौंकते हुए बलराज गोगिया ने सतीश रावण की तरफ़ देखा।

सतीश रावण ने दांत दिखा दिये।

"कौन हो तुम?" बलराज गोगिया उसके सामने बैठते हुए बोला।

बेनजीर और फातिमा दायें-बायें सोफों पर बैठ गईं।

"मेरा शुक्रिया अदा तो करोगे बलराज गोगिया कि मैंने तुम्हारी जान बचाई।"

सतीश रावण मुस्कराया।

https://t.me/Hindiupanyas

"मुझे कैसे जानते हो?"

"तुम्हें तो मैं काफी वक्त से जानता हूं। हिन्दुस्तान में तुम्हें बहुत इज्जत दरकरार है।"

बलराज गोगिया पहले तो चौंका, फिर उसे गहरी निगाहों से देखने लगा।

वह सफेद बालों वाला अधेड़ उसे किसी भी तरफ से पहचान में नहीं आ रहा था—मगर इतना जरूर स्पष्ट था कि वह भी भारतीय है।

"चेहरा बदला हुआ है तुमने।" वह बोला।

"तुम ठीक समझे—आई.एस.आई. की नजरों से बचने के लिये चेहरा बदलना जरूरी है।"

"अपना परिचय दो।"

"बंदे को सतीश रावण कहते हैं।"

सतीश रावण का नाम सुनकर बलराज गोगिया बुरी तरह से उछल पड़ा। आंखों में पहले तो हैरत के भाव उभरे—फिर उनमें सख्ती आई।

"धोखेबाज—मक्कार—वक्त के हिसाब से गुलाटी मारने वाला—वही सतीश रावण हो ना तुम?" वह गुर्राया।

"बन्दा इन नामों से बदनाम जरूर है—मगर हकीकत में मैं बेईमान नहीं हूं...बल्कि मैंने हमेशा धोखा खाया है—और यह मेरी आदत है कि मैं धोखा देने वाले को नहीं बख्शता। बस—इसी से मैं बदनाम हो गया और मुझ पर धोखेबाज का लेबल लग गया।"

"मैं खूब जानता हूं तुम्हें।" गुर्राया बलराज गोगिया—"तुम वो सांप हो जो कभी सीधे नहीं चल सकते। मैं तुम्हारी बातों में नहीं आने वाला। तुमने वक्त रहते मेरी जान बचाई—इसका शुक्रिया—अब तुम दफा हो जाओ यहां से।"

मगर सतीश रावण अपने स्थान से हिला तक नहीं—बल्कि उसके होठों पर कुटिल मुस्कान रेंग रही थी।

"अगर तुम मेरे बारे में जानते हो बलराज गोगिया तो यह भी जानते होगे कि मैं एक बार जो ठान लेता हूं उसे करके ही दम लेता हूं।"

"क्या मतलब?"

"मतलब यह कि मानूं वि खिड़ाओ—नहीं ते खच्चमराओ।"

बलराज गोगिया की आंखों में कहर नाच उठा।

"तो तू हमारी गेम बिगाड़ेगा।"

"आदत से मजबूर हूं!" धूर्तता से हंसा सतीश रावण—"अगर

https://t.me/Hindiupanyas

मुझे अपने साथ नहीं मिलाओगे तो मैं सब कुछ बिगाड़ कर रख दूंगा।"

पलक झपकते ही बलराज गोगिया के हाथ में रिवॉल्वर चमकने लगी।

"इस रिवॉल्वर से निकली गोली तेरी जिन्दगी का खेल बिगाड़ने के लिये काफी है सतीश रावण।"

वह जहरीले नाग की तरह फुंफकारा।

क्या मजाल जो सतीश रावण के चहरे पर जरा-सी भी हड़बड़ाहट उभरी हो—बल्कि उसकी मुस्कान और भी तीखी हो गई।

"ठीक है—चलाओ गोली।" वह बोला—"मगर इतना ध्यान रखना कि मेरी मौत के बाद तुम यहां से जिन्दा नहीं निकल पाओगे।"

"अपनी परवाह नहीं मुझे।"

"राघव की तो होगी।"

बुरी तरह से चौंका बलराज गोगिया—"क्या मतलब?"

"तुम्हारे जोड़ीदार को तुम्हारे साथ न देखकर बेवकूफ भी समझ सकता है कि वह किसी मुसीबत में है—और तुम उसे छुड़ाने के लिये यहां आये हो।"

बलराज गोगिया के गले की घण्टी जोरों से उछली—उसकी आंखों के सामने राघव का चेहरा नाच उठा।

"मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूं बलराज गोगिया।" सतीश रावण बोला—"तुम्हारा खैरख्वाह हूं—वर्ना सोचो मैं तुम्हें क्यों बचाता।"

"वह ठीक कह रहा है बलराज गोगिया।" तभी फातिमा बोल पड़ी—"रिवॉल्वर अपनी जेब में रखो।"

"लेकिन...।"

"इसे अपने साथ मिलाने में कोई बुराई नहीं।"

"तुम इसे नहीं जानतीं फातिमा—बहुत बड़ा हरामी है यह—ऐन वक्त पर पीठ दिखाकर भाग जाने वालों में है यह।"

"घबराओ नहीं—हमें पीठ पर भी गोली मारनी आती है।" वह बूढ़ी फातिमा सख्ती से बोली—"रिवॉल्वर जेब में रखो।"

जिस मजबूरी में बलराज गोगिया ने रिवॉल्वर जेब में रखी, उसे देखकर ही सतीश रावण समझ गया कि वह सचमुच किसी के हाथों की कठपुतली बना हुआ है।

फातिमा ने सतीश रावण की तरफ गर्दन मोड़ी।

"तो तुम हिन्दुस्तानी हो।"

https://t.me/Hindiupanyas

"मैं हिन्दुस्तानी हूं। मेरा घर वहां है—जहां सिर्फ दौलत होती है।"

"रहते तो हिन्दुस्तान में हो?"

"हां—रहता वहीं हूं।"

"यहां क्या करने आये हो?"

"वही जो बलराज गोगिया करने आया है।"

"बलराज गोगिया क्या करने आया है यहां?"

"वही जो मैं करने आया हूं।"

"साफ-साफ बोलो क्या करने आये हो पाकिस्तान में?" सहसा ही फातिमा गुर्रा उठी।

सतीश रावण के होंठों पर मुस्कान फैल गई।

"फार्मूला हासिल करने आया हूं।" वह बोला—"और वही बलराज गोगिया हासिल करने आया है। बलराज गोगिया की यहां मौजूदगी ही मेरी बात की सच्चाई की गवाह है।"

"मेरा पता कैसे लगा तुम्हें?" बलराज गोगिया ने पूछा।

"मैंने तो इस्लामाबाद में ही तुम्हें पहचान लिया था। बस उसी वक्त से तुम्हारे पीछे हूं।"

बलराज गोगिया के चेहरे पर हैरानी उभरी।

"तुम इस्लामाबाद से मेरा पीछा कर रहे हो?"

"तुम ऐसा समझ सकते हो।"

"समझने से तुम्हारा क्या मतलब?"

सतीश रावण ने पहलू बदला और बोला—

"मैं तुम्हें पूरी बात बताता हूं—तभी तुम्हें समझ में आयेगा।"

बलराज गोगिया कुछ नहीं बोला—बस उसे देखता रहा।

"दिल्ली में मुझसे नारायण दास बतरा नाम के आदमी ने सम्पर्क किया और सौ करोड़ में यह सौदा किया कि मैं वह फार्मूला लाकर उसे दूं जो कि पाकिस्तान ने चुराया है—मैं पाकिस्तान पहुंचा तो ब्रिगेडियर इब्राहिम खान के हाथों में पड़ गया। मैंने उसे बताया कि मैं हिन्दुस्तान से भागकर पाकिस्तान में पनाह लेने आया हूं।"

"फिर?"

"उधर आई.एस.आई. को दो हिन्दुस्तानी जासूसों के यहां पहुंचने की खबर लग चुकी थी। इब्राहिम खान ने मुझे यह कहा कि अगर मैं इन दोनों जासूसों को ढूंढ निकालूं तो वह मुझे पाकिस्तान का नागरिक बना देगा। अपनी जान बचाने के लिये मैंने हां कर दी—और आजादी की मिन्नत कर दी कि आजाद रहकर मैं ज्यादा अच्छी तरह से काम कर सकूंगा।"

https://t.me/Hindiupanyas

मुझे इजाजत मिल गई—और मैं इस्लामाबाद पहुंच गया।"

"फिर?"

"फिर क्या—एक बार जो उनके हाथों से छूटा तो गायब होने में क्या देर लगनी थी मुझे—मैंने इब्राहिम खान से बातों के दौरान हाशिम रजा का नाम सुन लिया था। वह आई.एस.आई. का आला अफसर था—इब्राहिम खान ने मुझसे कहा कि मैं जासूसों को देखते ही फौरन हाशिम रजा को खबर करूं।

इत्तफाक की बात कि कल मैंने तुम्हें देख लिया।"

"और तुम मुझे जासूस समझ बैठे।"

"मैं तो तुम्हें जानता हूं—हां यह जरूर सोचा मैंने कि हो न हो पाकिस्तान सरकार तुम्हें ही जासूस समझ रही है—और उसे तुम्हारे आने की खबर मिल चुकी है।"

"फिर?"

"फौरन मेरे जेहन में यह तरकीब उभरी कि क्यों न तुम्हें साथ मिला लिया जाये। एक से दो भले। मैंने रात को हाशिम रजा पर हाथ डाला और उससे पूछताछ की तो मुझे पता चला कि फार्मूला अल्लापुर में है।"

"हाशिम रजा पर हाथ कैसे डाला तुमने?"

सतीश रावण ने स्वयं को रीमा राठौर की जगह रखकर उसे कहानी सुना दी।

"तुमने उसके घर में ही उसका कत्ल कर दिया?"

हैरानी से बोला बलराज गोगिया।

"मजबूरी थी।"

"फिर?"

"फिर मैंने तुम्हारी तलाश शुरू की—मगर तुम मुझे नहीं मिले तो मैं यहां आ गया और यहां मैंने तुम्हें पहचान लिया। तुम्हें यहां देखते ही मैं समझ गया कि तुम भी उस फार्मूले के बारे में सब कुछ जान गये हो।"

"तुम्हें यह कैसे पता लगा कि होटल पर रेड होने जा रही है?"

फातिमा ने पूछा।

सतीश रावण ने उसकी तरफ देखा। वह जानता था कि यह सवाल पूछा जायेगा—इसलिये उसने पहले से ही जवाब सोच रखा था।

"उसका पता मुझे यहां आकर चला।" वह बोला।

"कैसे?"

https://t.me/Hindiupanyas

"तुम!" सतीश रावण ने बलराज गोगिया की तरफ देखा—इसके बाद उसने बेनजीर की तरफ इशारा किया—"जब होटल में दाखिल हुए थे तो तुम्हें याद होगा कि तुम्हें एक औरत घूर रही थी।"

"हां—मैंने देखा था उसे।" बेनजीर बोल पड़ी—"वह काली कलूटी थी।"

"हां वही—मैं भी उस वक्त उस औरत के करीब ही खड़ा था—जिस ढंग से वह तुम्हें देख रही थी—उससे मुझे लगा कि वह तुम्हें पहचान रही है। मैं तो तुम्हें पहचान ही गया था। उस औरत द्वारा पहचाने जाने पर सब गुड़गोबर हो सकता था।"

"फिर?" बलराज गोगिया बोला।

"मैं तुम्हें छोड़ उस पर निगाह रखने लगा। मैं यह जानना चाहता था कि वह औरत कौन है।" सतीश रावण बोला—"तुम्हारे लिफ्ट में जाते ही वह औरत फौरन होटल से बाहर निकली और टेलीफोन बूथ में जाकर किसी को फोन करने लगी।

मैंने यह नहीं सुना कि उसने फोन पर क्या कहा—लेकिन मैंने इतना अंदाजा लगा लिया कि तुम पर खतरा आने वाला है।"

"फिर?"

"मैं वापिस होटल में गया। काउंटर पर जाकर मैंने तुम्हारे बारे में पता किया तो पता लगा कि तुम एक सौ चार नम्बर में ठहरे हो—मैं वापिस होटल से निकला और पब्लिक बूथ से तुम्हें फोन कर दिया।" कहकर वह चुप हो गया।

बलराज गोगिया ने एक गहरी सांस छोड़ी।

"तो तुमने सिर्फ अंदाजा लगाकर मुझे सचेत किया था।" वह बोला।

"उस औरत के हाव-भाव ही बता रहे थे कि वह काफी ज्यादा उत्तेजना में थी। उत्तेजना का मतलब तुम खुद समझ सकते हो।"

"तुमने उस औरत का पता लिया?"

"तुम्हें फोन करने के बाद मैंने उस औरत की तलाश की थी—मगर वह मुझे कहीं दिखाई नहीं दी। ऊपर से मुझे यह भी देखना था कि तुम कहां जाते हो—इसलिये तुम्हारे होटल से बाहर निकलने तक ही मैंने उसे तलाश किया—फिर तुम्हारे पीछे लग गया।"

"तुम हमारे कमरे पर भी तो हमें सूचित कर सकते थे।"

"तब क्या तुम मेरी बात का विश्वास कर लेते? अगर मैं

https://t.me/Hindiupanyas

ऐसा करता तो तुम हरगिज होटल से नहीं निकलते और इस वक्त तुम लाशों में तब्दील हो चुके होते।"

"ओह!"

"इसलिये मैंने तुम्हें फोन करना मुनासिब समझा।"

बलराज गोगिया ने गहरी सांस छोड़ी और उसे गहरी निगाहों से देखते हुए बोला—"कहानी तो तुमने बहुत शानदार सुनाई है सतीश रावण—अब जरा यह भी बता दो कि इसमें सच्चाई कितनी है।"

"मैंने तुम्हें कहानी नहीं सुनाई बलराज गोगिया—अगर तुम्हें शक है कि मैं झूठ बोल रहा हूं तो तुम तसल्ली कर सकते हो।"

सतीश रावण थोड़ा सख्त लहजे में बोला।

"तसल्ली भी हो जायेगी।" तभी फातिमा बोली और सैंटर टेबल पर रखे फोन की तरफ बढ़ाकर फोन उठाया और अपने करीब खींच लिया।

उसने रिसीवर उठाकर इस्लामाबाद का एस.टी.डी. कोड मिलाया—फिर कोई नम्बर मिलाया।

"फातिमा बोल रही हूं।" दूसरी तरफ से आवाज आते ही वह बोली—"चीफ से बात कराओ।"

शीघ्र ही दूसरी तरफ से चंगेज खान की आवाज उसके कानों में पड़ी।

"हां बोलो फातिमा—सब कुछ खैरियत से तो है न?"

"जी हां हुजूर—फिलहाल तो खैरियत से है। मगर एक नया आदमी आया है।"

"कौन?"

"सतीश रावण।"

"हिन्दुस्तानी है।" चौंकती आवाज।

"जी हुजूर—और अण्डरवर्ल्ड में काफी बदनाम है। वह भी उसी चीज की खातिर यहां आया है जिसकी खातिर हम यहां हैं।"

"ओह! मगर उसे पता कैसे चला यह सब?"

"उसने कहा है कि उसने हाशिम रजा से सब जानकर उसे मार डाला है। क्या हाशिम रजा मर गया है?"

"हां...और मुझे यह भी पता चला है कि वह आई.एस. आई. का आला अफसर था।"

"इसका मतलब वह सच बोल रहा है।"

"तुमने उससे पूछा कि भारत में उसे किसने भेजा था?"

"कोई नारायण दास बत्तरा है—जिससे सतीश रावण का

https://t.me/Hindiupanyas

सौ करोड़ में सौदा हुआ है।"

और फिर फातिमा फोन पर हूं-हां करती रही—फिर अन्त में 'जी बेहतर' कहकर उसने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और सतीश रावण की तरफ देखते हुए गहरी सांस छोड़ी।

"नारायण दास से तुम्हारा सौ करोड़ में सौदा हुआ है?"

"हां!"

"अगर सौ करोड़ तुम्हें हमसे मिल जायें तो?"

"तो?"

"बलराज गोगिया के मुताबिक तुम एक नम्बर के हरामी हो—ऐन वक्त पर दगा देने वाले—इसलिये हमने तुमसे पूछा है कि अगर सौ करोड़ तुम्हें हमसे मिल जायें तो क्या तुम हमारे लिये काम करोगे?"

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी।

"मुझे पैसों से मतलब है—वो चाहें तुमसे मिलें या नारायण दास से—इससे मुझे क्या!"

सतीश रावण की बात सुनकर बलराज गोगिया के होठों पर जहरीली मुस्कान फैल गई।

"तुम्हारा नारायण दास की तरफ से इस तरह आंखें फेरना ही यह साबित करता है कि तुम्हारी नजर में जुबान की कोई कीमत नहीं—और तुम अव्वल दर्जे के धूर्त हो।"

सतीश रावण ने उसकी बात का जरा भी बुरा नहीं माना—बल्कि हंस पड़ा।

"मैं इसे बेईमानी नहीं मानता—अब तुम हमारे लिये काम करो।"

"वो तो करूंगा ही।" सतीश रावण मुस्कराया—"मगर उसके लिये अगर कुछ एडवांस हासिल हो जाये तो...।"

"अगर एडवांस न मिले तो क्या तुम काम नहीं करोगे?" फातिमा सख्ती से बोली।

हड़बड़ाया सतीश रावण—फिर मुस्कराते हुए गहरी सांस छोड़ी—

"उस सूरत में फार्मूला तब तक मेरे कब्जे में रहेगा जब तक कि मुझे सौ करोड़ हासिल नहीं हो जायेगा।"

"तुम्हें सौ करोड़ मिलेगा।"

"वो तो मुझे मिलेगा ही—चाहे तुमसे मिले—चाहे नारायण दास से।"

सतीश रावण कुटिलता से हंसा।

https://t.me/Hindiupanyas

फातिमा ने घूरकर उसे देखा।

"जानते हो हम कौन हैं?" वह फुंफकारी।

"मेरा सौ करोड़ का चैक।" मुस्कराया सतीश रावण।

"सी.आई.ए. के एजेन्ट हैं हम।"

बुरी तरह से उछल पड़ा सतीश रावण।

"हमसे खेल खेलोगे तो दुनिया के किसी भी कोने में छुप नहीं पाओगे तुम।" गुर्राई फातिमा—"वह आई.एस.आई. नहीं, जिसे तुम चकमा दे पाओ।"

सतीश रावण ने जोरों से थूक सटकी।

"इसलिये हमसे सीधे होकर चलना।"

"मैं सम्भलकर चलूंगा।" सतीश रावण इस तरह बोला जैसे सी.आई.ए. के नाम से ही वह खौफजदा हो उठा हो।

"हमारे अण्डर रहोगे तो फायदे में रहोगे—वरना सिवाये मौत के कुछ भी हासिल नहीं होगा।"

सतीश रावण ने सिर हिला दिया।

"लेकिन राघव का क्या होगा?" बलराज गोगिया बोल पड़ा।

फातिमा ने उसकी तरफ देखा।

"राघव की तरफ से तुम निश्चिंत रहो।" वह बोली—"बस यूं समझ लो कि फार्मूला चुराने के लिय हमने तुम्हारी मदद के लिये सतीश रावण को लिया है। तुम्हारे साथ हुआ सौदा पहले की तरह बरकरार रहेगा।"

बलराज गोगिया कुछ नहीं बोला। बस सतीश रावण को खा जाने वाली निगाहों से घूरने लगा।

सतीश रावण हौले से मुस्कराया।

"एक बात सुन लो सतीश रावण।" बलराज गोगिया फुंफकारा—"राघव मेरी जिन्दगी है। अगर तुम्हारे कारण उसको कोई खतरा पेश आया तो मैं तुम्हारी वो हालत करूंगा कि जिसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकते। मैं अपने यार के लिये किसी की जिन्दगी ले भी सकता हूं और अपनी जिन्दगी दे भी सकता हूं।"

"फिक्र मत करो—मेरी तरफ़ से तुम्हें कोई तकलीफ नहीं पहुंचेगी।"

सतीश रावण गहरी सांस छोड़ते हुए बोला और गर्दन बेनजीर की तरफ घुमाई।

"क्या नाम है तुम्हारा?"

"बेनजीर।"

https://t.me/Hindiupanyas

"बड़ा खूबसूरत नाम है—बिल्कुल तुम्हारी तरह।"

बेनजीर बोली कुछ नहीं—बस मुस्करा दी।

"वैसे मेरे बारे में क्या ख्याल है तुम्हारा?"

बेनजीर पुनः मुस्कराई।

"फिक्र करने की जरूरत नहीं—दोस्तों के लिये मैं हमेशा हाजिर रहती हूं।"

"तो फिर क्यों न फ्रेश हो लिया जाये—फ्रेश होकर काम पर लगोगे तो रिजल्ट भी अच्छा निकलेगा।"

हंस पड़ी बेनजीर।

"लगता है औरत तुम्हारी कमजोरी है—तभी तो मुलाकात होते ही राल टपकने लगी है तुम्हारी।" सतीश रावण भी हंसा।

"औरत मेरी कमजोरी नहीं—बल्कि शौक है। तुमने मेरी बात का जवाब नहीं दिया।"

"तुमसे पहले बलराज गोगिया मिला था मुझसे—इसलिये मुझ पर पहला हक बलराज गोगिया का है।"

कहकर उसने प्रश्न भरी निगाहों से बलराज गोगिया की तरफ देखा।

"क्या कहते हो बलराज!" वह बोली।

"सॉरी—ऐसे मामलों में मैं दिलचस्प नहीं हूं। तुम्हें सतीश रावण मुबारक।"

सतीश रावण की आंखों में चमक नाच उठी।

बेनजीर ने गहरी सांस छोड़ते हुए सतीश रावण की तरफ देखा।

"आओ—पहले फ्रेश कर दूं तुम्हें।" वह बोली और खड़ी हो गई।

सतीश रावण भी तुरन्त खड़ा हो गया।

□□□

कमरे में प्रवेश करते ही सतीश रावण बेनजीर पर एक कुत्ते की तरह झपटा—मगर बेनजीर ने उसके सीने पर हाथ रखकर उसे बीच में ही रोक लिया।

"इतने उतावले मत बनो।" बेनजीर शोख अदा से मुस्कराई—"पहले दरवाजा तो बंद कर लो।"

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी—वापिस मुड़ा और दरवाजा बंद करके पुनः बेनजीर की तरफ पलटा।

"बड़े उतावले हो तुम।" बेनजीर उसे पुनः बीच में ही

https://t.me/Hindiupanyas

रोकते हुए बोली—"सब्र से काम लो—फिर देखो कैसा आनन्द मिलता है।"

सतीश रावण ने स्वयं को ढीला छोड़ दिया।

"पैग लगाओगे?"

"जब से पाकिस्तान में दाखिल हुआ हूं—एक पैग के लिये तरस गया हूं।"

सतीश रावण गहरी सांस छोड़ते हुए बोला।

"तुम बैड पर बैठो—मैं पीने का बंदोबस्त करती हूं।"

कहकर वह अलमारी की तरफ बढ़ गयी।

सतीश रावण आगे बढ़कर बैड पर बैठ गया।

बेनजीर ने अलमारी खोलकर उसमें से जानीवाकर ब्लैकलेबल की बोतल निकाली—साथ ही दो गिलास भी निकाले और आकर सतीश रावण के सामने पालथी मारकर बैठ गई।

उसने दोनों गिलासों को आधा-आधा भरा और बोतल के करीब रख दिया।

"चीयर्स!" पैग उठाकर वह सिर के ऊपर ले जाते हुए बोली।

सतीश रावण ने भी चीयर्स बोला और पैग को होंठों से लगाकर एक ही सांस में खाली कर दिया।

बेनजीर ने भी अपना पैग खत्म किया और अपनी कमीज उतार दी।

बेशक उसका रंग सांवला था मगर वह बला का हुस्न समेटे हुए थी स्वयं में।

ब्रा में फंसी उसकी भारी छातियों का उभार कयामत ढाता नजर आ रहा था।

सतीश रावण की सांसें उसकी छातियों को देखकर ही तेज होने लगी थीं।

बेनजीर ने हाथ पीछे करके ब्रा के हुक खोले तो उसकी ब्रा उसकी बांहों से फिसलकर नीचे गिर पड़ी। सतीश रावण को अपनी सांसें हलक में फंसती महसूस होने लगीं।

"तुम भी अपनी शर्ट उतार दो।" वह बोली।

सतीश रावण ने बिना कोई वक्त गंवाये अपनी शर्ट उतार दी।

बेनजीर ने अगला पैग बनाया और अपने स्थान से उठकर उसकी गोद में आ बैठी।

सतीश रावण ने एक हाथ से अपना पैग उठाया तथा दूसरे

https://t.me/Hindiupanyas

हाथ से उसकी छातियों से खेलने लगा। उसके तजुर्बेकार हाथों ने शीघ्र ही बेनजीर को गर्म कर दिया।

कुछ देर पहले जहां वह सतीश रावण को हौंसला रखने के लिये कह रही थी—वहीं अब वह स्वयं कुछ पाने को बेताब हुई नजर आ रही थी।

उसने जल्दी से अपना पैग खाली किया और खाली पैग तथा बोतल को बैड के नीचे खिसका कर सतीश रावण से बुरी तरह से लिपट गयी।

सतीश रावण ने अपना गिलास भी फर्श पर रखा और बेनजीर को नीचे लिटाकर स्वयं उस पर सवार हो उसके अंगों से खेलने लगा।

बेनजीर की बेताबी पल-प्रतिपल बढ़ती जा रही थी।

थोड़ी देर बाद वह बुरी तरह से हांफते हुए बोली—"अब और बर्दाश्त नहीं हो रहा—अब मेरे सब्र का इम्तहान न लो—पीस डालो मुझे।"

सिसकारियां छोड़ रही थी वह।

सतीश रावण उसके ऊपर से उठा और अपनी पैंट उतार दी।

इधर बेनजीर ने भी अपनी शलवार उतार दी और टांगों को मोड़कर उसने फैला दिया।

सतीश रावण उसकी फैली टांगों के मध्य घुटनों के बल आ बैठा।

उसने निशाना साधा और स्ट्रोक लगा दिया।

बेनजीर की आंखें आनन्द से बंद हो गईं। साथ ही उसके होठों से एक तेज सिसकारी छूटी।

उसे ऐसा लगा मानो कोई धधकता हुआ ज्वालामुखी उसमें समा गया हो।

और फिर ढोलक पर थापें बजने लगीं।

शहनाइयों के मधुर स्वर कमरे में गूंजने लगे।

दोनों बुरी तरह से एक-दूसरे से उलझे एक-दूसरे को परास्त करने की जी-तोड़ कोशिश कर रहे थे।

□□□

"यह समस्या तो हल हो गई।" सिकंदर ठाकरे बैड पर लेटते हुए बोला—"अब क्या करना है?"

"वो समस्या तो हल हो गई—मगर एक नई समस्या सामने

https://t.me/Hindiupanyas

आ गई।"

रीमा राठौर उसके करीब बैठते हुए बोली।

"कैसी समस्या?"

"उस महाधोखेबाज सतीश रावण की समस्या—वह हमें पहचानता है—उसे जैसे ही पता चलेगा कि हम बच गए हैं तो वह हमें खत्म करने के लिये कोई दूसरा रास्ता तलाश करना शुरू कर देगा।"

"ओह!" सिकंदर ठाकरे के मुंह से निकला।

"ऊपर से वह बलराज गोगिया के साथ मिल गया है—यह बात मैं दावे से कह सकती हूं। बलराज गोगिया की यहां मौजूदगी से वह कूदकर इस नतीजे पर पहुंच गया कि वह फार्मूले के बारे में और उसके सुरक्षा प्रबंधों के बारे में जानता है। मुझसे तो वह अभी तक कुछ भी नहीं हासिल कर पाया था—इसलिये उसने मुझे खत्म करने की और उसके पीछे लगे रहने की चाल चली।"

"क्या बलराज गोगिया उसे बचा लेगा?"

"हो सकता है—और नहीं भी हो सकता।" रीमा राठौर बोली—"अगर सतीश रावण उसे शीशे में उतारने में सफल रहा तो बलराज गोगिया बता देगा—नहीं तो नहीं।"

"ओह!"

"हमें इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता कि बलराज गोगिया उसे बताता है या नहीं। और न ही बलराज गोगिया के मरने से कोई फर्क पड़ेगा। हमारी असली समस्या सतीश रावण है।" रीमा राठौर बोली—"अब जहां हमें आई.एस.आई. से सावधान होकर फार्मूले को हासिल करना पड़ेगा—वहीं हमें सतीश रावण की तरफ से भी सावधान रहना होगा। क्योंकि उसका कोई भरोसा नहीं कि वह कब क्या चाल चल दे।"

"क्यों न हम बलराज गोगिया और सतीश रावण को ढूंढकर खुद उस पर नजर रखें।"

"अगर हम इसी उलझन को सुलझाते रहे तो कर लिया हमने फार्मूला हासिल।"

"तो?"

"हमें सारे काम साथ-साथ करने होंगे।"

"कैसे?"

"तुम सतीश रावण और बलराज गोगिया की तलाश करो—मैं कैंट की तरफ जाकर स्थिति देखती हूं।"

सिकंदर ठाकरे ने सिर हिला दिया।

https://t.me/Hindiupanyas

तभी डोरबैल बजी।

दोनों एकदम से चौंके और एक-दूसरे को देखा।

"पूछो कौन है?"

रीमा राठौर बोली।

वह पाकिस्तान के बारे में जानती थी कि वहां महिलाओं को दोयम दर्जा प्राप्त है—हर काम में मर्दों का ही महत्व है—इसलिये उसने सिकंदर ठाकरे को ही पूछने को कहा था।

"कौन है?" सिकंदर ठाकरे ऊँचे स्वर में बोला।

"वेटर...बर्तन लेने आया हूं हुजूर...।" वेटर की आवाज आयी।

सिकंदर ठाकरे और रीमा राठौर की निगाहें टेबल पर पड़े बर्तनों पर पड़ीं।

सिकंदर ठाकरे खिसककर बैड से उतरा और आगे बढ़कर दरवाजा खोल एक तरफ हट गया।

अन्दर प्रवेश करते हुए वेटर की निगाहें रीमा राठौर पर पड़ीं तो वह बुरी तरह से चौंका—साथ ही उसकी गर्दन सिकंदर ठाकरे पर पड़ी।

"क्या देख रहे हो—जल्दी बर्तन उठाओ और जाओ।" सिकंदर ठाकरे बोला।

हड़बड़ाते हुए वेटर ने टेबल की तरफ कदम बढ़ाये कि तभी एकाएक ही रीमा राठौर ने उस पर छलांग लगा दी।

जब तक वेटर कुछ समझता—रीमा राठौर ने उसे नीचे लिटाया और उसकी कनपटी पर तेज घूंसा रसीद दिया।

वेटर की गर्दन एक तरफ लुढ़क गई।

इधर सिकंदर ठाकरे रीमा राठौर की इस हरकत पर भौंचक्का रह गया था।

"य...यह क्या कर दिया तुमने।" सिकंदर ठाकरे बोला—"इस बेचारे को क्यों मारा तुमने?"

"मारा नहीं—सिर्फ बेहोश किया है।"

रीमा राठौर वेटर के ऊपर से उठकर बैड की तरफ मुड़ी।

"लेकिन क्यों?"

"यह वही वेटर है जिसने चालीस नम्बर में हमें सर्व किया था—और इसने हमें पहचान लिया है।"

बुरी तरह से उछल पड़ा सिकंदर ठाकरे—आंखों में हैरत के भाव उभर आये।

"अब समझे मैंने इसे बेहोश क्यों किया...। जब तक इस

https://t.me/Hindiupanyas

होश आये—हमें किसी और होटल में सुरक्षित पहुंचना है—क्योंकि होश में आते ही यह वेटर मैनेजर को बोलेगा—और फिर हमारी तलाश पहले से भी तेज हो जायेगी।"

"फिर तो इसका जिन्दा रहना ही हमारे लिये खतरनाक हो सकता है।" सिकंदर ठाकरे का स्वर सख्त हो गया।

"नहीं...हम अपने हुलिये बदल लेंगे—क्योंकि अब इस रूप में सतीश रावण भी हमें पहचानता है।"

सिकंदर ठाकरे ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया और दूसरा पैग उठा लिया।

"काउंटर पर क्या कहेंगे?" उसने कहा।

"कमाल है—जिस होटल में तुम्हारी बेगम को नंगा कर दिया गया हो—क्या वहां तुम एक मिनट भी ठहरना बर्दाश्त करोगे?"

"ओह!"

"आओ!"

रीमा राठौर बोली और दरवाजे की तरफ बढ़ गई।

लिफ्ट द्वारा वे हॉल में आये और काउंटर पर पहुंचकर होटल छोड़ने की बात सिकंदर ठाकरे ने काउंटरमैन से कही।

गेट पर खड़े दो फौजी उन्हीं की तरफ देख रहे थे। ऐसे में काउंटर पर जाना और भी जरूरी था।

सिकंदर ठाकरे ने काउंटरमैन के सामने वही बहाना बनाया कि उसकी बेगम की बेइज्जती हुई है—इसलिये वे वहां और नहीं रुक सकते।

और इस प्रकार दोनों फौजियों के बीच से निकलकर दोनों होटल से बाहर आ गये।

बाहर आकर उन्होंने एक टैक्सी की और वहां से रवाना हो गये।

टैक्सी में प्रवेश करते वक्त रीमा राठौर ने उन फौजियों की तरफ देखा था—एक फौजी टैक्सी की नम्बर प्लेट देखते हुए अपनी डायरी पर पैन घिस रहा था।

मुस्करा पड़ी रीमा राठौर।

करीब तीन किलोमीटर आगे जाकर रीमा राठौर ने सिकंदर ठाकरे को एक भरी पूरी सड़क पर टैक्सी रुकवाने के लिए कहा।

सिकंदर ठाकरे ने उसका आदेश टैक्सी ड्राइवर को सुनाया।

टैक्सी रुकी।

दोनों बाहर निकले।

https://t.me/Hindiupanyas

सिकंदर ठाकरे ने भाड़ा चुकाकर टैक्सी को विदा किया।

"यहां बीच सड़क पर क्यों टैक्सी रोकी?" बोला सिकंदर ठाकरे।

"तुमने उन फौजियों को नहीं देखा—एक फौजी टैक्सी का नम्बर नोट कर रहा था।"

"ओह!"

"उस टैक्सी की बदौलत वे हमें ढूंढ सकते थे। इसलिये टैक्सी रुकवाई—अब एक नई टैक्सी करो—उसे भी दो चार क़िलोमीटर के बाद रुकवाना—फिर नई टैक्सी करना और उसमें हम किसी होटल में जायेंगे।"

बात समझ में आ गई सिकंदर ठाकरे की।

करीब एक घण्टे बाद दोनों होटल कोहेनूर के रूम नम्बर एक सौ दस में बैठे थे।

वहां पर काउंटर पर बात रीमा राठौर ने की थी और उस वक्त वह बुर्का ओढ़े हुए थी। अपने शौहर के बारे में उसने यह बताया था कि वह बाहर गाड़ी में से सामान उतार रहे हैं।

इस प्रकार सिकंदर ठाकरे को निगाहों में लाये बिना वह कमरे में चली गई थी।

तत्पश्चात् वह सिकंदर ठाकरे को कमरे में ही बिठा कर मेकअप का सामान लाने के लिये निकल गई।

वेटर ने कराहकर आंखें खोलीं तो स्वयं को मैनेजर तथा उन दोनों फौजियों के बीच घिरा पाया जो कि दरवाजे पर तैनात थे।

हड़बड़ाकर वेटर बैठ गया तथा हैरानी से उन्हें देखने लगा।

"तू एक सौ चार नम्बर में बेहोश पड़ा था...।" मैनेजर बोला—"क्या हुआ था तुझे?"

वेटर की आंखों के सामने वह दृश्य तैर गया—जब रीमा राठौर उस पर झपटी थी।

बुरी तरह से कांप उठा वह।

"क्या चक्कर आ गया था तुम्हें?" एक फौजी ने पूछा।

"नहीं।"

"तो फिर?"

दूसरे ने पूछा।

उसने बेहोश कर दिया था मुझे।

https://t.me/hindiupanyas

"किसने?"

"चालीस नम्बर वाली ने।"

बुरी तरह से चौंक पड़े तीनों।

"चालीस नम्बर वाली ने?" पहला फौजी हैरानी से बोला।

"जी हुजूर।"

"लेकिन तू तो एक सौ चार में बेहोश पड़ा था।"

"वे चालीस नम्बर वाले ही थे—मैंने उन्हें पहचान लिया था।"

दोनों फौजियों की आंखें फैल गईं।

उन्हें समझते देर न लगी कि वे दोनों भारतीय जासूस थे—जिनकी तलाश में पूरे होटल की तलाशी ली गई थी।

"तो फिर एक सौ चार नम्बर वाले किधर गए?" पहला फौजी बोला।

"यह सोचने का वक्त नहीं है—फौरन जनाबेआला को खबर करो—मैंने उस टैक्सी का नम्बर नोट कर लिया था जिसमें कि एक सौ चार वाले गए थे।"

दूसरा फौजी मैनेजर के कमरे से निकल फोन की तरफ झपटा और फोन पर रिपोर्ट देने लगा—और कुछ ही देर में व्यापक रूप से रीमा राठौर और सिकंदर ठाकरे की तलाश शुरू हो गई। इधर होटल में वह मेजर वेटर से वो सवाल कर रहा था जो कि फौजी उससे पूछ चुके थे। सवाल पूछने के बाद उसने मैनेजर का फोन अपनी तरफ घसीटा और एक दो जगह फोन करके आदेश दिया कि पांच बजे के बाद जिस भी होटल में मियां बीवी या भाई-बहन ठहरे हों—उन्हें अच्छी तरह से चैक कर लिया जाये। साथ ही फौरन वापिस होटल में फोन किया जाये—ताकि बेटर को उन्हें पहचानने के लिये वहां ले जाया जा सके।

□□□

दोस्तों—अब तक की कहानी आपने पढ़ी। उम्मीद है कि आपको काफी पसंद आई होगी। आप देख ही रहे हैं कि खतरे-दर-खतरे से जूझती रीमा राठौर पर क्या बीत रही है—चैन का एक पल भी नहीं मिला उसे।

आपने बलराज गोगिया को भी देखा कि वह किस तरह सी.आई.ए. के हाथों की कठपुतली बनकर रह गया है।

आपने सतीश रावण को भी देखा—जो पाकिस्तान में भी अपने हरामीपन से बाज नहीं आया। इतना विस्तृत

https://t.me/Hindiupanyas

कथानक सिर्फ एक ही उपन्यास में खत्म कर देने का मतलब होगा—हर चरित्र के साथ अन्याय करना।

मैं आपकी मजबूरी समझता हूं कि आपको पूरी कहानी एक ही उपन्यास में पढ़ने में ज्यादा मजा आता है। मगर आप यह भी देख रहे हैं कि मैं भी मजबूर हूं। उपन्यास को किसी भी सूरत में एक ही उपन्यास में खत्म नहीं किया जा सकता। यहां तक मैं उन पाठकों के नाम भी इस उपन्यास में नहीं लिख पा रहा हूं जिन्होंने कि मेरे पूर्व उपन्यास 'चोट' में मुझे पत्र लिखे थे। अपना वह वादा मैं इस उपन्यास के आगामी भाग में पूरा करूंगा।

मेरा आगामी उपन्यास 'जजमैंट' जो कि 'शिवा पॉकेट बुक्स' के आगामी सैट में प्रकाशित होगा—आपका भरपूर तथा स्वस्थ मनोरंजन करेगा। और आप जानते ही हैं कि मेरा वादा हमेशा आपकी कसौटी पर खरा उतरा है।

फार्मूले को पाने के लिये तीनों में इतनी जबरदस्त जंग आपने शायद ही कहीं पढ़ी हो। चालों पर चाल चलती यह जंग आपको आगामी उपन्यास 'जजमैंट' में ही पढ़ने को मिलेगी।

अनिल सलूजा

□□□

डेढ़ घण्टे बाद सतीश रावण और बेनजीर कमरे से बाहर निकले।

बेनजीर के चेहरे पर इस वक्त ऐसी रौनक थी मानों वर्षों बाद उसे पता चला हो कि तृप्ति क्या होती है।

ताजे गुलाब की तरह खिला हुआ था उसका चेहरा।

इधर सतीश रावण के होठों पर बेशर्मी से भरी मुस्कान थी।

वह आकर सोफे पर बैठा और बलराज गोगिया की तरफ देखते हुए बोला—

"अब मैं पूरी तरह से फ्रैश हूं—अब हम आराम से फार्मूला हासिल करने की स्कीम बना सकते हैं। बोलो क्या-क्या सुरक्षा प्रबंध किये गए हैं फार्मूले के?"

"वो भी बता दूंगा—पहले जरा हालात से तो निपट लें।" बलराज गोगिया गम्भीरता से बोला।

"कैसे हालात?"

https://t.me/Hindiupanyas

"फार्मूला कैंट में लाल कोठी में है और लाल कोठी की हिफाजत के लिए हर वक्त चार-पांच सौ फौजी तैनात रहते हैं।"

"ओह!"

"ऊपर से कैंट के भीतर जाना तो दूर—हम उसके गेट तक भी नहीं पहुंच सकते।"

कहकर उसने बेनजीर की तरफ देखा—जो कि सतीश रावण के साथ सटकर बैठी हुई थी।

"इसे बताओ बेनजीर कि कैंट में प्रवेश करते वक्त तुम पर क्या बीती?"

बेनजीर ने सतीश रावण को सब कुछ बता दिया।

सतीश रावण के माथे पर सोचों की सलवटें उभर आईं।

"लाल कोठी के भीतर सुरक्षा प्रबंधों के बारे में तभी सुनना, जब कैंट में प्रवेश करने का रास्ता खोज लो।" बलराज गोगिया बोला।

"तुमने कुछ सोचा?"

"अभी तो बस यही सोचा है कि कर्नल अहसान अहमद की मदद ली जाए—अगर बेनजीर उसे शीशे में उतार पाने को राजी हो गई और वह हमारा साथ देने को तैयार हो गया तो फिर आगे की सोचेंगे।"

"अगर वह न माना तो?"

"तो फिर मुझे वो कदम उठाना पड़ेगा जो कि मैं बहुत मजबूरी में ही उठाता हूं।"

"क्या?"

"मजबूर करूंगा किसी को—किसी की बहन-बेटी को अगवा करके अपना काम निकालूंगा।"

"मगर कर्नल की तो कोई बहन-बेटी नहीं।" बेनजीर बोल पड़ी—"उसने तो निकाह भी नहीं किया।"

"मैं कर्नल की बात नहीं कर रहा—इस काम के लिये किसी भी ऐसे आला-ए-अफसर पर हाथ डाला जा सकता है जो हमें कैंट में पहुंचा दे।"

"तो फिर पहले रास्ते का इंतजाम करने की क्या जरूरत—दूसरा रास्ता ही अपना लेते हैं हम।"

सतीश रावण बोला।

"तुम्हारे और मेरे काम करने के तरीके में फर्क है सतीश रावण—तुम गोली पहले चलाते हो काम फिर करते हो—और मेरी यह आदत है कि जब तक मजबूर न हो जाऊं—गोली चलाने से परहेज करता हूं।"

https://t.me/hindiupanyas

"ठीक है।" सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी—"जैसा तुम मुनासिब समझो—मगर इतना जान लो कि तुम्हें दूसरा रास्ता ही अपनाना पड़ेगा। यह पाकिस्तानी बड़े हरामी होते हैं—इन्हें बातों से नहीं जूतों से सीधा किया जा सकता है।"

"तुम मुझे गाली निकाल रहे हो?" तभी भड़की बेनजीर।

सतीश रावण ने उसकी तरफ देखा।

"क्या तुम पाकिस्तानी हो?" वह मुस्कराया।

"क्या नहीं हूं?"

"बिल्कुल नहीं हो—तुम सी.आई.ए. की एजेंट हो—तुम्हारा कोई मुल्क नहीं—कोई धर्म नहीं—कोई मजहब नहीं। ऐसे में तुम्हें गाली नहीं दे रहा मैं।"

"जैसे तुम हो?"

"मैं तो हरामजादा हूं—रण्डी की औलाद हूं—मेरे क्या कहने—मेरा मुकाबला नहीं कर सकतीं तुम।"

सतीश रावण के मुंह से ऐसे शब्द सुनकर बेनजीर हैरान रह गई।

फातिमा भी हैरानी से उसे देखने लगी।

"गालियां बलराज गोगिया को लग सकती हैं—क्योंकि वह शरीफ है—नेक है—किसी को दुखी नहीं देख सकता—और इसके दिल में अपने मुल्क के लिये भी जज्बा है—हमारे-तुम्हारे के लिये गालियों की कोई कीमत नहीं—इसलिये मेरी बात पर बुरा मानने की जरूरत नहीं।"

बेनजीर निरुत्तर होकर रह गई।

सतीश रावण ने बलराज गोगिया की तरफ देखा।

"तो तुम पहले कर्नल अहसान अहमद को शीशे में उतारने की कोशिश करोगे।"

"हां।" बलराज गोगिया बोला।

"कब जायेगी बेनजीर उसके पास?"

"वह कल आयेगा—तभी बेनजीर उसके पास जायेगी।"

सतीश रावण ने सिर हिला दिया।

□□□

"खट्-खट्-खट्।"

दरवाजे पर दस्तक पड़ी।

सिकंदर ठाकरे ने चौंककर दरवाजे की तरफ देखा।

रीमा राठौर अभी तक वापिस नहीं लौटी थी। ऐसे में वह

https://t.me/Hindiupanyas

कमरे में अकेला ही था।

"कौन?" उसने आवाज लगाई।

"दरवाजा खोलो!" बाहर से रौब भरी आवाज आई।

न चाहते हुए भी सिकंदर ठाकरे का कलेजा धड़क उठा।

दरवाजा तो खोलना ही था उसे।

बैड से उतरकर वह दरवाजे के करीब आया और सिटकनी गिराकर दरवाजा खोल दिया।

सामने तीन फौजी खड़े थे।

तीनों के तीनों कारबाइनों से लैस थे।

सिकंदर ठाकरे की रंगत पीली पड़ गई।

"फ-फरमाइये?" वह बोला।

"बेगम कहां है तेरी?" एक फौजी गुर्राया।

"व-वो किसी काम से बाजार गई है— लेकिन आप उसके बारे में क्यों पूछ रहे हैं जनाब—क्या किया है बेगम ने?"

"किस काम से गई है?" दूसरे फौजी ने पूछा।

"सामान खरीदने।"

"कासिम होटल से तू ही आया है न यहां अपनी बेगम के साथ?"

सिकंदर ठाकरे की आंखों में खौफ उभर आया।

उस फौजी ने उसकी आंखों में छाया खौफ भांप लिया था।

तभी तो उसने उसे भीतर धकेला और गुर्राया—

"तलाशी लो इसके सामान की!"

दोनों बैग अभी बैड पर ही पड़े थे।

दो फौजी बैगों की तरफ बढ़े—जबकि तीसरे ने सिकंदर ठाकरे पर कारबाइन तान दी।

बैगों की तलाशी ली जाने लगी।

और जैसे ही एक बैग में से कारबाइन के हिस्से निकले—सिकंदर ठाकरे का कलेजा बैठने लगा।

खेल खत्म!

मन ही मन बड़बड़ा उठा वह।

समाप्त

https://t.me/Hindiupanyas

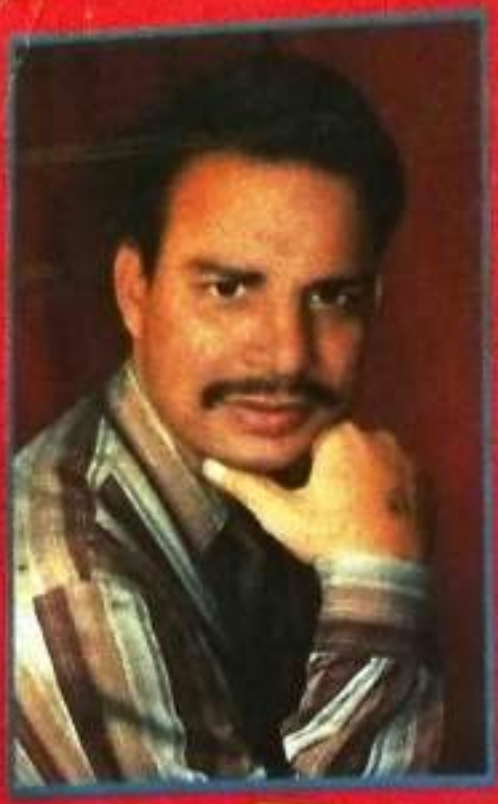

एक मजबूर था ...दूसरा लालची
और मतलब परस्त था और तीसरे का फर्ज था
तीनो दिमाग के धनी थे - तीनो उस्ताद थे
फिर कौन जीता ?
क्या बलराज गोगिया, या फिर रीमा राठौर
फिर सतीश रावण उर्फ भेड़िया ।
एक खूनी टक्कर
अनिल सलूजा की कलम की पैनी धार से
निकला महाविशेषांक

अनिल सलूजा

का आगामी उपन्यास जिसमें जजमैंट करने वाला लेखक नहीं बल्कि आप होंगे ।

जजमैंट

शिवा पॉकेट बुक्स

https://t.me/Hindiupanyas